जमनालाल बजाज
की डायरी

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट : सत्रहवां ग्रंथ

जमनालाल बजाज
की
डायरी

(१९३० से १९३३)

तीसरा खण्ड

संपादक

रामकृष्ण बजाज

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

शाखा : इलाहाबाद

जमनालाल बजाज सेवाट्रस्ट, वर्धा
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय द्वारा प्रकाशित

पहली बार : १९६९
मूल्य
छह रुपये
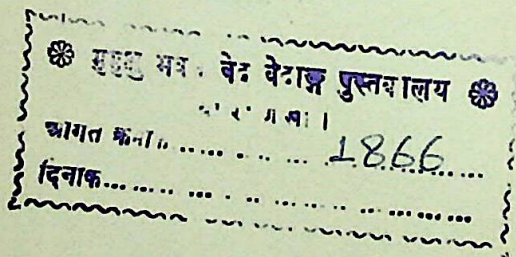
मुद्रक :
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

संपादकीय

पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल वजाज) की डायरी का तीसरा खंड पाठकों को भेंट करते हुए प्रसन्नता होती है। इस खंड में १९३० से १९३३ तक की डायरी दी गई है। वीच में ३०-१-३० से ११-६-३० तक की और १९३१ की संपूर्ण डायरी उपलब्ध नहीं है।

जमनालालजी का इन तीन वर्षों का अधिकांश भाग विभिन्न जेलों में वीता। १९३० में १२-६-३० से २-२-३१ तक नासिक रोड सेंट्रल जेल में, १९३२-३३ में १६-१-३२ से ५-४-३३ तक धुलिया तथा यरवदा जेल में; इस प्रकार लगभग ११ महीने जेल में रहे। इस काल की डायरी अपेक्षाकृत विस्तृत और जेल-जीवन के अनुभवों से भरी हुई है। यद्यपि पिताजी डायरी वहुत संक्षिप्त नोट के रूप में ही लिखा करते थे, पर उसमें भी पाठक को जेल-जीवन की दिनचर्या व उनकी मानसिक-वृत्ति का पूरा भास हो जाता है। जेल-जीवन की यह उनकी पहली उपलब्ध डायरी है। इससे पहले १९२३ में वह नागपुर-झंडा-सत्याग्रह के सिलसिले में पहली वार जेल गये थे, लेकिन उस काल की डायरी उपलब्ध नहीं है।

जेल-काल की डायरी के संपादन में दिनचर्या की नित्य की, एक ही तरह की (प्रातःकाल ४ वजे उठने से रात १० वजे सोने के पहले तक की) वातों को शुरू में रहने दिया गया है, पर बाद में जहां-तहां कम कर दिया गया है। इसी प्रकार स्वास्थ्य-संबंधी उल्लेख भी कम कर दिये गये हैं।

जेल में उनका अधिकांश समय चरखा कातने, रूई पींजने, व्यायाम करने, जेल का दिया काम करने, पठन-पाठन तथा साथी कैदी मित्रों से विचार-विनिमय, उनकी कठिनाइयां सुनने और समस्यायें सुलझाने में जाता था। राजनैतिक कैदियों और जेल अधिकारियों के पारस्परिक व्यवहार और संवंधों को समझने व सुधारने में भी वह काफी दिलचस्पी

लेते थे और समय देते थे। राजनैतिक कैदियों से उनका परिचय व्यक्तिगत और कौटुंविक स्तर पर पहुंच जाता था और उसे वह जेल से आने के वाद भी वढ़ाते रहते थे, जो स्वतंत्रता-संग्राम में तथा रचनात्मक कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में गांधीजी के लोक-संग्रह में वहुत सहायक सावित हुआ।

विभिन्न जेलों में अनेक राजनैतिक कार्यकर्ताओं और नेताओं से उनका संपर्क आया और वहां सवके काम आने और सबसे कुछ-न-कुछ सीखने का उनका प्रयत्न रहता था। अपने विभिन्न जेल-जीवन-काल में पुस्तकें पढ़ीं और परिश्रमपूर्वक अंग्रेजी और उर्दू का अभ्यास जारी रखा।

इस दृष्टि से उनकी इस काल की डायरी उनके व्यक्तिगत जीवन और राष्ट्र-जीवन को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक दृष्टि से तो उसका महत्व है ही।

डायरी वहुत संक्षिप्त है; कहीं-कहीं पेंसिल से लिखी होने से और लिखा अस्पष्ट होने से पूरी नहीं पढ़ी जा सकती है। ऐसी जगह अपनी जानकारी व समझ से शुद्ध व स्पष्ट करने का यथासंभव प्रयत्न किया गया है। पर कहीं-कहीं स्थानों व व्यक्तियों के नामों में गलती रह जाने की संभावना है। ऐसी भूल पाठकों की निगाह में आवे तो वे हमें वताने की कृपा करें। नये संस्करण में उन सूचनाओं का हम उपयोग कर सकेंगे।

डायरी के दूसरे खंड की भूमिका लिखने के लिए हमने जव पूज्य श्री काकासाहव से प्रार्थना की तो उन्होंने कहा था कि पहले खंड में जो भूमिका उन्होंने लिखी थी, वह पूरी श्रृंखला के लिए ही लिखी थी। फिर भी दूसरे खंड के लिए उन्होंने अपने विचार कृपापूर्वक लिख दिये थे। इस खंड में पहले दोनों खंडों की भूमिकाएं एक करके संक्षिप्त रूप में दी गई हैं।

इस खंड की पांडुलिपि व पृष्ठभूमि तैयार करने में श्री ऋषभदासजी रांका ने जो सहायता की है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

—रामकृष्ण वजाज

भूमिका

सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो पता चलेगा कि साहित्य का प्रादुर्भाव संभाषण से हुआ है। बाद में आई लेखन-कला। मनुष्य की वाणी पहले तो बोलने के लिए ही होती है। भाषा का अर्थ ही है बोलने का साधन। लेकिन मनुष्य कितनी चीजें कंठ करे? अपनी स्मरण-शक्ति पर बोझा भी कितना डाले? और जहां आवाज पहुंच नहीं सकती, वहां अपनी सूचनाएं भी जैसी-की-तैसी कैसे भेजे? तो मनुष्य ने भाषा को लिपिबद्ध करने की कला ढूंढ़ निकाली। मानवीय संस्कृति की प्रगति में लिपि का आविष्कार एक महत्व की चीज है। लिपि की कला हाथ में आते ही मनुष्य खत लिखने लगा और हिसाब के आंकड़े भी लिखकर रखने लगा। कभी-कभी याददाश्त के लिए थोड़े वचन भी लिखकर रखने लगा। इससे लिखित साहित्य के दो रूप हुए—एक खत, पत्र और दूसरा स्मरण के लिए लिखी हुई 'यादियां'।

विदेशों में दैनंदिनी लिखने का रिवाज शायद ज्यादा होगा। हमारे यहां जो पठान और मुगल राज्यकर्ता हुए, वे अपनी रोजनिशी लिखते थे। इसके लिए आजकल हम अंग्रेजी शब्द 'डायरी' चलाते हैं। अंग्रेजी शब्द 'डे' पर से डायरी शब्द आ गया है। दैनंदिनी शब्द है तो अच्छा, लेकिन कुछ बड़ा और भारी है। हमारे यहां दिन को 'वासर' कहते हैं। रविवासरे, सोमवासरे इत्यादि शब्द बोलते हैं। इस वासर शब्द पर से दैनंदिनी के लिए 'वासरी' शब्द बनाया गया। वासरी अथवा वासरिका शब्द अब चलने लगा है।

डायरी या वासरी लिखने वाले लोगों के दो प्रकार होते हैं। एक में सारे दिन में किन-किन लोगों से मिले, किन-किन लोगों से क्या-क्या बातें हुई, लोगों को कौन-से वचन दिये, जो लोग मिले उनके बारे में अपना

अभिप्राय क्या हुआ, इत्यादि विस्तार से लिखा जाता है। इनमें लोग बौद्धिक, हार्दिक और चर्चात्मक बातें भी लिखते हैं। ऐसी वासरियां लोगों के पढ़ने के लिए नहीं होतीं। वे होती हैं आत्मनेपदी—अपने ही लिए। इनका उपयोग आत्म-चरित लिखने में अथवा समकालीन इतिहास लिखने में अत्यन्त महत्व का होता है।

जो दूसरे प्रकार के वासरी लिखने वाले लोग होते हैं, वे महत्व की चर्चा या घटना कौन-सी हुई, उसका जिक्र तो करते हैं, लेकिन क्या बातचीत हुई, उसमें अपना अभिप्राय क्या था और आगे स्वयं क्या करने का सोचा है, इत्यादि कुछ भी नहीं लिखते। सिर्फ कोई घटना आदि ही लिखते हैं।

महात्मा गांधी इसी तरह की वासरियां लिखते थे। उसमें तो बहुत ही कम शब्दों में अत्यन्त जरूरी बातों का ही जिक्र होता है। अमुक दिन गांधीजी कौन-से शहर में थे, किससे मिले और उस दिन क्या किया, इसका जरा-सा जिक्र ही उसमें मिलता है। गांधीजी की जीवनी लिखने वालों के लिए ऐसी वासरी हमेशा काम की चीज है सही, लेकिन गांधीजी की ओर से उसमें कुछ भी नहीं मिला।

श्री जमनालालजी की ये जो वासरियां हैं, इनमें भी केवल याददाश्त के लिए आवश्यक सूचनाएं ही लिखी हैं। न उनका हृदय पाया जाता है और न उनके अभिप्राय।

अगर किसी अच्छे प्रभावशाली नाटक का पहला ही अंक पढ़ा हो तो उसपर से उस समस्त नाटक की कल्पना तो क्या, पहले अंक की खूबियां भी ध्यान में नहीं आ सकेंगी। समस्त नाटक पढ़ने के बाद ही प्रथम अंक में वर्णित छोटी-मोटी घटनाओं और संभावनों का रहस्य ध्यान में आता है। इसी तरह जमनालालजी के जीवन का प्रथम भाग ही जानने वाले व्यक्ति को पता नहीं चलेगा कि प्रारंभ के दिनों में कौन-सी सूक्ष्म शक्तियां आगे जाकर विकसित रूप धारण करने वाली हैं। पूरा जीवन जानने वाले आज के लोग ही उनके प्राथमिक जीवन के संस्कारों की सूक्ष्मातिसूक्ष्म खूबियां समझ सकेंगे और उनकी कद्र कर सकेंगे।

धार्मिक प्रवचन सुनना, नाटक देखने जाना, संगीत के जलसे का आनंद लेना, टेनिस खेलना, ब्रिज खेलना, वन-भोजन आदि विशुद्ध आनंद को प्रोत्साहन देना, नेताओं के व्याख्यान सुनना, इस तरह जीवन की सब प्रवृत्तियां उनमें पाई जाती हैं। सबमें संस्कारिता, जीवनशुद्धि, सेवाभाव और दिल की उदारता पाई जाती है। २२ से २५ वर्ष की उम्र में कितने लोगों से उन्होंने संपर्क साधा था, इसकी सूची देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।

जमनालालजी के स्वभाव में जैसी विशेष आतिथ्यशीलता थी, वैसा ही साथी, संबंधी और राष्ट्रीय-कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत जीवन में भी प्रवेश करके उनके सुख-दुख के साथ एकरूप होने का माद्दा था। एक तरह से हम कह सकते हैं कि स्वभाव से ही वह विश्व-कुटुम्बी थे। इसीलिए आगे जाकर जब उन्होंने गांधीजी से प्रेरणा प्राप्त की और उनके 'पांचवें पुत्र' बने, तब समूचे विशाल गांधी-परिवार को अपनाना उनके लिए आसान और स्वाभाविक बन गया। बचपन से सबको अपनाने का स्वभाव न होता तो आगे जाकर वह इतना काम नहीं कर सकते थे। तरह-तरह के राष्ट्र-सेवक, उनके परिवार के लोग, राष्ट्रीय संस्थाएं और उनकी कठिनाइयां, सबके साथ जमनालालजी एक-हृदय हो सकते थे, यह थी उनकी विभूति की विशेषता। गांधीजी में भी ये गुण थे। इसीलिए तो गांधीजी को जमनालालजी का इतना बड़ा सार्वभौम सहारा मिल सका। गांधीजी का विस्तार चाहे जितना बड़ा और जटिल हो, उसे संभालने की हिम्मत और कुशलता जमनालालजी में थी और इस दिशा में जमनालालजी गांधीजी को सब तरह से निश्चिंत कर सके थे। जमनालालजी की और गांधीजी की ऐसी विशेषता जिन्होंने ध्यान से देखी है, उनके लिए तो उनकी डायरी के छोटे-छोटे पन्ने और उनके खत-पत्र भी विशेष महत्व के प्रतीत होते हैं।

केवल अपने को और अपनी धन-संपत्ति व कौशल्य-शक्ति को ही नहीं, बल्कि अपने परिवार के सब लोगों को राष्ट्रसेवा में अर्पित करने की उनकी तैयारी थी। केवल तैयारी ही नहीं, उत्साह था। उसीमें वह अपने

जीवन की कृतार्थता मानते थे। लेकिन यह सब होते हुए भी उनकी श्रेयार्थी आत्म-साधना ही सर्वोपरि थी। उसीका थोड़ा चिंतन करना आवश्यक है।

जब कभी कोई 'श्रेयार्थी' आत्म-साधना शुरू करता है, तब कुटुम्ब-कबीला, आजीविका का व्यवसाय और सार्वजनिक-सेवा सब कुछ झंझट समझकर, सबको त्याग देने की कोशिश करने लगता है। हमारे देश में ऐसे ही आत्मार्थी अधिक पाये जाते हैं। ऐसे ही लोगों ने संन्यास-आश्रम को सबसे प्रधान माना है।

हमारी संस्कृति में शुरू में संन्यास का महत्व नहीं था। संन्यास आश्रम का पुनरुज्जीवन शंकराचार्य ने बड़े उत्साह के साथ किया। पर हमारे जमाने में संन्यास-आश्रम को बढ़ावा दिया स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानन्द ने। गांधीजी ने संन्यास-आश्रम के प्रति पूरा आदर दिखाकर उसे एक बाजू रखा और गीता में बताये हुए संन्यास-योग को पसन्द किया है। मनुष्य गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करे या न करे, ब्रह्मचर्य-पालन का महत्व वह समझे और संयम बढ़ाते हुए गृहस्थ-आश्रम को कृतार्थ बनावे, यही था गांधीजी का आदर्श। मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करके कौटुम्बिक जीवन की एकांगिता और संकुचितता छोड़ दे और जीवन में कर्मयोग को ही प्रधान बनाकर, सेवामय जीवन व्यतीत करते-करते समस्त मानव-जाति के साथ अपने ऐक्य का अनुभव करे और, वहां भी न रुककर, समस्त जीव-सृष्टि के साथ तादात्म्य का अनुभव कर विश्वात्मैक्य की साधना चलावे, यही है गांधीजी का मार्ग। इस मार्ग को युगानुकूल समझकर जमनालालजी ने भी उसे पसन्द किया था। अपनी मर्यादा को पहचानकर वह यथाशक्ति 'जनक-मार्ग' का अनुसरण करते रहे। उस जीवन-साधना का प्रारंभ अगर कोई ढूंढ़ना चाहे, तो इन वासरियों में कुछ-न-कुछ मसाला उसे मिलेगा ही।

एक बात खास ध्यान में लेने की है। भारत के लोगों को स्वराज्य चाहिए था। योग्य नेता मिले और सफलता की आशा हो तो लोग लड़ने के लिए भी तैयार थे। लेकिन लोग नहीं जानते थे कि स्वराज्य को चलाने

के लिए जिस तरह पूर्व-तैयारी की जरूरत होती है, वैसे ही संगठित रूप से स्वराज्य की लड़ाई लड़ने के लिए पूर्व-तैयारी की जरूरत होती है।

इस तरह की पूर्व-तैयारी को गांधीजी ने नाम दिया—रचनात्मक कार्यक्रम। ऐसे रचनात्मक काम के लिए निष्ठा और धैर्य की आवश्यकता होती है, जो सामान्य जनता में नहीं होती। लोग पुण्य का फल प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं जरूर, लेकिन जरूरी पुण्य या तपश्चर्या नहीं करना चाहते।

आज मैं वर्ण-व्यवस्था का अभिमानी या प्रोत्साहक नहीं रहा, लेकिन उस व्यवस्था की सुन्दरता मैं जानता हूं। लोगों के सामने सुन्दर-सुन्दर आध्यात्मिक आदर्श रखना ब्राह्मणों का काम है, विचारों को प्रेरक और रोचक रूप देना भी उन्हीं का काम है। क्षत्रिय पूरी बहादुरी से लड़ने के लिए तैयार होते हैं। जान-माल को न्यौछावर करने की तैयारी उनसे बहुत जल्दी होती है। लेकिन समाज का संगठन करना, खेती, पशु-पालन, उद्योग, हुनर और तिजारत आदि के द्वारा समाज को सम्हालना, समर्थ बनाना और भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच सामंजस्य स्थापित करके सहयोग को सार्वभौम बनाना, यह काम तो बनिये का ही है। गांधीजी में बनिये के ये सब गुण थे। इसके अलावा वह लोकोत्तर तेजस्विता और चातुर्य से भरे हुए सेनापति भी थे। क्षत्रिय तभी लड़ सकता है, जब बनिया उसे पूर्व-तैयारी कर देता है। यूरोप के लोकोत्तर सेनापति नेपोलियन ने कहा था—'सेना चलती है पेट पर।' गांधीजी ने कहा था कि सत्याग्रह की सफलता का आधार रहता है रचनात्मक कार्यक्रम पर। उन्होंने यहांतक कहा था कि 'मेरा रचनात्मक कार्यक्रम अगर सारा राष्ट्र पूरी तरह से सफल करदे, तो सत्याग्रह के बिना ही मैं आपको स्वराज्य ला दूंगा।'

गांधीजी के इसी रचनात्मक-कार्य का पूरा महत्व जाननेवाले इने-गिने लोगों में भी जमनालालजी का स्थान बहुत ऊंचा था। यह गुण तो मनुष्य की आस्तिकता में से ही प्रकट होता है। क्षत्रिय भले ही लड़कर

राज्य प्राप्त कर लें, राज्य चलाने का काम भले ही क्षत्रियों का माना जाय, पर दरअसल वह है बनिये का ही काम। चार आश्रमों में जिस तरह अनुभव से सिद्ध हुआ है कि गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है, उसी तरह हमें समझना चाहिए कि चार वर्णों में भी श्रेष्ठता कबूल करनी चाहिए वैश्य-वर्ण की। वैश्य-धर्म की सार्वभौमता के नीचे ही ब्राह्मण-धर्म और क्षात्र-धर्म अपने-अपने काम में कृतार्थ हो सकते हैं। 'बनिया गांधीजी' का सामर्थ्य किसमें है, यह अचूक देख सके 'बनिया-शिरोमणि जमनालालजी' ही।

यह सब जाननेवाले लोग जमनालालजी की बासरियों के प्राथमिक वर्षों में भी रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर उनका झुकाव देख सकेंगे। इस प्रेरणा को समझने के बाद ही हम खयाल कर सकते हैं कि जमनालालजी सारे देश में इतनी तेजी से क्यों घूमते थे। देश के छोटे-बड़े सब कार्यकर्ताओं का संपर्क साधकर उनके साथ हृदय की आत्मीयता कैसे स्थापित करते थे। जमनालालजी की यह विशेषता और उनका हृदय सामर्थ्य देखकर ही मैंने उन्हें 'सबों के स्वजन' कहा था।

आज देश के हितचिंतक एक आवाज से रो रहे हैं कि देश की एकता कहां गई? क्यों सर्वत्र फूट-ही-फूट बढ़ रही है? क्या इसका कोई इलाज हो नहीं सकता?

इलाज हमें गांधीजी के और जमनालालजी के जीवन में ही मिलता है। छोटे-बड़े सब भेदों को भूलकर सबको अपनाने के लिए हृदय की जो विशालता और प्रेम की संजीवनी चाहिए, वह जमनालालजी में पूरी मात्रा में थी। इसलिए वह सारे देश के, सब धर्मों के, सब क्षेत्रों के और तरह-तरह के विचारों के लोगों को अपना सके थे। संत तुकाराम ने कहा है, "आप जो प्रेम अपने लड़के-लड़कियों और रिश्तेदारों के प्रति बताते हैं, वही यदि आप अपने दास-दासियों के प्रति, नजदीक के लोगों के प्रति और पड़ोसियों के प्रति बता सकें, तो आपके अंदर दैवी शक्ति अवश्यमेव प्रगट होगी।"

जमनालालजी जहां-जहां जाते थे, वहां के कार्यकर्ताओं के साथ और

उनके परिवार के साथ एकरूप होते थे। व्यवहार चतुर जमनालालजी लोगों के दोष और उनकी खामियां नहीं देख सकते थे, सो नहीं। किन्तु उनका हृदय क्षमाशील और उदार था। उनका अनुकरण करने वाले उनकी निःस्पृह भाषा का प्रयोग कर देते हैं। किन्तु उनकी उदारता कहां से लावें? और उनके प्रेम की निःस्वार्थता भी कहां से प्रकट करें? जिनमें ऐसी उदारता है, उनको जमनालालजी के जैसी सिद्धि भी मिल रही है। अध्यात्म के नियम अटल और सार्वभौम होते हैं।

एक-एक व्यक्ति मिलकर राष्ट्र बनता है, इसलिए हरेक में हमें दिलचस्पी होनी चाहिए और हरेक के यथाशक्ति सहायक होने की हमारी तत्परता भी होनी चाहिए। जमनालालजी की यह कार्यकारी आत्मीयता जिनमें होगी, वे ही सच्चे राष्ट्र-पुरुष बनेंगे।

सन् १९१५ से १९२९ तक जो कार्य गांधीजी ने और उनके साथियों ने धैर्य के साथ किया, उसी का शुभ परिणाम सन् १९३० से शुरू होने वाली और सन् १९४५ से सफल होने वाली क्रांति में हम देख सकते हैं।

इस क्रांति के राजनैतिक क्षेत्र में जवाहरलालजी ने अपना बल जगाया। किन्तु जीवन-परिवर्तन के और राष्ट्र के नव-निर्माण के क्रांतिकारी क्षेत्र में अपना पूरा-पूरा बल जगाया जमनालालजी ने और उनके छोटे-बड़े सब साथियों ने।

मैं साथियों का नाम इसलिए लेता हूं कि लोग सारा ध्यान मुख्य-मुख्य नेताओं के नाम पर ही लगाते हैं। राष्ट्र जीवन को सजीवन करनेवाली क्रांति एक आदमी से कभी नहीं होती। जिस तरह व्यक्ति का कुटुंब-कबीला और वंश-विस्तार होता है, वैसे ही संन्यासियों की शिष्य-शाखाएं और भक्त-परिवार भी होते हैं और राष्ट्रपुरुष के पुरुषार्थों में शरीक होने वाले और उसे सिद्ध करने में अपना हिस्सा अदा करने वाले साथियों की भी संख्या कम नहीं होती। सबके पुरुषार्थ का सम्मिलित फल ही राष्ट्र का उत्थान है। इसलिए जमनालालजी के जीवन-कार्य का जिक्र या चिंतन

करते समय उनके सब साथियों का भी स्मरण करना चाहिए। जमनालालजी कभी अकेले थे ही नहीं। जितने लोगों को उन्होंने अपनाया है, वे सब उनकी विभूति में सम्मिलित हैं।

अगर देवों में नये अवतार को पहचानने की शक्ति होती है तो अवतार में भी अपने साथियों को पहचानने की शक्ति होनी ही चाहिए। हम इसे तारा-मैत्रक कह सकते हैं। गांधीजी के पास असंख्य लोग आये। चंद लोगों को गांधीजी ने स्वयं बुलाया। चंद अपने-आप आकर गांधीजी से चिपक गये। लेकिन दो आदमियों के बारे में मैं जानता हूं जिन्हें देखते ही गांधीजी ने पहचान लिया कि इनके साथ अभेद-भक्ति का संबंध बंधने वाला है। एक थे महादेव देसाई और दूसरे थे जमनालालजी। और खूबी यह कि इन दोनों ने जैसे ही गांधीजी को पहचाना, वैसे ही एक-दूसरे को भी तुरंत पहचान लिया। महादेवभाई ने जमनालालजी को जो खत लिखे थे, उसमें से चंद खत मैंने पढ़े हैं। उसपर से कह सकता हूं कि दोनों का परस्पर आकर्षण भी कम अद्‌भुत नहीं था। गांधीजी के आश्रमियों में से श्री विनोबा भावे का वर्धा जाना भी मैं इसी तरह का ईश्वरी संकेत या युगरचना या व्यवस्था मानता हूं।

अन्योन्य संबंध की यह प्रेम-शृंखला कैसे बढ़ती गई, यह देखने का आनंद जैसे गांधीजी के चरित्रकार को मिलता है, वैसे ही जमनालालजी के चरित्र-कार को भी मिलेगा। परस्पर मिलन, परस्पर सहयोग, यह कोई आकस्मिक घटना नहीं होती। सृष्टि में परस्पर संबंध का विशाल जाल फैला हुआ रहता है। उसीके अनुसार सबकुछ होता है। कोई भी घटना अकस्मात होती नहीं। हरेक घटना का 'कस्मात्', हम जानें या न जानें, होता ही है। जब मनुष्य-जाति की ज्ञान-शक्ति बढ़ेगी, तब मनुष्य ऐसे संबंध को पहचान-कर ही इतिहास लिखने बैठेगा। आजकल के इतिहास अंधों के प्रयास हैं। ज्ञानमय प्रदीप प्राप्त होने के बाद ही मानव-जाति की सच्ची जीवन-गाथा लिखी जायगी। गांधी-कार्य का प्रयोग, रहस्य और उसकी कृतार्थता तभी दुनिया के सामने पूर्ण रूप से प्रकट होगी।

गांधीजी के संपर्क में आने के वाद जमनालालजी का सारा जीवन ही वदल गया था। उसका प्रतिविव उनकी वासरियों में जरूर मिलेगा। ऐसी वासरियों के लगभग दस खंड प्रकाशित होने वाले हैं। इन सब खंडों को पढ़ने के वाद ही जमनालालजी की इन अंतर्मुखी आत्मनेपदी प्रवृत्तियों के लिए योग्य भूमिका लिखी जा सकती है। इन प्रथम खंडों में तो उनकी पूर्व-तैयारी की थोड़ी कल्पना ही आ सकती है।

गांधीजी ने हिन्दु-धर्म में और हिन्दु-समाज में जो महान परिवर्तन किये, उसमें संन्यस्त जीवन को नया रूप दिया, जिसका महत्व कम नहीं है। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण जमनालाल जी के जीवन में चरितार्थ होता पाया जाता है। यह समझकर ही जमनालालजी की ये वासरियां पढ़नी चाहिए।

सन्निधि, राजघाट,
नई दिल्ली

—काका कालेलकर

पृष्ठभूमि

भारत की आजादी-प्राप्ति के अहिंसक संघर्ष में सन् १९३० से सन् १९३३ तक का समय अत्यंत महत्वपूर्ण था। ३१ दिसंवर, १९२९ की रात को १२ वजे लाहौर-कांग्रेस में महात्मा गांधी का आजादी का प्रस्ताव पास हुआ। गांधीजी की दृष्टि से यह प्रस्ताव आजादी प्राप्ति के संघर्ष का संकल्प था। इसके वाद वह इस चिंतन में लग गए कि इस आंदोलन का स्वरूप कैसा हो और उसे जन-व्यापक वनाने के लिए क्या किया जाय। एक तरह से १९२९ में गांधीजी ने फिर से कांग्रेस का नेतृत्व संभाल लिया था। कांग्रेस का ध्येय 'डोमीनियन स्टेटस' से वदल कर पूर्ण आजादी हासिल करने का वन गया था। इस ध्येय की प्राप्ति के लिए कदम उठाने की तैयारी होने लग गई थी। देश में साइमन-कमीशन के वहिष्कार के कारण लाठियां चलीं। लाला लाजपतराय जैसे शीर्ष नेता की लाठी के मार से मृत्यु हुई। जवाहरलालजी पर भी लाठियां पड़ीं। कमीशन जहां-जहां गया, उनमें से कई स्थानों पर लोगों को मारपीट सहनी पड़ी। एक तरह से आजादी का संघर्ष शुरू करने की देश की तैयारी हो गई थी। २६ जनवरी को पहला आजादी-दिवस मनाया गया। सावरमती में जो वर्किंग कमेटी की बैठक हुई, उसमें नमक का कर तोड़ने की वात वापूजी ने कही। प्रत्येक व्यक्ति नमक का उपयोग करता है और उस पर उसे कर देना पड़ता था। जव इस वात का जनता को पता लगा कि नमक के लिए उसे कर देना पड़ता है, तो वह जन-जन का आंदोलन वन गया।

जमनालालजी १९२४ से १९२९ तक गांधीजी के रचनात्मक कार्यों में पूर्ण रूप से तन्मय हो ही गए थे। वैसे ही जव गांधीजी ने आजादी की लड़ाई शुरू करने का विचार किया तो जमनालालजी पूरी शक्ति के साथ उसमें लग गए दिखाई पड़ते हैं। यों गांधीजी की आजादी की लड़ाई में वंवई का महत्वपूर्ण योगदान रहा; उसमें भी वंवई के उपनगरों में गांधीजी

के तत्वों का अधिक प्रभाव था। इसलिए जमनालालजी को उपनगरों के काम का नेतृत्व सौंपा गया।

१९३० का यह अहिंसक युद्ध अपूर्व था। ११ मार्च को दांडी-कूच के लिए साबरमती-आश्रम से प्रयाण करते समय गांधीजी ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं आजादी लेकर ही आश्रम में वापिस आऊंगा। यद्यपि संघर्ष तो ६ अप्रैल को नमक-कानून भंग करके नमक बनाने से शुरू होनेवाला था, पर सरकार ने ७ मार्च को ही सरदार वल्लभभाई पटेल को गिरफ्तार करके संघर्ष का प्रारंभ कर दिया था। लोगों को भय था कि ११ मार्च की रात को ही गांधीजी भी पकड़े जायंगे। इसलिए ११ ता० की शाम को साबरमती के किनारे हुई प्रार्थना-सभा में एक लाख से भी ज्यादा लोग उपस्थित थे। उनमें से कई लोग तो रात को वहीं रह गए, ताकि गांधीजी की गिरफ्तारी के समय उनके दर्शन कर सकें। साबरमती से दांडी-कूच का रास्ता निश्चित था। इस कूच में ७८ लोग थे जिन्होंने आजादी की प्रतिज्ञा लेकर गांधीजी के साथ जाने का निश्चय किया था। जमनालालजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री कमलनयन बजाज भी उनमें से एक थे।

जमनालालजी ने बंबई के उपनगर में विलापार्ला क्षेत्र चुना था। यहां की राष्ट्रीय शाला में गांधीजी के सिद्धांतों के प्रति निष्ठा रखने वाले किशोरलालभाई, गोकुलभाई भट्ट, दिलखुश दिवानजी, मावजीभाई आदि शिक्षक थे तथा कार्यकर्ताओं में स्वामी आनन्द, खेर, मार्कंडराय मेहता, पुरुषोत्तमदास कानजी, रमणीकराय मेहता, मणीबेन नाणावटी, कमलाबेन सोनावाला जैसे सहयोगी थे। यदि डायरियों में उस समय की जानकारी मिलती तो अच्छा होता। लेकिन १९३० का प्रारंभ होता है ३ जनवरी से ६ जनवरी और उसके बाद २७ जनवरी से ३० जनवरी तक। फिर १२-६-३० नासिक जेल से उसका प्रारंभ होता है। बीच का महत्व का समय छूट जाता है। चूंकि विलापार्ला सत्याग्रह छावनी में रहकर काम करने का अवसर मुझे भी मिला था, इसलिए बीच के समय की संक्षिप्त जानकारी पाठकों को कराके वह कड़ी जोड़ना आवश्यक लगता है।

१९३० का सत्याग्रह, या कानून-भंग आंदोलन, पूर्णरूप से अहिंसक आंदोलन रहा जिसकी साक्ष विदेशी पत्रकारों तक ने दी। यह अद्भुत आंदोलन था। एक तरफ तो विलकुल निहत्थे अहिंसक लोग और दूसरी तरफ लाठी और बंदूकधारी लोग। पर शांतचित्त से मार खाने और प्राणों की आहुतियां देने में सत्याग्रहियों ने अपूर्व शौर्य दिखाया जिसका परिणाम कई जगह सरकारी कर्मचारियों पर भी हुआ था। जमनालालजी ने स्थान भी कार्य के लिए वहुत अच्छा चुना था, या यों कहा जाय कि गांधीजी ने वहुत उपयुक्त स्थान पर उनकी नियुक्ति की थी। विलापार्ला आते ही जमनालालजी ने अपनी कार्य-पद्धति के अनुसार इस कार्य के लिए कार्यकर्ताओं और सहानुभूति रखनेवालों से संपर्क किया। थोड़े ही दिनों में छावनी की ऐसी व्यवस्था कर ली जिससे आजादी की इस जंग में विलापार्ला छावनी ने वहुत अच्छा काम करके ख्याति प्राप्त की।

६ अप्रैल को नमक-कानून भंग करना—ऐसा आदेश था। तदनुसार जव नमक वनाने के लिए समुद्र से पानी लाने गये, तभी जमनालालजी सेनापति होने के नाते और किशोरलालभाई मश्रुवाला व गोकुलभाई भट्ट छावनी के मंत्री होने के नाते गिरफ्तार कर लिये गए। उनके वाद दूसरी टुकड़ी आगे आई जिसमें स्वामी आनन्द सेनापति व खेर तथा वान्द्रेकर मंत्री थे। उन्हें भी कुछ दिनों वाद गिरफ्तार कर लिया गया तो तीसरे सेनापति वने अव्दुल्ला सेठ और मंत्री मार्कंडराय मेहता व मैं। जव अव्दुल्ला सेठ पकड़े गए तो सुप्रसिद्ध वौद्ध विद्वान धर्मानंदजी कौसांवी मंत्री हुए।

करीव १०० सत्याग्रही वहिन और भाई छावनी में रहते थे। सुवह की प्रार्थना से लेकर उनका सारा समय व्यवस्थित काम में लगाना और नियमित रूप से स्वयंसेवकों को कानून भंग के लिए भिजवाना शुरू किया गया। सत्याग्रह का यह सिलसिला विना टूटे चलता रहे, इसलिए महाराष्ट्र तथा विदर्भ से स्वयंसेवक आये। वैश्य विद्याश्रम, सासवना के विद्यार्थी और शिक्षक भी छावनी में थे। जगह-जगह छावनियां वनाकर वहां चरखे

का रचनात्मक काम शुरू किया गया। यह काम केवल वंबई के उपनगरों में ही नहीं किंतु थाना जिले के घणसोली विभाग में भी चला। विलापार्ला के स्वयंसेवकों ने सुप्रसिद्ध धारासणा में नमक लूटने के सत्याग्रह में हिस्सा लिया था जहां निश्शस्त्र स्वयंसेवकों को काफी मार खानी पड़ी थी। कइयों के जख्म भयानक थे। जमनालालजी की गिरफ्तारी के वाद भी जानकीदेवीजी अपनी पुत्रियों के साथ छावनी में थीं। किशोरलालजी मश्रुवाला की पत्नी गोमती वहिन तथा अन्य वहुत-सी वहिनें छावनी में रहती थीं, और शराव की दुकानों पर धरना देने जाती थीं। विलापार्ला छावनी के काम की कीर्ति वंबई में काफी फैल गई थी और लोग आकर स्वेच्छा से रुपये दे जाते थे। वंबई ही नहीं, उसकी कीर्ति देश में चारों ओर फैली थी। जव स्व० मोतीलालजी नेहरू छावनी देखने आये तो वहुत ही खुश हुए और छावनी के कार्यकर्ताओं की उन्होंने भरपूर प्रशंसा की। अंत में ११ अक्टूवर को छावनी जब्त कर ली गई और सभी स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया गया। रचनात्मक कार्यों की तरह जमनालालजी ने संघर्ष की भी ऐसी व्यवस्था की थी कि उनके जेल जाने के वाद भी वह वरावर चलता रहा।

७ अप्रैल को वह जेल गए। प्रथम कुछ दिन उन्हें थाना जेल में रखा गया। फिर उनकी, किशोरलालभाई व गोकुलभाई भट्ट के साथ, नासिक जेल में वदली हुई। १२ जून, १९३० से, नासिक जेल से, डायरी की शुरुआत होती है। जून के मध्य तक गोकुलभाई व किशोरलालभाई साथ में रहते हैं, पर १६ तारीख को गोकुलभाई की सी-वर्ग में व किशोरलालभाई की वी-वर्ग में वदली कर दी जाती है। जमनालालजी को मित्रों का साथ छूटने का रंज रहता है और वह ए–वर्ग में रहते हुए भी सी–वर्ग का भोजन लेना शुरू करते हैं। पर उसका स्वास्थ्य पर विपरीत परिणाम हुआ, वजन घटा तव जेलर के कहने से दूध लेने की शरुआत की।

आगे की लड़ाई की तैयारी की दृष्टि से जेल-जीवन को भी उपयोगी वनाने का जमनालालजी का प्रयत्न जेल में दिखाई पड़ता है। जेल में

आनेवाले साथियों से सम्पर्क बढ़ाकर आगे काम की तैयारी करते हुए वह दिखाई पड़ते हैं। बाहर के व्यस्त जीवन में जो पढ़ाई, स्वाध्याय कम होता था, उसकी पूर्ति का प्रयत्न भी जेल-जीवन में किया हुआ दिखाई पड़ता है। वैसे ही जेल में आये हुए विभिन्न साथियों के साथ विविध विषयों पर बातचीत भी होती रहती है। इस तरह जेल में उनका बौद्धिक चिंतन भी अच्छा हुआ और साथ-साथ आत्मविवेचन भी।

जमनालालजी अपने से छोटे-बड़े सभी के सुख-दुख का खयाल रखते हुए, और संबंधों को निभाने के लिए सतत जाग्रत दिखाई पड़ते हैं। बातचीत या चर्चा में जब कहीं कटुता आ जाती है तो गहराई से आत्म-निरीक्षण भी करते हैं और आगे भूल न हो, इस ओर प्रयत्न भी करते हैं।

एक और विचार उनके मन में चलता रहता है, वह यह कि सरकारी अत्याचार अधिक होकर २००-३०० लोगों की मृत्यु हो जाय तो उसका परिणाम अच्छा हो सकता है। इस महायज्ञ में परिवार के किसी सदस्य या आत्मीय की आहुति भी पड़े, ऐसी उनकी हार्दिक इच्छा थी। उन्होंने अपने एक स्वप्न का जिक्र डायरी में किया है जिसमें उन्होंने देखा कि उनके पुत्र कमलनयन को गोली लगी और उसकी मृत्यु हो गई।

जमनालालजी के मित्रों व सहयोगियों का परिवार कितना बड़ा था, उनके संबंध कितने व्यापक थे, यह सब डायरी में किये उल्लेख से मालूम होता है। सच तो यह है कि संपर्क में आये हुए इन सब व्यक्तियों के परिचय के बिना जमनालालजी के जीवन व उनके कार्यों पर ठीक से प्रकाश नहीं पड़ सकता। यदि उन सब व्यक्तियों का सम्यक् परिचय दिया जाय तो एक स्वतंत्र पुस्तक ही बन सकती है। लेकिन फिर भी कुछ प्रमुख व्यक्तियों और उनके कार्य का परिचय देना उचित तो होगा ही, साथ ही आवश्यक भी होगा।

मश्रुवाला-परिवार से जमनालालजी का व्यावसायिक तथा घरेलू संबंध था। किशोरलालभाई के बड़े भाई, बालुभाई, रूई व्यवसाय में

जमनालालजी के साथ थे। किशोरलालभाई के सार्वजनिक जीवन के कारण इस व्यावसायिक व घरेलू संबंध में और अधिक निकटता हो गई। किशोरलालभाई गांधीवाद के एक सुलझे हुए व्याख्याता थे। वह गांधीजी के उन साथियों में से थे जिनमें स्वतंत्र चिंतन का माद्दा था और जो उसकी निःसंकोच व निष्पक्ष चर्चा भी कर सकते थे। कई वार उनके व गांधीजी के विचारों में अंतर भी पड़ता था, लेकिन उसके वावजूद गांधीजी के प्रति असीम आदर उनमें था व उनके संपूर्ण अनुशासन में रहने वाले कर्मठ व्यक्ति वह थे। जमनालालजी के अनुरोधवश गांधी-सेवा-संघ की अध्यक्षता की जिम्मेदारी उन्होंने ली थी। जब हुवली गांधी-सेवा-संघ की कांफ्रेंस में वल्लभभाई पटेल व राजेन्द्रवावू से चुनाव के विषय में उनका मतभेद हुआ तो उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया; वाद में गांधीजी ने वह पद सम्हालने का आदेश दिया तो उसका पालन कर अनुशासन का अद्वितीय उदाहरण किशोरलालभाई ने पेश किया था। स्वतंत्र चिंतक व सत्य के वह अनन्य खोजी थे। आगे चलकर जमनालालजी ने आग्रहपूर्वक उन्हें वर्धा में वसाया, और वहीं उनकी मृत्यु भी हुई।

१९३० में जेल में जिन-जिन लोगों का विशेष संपर्क आया उनमें वंबई के कांग्रेस के प्रधान के० एफ० नरीमन भी थे। श्री नरीमन वंबई में वहुत लोकप्रिय थे। वाद में वल्लभभाई ने अनुशासन के हित में उन्हें कांग्रेस से निष्कासित कर दिया था। जमनालालजी चाहते थे कि ऐसे योग्य व कर्मठ व्यक्ति के खिलाफ इतनी सख्ती न वरती जाय, उसकी शक्ति का उपयोग किया जाय। नरीमन के अलावा, डा० खेर और सुभाषवावू के खिलाफ हुई कार्यवाही का श्री जमनालालजी ने कांग्रेस-कार्यकारिणी में विरोध किया था। उनका मानना था कि इन्हें विरोधी वनाने में कांग्रेस का लाभ नहीं है। लेकिन राजनीतिज्ञ सरदार पटेल को अनुशासन के संवंध में समझौता पसंद नहीं था।

१९३० में जिनसे विशेष संपर्क आया, उनमें श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी भी एक थे। श्री मुंशी गुजराती के अच्छे साहित्यिक, सामाजिक

व राजनैतिक कार्यकर्ता हैं। इनसे भी आगे चलकर जमनालालजी का घरेलू-सा संवंध वन गया था।

जेलयात्रा में अनेक मित्र नये वने, पुराने मित्रों से घनिष्ठता वढ़ी। देशहित में उन सवका कैसे उपयोग किया जाय, इस ओर जमनालालजी का निरंतर प्रयास रहता था। साथ-साथ नये वर्ष के लिए नये संकल्प उनके चलते रहते थे। अपने ४१वें वर्ष में प्रवेश के समय जो संकल्प उन्होंने किये थे उनसे जमनालालजी की गांधीजी के विचारों के प्रति निष्ठा, कर्मण्यता, और सत्यता की स्पष्ट झलक मिलती है। वे संकल्प थे:

१. कम-से-कम एक मंदिर व पांच कुएं अस्पृश्यों के लिए खुलवाना।

२. एक वाल-विधवा या अंतर-उपजातीय संवंध करवाना।

३. एक सच्चा मित्र प्राप्त करना; संभव हो वहां तक मुसलमान, अस्पृश्य, पारसी, ईसाई और अंग्रेज में से हो।

४. एक परिवार देश-सेवा के लिए तैयार करना।

५. कम-से-कम एक कुटुंव की, जो सचाई से सेवाकार्य करता हो, सहायता करना।

६. कीर्ति की लालसा, होशियारी का घमंड कम करना।

जमनालालज़ी अपने व्यवहार में स्वयं तो सावधानी वरतते ही थे, लेकिन यदि कोई मित्र अच्छा सुझाव दे तो उस ओर भी सचाई से ध्यान देते थे। ३-१२-३० को श्री उसमान सोवानी ने उन्हें कहा कि वोलचाल में आपकी आवाज ऊंची रहती है। सोवानी ने यह वात वड़े प्रेम से नम्रतापूर्वक कही थी, और जमनालालजी ने अपनी भाषा में सुधार करने का सच्चा प्रयत्न किया था।

२६ जनवरी, १९३१ को जयकर व सप्रू की मध्यस्थता से जेल से नेताओं को छोड़ने का निश्चय हुआ। जमनालालजी भी २६ तारीख को जेल से छूटकर २७ तारीख को वंवई पहुंचे। १९३१ की संपूर्ण डायरी उपलब्ध नहीं है। या तो खो गई या लिखी न गई हो। लिखी न जाना

संभव नहीं लगता क्योंकि वह २६ जनवरी तक जेल में थे और जेल में बराबर लिखना होता ही था।

१९३१ का वर्ष वैसे बड़ा महत्वपूर्ण रहा है। इस वर्ष के प्रारंभ में सरकार और गांधीजी तथा अन्य कांग्रेस नेताओं के बीच समझौता-वार्ता शुरू हुई। काफी विचार-विनिमय के बाद ५ मार्च को सुलह हुई जिसमें कांग्रेस की बहुत-सी बातें मान ली गईं और दूसरी गोलमेज-परिषद में कांग्रेस हिस्सा ले, इसका वातावरण बना। मार्च मास में ही करांची-कांग्रेस सरदार वल्लभभाई पटेल की अध्यक्षता में हुई। इस दौरान जमनालालजी की गतिविधियों की जानकारी सन् १९३१ में हुए उनके पत्र-व्यवहार से मिलती है। ३१ जनवरी को वह वर्किंग कमेटी के लिए इलाहाबाद पहुंचे जहां ३ फरवरी तक कांग्रेस के नेता एकत्र होकर सुलह के विषय में विचार करते हैं। ६ फरवरी को पं० मोतीलाल नेहरू की मृत्यु हुई। १५ फरवरी को जमनालालजी पटना पहुंचते हैं जहां उनके मित्र, श्री रामकृष्ण डालमिया, की पुत्री रमा जैन उन्हें लेने आती हैं। वहां से वह कलकत्ता जाते हैं। फिर गांधीजी की दिल्ली में समझौता-वार्ता चलती है; तब उनका दिल्ली में होना स्वाभाविक है।

करांची-कांग्रेस में जमनालालजी जाते हैं। वहां उन्हें श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के हिंदु-मुस्लिम झगड़े में मारे जाने की खबर मिलती है। यों करांची-कांग्रेस बड़े ही गंभीर वातावरण में होती है। सरदार भगतसिंह और उनके साथियों को फांसी होती है। इससे युवकों में क्षोभ रहता है। फिर उग्रपंथियों को सरकार के साथ समझौता अच्छा नहीं लगता। कांग्रेस कमेटी के जिम्मेदार सदस्य के नाते जमनालालजी को वर्किंग कमेटी की चर्चाओं में हिस्सा तो लेना ही पड़ता है, पर गांधीजी के रचनात्मक कामों की तथा कार्यकर्ताओं की चिंता भी करते रहते हैं। गणेशजी के साथ जमनालालजी की मित्रता थी। हिंदु-मुस्लिम झगड़ा शांत करने में हुआ गणेशजी का बलिदान जैसे दुःखदायक बनता है, वैसे ही उनके प्रति आदर का भाव और भी बढ़ जाता है।

जमनालालजी यह आत्मीय संबंध उनके पुत्र के साथ निभाते हुए दीख पड़ते हैं।

अप्रैल का महीना करांची से आने पर कहां बीता, इसकी जानकारी नहीं मिलती। पर मई में वह बंबई आये, ऐसा पत्रों से मालूम होता है। कर्नाटक में मई मास में जो राजनैतिक-परिषद हुई, उसमें सभापति बनकर वह गये। वैसे गंगाधररावजी देशपांडे आदि मित्रों के कारण कर्नाटक से उनका विशेष संपर्क रहता है और वहां के राजनैतिक तथा रचनात्मक कार्यों में जमनालालजी का सक्रिय सहयोग रहता था। शायद वह खादी के कार्य के लिए कर्नाटक घूमे भी हों, ऐसा लगता है। फिर वापिस लौटकर बंबई आते हैं और यहां से उदयपुर के दीवान व हरविलासजी शारदा के साथ बिजोलिया के मामले में पत्र-व्यवहार होता है। कार्यकर्ताओं तथा जनता पर हुए अत्याचारों, खासकर शोभालालजी गुप्त पर हुए अन्याय, का परिमार्जन कराने के लिए वह प्रयत्न करते हैं।

जून का पूरा महीना तथा जुलाई का प्रथम सप्ताह वह मुख्य रूप से बंबई व वर्धा में बिताते हैं। इस समय राजनीतिक कार्यों के साथ-साथ गांधीजी जो रचनात्मक कार्य सुलह के दरम्यान करना चाहते थे, उन कामों की ओर वह विशेष ध्यान देते हैं। अस्पृश्यता निवारण, हिन्दु-मुस्लिम एकता, खादी के काम की व्यवस्था सुचारु रूप से करते हैं। जुलाई में वह राजस्थान जाते हैं। वहां मुख्य कार्य तो बिजोलिया की स्थिति को ठीक करना था, किंतु खादी-कार्य तथा अस्पृश्यता-निवारण का काम भी वह करते हैं। राजस्थान से २ अगस्त को साबरमती और अहमदाबाद गये थे, ऐसा पत्रों से लगता है। ५ से १२ अगस्त तक बंबई में ही रहते हैं, और बाद में अगस्त से सितम्बर मध्य तक वर्धा में हों, ऐसा लगता है। वर्धा से राजस्थान जाते हैं। अगस्त में गांधीजी को विदाई देने बंबई में रहते हैं।

गांधीजी सितम्बर से दिसम्बर तक लंदन में थे। लंदन में होनेवाले काम की जानकारी जमनालालजी को महादेवभाई देसाई तथा घनश्यामदासजी बिड़ला द्वारा बराबर मिलती है। वहां हिन्दु-मुस्लिम व अस्पृश्यों के

राष्ट्र-विरोधी रुख को देखकर इन कामों को यहां अधिक मात्रा में करने का उनका प्रयास रहता है। यद्यपि कांग्रेस का प्रयत्न रहता है कि गांधीजी और उनके साथियों ने सुलह की जो शर्तें मानी थीं वे भंग न हों। लेकिन लार्ड इर्विन की जगह लार्ड विलिंग्डन भारत के वायसराय वनते हैं। 'विलिंग्डन ने सुलह तोड़ने की हर कोशिश की किंतु गांधीजी के वापस भारत लौटकर आनेतक जमनालालजी और गांधीजी के चुस्त अनुयायियों का पूरा प्रयत्न रहता है कि सुलह-शर्तों का भंग न हो। २८ दिसम्बर को गांधीजी आते हैं और कहते हैं—"मैं खाली हाथ लौटा, किंतु मैंने देश की इज्जत को वट्टा लगे, ऐसा कोई काम नहीं किया।" लार्ड विलिंग्डन ने वंगाल ही नहीं, सीमाप्रांत में भी पठानों पर भयानक अत्याचार चालू रखे थे। उत्तर-प्रदेश में भी अशांति थी। श्री जवाहरलाल नेहरू गांधीजी से मिलने आ रहे थे कि रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिये गए। फिर भी गांधीजी ने, जैसा उनका तरीका था, अपनी ओर से शांति के प्रयत्न किये, किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। लार्ड विलिंग्डन ने राष्ट्रीय भावनाओं को दवा देने के लिए शक्तिशाली व्यवस्था कर रखी थी।

सन् १९३२ से जमनालालजी की डायरी फिर शुरू होती है। वापूजी वंबई में थे। १ जनवरी को देश के प्रमुख नेताओं के साथ उनकी वातचीत चलती है कि कांग्रेस को अव क्या करना चाहिए। १ जनवरी, १९३२ की डायरी का आरंभ गंभीर मंत्रणाओं से होता है। कांग्रेस कार्यकारिणी की सभाएं दिन-रात चलती हैं, रात के ३॥ तक वज जाते हैं। राष्ट्र के जीवन में ये दिन वहुत ही महत्वपूर्ण थे। जल्दी में कोई भूल न हो जाय, इसका सभी दृष्टि से गांधीजी और उनके साथी विचार कर रहे थे। पर समाधान के प्रयत्नों के वावजूद लार्ड विलिंग्डन ने लड़ाई की ही वात ठान ली। वापूजी व वल्लभभाई को ४ जनवरी की रात को ३। वजे गिरफ्तार कर लिया गया। ४ तारीख को ही कांग्रेस और उसकी शाखाओं तथा संवंधित संस्थाओं को ही नहीं, रचनात्मक काम करनेवाली अनेक संस्थाओं को अवैधानिक घोषित कर दिया गया। लोग काम न कर सकें, इसलिए आम

गिरफ्तारियां की गई। जमनालालजी ४ तारीख को वर्धा चले गए, और १४ तारीख तक वहां रहे। तबतक उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया था। इस मुद्दत में देश में कहां क्या हुआ, इसकी संक्षिप्त जानकारी डायरी में मिलती है। १५ तारीख को पं० मदनमोहनजी मालवीय का तार बंबई आने के लिए मिलता है। जमनालालजी बंबई जाते हैं और १६ जनवरी को गिरफ्तार कर लिये जाते हैं। भायखला जेल में उन्हें रखा जाता है। कहां कितने लोग गिरफ्तार हुए, उसका अन्दाजा फरवरी के शुरू में डायरी से मिलता है।

फ्रंटियर और यू० पी० में अधिक लोग गिरफ्तार हुए। १९३० में, सरकारी आंकड़ों के अनुसार, ५० हजार से ज्यादा लोग गिरफ्तार हुए थे। पर १९३२ में फरवरी के अन्त तक ही इस संख्या से अधिक लोग पकड़े गए। १२ मार्च को जमनालालजी को भायखला जेल से मुक्त कर दिया गया। वह अपना काम करते गए। १४ मार्च को उन्हें फिर गिरफ्तार करके मुकदमा चलाया गया और एक साल की सजा व पांच सौ रुपया जुर्माना हुआ। कमलनयनजी पहले ही उत्तर प्रदेश में तथा जानकीदेवीजी वर्धा में पकड़े गए थे। जानकीदेवी को ए-वर्ग तथा कमलनयनजी व जमनालालजी को सी-वर्ग मिलता है। उन्हें वीसापुर भेज दिया जाता है। १५ तारीख से २४ तारीख तक वह वीसापुर जेल में रहे, जो एक तरह से शिविर जैसा जेल था। वहां कान का इलाज ठीक न होने की संभावना से जमनालालजी को धुलिया भेजा जाता है। वहां वह २५ मार्च को पहुंचते हैं। धुलिया जेल में विनोबाजी तथा खानदेश के कार्यकर्ता पहले ही मौजूद थे। विनोबाजी हर सप्ताह गीता पर प्रवचन देते थे। पांच प्रवचन पहले ही हो चुके थे और छठा तथा आगे के सभी अध्याय जमनालालजी ने सुने थे। ये प्रवचन बाद में 'गीता प्रवचन' के नाम से प्रकाशित होकर बहुत बड़ी संख्या में बिके। कई भाषाओं में उनका अनुवाद भी हुआ, और कई संस्करण उनके प्रकाशित हुए। जमनालालजी को यहां का वातावरण अच्छा लगा। कई राजस्थानी लोग भी यहां थे। धुलिया जाने पर अप्रैल मास में उन्हें बी-वर्ग देने बाबत

सरकार ने सूचित किया, पर उन्होंने उसका विरोध किया और सी-वर्ग में रहना ही पसंद किया। धुलिया-जेल में विनोबाजी तथा खानदेश के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त मणिलाल कोठारी, गुलजारीलालजी नंदा, बैरिस्टर पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास तथा प्यारेलालजी आदि लोग भी थे। धुलिया-जेल में जमनालालजी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहा। चक्कर आने की शिकायत यहां भी थी। इसके अतिरिक्त कान का दर्द लगातार बना रहता था। तब भी उनका काम जेल में बराबर चलता रहा। जेल में जो कार्यकर्ता तथा साथी थे, उनका देश-सेवा में अधिकाधिक उपयोग कैसे हो इसका चिंतन तथा व्यवस्था का सुझाव तो चलता ही था, साथ ही बाहर के अपने आत्मीयजनों को भी वह न भूले। अपने मित्र रामकृष्णजी डालमिया की सुपुत्री रमा के विवाह का आमंत्रण मिलते ही जेल से आशीर्वाद का पत्र भी दिया, वैसे ही सर दोराबजी टाटा की मृत्यु के लिए संवेदना का पत्र भी भेजा। जेल में जो राजस्थानी भाई थे, उनसे समाज-सुधार संबंधी चर्चा करते रहे, तो खानदेश के सेवा पाटीदार जो काफी संख्या में जेल में थे उनसे भी सामाजिक सुधार की बात कहते हैं। पूर्व और पश्चिम खानदेश के सत्याग्रही कैदियों के अतिरिक्त नासिक जिले के भी कैदी धुलिया-जेल में थे। उनसे नासिक जिले के भावी कार्यक्रम के विषय में जमनालालजी योजना बनाते हैं।

सितम्बर में पू० बापूजी के उपवास से चिंता का वातावरण बनता है। नंदाजी तो उपवास के समाचारों से फूट-फूट कर रोते हैं। पर जमनालालजी ने धीरज रखा, सब को समझाया। २६ सितंबर को पूना-समझौते को प्रधानमंत्री मेकडॉनल्ड की स्वीकृति मिली, बापू का उपवास छूटा। उपवास छोड़ते समय गुरुदेव टैगोर प्रार्थना करते हैं, बा रस देती हैं, जवाहरलालजी और कमला नेहरू भी वहां उपस्थित रहे, ऐसा तार जमनालालजी को आता है। दूसरा दिन मिति के हिसाब से गांधी जयंती का यानी 'रेंटिया-बारस' है। जेल में चर्खे व तकलियों का अखंड सूत्र-यज्ञ चलता है।

२५-११-३२ को धुलिया से यरवदा-जेल में बदली होती है। २६ को यरवदा पहुंचते हैं। २० दिसंबर तक कान का इलाज चलता है। गांधीजी से यरवदा में २९ बार मुलाकात हुई, जिसमें अस्पृश्यता के कार्य के विषय में ही मुख्य चर्चा हुई दिखाई पड़ती है। गांधीजी ने 'हरिजन' पत्र की अस्पृश्यता-निवारण संबंधी फाइल दी। इन दिनों अस्पृश्यता-निवारण पर ही अधिक ध्यान केंद्रित रहा।

२४ मार्च, १९२३ तक जमनालालजी यरवदा जेल में रहे और २५ मार्च से ५ अप्रैल तक बंबई, आर्थर रोड जेल में। ५ अप्रैल को जेल से रिहाई हुई। ६ अप्रैल को अनेक मित्रों एवं साथियों से मुलाकात होती है। बापूजी के कार्य के लिए चंदा भी लेते हैं। ७ अप्रैल को पूना जाते हैं।

पूनमचन्दजी रांका खंडवा-जेल में उपवास कर रहे थे। बापूजी की राय से जमनालालजी स्वयं खंडवा गये और पूनमचंदजी को उपवास छोड़ने के लिए राजी किया। जमनालालजी के हाथ से ही दूध लेकर उन्होंने उपवास छोड़ा। १२ अप्रैल को जमनालालजी वर्धा आये; २३ तारीख तक वहां रहकर २६ अप्रैल को अल्मोड़ा पहुंचे। २८ अप्रैल को उनके मित्र सूरजमलजी रूइया के स्वर्गवास के समाचार वहां मिलते हैं। मई के प्रारंभ में बापूजी के २१ दिन के उपवास का निश्चय सुना। सो पूना जाने की तैयारी करते हैं, किंतु बापूजी के यह लिखने पर कि आने की फिलहाल जरूरत नहीं, वह रुक जाते हैं। २९ तारीख को उपवास टूटने के वक्त जमनालालजी पहुंचते हैं। जब जेल में रहे तो जेल में आये कार्यकर्ताओं की समस्याओं को सुलझाया और उन्हें सेवा-कार्य में सुविधा करने की दिशा में काम करते रहे; साथ-ही-साथ बापूजी के रचनात्मक कामों के सुव्यवस्थित संचालन की ओर भी विशेष ध्यान उनका रहता। जेल के बाहर भी बस काम, काम और अधिक काम। पूना से बंबई होकर वर्धा जाते हैं। जुलाई के अंत में बंबई होकर अहमदाबाद जाते हैं।

३१-७-३३ को अहमदाबाद में बापूजी को गिरफ्तार करके यरवदा जेल ले जाया जाता है। अगस्त में बापूजी उपवास करते हैं और उन्हें

छोड़ दिया जाता है। ९ सितंवर को जमनालालजी आराम के लिए चिकल्दा जाते हैं। पर वहां भी मेहमान और उनकी समस्याएं साथ नहीं छोड़ती हैं। वापूजी को भी वहां वुलाने का इरादा था, पर वापू ने वर्धा आने को लिखा। २३-९-३३ को वापू वर्धा पहुंचे। जमनालालजी उनके पहले ही वर्धा पहुंच जाते हैं। अक्टूवर में विट्ठलभाई का स्वर्गवास होता है। नवम्वर के तीसरे सप्ताह में वापूजी को चिकल्दा ले जाते हैं जो अमरावती जिले में ठंडी जगह है। फिर वापूजी के साथ जवलपुर जाते हैं, वहां कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मिले। वहां से वापूजी दिल्ली और जमनालालजी मालवा व राजस्थान के प्रवास में जाते हैं और कार्यकर्ताओं के साथ खादी के रचनात्मक-कार्य की योजना वनाते हैं। वहां से दिल्ली आना होता है। दिल्ली में फिर कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के साथ राजनीति संवंधी चर्चा और विचार होता है। वापूजी अस्पृश्यता-निवारण के कार्य की ओर विशेष ध्यान देते हैं और इसी प्रयोजन से आंध्र-प्रांत में दौरा करते हैं। दिल्ली में राजनीति के साथ-साथ गोपालन व डेरी संवंधी काम करके १५ दिसम्वर को जमनालालजी प्रयाग जाते हैं। तीन दिन इलाहावाद में रहते हैं जहां श्री जवाहरलाल नेहरू की घरेलू समस्याओं के वारे में वातचीत, हिन्दी-प्रचार का कार्य, और कार्यकर्ताओं से मुलाकात होती है। फिर वनारस पहुंचते हैं जहां शिवप्रसादजी गुप्त वीमार थे। उनसे मुलाकात के वाद पं० मदनमोहन मालवीयजी से मिलना व चर्चा। हिन्दु विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के समक्ष 'पढ़े लिखे व वेकारी' विषय पर भाषण। वनारस में भी और जगह की तरह व्यस्त कार्यक्रम ही रहता है। वनारस से डेरी जाते हैं जहां रोहतास इंडस्ट्रीज शक्कर मिल का प्रारंभ उनके हाथों से होता है। श्री रामकृष्ण डालमिया, उनकी पुत्री रमा जैन व दामाद शांति-प्रसाद जैन आदि से वातचीत होती है।

२१ दिसंवर को कलकत्ता रवाना होते हैं। कलकत्ता में अपने मित्र व आत्मीयजनों के विशाल परिवार से मिलना-जुलना चलता है। एक ओर विड़लाजी जैसे उद्योगपति से उनका संवंध था तो दूसरी

ओर सर जगदीशचन्द्र बसु जैसे सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों से भी आत्मीयता थी। इधर सामाजिक कार्यकर्ताओं से मिलते हैं तो उधर राजनीतिज्ञों से भी मिलना-जुलना चलता है। कोई उनसे व्यापार में उत्साह लेता है तो कोई घरेलू मामलों में। कोई आर्थिक समस्या सुलझाने में मार्गदर्शन चाहता है तो कोई सामाजिक समस्या में। अर्थात अविश्रांत काम चलता रहता है। २५ दिसम्बर को कलकत्ता से रवाना होते हैं। जबतक कलकत्ता में रहे, उन्होंने देश-कार्य की ही चिंता रखी दिखाई देती है। जुगलकिशोरजी बिड़ला अपनी आय का अमुक हिस्सा सेवा-कार्य में खर्च करने की इच्छा बताते हैं तो अन्य कार्यकर्त्ताओं से जमनालालजी कार्य करने का संकल्प करवाते हैं। प्रवास में भी लोगों का मिलना-जुलना और काम की बातें विभिन्न स्टेशनों पर आनेवालों से होती रहती हैं। २७ ता० को वर्धा पहुंचकर ३० ता० तक वर्धा रहते हैं और ३१ तारीख को सत्याग्रहियों को विदा देने नागपुर पहुंचते हैं।

जमनालालजी का राजनैतिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक लोगों से कितना विशाल और व्यापक संपर्क था, इस संपर्क का वह किस तरह समाज और राष्ट्र के हित में उपयोग करते थे उसकी प्रस्तुत डायरियों से झांकी मिलती है। साथ-ही आजादी की लड़ाई के एक महत्वपूर्ण काल की घटनाओं की जानकारी भी इनसे मिलती है। अतः हमारी आजादी की लड़ाई के इतिहास की दृष्टि से इस डायरी का अत्यंत महत्व है।

--रिषभदास रांका

सत्याग्रही जमनालाल वजाज : धुलिया जेल कैंदी नं० १२५१४

जमनालालजी की

डायरी

तीसरा खंड

१९३०

लाहौर, ३-१-३०

सुवह जहांगीर का मकवरा व शाही मसजिद देखी। दोपहर को कांग्रेस प्रदर्शनी घूमकर आये और पंडित जवाहरलालजी से वातें की। उन्होंने कहा, उन्हें, वापूजी व मोतीलालजी को गिरफ्तार करने की पंजाव सरकार को सेंट्रल सरकार ने परवानगी नहीं दी ऐसा पता चला।

श्री फकीरचन्दजी के यहां भोजन व वातें। श्री मुकुन्दलालजी के वालकों से ठीक तौर से परिचय हुआ।

४-१-३०

सुवह सर शादीलालजी की छोटी पुत्री वेदवती को साथ लेकर रणजीतसिंह की समाधि, अजायवघर, माडल टाउन, लाहौर शहर आदि देखा।

सर शादीलालजी से सामाजिक, घरेलू व राजनैतिक वहुत-सी चर्चा, वातें, खुलासा। उनके घर पर वालकों सहित भोजन-विनोद।

रात में फ्रंटियर मेल से दिल्ली रवाना। ठीक सीट मिल गई।

दिल्ली, ५-१-३०

सुवह फ्रंटियर मेल से पहुंचे। गाडोदियाजी के यहां ठहरे। श्री सरस्वतीवाई व लक्ष्मीनारायणजी से वातें।

वालकों को लेकर दिल्ली का किला, फिरोजशाह का कोटला, पांडवों का पुराना किला, हुमायूं का मकवरा, कुतुव मीनार, नई दिल्ली आदि देखे। परमेश्वरीप्रसाद व द्वारकाप्रसादजी से वातें। लक्ष्मीनारायण गाडोदिया से वातें। लिमिटेड कम्पनी वनाने को कहा।

६-१-३०

सुवह चि० प्रभुदास गांधी व वारडोली वाले उत्तमचन्द का स्वास्थ्य देखने गये। मिले। ठीक थे।

जामिया में डा० जाकिर हुसेन से जामिया के संबंध में बातें।
बिड़ला मिल्स में महादेवजी की तबियत देखी।
ब्रजकृष्णजी के यहां भोजन। उनके भाई से बातें। पूज्य मालवीयजी से व श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला से मिले। ४॥ की गाड़ी से वर्धा रवाना।

वर्धा, २७-१-३०

सुबह कृष्णा जावरे वाली से बातें।
पत्रों के जवाब लिखवाये।
पूर्णचंद विद्यालंकार स्नातक गुरुकुल ने ४० रुपये मासिक पर काम करना निश्चय किया।
नागपुर-मुकदमे[1] के कागज देखे ३॥ घंटे।
कीर्तनकार मिलने आया।
बम्बई से सोलापुर मिल के तार व पत्र आये।

२८-१-३०

सुबह घूमने गये। श्री पुंडलीक से बातें।
पत्र-व्यवहार। दुकान पर नागपुर मुकदमे के कागजात देखे। श्री हरदत्तरायजी जाजोदिया से जूनी बातें कीं।
रात में पूज्य जाजूजी से मुकदमे के संबंध में तथा अन्य बातें।

२९-१-३०

बाई केशर, चि० नर्मदा, मदालसा से घूमते समय बातचीत। धोत्रे से बातें।

---

१. श्री बच्छराजजी की स्वार्जित संपत्ति के वारिस उनके पोते जमनालालजी हुए। इस पर बच्छराजजी के अन्य दो भाइयों की गोद गये श्री गोपीकिशनजी तथा श्री हरिकिशनजी ने बच्छराजजी की संपत्ति पर अपने हक का दावा किया था। नागपुर हाईकोर्ट में यही मुकदमा चल रहा था और उसके कागजात जेल में देखने के लिए समय-समय पर जमनालालजी को भेजे जाते थे। कोर्ट का अंतिम फैसला मई, १९३५ में जमनालालजी के पक्ष में हुआ।

चि० शान्ता रानीवाला को उसके पत्र पर से खुलासेवार पत्र लिखा। श्री जानकीदेवी को दिखलाकर भेजा।
नागपुर मुकदमे के कागजात देखे।
सैलू घोराड में कांग्रेस संदेश की सभा में भाषण। श्री माखनलालजी, सत्य-देवजी, घटवाई साथ में।
श्री माखनलालजी चतुर्वेदी से कर्मवीर, प्रांतिक संगठन आदि विषयों पर विचार। रात में वह गये।

३०-१-३०

पूज्य विनोबाजी से प्रांतीय संगठन के विषय में बातचीत हुई।
चि० शांता व धोत्रे जरूरत पड़ने पर कन्या पाठशाला की जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं।
श्री नाना कुलकर्णी व माजेकर से बातें।
तेजराम से कांग्रेस संगठन पर बातचीत।
दोपहर को दुकान पर नागपुर मुकदमे के कागजात पर विचार-विनिमय।
श्री जानकीदेवी से बहुत देर तक बातें।

टिप्पणी

ता० ३१-१-१९३० के बाद ११-६-१९३० तक की डायरी उपलब्ध नहीं है। यह काल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का महत्वपूर्ण काल था। ३१ दिसम्बर, १९२९ की आधी रात को लाहौर कांग्रेस में पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में महात्मा गांधी द्वारा पेश किया "पूर्ण स्वराज्य" का प्रस्ताव पास हो गया था और २६ जनवरी १९३० को स्वतंत्रता दिवस मनाया जा चुका था, जिससे देश भर में आजादी प्राप्त करने की एक जबर्दस्त लहर फैल गई थी। उसके बाद घटनायें तेजी के साथ घटने लगीं। स्वतंत्रता आंदोलन का संचालन करने के लिए कांग्रेस की ओर से महात्मा गांधी डिक्टेटर घोषित किये गये। महात्माजी ने नमक कानून तोड़कर सत्याग्रह करने का प्रोग्राम बनाया। इसी सिलसिले में सत्याग्रह शुरू होने से

पहले ही सरदार वल्लभभाई पटेल बारडोली ताल्लुके के रास नामक गांव में मार्च ७ को गिरफ्तार कर लिये गये। महात्माजी ७८ स्वयंसेवकों की टुकड़ी के साथ "स्वराज्य लेकर ही आश्रम लौटने" का संकल्प लेकर गुजरात के डांडी नामक स्थान के लिए १२ मार्च को रवाना हुए और ६ अप्रैल को वहा पहुंच कर उन्होंने समुद्र से नमक इकट्ठा करके नमक-कानून तोड़ा और सारे देश में जहां भी लोग कर सकें, सत्याग्रह करने का आदेश दिया। सारे देश में सत्याग्रह की लहर दौड़ गई। देश के बड़े-बड़े नेताओं--कांग्रेस-अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू से लगाकर साधारण स्वयंसेवकों ने, नमक-कानून तोड़कर सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया। देशभर में हजारों की तादाद में गिरफ्तारियां, सैड़कों जगह लाठी चार्ज, गोली-कांड आदि हुए। जमनालालजी भी नमक-कानून भंग करके ६ अप्रैल १९३० को विलापार्ला (बंबई) में गिरफ्तार किये गये। उन्हें २ वर्ष की सजा हुई। वह प्रारंभ में थाना जेल में रखे गये, बाद में नासिक भेजे गये।

पर उनकी डायरी १२-६-३० से ही प्राप्य है। यह नासिक रोड सेंट्रल जेल से शुरू होती है। इससे पहले की डायरी प्राप्त नहीं है।

इससे पहले १९२३ में जमनालालजी नागपुर झंडा सत्याग्रह के सिलसिले में गिरफ्तार किये गये थे और उनको १०जून, १९२३ को १॥ वर्ष की कैद और ३ हजार रुपया जुर्माना की सजा दी गई थी। बाद में सजा पूरी होने के पहले ही छोड़ दिये गये थे। उस समय की डायरी भी उपलब्ध नहीं है। अतः १२-६-३० से १६-१२-३० तक की जमनालालजी की डायरी उनके जेल-जीवन की प्रथम उपलब्ध डायरी है।

डायरी के इस काल की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं---नरम दली नेता सर तेजबहादुर सप्रू और डा० मुकुन्दराव जयकर द्वारा सरकार और कांग्रेस के बीच समझौता कराने का असफल प्रयास, लंदन में पहली गोलमेज परिषद् का अधिवेशन, उसमें मौलाना मुहम्मद अली की भारत को स्वराज्य देने की हिमायत तथा विलायत में ही उनका देहावसान।

इस डायरीके संपादन में जेल-जीवन के नित्य कार्य व, दैनिक कार्यक्रम व

स्वास्थ्य संबंधी नोंध आमतौर से एक-जैसी होने के कारण शुरू में दो चार जगह यथावत रखकर बाद में संक्षिप्त करके दी गई है। —संपादक

नासिक रोड सेन्ट्रल जेल, १२-६-३०

सुबह जल्दी निवृत्त हो गये। व्यायाम किया।
आज से जेल में सीने का काम मिलना शुरू हुआ।
सुपरिन्टेन्डेन्ट (मेजर मदनगोपाल भंडारी) आये। आज भी काम नहीं किया।
भोजन। खूब आराम। बापूजी के 'यरवडा के अनुभव' पढ़ना शुरू किया।
आज साबरमती जेल से ६८ सत्याग्रही कैदी, बी-वर्ग के ९, और सी-वर्ग के ५९ आये, ऐसा सुना। इसलिए भोजन दूसरा मिला।
शाम को सी-वर्ग की खुराक के बारे में चर्चा। शतरंज खेले।

१३-६-३०

व्यायाम। सुबह जेल में सीने का काम जल्दी शुरू किया। तीन लंगोट सिये।
सुपरिंटेंडेंट से सी-वर्ग के भोजन के संबंध में विचार-विनिमय। उन्हें सूचना की।
टाइम्स पढ़ा। सूत काता और भोजन किया। डा० चौकसी व रणछोड़भाई के साथ शतरंज खेली।
'यरवडा जेल के अनुभव' पुस्तक पढ़ी।

१४-६-३०

स्नान आदि से निवृत्त होकर सीने का काम किया।
भोजन के बाद सुपरिन्टेन्डेन्ट ने बुलाया। सी-वर्ग के भोजन की अस्थायी व्यवस्था एकबार कर डाली। सोमवार से मैंने व किशोरीलालभाई ने सी-वर्ग का भोजन लेना शुरू करने का अस्थायी तौर से निश्चय किया।
चर्खा काता। शाम को तुलसी का काढ़ा पिया। भोजन करके शतरंज व ब्रेन एक्सरसाइज़ के खेल खेले।

१५-६-३०

आज जेल में छुट्टी थी। कपड़े वगैरा धोये। सफाई की।

जेलर आकर कह गये श्री किशोरलालभाई मश्रूवाला का बी-वर्ग और श्री गोकुलभाई का सी-वर्ग निश्चय होकर आया। थोड़ा विचार हुआ। कल दोनों मित्र अलग हो जायंगे।

बातचीत, भोजन व आराम। आज ज्यादा सूत काता।

श्री माधवजी विश्राम (कलकत्तावालों) से जेलर मिलने आया। उन्हें समझाने में बहुत समय गया।

गोकुलभाई की कविता व भजन। किशोरलालभाई के वहां जाकर पत्र लिखे। सी-वर्ग का भोजन शुरू किया।

१६-६-३०

सुबह किशोरलालभाई बी-वर्ग में व गोकुलभाई सी-वर्ग में गये। उनके साथ बातचीत व उनकी तैयारी की। साफ-सफाई।

सुपरिंटेंडेंट की सोमवार की मुलाकात।

टाइम्स पढ़ा। आंदोलन ठीक चल रहा मालूम हुआ।

सुपरिंटेंडेंट की मार्फत पत्र भेजा सी-वर्ग के भोजन के संबंध में। जिनविजयजी ए-वर्ग में आज शाम को बम्बई से यहां आये। वहां के समाचार मिले। इनके आने से खुशी हुई।

१७-६-३०

जेल का काम किया।

सुपरिन्टेन्डेन्ट से श्री माधवजी विश्राम की सब हालत कही। कि० मश्रूवाला के बारे में कहा। बाद में सी-वर्ग के लोगों के साथ भोजन करने देने के बारे में कहा। हिन्दी पत्रों के बारे में भी कहा।

चर्खा काता। 'यरवडा के जेल अनुभव' आज पूरी की।

'आप बीती' धर्मानंद कोसांबीजी की पुस्तक शुरू की। ठीक मालूम हुई। शाम को थोड़ा भोजन, घूमना, प्रार्थना, भजन। 'लाठीराज' कवि कालपी कृत कविता पढ़ी।

१८-६-३०

खाने में बाजरे की रोटी आई। चने की दाल थी।

'आप बीती' पढ़ते रहे। शाम को तबीयत ठीक नहीं लगने से भोजन नहीं किया।

शाम को प्रार्थना, भजन। 'मनाचे श्लोक' का पाठ।

१९-६-३०

जेल का सीने का काम १०॥ तक।

टाइम्स पढ़ा। संतोष हुआ। सुपरिंटेंडेंट को माधवजी के बारे में कहा। चि० गंगाबिसन, केसर, गुलाब, नर्मदा, उमा, शांति, श्रीराम आदि मिलने आये। राजी-खुशी से बातें, जानकीदेवी आज गिरफ्तार होकर छूट गई। शाम को खद्दर पर प्रवचन, पंच-मंडल में, हुआ।

२०-६-३०

निवृत्त होकर जेल का काम शुरू किया। सुपरिंटेंडेंट आये। उनको मेरे एक दावे पर सही करनी थी इसलिए व रणछोड़भाई के लिए आफिस में बुलाया। सही होने के बाद बहुत देर तक जेल-नियम सरक्यूलर की चर्चा होती रही। वापस आकर भोजन, टाईम्स पढ़ा।

आज जानकीदेवी, चि० शांता, राधाकृष्ण, केशवदेवजी को पत्र लिखे और जेलर को पढ़ कर सुनाया। यहां से कल पत्र बम्बई जायगा।

चर्खा काता। शाम को पंच-मंडल में खद्दर की चर्चा। प्रार्थना व भजन।

२१-६-३०

कल जो पत्र लिखा था उसमें थोड़ा समाचार और लिखकर पत्र भिजवाया, भोजन के बाद आराम नहीं किया, चर्खा ज्यादा काता, 'आप बीती' पढ़ी। शतरंज खेली, खादी पर चर्चा।

आज जेलर ने आकर वर्तमान पत्र के बारे में इंस्पेक्टर जनरल का जो निश्चय आया वह पढ़कर बतलाया। बहुत ही अनुचित व अपमानजनक मालूम हुआ।

प्रार्थना व भजन, कालपी के। आज से तकली व 'बुद्ध जीवन' अंग्रेजी में पढ़ना शुरू किया।

२२-६-३०

आज छुट्टी का दिन है। व्यायाम के वाद नित्य पाठ, गीता। 'त्यागभूमि' के लेख पढ़े।

आज सबों का वजन हुआ। मेरा १८२ रतल है। रणछोड़भाई तीन रतल वढ़े, मैं ८ रतल कम हुआ। यहां कपड़ों के वजन कम नहीं करते।

'आप वीती' पढ़ी, संतोष हुआ। सूत ३९० तार काते।

एकादशी व्रत होने के कारण सी-वर्ग का फलाहार सकरकंद किया। सी-वर्ग व वी-वर्ग में कुछ असंतोष चल रहा है। वह मिटाने का व सवों को समझाने का प्रयत्न किया।

आज तकली रणछोड़भाई के पास से समझ ली। संतोष हुआ।

२३-६-३०

सावरमती व वम्वई भेजने के पत्र लिखे।

सुपरिन्टेन्डेन्ट आज सोमवार के राउण्ड में आये। उन्होंने मेरा वजन ८ रतल कम हुआ देखकर एकदम कहा तुम्हें यह खुराक छोड़ देना चाहिए। मैंने इनकार किया। आफिस में वुलाया। उन्होंने अपनी जवावदारी, शरीर को जोखम आदि की वात वतलाई। मुझे जो कहना था कहा। आखिर खूव विचार करके उन्हें पत्र लिख भेजा। नकल अलग है।

मुनीमजी ने वंवई से मुलाकात में आने को लिखा।

शाम को चर्खा। खादी पर चर्चा, प्रार्थना-भजन वगैरा।

२४-६-३०

सुपरिंटेंडेंट आये और आज शाम से दूध लेने की आज्ञा दे गये। आज शाम को एक रतल दूध व गुड़ आया। तुलसी का काढ़ा वना कर पिया। चर्खा, तकली व 'त्यागभूमि' आदि पढ़ने में समय चला गया।

२५-६-३०

सुवह जल्दी तैयार हो गया। कांजी में दूध मिलाकर पीने में वहुत ठीक मालूम हुई।

चर्खा, श्री रणछोड़भाई ने 'जया-जयंत' श्री नानालाल कवि का नाटक पढ़कर

सुनाना शुरू किया। आज पढ़ने में समय अधिक गया। टाइम्स, जामे-जमशेद के बहुत से अंक देखे। शाम को मोतीलालजी की शर्तें आदि पढ़ीं।

२६-६-३०

आज सवेरे कसरत-डंड, बैठक करते समय पांव में थोड़ी लचक आ गई। बहुत समय दर्द मालूम होता रहा। डाक्टर को कहकर दो बार तेल मालिश की।

श्री केशवदेवजी, चिरंजीलाल व मुनीमजी की मेरे साथ मुलाकात हुई। बम्बई से जानकीदेवी, चि० शान्ता आदि के पत्र मिले। जवाब लिखा। आज बम्बई से ५ मित्र भी मिलने आये। बातचीत।

चर्खा-तकली का काम हुआ।

२७-६-३०

आज पांव में दर्द कल से कम था।

कि० मश्रुवाला, नरहरीभाई सी-वर्ग के असंतोष के बारे में मिलने आये। बहुत देर तक बातचीत।

श्री सुवटाबहन के पत्र में जानकीदेवी, कमला, शान्ती के पत्र भेजे। भोजन। देरी से आराम। थोड़ा पढ़ना व चर्खा कातना। आज 'जयन्त' नाटक पूरा हुआ।

२८-६-३०

आज के टाईम्स से मालूम हुआ श्री गिडवानी व श्री लालजी मेहरोत्रा को ता० २५ से एक वर्ष की कड़ी कैद हुई। बी-वर्ग। स्वामी गोविन्दानन्द को सी-वर्ग।

जेलर के कहने से सुपरिंटेंडेंट की मनोदशा देखकर बीच में नहीं पड़ना ठीक मालूम हुआ। उपवास का विरोध किया।

तेल मालिश। दर्द कम था। पढ़ना, तकली।

२९-६-३०

चर्खा काता। अंग्रेजी, खद्दर का अर्थशास्त्र व रणछोड़भाई ने अपने जीवन के नोट सुनाये।

भोजन, विश्रांति। बाद में वर्तमान पत्र पढ़े। फिर से चर्खा। श्री नरीमान ने जेलरूल पढ़ कर सुनाये।

शतरंज, चाय, तकली। प्रार्थना। 'मेवाड़ पतन' पढ़ना शुरू किया। जेलर ने आकर श्री बाटलीवाला को बी-वर्ग नहीं दिया यह सूचना दी।

श्री नरीमान को भेजा। उन्होंने समझौता करा दिया। श्री भण्डारी रात को आये। जेल-संबंधी चर्चा।

रात को बिल्ली ने खूब हैरान किया।

१-७-३०

निवृत्त होकर चर्खा काता। ग्रेग की 'खादी का अर्थशास्त्र' पुस्तक सुनी। श्री रणछोड़भाई को बी-वर्ग व श्री मुकन्द मालवीय को भी 'बी' में जाने की आज्ञा हुई। श्री रणछोड़भाई के बी-वर्ग की सूचना से दुःख व आश्चर्य। मन में थोड़ी अस्थिरता पैदा हुई। सुपरिंटेंडेंट को भी बुरा लगा और मित्रों को भी।

श्री रमणीकलाल मोदी बीमार थे। उनसे मिला। अपेंडिसाइटिस का आपरेशन कराने की संभावना। विचार और चर्चा।

सी-वर्ग के मित्रों से आज पहिली बार मिलना हुआ। उनसे बातें। आशा हुई कि उनका ठीक संगटन हो सकेगा। चिंता न करने को कहा। रात में नींद बराबर नहीं आई; खासकर रणछोड़भाई के कारण।

२-७-३०

स्वास्थ्य आज भी खराब मालूम हुआ। जवार की राब के सिवाय आज अनाज नहीं खाया। काढ़ा वगैरा पिया।

सुपरिंटेंडेंट से मिलकर सी-वर्ग के बारे में खूब खुलासेवार बातें कीं। रणछोड़भाई का बी-वर्ग में ट्रांसफर करने के बारे में मैंने भी बम्बई तार भेजा।

मुलाकात के बारे में अगर मथुरादासभाई न आ सकें तो सदानन्द को भेजने को लिखा।

किशोरीलालभाई मिले। राजी खुशी हैं।

३-७-३०

आज तवियत भारी मालूम हुई। जीभ वहुत खराव हो गई, मुंह में कांटे तथा शरीर भारी।

सुपरिंटेंडेंट ने देखा। एकदम आराम लेने को कहा। खुराक' के वारे में भी कहा। चाय व थोड़ा दूव लिया।

आज मिलने श्री जानकीदेवी, चि० शांता, चि० कमलनयन, रामेश्वरजी धुलियावाले व उनकी पत्नी आये। अन्दर ही मुलाकात।

रात में १२ वजे दस्त हुआ, निद्रा आई।

४-७-३०

आज तवियत कल से ठीक मालूम हुई। अनाज नहीं खाने का विचार रखा।

सुपरिंटेंडेंट आये।

सूत काता; अखवार पढ़े, वातचीत। शतरंज खेली।

श्री रणछोड़भाई को पहिले तो यहां पीछे के भाग में रहने को कहा। वाद में वी-वर्ग में जाने को कहा; अस्थिरता मालूम हुई।

'शाहजहां' पढ़जाने के वाद शरीर भारी, रात में बुखार मालूम हुआ।

५-७-३०

डा० आये; ज्वर ऊपर से नहीं मालूम हुआ, नाड़ी की गति तेज थी।

सुपरिंटेंडेंट आये। वहुत देर तक बैठे रहे, खून की परीक्षा करने का निश्चय किया, उन्हें शायद मलेरिया का शुवहा है।

आज भी अन्न नहीं खाया।

सी व वी-वर्ग के मित्रों से वातचीत, विचार विनिमय।

चर्खा काता, १६० तार। थोड़ी देर ताश खेले। प्रार्थना के वाद शाहजहां पढ़ा। आज रात को नींद तो आई परन्तु विल्ली तथा हवा आदि की गड़वड़ के कारण नींद टूट जाती थी। दो पत्र लिखे।

६-७-३०

आज तवियत थोड़ी ठीक मालूम हुई। वजन किया। १७६ रतल हुआ, याने यहां आने के वाद १४ रतह कम हुआ। अखवार पढ़े।

दोपहर को चर्खा काता। दो वार मिलकर थोड़ी देर पत्ते खेले।
श्री केशवदेवजी, पू० जाजूजी, चि० राधाकृष्ण, पूनमचन्द बांठिया, वहिन सुवटा, चि० शान्ता, चि० रमा, रणछोड़भाई की लड़की, श्री जानकीदेवी, श्री सूरजमलजी रुइया को पत्र लिखे। पुरेकर (असिस्टेंट जेलर) को पत्र पढ़ने को दिये। उसने भावार्थ समझ लिया ऐसा आकर कहा।
शाम को प्रार्थना। शाहजहां पढ़ा। रात को नींद वरावर नहीं आई। अधिक हवा व विचार चलता रहा।

७-७-३०

धुलियावाले आचार्य श्री वर्वे का नोट पढ़ा। वर्तमान पत्र सुने। श्री राजेन्द्र-वावू गिरफ्तार हुए, इसकी सूचना पढ़ी।
वाल कटाये व हजामत की। सिर में करीमखां नाई ने तेल मालिश की जिससे सिर हलका मालूम हुआ।
चर्खा काता २०० तार करीव। शतरंज डा० चौकसी से खेली।
मुनीजी ने टागोर की 'देश सेवा' पढ़कर सुनाई।
शाम को सुपरिटेंडेंट आये। वी व सी-वर्ग के खुराक की चर्चा।
पत्र वम्बई गया। रात में नींद ठीक आई।
आज तीन महीने पूरे हुए।

८-७-३०

चाय पीते समय सुपरिटेंडेंट आये और वहुत जोर और प्रेम आग्रह से कहने लगे कि तुम वी-वर्ग का भोजन शुरू करो। मित्रों ने भी कहा। विचार कर जवाव देने को कहा। आज दूध ४ रतल कर दिया।
टाईम्स पढ़ा। जीवनलाल दीवान (अहमदावाद वाले) गिरफ्तार हुए। वापू का सर्वोदय पढ़ना शुरू किया।
सात दिन वाद आज तेल लगाकर स्नान किया। उससे शरीर हल्का मालूम हुआ।
किशोरलालभाई आये। सुपरिटेंडेंट की चिट्ठी का मसविदा तैयार किया व शतरंज खेली।

प्रार्थना के वाद 'नूरजहां' पढ़ना शुरू किया।

९-७-३०

अखवार सुना।

सुपरिंटेंडेंट को भोजन के संवंध में अपने विचार लिखकर दिये।' आज से २॥। रतल दूध व वी-वर्ग का भोजन करना शुरू हुआ।

स्वास्थ्य वहुत ठीक मालूम हुआ। प्रसन्नता का पोस्टकार्ड वम्वई भेजा।

राजाजी की 'जेल-डायरी', 'कुमार' व 'सर्वोदय' वगैरा पढ़ा।

पत्ते व शतरंज खेले। थोड़ी देर चर्खा व तकली से ठीक काता।

जेल कम्पाउन्ड में घूमने गया। शाम को प्रार्थना व 'नूरजहां' पढ़ा।

१०-७-३०

सुपरिंटेंडेंट डा० गद्रे को दांत दिखाने ले आये। उन्होंने देखा।

'सर्वोदय' पूरा हुआ। राजाजी की जेल डायरी रणछोड़भाई के साथ पढ़ी। 'वन शोधन' पढ़ा।

आज से मुकंद मालवीयजी के हाथ का भोजन शुरू हुआ।

पत्ते, शतरंज व चर्खा।

३। वजे सी-वर्ग में; वहां करीव दो घंटे उन लोगों से वातचीत। संगठन उनका किया।

आज वाइसराय ने जाहिर किया कि कोई महत्व की वात नहीं थी।

प्रार्थना व नूरजहां पढ़ा।

११-७-३०

'जीवन शोधन' टाईम्स, राजाजी की 'जेल डायरी' पढ़ी।

सुपरिंटेंडेंट से दांत के संवंध में वातें। इंस्पेक्टर जनरल जेल को सी-वर्ग कातने का सामान मिलने को लिखा था। उसकी नामंजूरी आई।

भोजन, वाद में पत्ते व शतरंज खेले।

'स्वाधीन भारत' वन्द करने को वम्वई पोस्टकार्ड लिखा।

चर्खा काता, रणछोड़भाई जेल डायरी पढ़ते रहे। 'प्रस्थान' का अंक प्रायः देख डाला। जेल से दो निंवू रोज मिलने लगे।

प्रार्थना, 'नूरजहां' पढ़ा।

१२-७-३०

रात में दरवाजा खुला था, सुबह जल्दी उठकर निवृत्त हो गये।
राजाजी की जेल डायरी पूरी हुई। 'जीवन शोधन' पढ़ा। टाईम्स देखा। शतरंज खेला।
श्री वालजीभाई आये। आज उनसे अंग्रेजी सीखना शुरू किया।
श्री खरे पंडितजी आये, उन्होंने पांच भजन सुनाये। आनन्द रहा। भजन— 'हरिनो मारग,' 'लाज मोरी राखो', 'मने चाकर राखोजी', 'दीनन दुःख हरण देव', 'सुनेरी मैंने' थे।
चर्खा काता, भोजन किया, फिर चर्खा काता और पत्र लिखे।
प्रार्थना, 'नूरजहां' पूरा हुआ। 'त्यागभूमि' में से पढ़ना शुरू किया।

१३-७-३०

सुबह ५। वजे निवृत्त होकर प्रार्थना की।
सफाई की, दवा ली। चाय, ब्रेड ली। 'जीवन शोधन' पढ़ा। वाद में 'विविध वृत्त', 'सण्डे टाइम्स', 'जामे जमशेद' ११॥। वजे तक पढ़ते रहे। वंबई में शुक्र-वार को 'गढ़वाली दिन' मनाने पर पुलिस का अत्याचार। उसमें ५०० से ज्यादा लोग घायल हुये। मन में खूब विचार रहा। थोड़ी देर तक अस्थिरता रही। भोजन, थोड़ी देर खेले। वाद में चर्खा काता। अंग्रेजी का अभ्यास थोड़ी देर तक किया।
सरकार अत्याचार विशेष प्रमाण में करे और २००-३०० की मृत्यु हो जाये फिर भी जनता शांत रह सके तो ठीक परिणाम आ सकता है ऐसे विचार चलते रहे।
रात में प्रार्थना के वाद 'त्यागभूमि' में से मुनीजी ने पढ़ा।

१४-७-३०

आज इन्सपेक्शन का दिन था। सुपरिंटेंडेंट आये। राजी-खुशी गये।
'गांधी माला' में से पूज्य वापूजी के अफ़्रीका के जेल-अनुभव पढ़े। वाद में ग्रेग का अंग्रेजी खद्दर-शास्त्र पढ़ना शुरू किया।

श्री जानकीदेवी तथा वंबई, वर्धा मित्रों की साबरमती आश्रम आदि की चिट्ठियां मिलीं। नरीमानजी ने टाइम्स सुनाया।

बाल बनाकर १२॥ बजे स्नान किया। आज मुकुंदजी ने गुड़-भात बनाये थे। खाये। चर्खा काता। अंग्रेजी पढ़े व थोड़ा लिखा।

शाम को थोड़ी देर तक शतरंज खेलते रहे।

रात में प्रार्थना। 'प्रताप' पढ़ा। ठीक तबियत होने का पोस्टकार्ड भेजा।

१५-७-३०

प्रार्थना के बाद चाय, ब्रेड लिया। 'गांधी-शिक्षण' भाग-१३, 'अंत विचार' व ग्रेग की पुस्तक पढ़ी, 'जीवन शोधन' भी पढ़ा।

सुपरिंटेंडेंट से मुलाकात के बारे में बातचीत। उसके मुताबिक वंबई श्री केशवदेवजी गनेडीवाला को ता० १९ शनिवार के दिन आने को पत्र लिखा।

चर्खा काता, टाइम्स सुना।

१॥ बजे करीब भोजन हुआ।

थोड़ा आराम कर विचार किया। सूत उतारा। बाद में अंग्रेजी भाषान्तर पाठशाला पढ़ी।

शाम को थोड़ा खाया। प्रार्थना की। 'प्रताप' में अजमेर में बैजनाथजी-महोदय को दो वर्ष की सजा होने का समाचार पढ़ा।

१६-७-३०

वर्षा शुरू हुई।

'गांधी शिक्षण' भाग-१३, ग्रेग का 'खद्दर अर्थ शास्त्र', 'जीवन शोधन' पढ़ा।

चर्खा काता। १२ हजार बार सूत दूसरी बार तैयार हो गया। टाइम्स सुना, सुंदरलालजी आदि को सजा हुई। कौंसिल के संबंध में वल्लभभाई का खुलासा आ गया।

१ बजे करीब भोजन हुआ। रमणीकलालभाई का आपरेशन होनेवाला है उसके लिए नासिक के मित्रों को पत्र लिखकर दिये।

प्रार्थना। 'प्रताप' पढ़ा।

आज रात में वर्षा खूब हुई। पढ़ता रहा। आज दवा बन्द की।

१७-७-३०

सुबह जल्दी उठा, परंतु वर्षा ज्यादा होने के कारण प्रार्थना करके 'जीवन शोधन' पूरी की। महान पुस्तक है। बाद में निवृत्त हुआ।

श्री रमणीकलालभाई को आपरेशन कराने सिविल अस्पताल ले गये। साथ में श्री नरहरभाई गये थे। उनसे मिले।

चर्खा काता। 'गांधीमाला' का १३वां भाग पूरा हुआ। 'टाइम्स' थोड़ा सुना। भोजन। विश्रांति के बाद अंग्रेजी का अभ्यास किया।

जानकीदेवी मिलने आवे तब जो बातें करनी वे नोट कीं। बाद में थोड़ी देर शतरंज।

प्रार्थना। 'प्रताप' पढ़ने के बाद आज बी-वार्ड में खूब कोलाहल हो रहा था। श्री मेहरअली व बाटलीवाले ट्रांसफर हुये ऐसा मालूम हुआ। रात में देर तक बत्ती जलती रही। डेढ़ बजे के बाद बराबर नींद आई।

१८-७-३०

सुबह देखा कि तीसरे ब्लाक में तीन सी-वर्ग के नवयुवकों को बंद कर रखा है। मन में थोड़ा विचार आया।

मुंह-हाथ धोकर प्रार्थना की। चर्खा काता।

सुपरिंटेंडेंट ने बुलाया। श्री बाटलीवाला, मेहरअली के वर्ग बदलने के असंतोष के बारे में बातचीत हुई। सुपरिंटेंडेंट को जो कहना था उनके स्वभाव, कार्यपद्धति के बारे में सब स्पष्ट व नम्रतापूर्वक कह दिया। उन्होंने भी ठीकतौर से विचारपूर्वक सुना।

सी-वर्ग के तीन नवयुवकों को समझाने जेलर ले आये। उनसे बातें।

बी-वर्ग में जाना पड़ा। वहां की हालत व व्यवस्था देख कर दुःख हुआ।

रात में बिल्ली गिलास गिरा कर दही खा गई।

वजन, गोमती बहन का ८६ रतल। जानकी देवी ११८ रतल।

१९-७-३०

आज लोग मिलने आने वाले थे सो उसकी तैयारी।

वी-वर्ग के तरुण कहलाने वाले यूथ-लीडरों में से कुछ ने सुपरिंटेंडेंट का अपमान किया। अपशव्द कहे, उसकी धूमधाम जेल में दिनभर रही। अशांत व उत्तेजित वातावरण वना रहा। दुःख हुआ। सुपरिंटेंडेंट के कहने से वी व सी-वर्ग में जाना पड़ा। दिनमें २॥ वजे भोजन किया।

जानकीदेवी, गोमती वहन, रिषभदास, पूनमचंद वांठिया, चिरंजीलाल मिलने आये। श्री केवशदेवजी गनेडीवाल भी। राजी-खुशी, व्यापार व आपसी वातें हुई। रात में वहुत देर तक चर्चा होती रही। ११ वचे चर्खा काता। वजन १८३ रतल हुआ।

२०-७-३०

सुवह अलीवहादुर खां से वातचीत हुई। रात को जो चर्चा सुनी और जो रिपोर्ट मिली उसपर से इस झगड़े में न पड़ने का विचार रखा। वी-वर्ग के लड़ने वाले मित्रों में सभ्यता की वहुत कमी मालूम हुई।

वजन ता० ६ जुलाई को १७६ था, आज १८३ हुआ।

वी-वर्ग के १० आदमियों को जो सजा के लिए यहां आये थे, उसमें विशेष भाग न लेते हुए भी समय वहुत सा उस काम में गया।

भोजन के वाद थोड़ा आराम। वर्तमान पत्र पढ़े। चर्खा काता। रणछोड़-भाई को दर्द था। उनकी इच्छा से एक वाजी शतरंज खेली।

प्रार्थना। 'प्रताप' पूरा हुआ।

२१-७-३०

चर्खा काता। टाइम्स सुना।

सुपरिंटेंडेंट ने वी व खासकर सी-वर्ग के शशिकांत के वारे में कहा।

भोजन के वाद वी-वर्ग में गये। विश्वनाथ, अलीवहादुर खां व अन्य मित्रों से मिले। सुपरिंटेंडेंट से विश्वनाथ को छोड़ने के वारे में वातचीत।

शशिकांत व गोकुलभाई से शिस्त आदि के वारे में वातचीत।

'त्यागभूमि' पढ़ी। प्रार्थना के वाद 'दुर्गादास' पढ़ना शुरू किया।

२२-७-३०

सुपरिंटेंडेंट आये। उनसे श्री नरिमान के साथ वहुत देर तक वात हुई।

यूरोपियन जेलर अगर आवे ही तो राजनैतिक कैदियों के साथ उसका संबंध नहीं आना चाहिए।

तकली, टाइम्स सुना। चर्खा काता।

आज एकादशी थी, सो स्नान कर साबूदाने में दूध पानी डालकर लिया।

पत्र लिखे। चि० रसिक (बालजीभाई का भतीजा) मिलने आया। उसे समझाया।

श्री रणछोड़भाई बी-वर्ग में गये। श्री देशपाण्डे, मनुभाई, डाक्टर अय्यर बंबई ट्रांसफर हुए। प्रार्थना। 'दुर्गादास' व 'जामे जमशेद' पढ़ा।

२३-७-३०

सुबह जल्दी निवृत्त होकर मित्रों व बालकों को छोटे-मोटे १७ पत्र लिखकर एक लिफाफे में भेजे।

जानकी, कमल, ओम्, मदालसा, राम, रामेश्वर, नर्मदा, राधाकिसन, लक्ष्मी (राजाजी), सुशीला, राम, जीतमलजी, मागी, केशर, फतेचंद, मथुरादास भाई, केशवदेव गनेरीवाल आदि को पत्र लिखे।

श्री जयकर के जंवाई की बीमारी का पत्र भेजा।

भोजन में आज दाल, चावल, रोटी, साग, गुड़ का सीरा, दूध, चावल, मीठे चावल, मूली, नींबू, नमक।

आज पलंग बदलकर स्प्रिंगदार व मच्छरदानी वाले आये।

नागपुर में पूनमचंद, बाबा साहेब, डा० खरे, धर्माधिकारी, घटवाहे आदि के पकड़े जाने की टाइम्स में खबर पढ़कर संतोष हुआ।

कांति गांधी व गोकुलभाई से मिले। सी-वर्ग के संबंध में बातें। रणछोड़भाई को जेल की पोशाक में देखा।

फाटक तक फिरने गया। ठीक मालूम हुआ।

२४-७-३०

खोली को ठीक किया।

इंस्पेक्टर जनरल आये। तबियत वगैरा के बारे में पूछा। आफिस में मिलने का निश्चय हुआ।

श्री नरिमान के साथ मैंने जो मुद्दे इं० ज० के साथ बात करने के लिख रखे थे, उसपर चर्चा की व उन्हें समझा दिया।

इंस्पेक्टर जनरल से वातचीत हुई। श्री नरीमान भी आ गये थे। उन्होंने सब बातें ठीकतौर से सुन लीं। व्यापारिक मुलाकात के वारे में सुपरिंटेंडेंट को अधिकार है यह कहा। व्यापारिक मुलाकात मिल सकती है। वर्तमान पत्र की फेरिस्त मांगी।

सी-वर्ग की बातें उसने की। मथुवाला के वारे में कहा कि मेरा अपमान करने की विलकुल इच्छा नहीं थी। चर्खा, पींजण के वारे में कुछ नोट कर लिया। विश्वनाथ को कोई खास बीमारी नहीं है यह कहा।

२५-७-३०

सुवह जल्दी आंख खुल गई। विचार, मनन चलता रहा।

कुटुंवी, मित्र, कर्मचारी आदि का परिचय व अनुभव नोंद किये। वालपन व युवा-काल की वहुत-सी बातें याद आईं। दुःख, आश्चर्य व अभिमान तीनों का मिश्रण सामने दिखाई दिया।

चि० वाल कालेकर व वालजीभाई मिलने आये। उनसे वातचीत।

चर्खा काता। वाल व श्री रणछोड़भाई से बातें। वर्तमान पत्र की बातें मुकंदजी ने सुनाई। श्री नरीमान से घूमते हुए बातें।

२६-७-३०

निवृत्त होकर नाश्ता करके मित्र वगैरे की यादी की।

चर्खा काता, सुपरिंटेंडेंट आये। वहुत-सी बातें की। कुछ थके हुये, कुछ निराश-सरीखे दिखाई दिये।

भोजन व विश्राम के वाद अंग्रेजी अभ्यास।

जयंती (आश्रम-विद्यार्थी) मिलने आया।

वंवई से नौ लोग वी-वर्ग में आये थे। उसमें से ६ लोग वी-वर्ग में गये।

श्री वाजपेयी वहुत देर तक वात करते रहे।

विलेपार्ले छावनी के तीन स्वयंसेवक फौज की नौकरी छोड़ने के परचे वांटने के वारे में सेशंस सुपुर्द किये गये।

घूमते समय नरीमानजी से बातें।
'दुर्गादास' नाटक समाप्त हुआ। 'जामे जमशेद' पढ़ा।

२७-७-३०

आंख तीन् बजे खुल गई, विचार चलता रहा। सुवह देर हो गई।
कटेली जेलर आये। सी-वर्ग तथा अन्य शिस्त वगैरा के संबंध में चर्चा।
कटेली सज्जन मनुष्य मालूम हुआ।
भोजन के बाद अस्पताल में सी-वर्ग के १०-१२ मित्रों से मिलना हुआ। उनकी हालत जानी। कोई खास बीमारी विचारणीय नहीं दिखी।
सी-वर्ग में जाना हुआ। श्री गोकुलभाई व बृजलालभाई (राजकोट वालों) से वहुत देर तक चर्चा। ठीक परिणाम आने की आशा।
चर्खा काता, रणछोड़भाई से बातें।
घूमना। प्रार्थना। आज टागोर का 'अचलायतन' शुरू किया।
रात में नींद बराबर नहीं आई, एक तरफ जप व एक तरफ बुरे विचारों का संघर्ष होता रहा।

२८-७-३०

आज सुवह ही चर्खा कात लिया व छापे देख लिये।
सुपरिंटेंडेंट ने वहुत सी बातें कीं, उसे जो कहना था कह दिया, करीव १ बज गया। बाद में आकर भोजन किया।
श्री वालजीभाई आये। उनके साथ अंग्रेजी का अभ्यास किया।
मित्रों की फेरिस्त में थोड़ा लिखा। श्री रणछोड़भाई से बातें।
आज स्टोव पर चाय मैंने ही बनाई और रोटी गरम की।
प्रार्थना। 'अचलायतन' पढ़ा।
सब लोगों की नजर समझौते की ओर हो रही है। रात में नींद ठीक आई।

२९-७-३०

स्टोव पर चाय बनाना सीख लिया, स्टोव इस्तेमाल करने में तलकीफ होती है खासकर कृष्णा की मृत्यु के बाद। परंतु यहां दूसरा कोई उपाय नहीं।

अंग्रेजी अभ्यास। चर्खा काता। पूनी में कीटी-कचरा ज्यादा होने के कारण बहुत देर कातने पर भी १६० तार ही निकले।

भोजन के बाद वर्तमान पत्र पढ़े। आज ठंडी हवा बहुत जोर से चलती थी।

श्री वालजीभाई के साथ अंग्रेजी अभ्यास। डा० गद्रे आये, दांत के बारे में बातचीत।

शतरंज खेली चार बाजी।

प्रार्थना के बाद 'चंद्रगुप्त' शुरू किया।

३०-७-३०

सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना। निवृत्त हुये। अंग्रेजी अभ्यास।

सुपरिंटेंडेंट से रणछोड़भाई के यहां आने के बारे में बात।

रणछोड़भाई यहां आ गये।

व्यापारी मुलाकात के बारे में श्री जीवनलालभाई का पत्र आया। उसका बंबई कंपनी को जवाब लिखा।

आज चिट्ठियां आई—जानकीदेवी व बालकों की, श्री सुवटा बहन, शांती, सुशीला, मथुरादासभाई, पालीरामजी, सूरजमल, केशवदेवजी नेवटिया, केशवदेव गनेरीवाल, गंगाविसन, राधाकिसन व नर्मदा।

चर्खा काता। शतरंज खेली, श्री मुकंद मालवीय व रणछोड़भाई के साथ।

घूमकर प्रार्थना। 'चंद्रगुप्त' पढ़ा। रात में फिर चर्खा काता।

३१-७-३०

राजनैतिक स्थिति पर विचार।

श्री वालजीभाई आये। अंग्रेजी, श्री मुकंदजी व रणछोड़लालभाई के साथ शतरंज।

नरिमान के साथ घूमते हुए राजनैतिक तथा व्यक्तिगत बातें। पीस कांफ्रेंस के बारे में विचार-विनिमय। इनकी राय है कि एक बार समझौता हो सके तो ठीक है। कुछ समय बाद फिर लड़ना ही पड़े तो जोर से—थोड़ा आराम व तैयारी करके लड़ सकते हैं। यहां का वातावरण अब जल्दी बाहर जाना

होगा ऐसा हो रहा है। बी-वर्ग में रात में १२-१ बजे तक खूब पार्टियां होती रहती हैं।
प्रार्थना। चंद्रगुप्त पढ़ा रात में १२ बजे करीब मित्रों में से किसी को स्वप्न आया, जोर से चिल्लाये।

१-८-३०

तिलक पुण्य-तिथि

प्राय: वहुतों को रात में जल्दी छूटने के स्वप्न आने लगे हैं और कई तो उसकी खुशी में प्राय: वालू के महल (मनोराज्य) वनाने लग गये हैं। इससे हम लोगों की कमजोरी व अस्थिरता का ख्याल आता है।
चर्खा काता। टाइम्स सुना। भोजन व अंग्रेजी का अभ्यास।
सी-वर्ग में वुलाया, वहां गया। तिलक पुण्य-तिथि पर प्रार्थना, गुणगान। शामको शतरंज। भोजन। वर्षा होने के कारण घूमने नहीं गये। प्रार्थना, 'चंद्रगुप्त', 'वंदे मातरम्' पढ़े।

२-८-३०

सुपरिंटेंडेंट ने आफिस में वुलाया। सी-वर्ग के किकुभाई के व्यवहार के वारे में कहा। उसे समझाने का प्रयत्न करने का कहा।
श्री जीवनलालभाई, जीवनलाल कंपनी वाले श्री जेठालाल, श्री गजराजजी, 'नटवरलाल ट्रस्ट डीड' के वारे में मिलने आये।
भोजन के वाद चर्खा। श्री सुरेंद्रजी, किशोरलालभाई के स्वास्थ्य के वारे में तथा अन्य वातचीत। सुरेंद्रजी की शंकाओं को समझाया, किकुभाई को यहां एक कोठरी में वंद किया। चि० वल्लभ जाजू की सजा के समाचार 'जामे जमशेद' में पढ़े।

३-८-३०

'टाइम्स' व 'विविधवृत्त' पढ़े।
पंडित मालवीयजी, वल्लभभाई, शेरवानी आदि की गिरफ्तारी की खवरें व प्रोसेशन की हालत जानकर व जनता की तैयारी देख उत्साह व संतोष हुआ। डर है कि पंडितजी आदि को सजा न दे कर छोड़ देवेंगे।

वजन हुआ। इस वार एक रतल वढ़ा, पिछली वार १८३ था, मूल से वजन छः रतल कम है।

भोजन १। बजे समाप्त हुआ। मुकंदजी से बातें की। वावूजी (मालवीयजी) को अगर सजा हो जाये तो कितना अच्छा हो !

चर्खा—जनेऊ के लिए सूत काता। श्रीरामजी (अकोला वाले) की गिरफ्तारी व सजा की खवर पढ़ी। शोभालाल गुप्त (अजमेर वालों) की भी सजा की खवर पढ़ी।

शतरंज। तकली। आज 'चंद्रगुप्त' (नाटक) पूरा हुआ। आज से प्रार्थना मुनीजी के यहां शुरू की गई।

४-८-३०

जनेऊ के लिए कल और आज मिलकर ७५० वार सूत काता, टाइम्स सुना, पंडित मालवीयजी डिफेंस देना चाहते हैं। वह छूट जावेंगे।

सुपरिटेंडेंट इंस्पेक्शन को आये। श्री विश्वनाथ वी वर्ग-में हैं। उन्हें इलाज कराने वंवई, उनकी वहुत इच्छा होने के कारण, आज भेजा। उन्हें हिम्मत रखने को कहा।

वंवई आर्थर रोड जेल से तीन लोग वी-वर्ग में आये। पूना से चार लोग ए-वर्ग में आने की सूचना। तैयारी चली।

वालजीभाई से अंग्रेजी पढ़ी। शाम को शतरंज व प्रार्थना। टागोर की शिक्षा के निवंध पढ़े।

'जीवन शोधन' दूसरा भाग पढ़ा।

५-८-३०

सुवह ४॥। वजे उठकर प्रार्थना। गीता का प्रथम अध्याय व 'मनाचे श्लोक' का पाठ। मुंह-हाथ धोकर निवृत्त हुये। एकादशी व्रत किया।

पूना–यरवदा जेल से चार मित्र श्री कीकुभाई (विद्यापीठ वाले), श्री कन्हैयालाल मुंशी, श्री वी० एन० महेश्वरी, श्री पुरुषोत्तम वैरिस्टर ट्रांसफर होकर यहां आये। वहां पंडित मोतीलालजी व जवाहरलालजी आने वाले थे, इसलिए जगह की।

आज बरसात खूब हुई। आजतक यहां २५ इंच अंदाज पानी हो गया। पूरी वर्षा का २५ इंच का एवरेज नासिक का समझा जाता है।
चर्खा काता, शतरंज खेली, अंग्रेजी का अभ्यास किया। नए मित्रों से बातचीत। प्रार्थना के बाद श्री कन्हैयालाल मुंशी ने अपने लिखे हुए नाटक का एक भाग पढ़कर सुनाया।

६-८-३०

निवृत्त होकर नाश्ता किया। बरतन साफ किये, पानी भरा।
अंग्रेजी वाक्य लिखे, टाइम्स सुना व पढ़ा। भोजन के बाद चर्खा काता।
शाम को थोड़ा घूमे, कब्ज मालूम हुआ। कम खाया।
रात में प्रार्थना। बाद में श्री कन्हैयालाल मुंशी ने अपना नाटक पढ़ सुनाया। मि० जिन्ना की नकल करके बताई, ठीक हास्य-विनोद रहा। तकली काती। आज कई लोग साबरमती जेल से बी-वर्ग में आये। उसमें कुछ पहिचान वाले भी हैं। अभी मिलना नहीं हुआ।

७-८-३०

आज घूमने का व्यायाम ठीक किया।
चि० जयंती पारिख को आज १९वां वर्ष लगा। वह प्रणाम करने आया। भोजन थोड़ा किया, ठीक लगा।
चर्खा काता। श्री बालजीभाई आये। अंग्रेजी का अभ्यास दोपहर को किया। पंडित नारायण मोरेश्वर खरे से भजन, खासकर मीरा के, सुने। सबों को खूब सुख व आनंद मिला।
श्री किशोरलालभाई से खादी व बी-वर्ग के भोजन की थोड़ी चर्चा की।

८-८-३०

सुबह पंडित खरेजी से बातें। वह गये। 'टाइम्स' के मुख्य-मुख्य नोट देखे। श्री वल्लभभाई, पू० मालवीयजी, जैरामदास, शेरवानी, हार्डीकर, चि० मणी आदि की सजा के समाचार पढ़कर एक प्रकार से खुशी हुई।
पूज्य मालवीयजी डिफेंस के झगड़े में नहीं पड़ते तो बहुत अच्छा रहता। भोजन के बाद चर्खा। महादेव (कर्नाटक विद्यार्थी) से बातें। सी-वर्ग में

मित्रों से, खासकर १२ तारीख को जाने वालों से, वातें। उनकी शंकाओं का समाधान करने का प्रयत्न। चंद्रकांत (विद्यापीठ का विद्यार्थी) पुस्तक लेकर आया। वातें। मुंशीजी ने अपना नाटक पढ़ा।

आज सुपरिंटेंडेंट से जेल में खादी वनाने के वारे में खूब चर्चा हुई। मंगाने का निश्चय।

९-८-३०

स्नान आदि से निवृत्त होकर चि० रमा की वनाई हुई व जेल में अपनी रुई पिंजकर रखी शंकरभाई की वनाई हुई पूणी से मैंने काती थी उसकी पांच जनेऊ वनाई गई। उसमें से एक जनेऊ श्री मुकंद मालवीय के हाथ से पहनी। गायत्री की माला जपी। करीव ४५ मिनट घूमे। व्यायाम के साथ जप भी किया। ठीक रहा। मुकुंदजी के कहने से थोड़ी खीर खाई। रामनारायण राठी व गिरधरदास वांगड मिलने आये। वाद में जानकीदेवी, चि० तारा, श्रीगोपाल, श्रीकृष्ण वंवई से, वाई केसर, गुलाव, राधाकृष्ण वर्धा से। राजी-खुशी आदि वार्ता के वाद वाई केशर व गुलाव ने राखी वांधी। श्री सुवटा वहन ने राखी भेजी थी वह भी मैंने वांध ली।

पूज्य मालवीयजी को दंड कर दिया गया। वह छोड़ दिये गये। वुरा मालूम हुआ।

शिवराजजी छगनलाल मोरारका आदि की गिरफ्तारी की खवर मिली।

जेल के लिए ८०० रतल रुई मंगाने का आर्डर भेजा।

१०-८-३०

सुवह घूमने का ठीक व्यायाम किया।

आज कैदी-दिन होने के कारण कल से चौवीस घंटे का उपवास, सिद्धांत से जरूरत न होते हुए भी, किया। पत्र लिखे।

सी-वर्ग में गये। वापूजी की टुकड़ी के लोग मंगल को वाहर जाने वाले हैं। उन्हें शिस्त आदि व वर्तमान पत्र में खवरें न छपाने का महत्व समझाया। उन लोगों ने विनोदी कार्यक्रम रखा था।

शाम को ५।। बजे भोजन, चर्खा व प्रार्थना। कन्हैयालाल मुंशी ने यरवदा

जेल में 'ब्रह्मचर्य' विनोदी व श्रृंगारिक नाटक लिखा, उसका भाग पढ़कर सुनाया।

१९-८-३०

निवृत्त होकर घूमने का व्यायाम——जप के साथ।

चिट्ठियां जो अधूरी रहीं, वे पूरी कीं व भेज दीं। चि० रसिक मिलने आया। नागपुर की खबरें पढ़कर उत्साह मालूम हुआ। आखिर में छगनलाल, खुशालचंदजी भी तैयार हो गये।

श्री कुरलकेर का पत्र पढ़कर बी-वर्ग व सी-वर्ग में गये। किशोरलालभाई ठीक हो गये।

चर्खा काता। बाद में घूमते समय श्री नरीमान व श्री मुंशी से यरवडा जेल, वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर बातें।

आज प्रार्थना के बाद मुंशी का यरवडा जेल में लिखा हुआ 'ब्रह्मचर्य' नाटक पूरा हुआ।

१२-८-३०

आज सुबह सी-वर्ग में से बापूजी की टुकड़ी के ४० सत्याग्रही छूटे। उनके स्वागत व दर्शन के लिये गांव में से बाजा वगैरे आया था।

सुपरिंटेंडेंट ने कहा कि मुनि जिनविजयजी को बी-वर्ग में ट्रांसफर करने का आर्डर आया। मुंशीजी का प्रेम सेवा-वृत्ती आदर्श है।

'टाइम्स' पढ़ा—सर अब्दुल करीम, सर स्टेनली रीड ने ठीक भाषण किया। नेल्संस इंडियन रीडर पढ़ी। चर्खा काता।

घटाटे के मुकदमे की किताब आई, वह पढ़ना शुरू किया। थोड़ी देर एक बाजी शतरंज। घूमने गये, श्री नरिमान, मुंशी के साथ समझौता व राजनैतिक स्थिति की चर्चा व विचार-विनिमय। समझौता हो सके तो कर लेने के दोनों पक्ष में हैं।

प्रार्थना के बाद 'भीष्म' नाटक शुरू किया।

१३-८-३०

घूमने का व्यायाम और जप।

अंग्रेजी पढ़ी। आज रात को नींद बराबर न आने के कारण थोड़ी सुस्ती मालूम हुई।

चर्खा थोड़ा ज्यादा काता। भोजन के बाद थोड़ा आराम। घटाटे का मुकदमा पढ़ा।

बी-वर्ग के तीर्थराम से बातें। उसे भविष्य जीवन किस प्रकार बितावे उस बारे में विचार करने को कहा। थोड़ी देर शतरंज। घूमते समय नरीमान व मुंशी से बातें।

प्रार्थना। 'भीष्म' पढ़ा। तकली। सोते समय 'जीवन शोधन' पढ़ा।

आज टाइम्स में गांधी कैंप और राष्ट्रीय निशान (झंडे) के बारे में एडीटोरियल ठीक था।

१४-८-३०

'जीवन शोधन', टाइम्स, 'जामे जमशेद' पढ़ा। ता० १३-८ के जामे जमशेद में स्त्रियों की सभा में जानकीदेवी दो जगह दिखाई देती हैं। चि० वेंकटलाल की माता के हाथ में झंडा है। गोपीकृष्ण दिखाई देता है।

चर्खा। श्री शांतिकुमार नरोत्तम का तार आया मुझसे मिलने के लिए। सुपरिंटेंडेंट ने स्वीकृति तार से भेज दी।

श्री माधोप्रसादजी सालिसिटर का पत्र बद्रीनारायण ट्रस्ट के बारे में आया।

जेल में रुई से खादी तैयार करने की सब क्रिया करने की व्यवस्था की।

श्री कटेली, रवीशंकरभाई, रावजीभाई, गोकुलभाई के साथ चर्चा, विचार-विनिमय।

तनसुख (आश्रम वाले) से थोड़ी बातें।

श्री किकुभाई ने अंग्रेजी पढ़ाना शुरू किया।

१५-८-३०

श्री शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी व श्री केशवदेवजी नेवटिया मिलने आये शोलापुर मिल के संबंध में बात करने। केशवदेवजी को बद्रीनारायण ट्रस्ट के बारे में व श्री केशवदेवजी गनेडीवाले के बारे में कह दिया।

अंग्रेजी अभ्यास। चर्खा घूमना, विचार-विनिमय, प्रार्थना; 'भीष्म' नाटक पढ़ा।

नागपुर गोविंदराव घटाटे की गवाह व तपास करीव १६ दिन चली। 'जीवन शोधन' पढ़ा।
चि० शांता के आश्रम का नासिक के आसपास रखने का विचार। श्री किशोरीलालभाई का स्वास्थ्य यहां ठीक रहता है। अगर यह स्वीकार कर लेवें तो निश्चय कर दिया जाये यह सोचा।

१६-८-३०

सुवह गरम पानी में नमक व निंवू मिलाकर पिया। उससे जी घवराना शुरू हुआ।
घूमने का व्यायाम किया। 'जीवन शोधन' दूसरा भाग पूरा हुआ।
तनसुख (आश्रम का विद्यार्थी) आज छूटा। इसके मार्फत तकली, सूत की माला पू० वापूजी के लिए जगरामजी अग्रवाल ने वनाई, वह भेजी।
भोजन करते समय सुपरिटेंडेंट आये। गवर्नर आने वाले हैं उस समय अशांति न होने को कहा।
अंग्रेजी अभ्यास। पूज्य वापूजी का गोमती वहन के नाम पत्र पढ़ा। 'द्वीरेफनी वार्ता'—रामनारायणजी पाठक की दो कहानियां पढ़ीं।
प्रार्थना। 'भीष्म' नाटक के वाद घटाटे का मुकदमा पढ़ा। ११। वजे रात तक। मन ठीक लगा।

१७-८-३०

आज जन्म-अष्टमी का निर्जल उपवास किया। वापूजी की गीता १८ अध्याय पढ़ डाली।
अंग्रेजी अभ्यास कर 'विविधवृत्त' देखा। वजन हुआ—१८१ रतल। चर्खा काता। 'द्विरेफनी वार्ता' से मुकंदराय की वार्ता पढ़ी। 'संडे टाइम्स' देखा। घूमे। प्रार्थना। 'भीष्म' के वाद नागपुर घटाटे केस का जजमेंट पढ़ा। गवर्नर ता० २० को आने वाले हैं उसकी चर्चा, विना कारण, खूव चल रही है।

१८-८-३०

श्री कन्हैयालाल मुंशी वहुत देर तक वातचीत करते रहे। जीवन का आदर्श व मेरे जीवन की घटना के संवंध में।

सुपरिंटेंडेंट आये। उन्हें मैंने कहा कि एक रत्तल जो ज्यादा दूध देते हैं वह बंद कर दिया जाय। एक सप्ताह के लिए। उन्होंने बंद करना स्वीकार किया। सुपरिंटेंडेंट ने आफिस में बुलाया। गवर्नर से मुलाकात के बारे में।

गोकुलभाई, राजीवभाई मिले, चर्खा काता।

शाम को मुंशी व मुनि जिनविजयजी से राजपूताना में शिक्षा, स्त्री-संस्था आदि का विचार-विनिमय। 'भीष्म' नाटक पूरा हुआ।

१९-८-३०

घूमने के बाद अंग्रेजी अभ्यास।

आज मुकंदजी से पू० बहूजी (उनकी माता) व श्री रमाकांतजी मिलने आये थे। इसलिए भोजन करीब १।। बजे के बाद हुआ।

श्री रणछोड़भाई का आज जन्मदिन है। मुकंदजी का जन्माष्टमी का बचा दूध व हम लोगों का जो बचा था उसका दही जमाकर श्रीखंड बनाकर सबों को दिया।

शाम को घूमते हुए द्विरेफनी वार्ता पढ़ी।

घटाटे केस का पहिले कोर्ट का जजमेंट पूरा पढ़ डाला।

२०-८-३०

सुबह ४ बजे उठा। प्रार्थना। 'मनाचे श्लोक' का पाठ।

घूमने का व्यायाम, जप। हजामत, स्नान आदि से जल्दी निवृत्त होकर अंग्रेजी अभ्यास।

चिट्ठियां आईं, पढ़ीं। फिर अंग्रेजी अभ्यास के बाद वर्तमान पत्र पढ़े।

एकदशी वृत किया। आराम के बाद अभ्यास व चर्खा काता।

गवर्नर जेल में ४।। बजे आकर चले गये। सुपरिंटेंडेंट आये। उन्होंने कहा गवर्नर ने मेरे, नरीमान व मुंशी के बारे में पूछताछ की।

'द्विरेफनी वार्ता' पूरी हुई।

२१-८-३०

कल मुलाकात के लिए लोग आने वाले हैं, इसलिए नोंद की।

अंग्रेजी अभ्यास। सुपरिंटेंडेंट आये। उन्होंने श्री महेश्वरी को वी-वर्ग में वीड़ी वगैरा भेजने की मनाही की।
रवीशंकरभाई रुई, चर्खा, पींजण आदि की बातें करने आये। काम करने के लिये प्राय: अपने लोग नाराज हैं ऐसा उनको कहना पड़ा।
करुलकर से बीडी वगैरा के संवंध में व मुकंदजी के वारे में सुपरिंटेंडेंट ने यहीं रहने को कहा आदि चर्चा। सुपरिंटेंडेंट का मन ठीक है परंतु तरीका वरावर नहीं है। चर्खा, अंग्रेजी अभ्यास।

२२-८-३०

मुकंद मालवीय के संवंध में विचार। सुपरिंटेंडेंट से वात करके संतोष-कारक परिणाम आया।
आज जानकीदेवी, सौभाग्यवती देवी, चि० धनु, चि० गंगाविसन वर्धा से मिलने आये। श्री मथुरादासभाई भी मिलने आये। उनसे चर्खा संघ व गांधी सेवा संघ की वातें कीं। उन्हें गांधी सेवा संघ से चर्खा संघ को एक लाख रुपये कर्ज देने का कहा और चर्खा संघ भी अपनी रकम दे सकता है। ओवरड्राफ्ट से। मथुरादासभाई, वल्लभभाई से वातें हुईं वह कहीं। लड़ाई कई दिनों तक चलने का संभव है ऐसा कहा।
सुपरिंटेंडेंट से श्री किशोरलालभाई, छोटालालजी मारफतीया, मुकंदजी तथा अन्य घटनाओं पर वहुत वातें हुईं। जो कहना था उन्हें कहा। मन में थोड़ी अशांति रही। किशोरलालभाई के साथ के व्यवहार व उस वारे में उनके विचार जानकर।
चर्खा संघ का स्टेटमेंट पढ़ा।

२३-८-३०

अंग्रेजी अभ्यास। निर्भयराम व दामोदरदास (वी-वर्ग के लोगों) को, उन्हें ए-वर्ग के मित्रों के प्रति द्वेष व घृणा के जो भाव हो गये थे, उस संवंध में वहुत-सा समझा कर कहा।
आज रहने की कोठरी का सव सामान निकालकर फिनायल से साफ धुलाई

की, सामान व कपड़े धूप में सुखाये। चर्खा काता। वाहर खुली हवा में अभ्यास किया।

दस चर्खें विलेपार्ला से आये। उसमें से नौ सी-वर्ग में गोकुलभाई के जिम्मे किये। एक मुकंदजी को दिया।

शाम को भूख ठीक लगी थी। ब्रेड के सिवाय पूड़ी भी ली।

आज से पलंग पर सोना बंद किया। जहांतक हो सके कपड़े व वरतन भी पहिले की तरह अपने हाथ से ही साफ करने का विचार किया।

२४-८-३०

मुकंदजी के साथ ठीक व्यायाम किया। आज मन आनंद में था। आज डाक्टर ने खास वजन लिया। १८१ रतल हुआ। जेल का अधिक दूध बंद करने पर भी वजन नहीं घटा। यह संतोष की वात मालूम हुई।

अंग्रेजी अभ्यास विधिवत हुआ।

जेलर कटेली ने आकर देवीदास व कोयाजी के पत्रों के वारे में वात की। श्री रणछोड़भाई व मुनिजी के संवंध में उन्होंने विरोध किया, वह कहा। चर्चा व विचार-विनिमय। उन्होंने श्री रणछोड़भाई, मुनि जिनविजयजी का वी-वर्ग में जाने का उचित समझा।

आज डुडु आदि खेले। चर्खा।

आज से मु० मालवीयजी के साथ व्यायाम।

२५-८-३०

सुपरिटेंडेंट राउंड पर आये। उन्होंने आफिस में वुलाया। श्री रणछोड़-भाई व मुनि जिनविजयजी के बारे में दूसरी जगह व्यवस्था करने का विचार वताया। इस पर उन्हें उचित सलाह दी।

अंग्रेजी अभ्यास। चर्खा।

व्यायाम से तथा कल के खेल से हाथ-पांव थोड़े दुखते रहे। आज विलेपारले से दस चर्खे आये थे उसमें से एक वर्ग-ए मुकंदजी, एक बी-वर्ग दिवानजी, आठ सी-वर्ग गोकुलभाई के पास पहुंचे।

श्री कटेली से वातें। श्री रणछोड़भाई व मुकंदजी से दूसरी व्यवस्था की चर्चा।

प्रार्थना के वाद पू० वापूजी के संवंध में विचार।

२६-८-३०

घूमने का व्यायाम हुआ। दूसरी कसरत व आसन वगैरा वरावर नहीं हो सका। कारण, हाथ पांव दुखते थे। सुपरिंटेंडेंट ने वुलाया। आचार्य राय का पत्र वतलाया। उन्होंने मुझसे व श्री नरीमान से मिलने की इच्छा प्रगट की। ता० ३० को मिलने का संभव है।

चर्खा। दो वजे भोजन, 'जामे जमशेद' पढ़ा। अंग्रेजी अभ्यास।

पंडित मोतीलालजी की वीमारी के कारण थोड़ी चिंता हुई। सुपरिंटेंडेंट से तार देने के लिए पूछा तो उसने स्वीकृति नहीं दी। वर्किंग कमेटी को गैरकानूनी ठहराने का हुक्म जानकर एक प्रकार से खुशी हुई। जल्दी ही पूज्य मालवीयजी व विट्ठलभाई के पकड़े जाने का संभव मालूम हुआ।

प्रार्थना के वाद श्री मुंशीजी ने पोरवंदर की सुरज वा का किस्सा कहा।

२७-८-३०

आज सुपरिंटेंडेंट जल्दी आये। आज से श्री रणछोड़भाई व मुनिजी को तीसरे व्लाक में रहने की आज्ञा मिली। वे दोनों वहां रहने लग गये।

अंग्रेजी अभ्यास। छापा, चर्खा। थोड़ा आराम। आज से प्रार्थना श्री मुनिजी के तीसरे व्लाक के कमरे में होने लगी। प्रार्थना के वाद वोरा, खोजा, पारशी कौम की व मोतीलालजी पित्ती की चर्चा।

रात को भजन के वाद १२॥ वजे काकूभाई को डर का स्वप्न आया। वह रोने लगे। नींद उड़ गई।

२८-८-३०

सुपरिंटेंडेंट जल्दी आ गये। अंग्रेजी अभ्यास, चर्खा। टाइम्स पढ़ा। डाक्टर अंसारी, पं० मालवीयजी, विट्ठलभाई पटेल, मथुरादास त्रिकमजी, दीपनारायण सिंह, डा० राय, लाला दुलीचंद, सरदार मंगलसिंह, चौधरी फजजुल हक्क, श्री राजाराव के ता० २८-८ (गणेश चतुर्थी) को दिल्ली में गिरफ्तार होने की सूचना पढ़कर खुशी हुई। श्रीमती कमलादेवी

व हंसा मेहता नहीं पकड़ी गईं। समझौते की बातचीत भी चल रही है। श्री मुंशी ने अपना लिखा हुआ 'देवयानी' नाटक पढ़कर सुनाया।

२९-८-३०

चर्खा संघ की तीन व सत्याग्रह आश्रम की एक रसीद सुपरिटेंडेंट के सामने सही करके पड़वेकर को दी।

टाईम्स, इवनिंग न्यूज पढ़ा। दिल्ली में वर्किंग कमेटी के ८ सदस्यों को ता० २८-८ को छः मास की सादी सजा हो गई। राजाराव छूट गया मालूम हुआ।

नई वर्किंग कमेटी इस मुजब बनी—खलील-उल रहमान प्रेसिडेंट, हरकरण-नाथ मिश्र, एस० ए० ब्रेलवी, वेलजीनप्पू, के० वी० आर० स्वामी (राज-महेंद्री), एस० वी० कोजलगी, ए० एम० इस्माईल गजनवी, शरतचन्द्र बोस, प्रोफेसर अब्दुल बारी, आसफअली, मौलाना अब्दुल (बंगाल), बाबू भगवानदास, कमला नेहरू, हंसा मेहता।

मुंशी का 'तर्पण' नाटक पूरा हुआ।

मालवीयजी आदि नेताओं को सजा होने की खुशी में मुकंद मालवीय ने गुड़ के लड्डू खिलाए।

बी-वर्ग में नाटक हुआ।

३०-८-३०

आचार्य राय मिलने आये। खादी, रचनात्मक काम आदि की बातें कीं। सतीशबाबू, प्रफुल्लबाबू जेल में ठीक हैं। हेमप्रभा देवी ठीक काम करती हैं। तारणी ज्यादा बीमार है।

पत्र मिले। चि० शांता के पत्र में श्री सूरजमलजी के मियादी बुखार का समाचार पढ़कर चिंता हुई। श्री मोतीलालजी नेहरू की बीमारी की चिंता भी थी। पत्र लिखे। चि० शांती, श्री कमलादेवी नेहरू, जानकीदेवी, चि० मदालसा, उमा, चि० रुक्मणी, बनारसी, महावीर-प्रसाद पोद्दार, श्री तारावहन, मथुरादासभाई, चि० राधाकृष्ण, श्री केशव-देवजी नेवटिया को लिखे पत्र आज की डाक से जाने की व्यवस्था की।

चर्खा। अंग्रेजी अभ्यास। प्रार्थना। श्री मोतीलालजी के स्वास्थ्य के लिए सामुदायिक प्रार्थना की। सूरजमलजी के लिए अकेले। श्री पुरु-षोत्तम के 'भीष्म' नाटक के अंक पढ़े गये। इवनिंग न्यूज पढ़ा।
श्री मोतीलालजी नेहरू व सूरजमलजी रुइया के बीमारी के समाचारों से रात में विचार रहा।

३१-८-३०

मोतीलालजी व सूरजमलजी के लिए प्रार्थना की।
पत्र पढ़े। वजन १८५ रतल हुआ।
मोतीलालजी की तबियत के ठीक होने के समाचार पढ़कर चिंता कम हुई।
श्रीमती हंसा मेहता आदि की गिरफ्तारी हुई।
अंग्रेजी अभ्यास। चर्खा काता। दो बजे भोजन से निवृत्त। आज बहुत दिनों के बाद श्री रणछोड़भाई व मुकंदजी के साथ शतरंज खेली।
आज ४ बजे बाद खूब वर्षा हुई। शाम को प्रार्थना के बाद पुरुषोत्तम बैरिस्टर का 'भीष्म' नाटक पढ़ा गया, पूरा हुआ।

१-९-३०

सुबह प्रार्थना के बाद, श्रीमद्‌रामचंद्र की 'मारी भावना' पढ़ी, अच्छी मालूम हुई।
सुपरिंटेंडेंट घूम गये। मिती के हिसाब से आज पूरे पांच महीने जेल में आये हो गये।
अंग्रेजी अभ्यास। अखबार। चर्खा काता। आज से बन सके तो रोज ५०० बार, इस महीने में १२००० बार, सूत कातने का विचार किया।
घूमते समय श्री नरिमान से वर्तमान स्थिति पर विचार।
रणछोड़भाई, चि० रमा वगैरा मिलने आये। रमा ने पूणी भेजी व एक तकली दी।
रात को ९ बजे बाबूराव ने बबंई से आया हुआ पोस्टकार्ड दिया। सूरजमलजी की तबियत ठीक है यह पढ़कर चिंता मिटी।
आज रात को भी काता। ५०० बार से ज्यादा हो गया।

२-९-३०

रामचंद्र सिपाही ने वत्ती ४ वजे के पहिले ही जला दी। जल्दी उठकर प्रार्थना की। १८० तार करीव काते। शौच, मुख मार्जन, व्यायाम, नाश्ता आदि से ८ बजे निवृत्त हुए।

१२ हजार वार सूत आज सुवह तक का, मिलाकर अलग रख दिया।

श्रीमती सरला देवी अंवालाल व मावलणकर की गिरफ्तारी के समाचार पढ़कर उनके लिए अधिक प्रेम व आदर वढ़ा।

वम विस्फोट (हिंसा) की प्रवृत्ति वढ़ती हुई देखकर, ठीक चलते हुए आंदोलन को पूरा धक्का वैठने का और हानि होने का डर मालूम होता है।

आज आकाश का दृश्य इतना सुंदर था कि देखने ही योग्य था।

रात को भी चर्खा काता।

३-९-३०

एकादशी व्रत। आज दिन भर में एक हजार वार से ज्यादा काता। अंग्रेजी दो घंटे पढ़ी। आज टाइम्स में समझौता होने की आशा नहीं रही, ऐसी खवर थी। इस झगड़े का जल्दी अंत आ जाये तो वाहर व अंदर के लोग निश्चिंत होकर अपना काम करते रहें।

एक पोस्टकार्ड ववंई भेजा। चर्खे व मेरे सामान व मुलाकात के लिए आनेवालों के वारे में लिखा।

आज भी थोड़ी वर्षा हुई थी। शाम को प्रार्थना। वाद में राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय।

४-९-३०

सुपरिंटेंडेंट आए। श्री जगरामजी (पंजाव वाले) के वारे में कहने लगे, उसके पास वहुत-सी चिट्ठियां निकलीं आदि। सूरजमलजी रुइया हरिद्वार से आज रवाना होकर ववंई जाते हैं। तवियत ठीक है, ऐसा तार मिला। पडवेकर नारायणराव (पुलिस वाले के लड़के) के वारवोंड सही कराने लाये थे। वह नागपूर मुकदमे के कागजात लेकर शंकरलालभाई व जाजूजी के साथ ता० ६ को मिलने आने वाले हैं। सुपरिंटेंडेंट ने परवानगी दे दी

है। व्यापारी मुलाकात। सुपरिंटेंडेंट से कपड़े, वर्तन व घूमने आदि के वारे में पूछ लिया।

अंग्रेजी अभ्यास, सूत कातना। नागपुर मुकदमे के कागजात पढ़ना शुरू किया।

रात को काकुभाई को स्वप्न आने के कारण रोने लगे। उन्हें आवाज दी।

५-९-३०

(पूज्य वापूजी को आज जेल में चार महीने हुए)

आज से, सुबह चाय व ब्रेड जो लेता था वह, श्राद्ध पक्ष खतम होने तक, वंद की।

अंग्रेजी अभ्यास। छापा पढ़ा और सूत काता। नागपूर मुकदमे के कागजात पढ़े।

रात में प्रार्थना। वाद में मिल के संवंध में वाडिया की योजना की थोड़ी चर्चा हुई। श्री कन्हैयालाल मुंशी के प्रेमपूर्वक आग्रह होने के कारण नागपुर केस के संवध में उनसे चर्चा, उन्होंने काजगात भी देखे।

चर्खा ठीक काता। वर्षा जोर की हुई।

६-९-३०

श्री कन्हैयालाल मुंशी के साथ उनके आग्रह के कारण नागपूर के मुकदमे की वातचीत की।

श्री शंकरलाल बैंकर, पू० जाजूजी, चि० प्रहलाद, चि० कमलनयन मिलने आये। व्यापारिक मुलाकात, चर्खा संघ के संवंध में तथा अन्य विचार-विनिमय हुआ। श्री शंकरलालभाई को वाहर रहने का आग्रहपूर्वक व कारण वतलाकर कहा।

आज टाइम्स में समझौता निष्फल होने की खवर पढ़ी। एक तरह से ठीक हुआ। पूणी, सूत का भाव, चर्खे व खादी वुनने वावत श्री रवीशंकर, किशोर-लालभाई, गोकुलभाई से वातें और विचार-विनिमय।

वर्षा जोर की हुई। चर्खा ठीक काता। पढ़ाई कम हुई। समझौता के संवंध का पत्र-व्यवहार टाइम्स में पढ़ा।

७-९-३०

नित्यकार्य के वाद चि० वाल, रसिक, जयंती के कागज व वारडोली रिपोर्ट पढ़ी। संतोष हुआ।

चर्खा। अंग्रेजी। टाईम्स में समझौता विफल हुआ वह समाचार फिर से आधा पढ़ा।

आज रविवार होने के कारण गत रविवार के वाद श्री रणछोड़भाई व मुकुंदजी की इच्छा होने के कारण उनके साथ शतरंज की एक वाजी खेली। अव शतरंज खेलने का मोह चला गया। कातने व पढ़ने में ठीक मन लगता है।

श्री नरिमान व मुंशी का, समझाने के तरीके के कारण थोड़ा असमाधान रहा।

८-९-३०

आज पारसियों का त्यौहार नया दिन है। मणीवहन पटेल गिरफ्तार हुई। सुपरिंटेंडेंट ने कहा तुम्हें संतोष हुआ होगा। मैंने कहा दो रोज से खूब नींद आती है। उन्होंने कहा मुझे तो ठीक नहीं लगता। (यानें समझौता होकर हम लोग जल्दी चले जावें ऐसा वह चाहते हैं।)

वंवई व वर्धा को पोस्टकार्ड लिखा। कल वहुत करके यहाँ से जावेगा।

शाम को घूमते समय मस्तक का व्यायाम किया।

तीन रोज से वरावर शाम को वर्षा होती है।

९-९-३०

सुपरिंटेंडेंट आज इंसपेक्शन के लिए आये। श्री पुरुषोत्तमजी व श्री भगवानदास महेश्वरी के ए-वर्ग में से वी-वर्ग में ट्रांसफर के आर्डर की सूचना दी।

पढ़ना व कातना ठीक हुआ।

वीच में आराम के समय एक-दो पत्र लिख रखता हूं, जिससे एकदम लिखने में अधिक समय न जाय।

रात को १।। वजे से वर्षा की झड़ी दिनभर चालू रही।

१०-९-३०

व्यायाम ठीक हुआ। आनंद आने लगा। दिनचर्या के मुताविक कार्य हुआ।

आज ता० १ से लगाकर आज शाम तक, दस रोज, का ६००० वार सूत घर की पूणी का हुआ, वह अलग रखा। कल से जेल की पूणी कातने का विचार किया।
प्रार्थना के बाद श्री मुंशीजी से नागपुर केस के कागजात देखने के लिए लिये। थोड़ी देर चर्खा कातने के बाद वे कागजात ९ से १०।। बजे रात तक आज पढ़े। बीच में छोड़ने की इच्छा नहीं हुई।
पानी की झड़ी एक-सी रही।

११-९-३०

सुबह वर्षा खुली। शाम को फिर हुई।
व्यायाम में विशेष उत्साह व आनंद आने लगा। आज सवांग आसन ४ मिनट तक किया व जंपिंग १००० किये।
आज से जेल की पूणी से सूत कातना शुरू किया।
सुपरिंटेंडेंट ने खाली मिलने को बुलाया, मामूली बातें हुई।
बंबई में ता० १० बुधवार को २४ घंटे में २१.५८ वर्षा हुई। १८८९ में एक रोज में १६.१० हुई थी।
मीरावहन के ता० ९ कलकत्ता पहुंचने व प्रोसेशन के समय दंगा हुआ। ३० स्त्रियां पकड़ी गईं।
वर्मा में ता० १७ को केलझर तथा अन्य १०० गिरफ्तार हुए। चिरंजीलाल बड़जाते भी।
विलेपारले में ता० १० को अबदुल्ला सेठ गिरफ्तार हुए।

१२-९-३०

दिन में वर्षा खुली। रात को फिर हुई।
सुबह ५ बजे से दरवाजा खुला तबतक काता। प्रार्थना वगैरा पहिले कर ली थी, व्यायाम ठीक हुआ। सवांग आसन ५ मिनट तक। जंपिंग १००० से भी ज्यादा।
पत्र लिखे। पी० एस० पाठक, मिठी बहन, प्यारअली भाई, चि० शांता, सुवटा देवी, जानकीदेवी, राधाकृष्ण, केशवदेवजी, रामेश्वर, चि० मार्तंड

आदि मिलने आये। जानकीदेवी, रुकमणी, वनारसी, वावा सा० विरुलकर की स्त्री, प्यारेलालजी की माता, वहन (सुशीला), भाई, दास्तानेजी की मां, दूसरी एक वाई, उनके मित्र, सरस्वती, गजराजजी, केशवदेवजी, तारा (उनकी लड़की), रिषभदास, प्रह्लाद, कमलनयन, गुलावचंद, पूनमचंद वांठिया। जानकीदेवी को भ्रमण करने को कहा।

सूत काता। अंग्रेजी अभ्यास नहीं हुआ।

पूणी, सोंठ, गवारपाठा, मुनक्का आई। श्री नरीमान से विचार-विनिमय हुआ।

१८ हजार वार सूत जानकीदेवी के साथ भेजा। जेलर को ४२ हजार वार दिया।

१३-९-३०

सुपरिंटेंडेंट से मिले। मेजर दावोलकर से परिचय हुआ। आचार्य राय ने नासिक जेल के लिये दवा भेजी, सुपरिंटेंडेंट ने कहा।

आज वर्षा दिन में खुलने से ठीक मालूम होता था। रात में फिर वर्षा शुरू हुई।

पुरुषोत्तमजी के पिता त्रीकमदासजी की मृत्यु का तार आया। नागपुर केस के कागजात मुंशीजी के साथ पढ़े। श्री गोपीजी की गवाही, जानकीवाई विष्णू पंत (पुलगांव वाले) के शेयर संवंध की, उन्हें वहुत पसंद पड़ी।

९ वजे रात को प्रार्थना। वाद में 'काका नी शशी' नाटक सुना।

१४-९-३०

वर्षा शुरू थी।

वजन १७९ हुआ। ६ रतल कम हुआ। कसरत से लाभ हुआ।

चर्खा। अंग्रेजी। वर्तमान पत्र पढ़ा। आज पंडित रणजीत की प्रयाग में व सुभद्रादेवी (सत्यदेव) की कलकत्ते में गिरफ्तारी की खवर पढ़ी।

आज शतरंज नहीं खेली। नागपुर के मुकदमे के कागजात श्री मुंशीजी के साथ ४। वजे तक पढ़े।

प्रार्थना। पीछे मुंशी ने 'काका नी शशी' का नाटक सुनाया। चर्खा।

१५-९-३०

आज सर्वांग आसन सात मिनिट तक व जंपिंग १२०० किये। वर्षा जोर से आई।

सुपरिंटेंडेंट सोमवार के इंसपेक्शन के लिए आये। वजन कम देखकर आश्चर्य से पूछने लगे, 'क्यों फिर क्या गड़बड़ हुई।' मैंने उन्हें समझा दिया कि कसरत से वजन कम कर रहा हूं, आप चिंता न करें।

कातना, पढ़ना। नागपुर मुकदमे के कागज पढ़े।

प्रार्थना के बाद श्री मुंशी ने 'काका नी शशी' नाटक आज पूरा किया, ठीक लिखा गया था।

१६-९-३०

आज बत्ती वाला जलाना भूल गया, जिससे प्रार्थना में देर हुई। व्यायाम आदि से ७।।। बजे निवृत्त हुये।

आज बहुत दिन के बाद सूर्य के दर्शन हुये। धूप भी निकली। पढ़ना, चर्खा आदि।

शाम को ४। से ५।। तक श्री मुंशी के साथ नागपुर के कागजात पढ़े। वह १५ रोज में शायद छूट जायंगे।

श्री पुरुषोत्तम त्रिकमजी ने जो नाटक बनाया वह मुंशीजी ने शाम की प्रार्थना के बाद आज से पढ़ना शुरू किया।

१७-९-३०

आज भी सूर्य ने खूब तेजी से अपना रूप प्रकट किया। अच्छा मालूम होने लगा। दिनचर्या के मुजब काम हुआ।

शाम को श्री मुंशी के साथ करीब एक घंटा नागपुर की चिट्ठियां पढ़ीं।

श्री मकनजी देसाई व चिमनलाल प्राणलाल भट्ट कल छूटने वाले थे। उनसे तांत मोल लेकर रवीशंकरभाई को दी। उनसे बातें व परिचय।

प्रार्थना के बाद श्री पुरुषोत्तमजी का नाटक 'बलिदान' पूरा हुआ। नरीमन से बातें।

१८-९-३०

अंग्रेजी पढ़ाई वंद रखी। चर्खा। सूत ६३० तार काते।
श्री मुंशी के साथ नागपुर के कागजात करीव ४ घंटे पढ़े (मारवाड़ी चिट्ठियां)।
आज एकादशी का उपवास था।
शाम को प्रार्थना के वाद, श्री नरिमान जाने वाले थे इस कारण, उनसे वातचीत। पूज्य वापूजी के संवंध में कुछ लिखा।

१९-९-३०

वापूजी का जन्मदिन (मिती से)। आज पूज्य वापूजी को ६१ वर्ष पूरे होकर ६२ वां चालू हुआ। प्रार्थना। वैष्णव जन।
सुवह तीन वजे से आज का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज १०॥ घंटों में, तार २५६०, वार ३४१३, रात के ११॥ वजे तक खतम किया। घंटे में ३२५ वार की रास (औसत) आई। सूत की ज्यादा-से-ज्यादा एक घंटे में ५६० वार की गति रही। वीच में सूत उतारने आदि में समय लगा वह अलग। प्रार्थना के वाद भजन। वापूजी के संवंध में सभीने अपने लिखे लेख पढ़े। आनंद मनाया।
आज भोजन एक ही वार किया। गुड़ व मुनक्का मिलाये हुये चावल वने थे।
श्री के० एफ० नरिमान आज १२। वजे छूटकर गये। उनसे १५ मिनट वातें। वापूजी पर लेख भी लिखकर आज देना पड़ा।
रात में १२॥ वजे सोने को मिला।

२०-९-३०

नित्य कार्य से निवृत्त होकर सूत का हिसाव नक्की किया। ३४१३ वार सूत अलग रख दिया।
आज भी अभ्यास से छुट्टी ली। पत्र आये वे पढ़े।
चर्खा काता, छापा सुना, भोजन के वाद दो घंटे आराम। श्री संजाना, सेशन जज थाणा, की श्रीमती लुकमानी के वारे की कार्यवाही पढ़कर संतोष हुआ।

श्री मुंशी के साथ एक घंटा नागपूर मुकदमे के कागजात पढ़े, वर्धा सेशन की नकल आई। मुकदमे की अगली ता० १०-१० को हुई।
प्रार्थना। बातचीत। पौन घंटा सूत काता, १८० तार हुये।

२१-९-३०

आज शरीर, खासकर पीठ अकड़ी हुई मालूम हुई। व्यायाम थोड़ा कम किया। आज पत्रों के जवाब लिखे—पत्र कल यहां से जावेंगे। केशवदेवजी, जानकीदेवी, राधाकृष्ण, नर्मदा, विद्यावती (लाहौर), नारायणदास भाई (आश्रम), बनारसी, शंकरलाल, बेनीप्रसाद डालमिया (उनके दो लड़कों की मृत्यु के कारण) आदि को लिखे। श्री माधोप्रसाद ट्रस्ट का नोटिस। रामगोपाल सीवनी को पत्र फिर दिया। भोजन के बाद 'विविध वृत्त' थोड़ा देखा। चर्खा काता। श्री मुंशी के साथ एक घंटा नागपुर-केस के कागज पढ़े। प्रार्थना के बाद कांग्रेस के साथ मेरा संबंध व अनुभव मित्रों की इच्छा से कहने शुरू किये।

२२-९-३०

बत्तीवाले ने आज भी सवेरे बत्ती नहीं जलाई। थोड़ी सुस्ती आज भी मालूम हुई। पीठ में दर्द तो कम मालूम हुआ।
सुपरिटेंडेंट से बहुत देर तक हिंदी महिला मंडल, जेल-रूल, सुबह जल्दी बत्ती जलाने व दरवाजा खुलने आदि संबंध में बातचीत।
अंग्रेजी पढ़ना, चर्खा कातना हुआ। आज चिट्ठियां रवाना हुई (रजिस्ट्री द्वारा)। श्री मुंशी के साथ १। घंटे नागपुर-केस के कागजात पढ़े।
शाम को रवीशंकरभाई से चर्खे, पींजण संबंध में थोड़ी बातें।
प्रार्थना के बाद कांग्रेस व नेताओं के साथ का अनुभव कहना शुरू। बाद में चर्खा, नागपुर कागजात पढ़े।

२३-९-३०

सुपरिटेंडेंट ने सोमवार के बदले आज राउंड किया।
अंग्रेजी अभ्यास, चर्खा काता। श्री मुंशी के साथ १। घंटे करीब नागपुर-चिट्ठियां पढ़ीं।

श्री रवीशंकरभाई, किशोरलालभाई, गोकुलभाई से मिलकर पींजण, चर्खा आदि मंगाने की व्यवस्था करने को विलेपारले लिखा। आज गोमती बहन, चि० तारा आ गई थीं, परंतु मिलने की परवानगी नहीं मिली। प्रार्थना के बाद सी-वर्ग के भाइयों ने पू० गांधीजी के संबंध में रेंटीया (चर्खा) बारस को जो लिखा था वह पढ़ना शुरू किया। पूरा नहीं हुआ। नागपुर कागज पढ़े।

आज से जेल का गद्दा व मुनिजी की भेजी हुई गादी अलग कर दी। केवल कंबल, सतरंजी व चद्दर पर सोना शुरु किया।

२४-९-३०

आज चपरासी मेरा ताला ही खोलना भूल गया; कुछ विनोद मालूम दिया (थोड़ा गुस्सा भी आया)। अंग्रेजी अभ्यास चर्खा काता। श्री मुंशी के साथ १। घंटा करीब नागपुर चिट्ठियां पढ़ी। आज प्रायः सब पढ़ना पूरा हो गया।

श्री गोकुलभाई व रावजीभाई के लिये मुझे आफिस में बुलाया। काता हुआ सूत उनको ही मिलेगा ऐसा सुपरिंटेंडेंट ने कहा है ऐसा कुरलकर ने कटेली के सामने कहा।

घूमते समय मुंशीजी से बातें। प्रार्थना के बाद सी-वर्ग वालों के लेख पढ़े गये। चर्खा काता। 'जामे जमशेद' पढ़ा।

२५-९-३०

आज से सुबह बत्ती पांच बजे जली व दरवाजा भी पांच बजे खुला। चर्खा सुबह ही काता। व्यायाम ठीक हुआ। कल से पसीना सारे बदन में निकलता है। प्रो० धारपुरे आज छूटकर गये (जुर्माना भर दिया जिससे जल्दी छूटें)। आज मुकन्दजी को थोड़ी सुस्ती मालूम होती थी इसलिए बी-वर्ग में सामान भेजकर भोजन मंगवाया व सबके साथ खाया।

चर्खा व अंग्रेजी अभ्यास। नागपुर के कागजात तो कल ही पूरे हो गये थे। मुंशीजी ने घूमते समय जमनादासजी मेहता का थोड़ा पूर्व इतिहास कहा।

प्रार्थना के वाद लेख पढ़े। श्री महेश्वरी के संबंध में चर्चा, मैंने उनसे वात करने का निश्चय किया।

२६-९-३०

आज सुपरिंटेंडेंट उत्साह आनंद में थे। वी-वर्ग का भोजन, प्याज व आलू मिलाकर वनाया व वाफा हुआ साग मीठा व स्वादिष्ट लगा।

जानकीदेवी, चि० शांता, मदालसा, उमा, राधाकृष्ण, श्री रामेश्वरजी विड़ला, केशवदेवजी, रामचंद्रजी, विश्वभंरजी महेश्वरी, गजराजजी मिलने आये थे।

श्री रामेश्वरजी विड़ला का जूट का सट्टा श्री...ने ज्यादा कर डाला। ४० लाख के नुकसान की अंदाज वताई। थोड़ी चिंता हुई, उन्होंने कहा चिंता का कारण नहीं। मैंने कहा तीन-एक लाख की व्यवस्था मैं कर सकता हूं, उन्होंने ना कहा।

आज मन में वाहर जाने का तथा मित्र कुटुंवियों का मोह पैदा हुआ। थोड़ी सुस्ती भी आई।

आज अंग्रेजी नहीं पढ़ी। चर्खा ठीक काता। श्री महेश्वरी से खूव वातें, उनके स्वभाव के लिए उन्हें समझाकर कहा।

२७-९-३०

सिपाही फिर दरवाजा खोलना भूल गया।

सुपरिटेंडेंट ने कहा कि अव तुम अकेले नहीं रहोगे। और मित्रों के आने की खवर है।

आज के टाईम्स व 'जामे जमशेद' से मालूम हुआ कि सत्याग्रह की लड़ाई ठीक चल रही है। लोगों में जोश है।

आज फिर मुकंदजी के इस आग्रह पर कि उनके पास भोजन नहीं करेंगे तो तो वह समय पर भोजन नहीं करेंगे, उनके पास भोजन करना शुरू किया।

२८-९-३०

वजन १७९॥ हुआ।

सिपाही ने आज सुवह ४॥ वजे ही वत्ती जला दी।

प्रार्थना ५ वजे श्री काकुभाई के साथ की।

बावूराव मु० हवालदार ने ३-४ रोज पहिले 'कागला व कागली' को जुड़ा हुआ देखा। यह देखने से दुःखकारक भारी अनिष्ट आता है ऐसी समझ होने से उसने अपने हाथ से ही अपने माता-पिता को लिख दिया कि बाबू एक घंटा बीमार रहकर मर गया। यह खबर उसके घर पहुंचते ही खूब रोना-पीटना हुआ। उसके माता-पिता, बहनोई रोते हुए बैठने आये। पर उसे जिंदा देखकर उन्हें सुख व आश्चर्य हुआ। कैसी विचित्र घटना व लोगों की समझ है! पढ़ना, कातना आदि हुआ।

२९-९-३०

आज व्यायाम थोड़ा कम हुआ। अंग्रेजी अभ्यास किया। इंगलिश एक्सर-साइजेज भाग—२ शुरू किया।

श्री भगवानदास महेश्वरी आज आर्थर रोड जेल गये।

अंग्रेजी, चर्खा वगैरा।

आज प्रार्थना के बाद सबों को जल्दी बन्द कर दिया गया। दूसरे राजनैतिक कैदी आवेंगे ऐसा मालूम हुआ। रात में गरमी मालूम हुई।

३०-९-३०

सुबह पांच बजे काकुभाई के साथ प्रार्थना। बाद में व्यायाम। कोठरी फिनाईल से धुलाई गई।

वर्धा का आया हुआ तार सुपरिंटेंडेंट ने खुद दिया।

सूत का हिसाब ता० १२-९ को १८००० वार व उसके पहिले दो बार के २४०००, कुल ४२००० वार सूत तीन बार में बाहर भेजा। ता० ११-९ से जेल की पूणी कातनी शुरू की। ता० ११ से आज तक चर्खे पर १५१७३ वार सूत काता गया जिसमें बापूजी के जन्मदिन का ३४१३ वार भी शामिल है। तकली पर ६७८ वार काता गया। चर्खे पर जेल में आज तक ५७१७३ वार काता जिसमें ४२००० भेज दिया, १५१७३ अलग रख दिया व तकली का अलग रहा। आजतक जेल में ५७००० वार सूत काता। प्रार्थना के बाद मुंशी की जेल की डायरी सुनी। कोयाजी आज यहां से दूसरी जेल में गये।

१-१०-३०

आज सुबह घूमते हुए यह विचार आया कि राजपूताना में सरकार ने गोलीबार किया व वहां चि० कमल भी हिम्मत से छाती सामने करके बैठा रहा, उसे गोली लगी और उसका शरीर छूटने की खबर मिली। उसपर से कमल के लिये खूब आदर व प्रेम बढ़ा। जानकीदेवी के लिए तार पत्र का मसौदा बनाया। सुख, आश्चर्य व चिंता सबों के मिश्रण से मिली हुई मनःस्थिति मनन करने योग्य मालूम हुई। मित्रों को कह दिया आप उदास होकर मेरे पास न आवें न मुझे चिंता करने की याद दिलावें।

आज पूज्य जाजूजी, चि० गंगाबिसन नागपुर मुकदमे के लिए आए, उनके साथ करीब ४।। घंटे बातचीत हुई। श्री मुंशी भी बीच में बैठे हुए थे। श्री कन्हैयालाल मुंशी व मुनि जिनविजयजी आज छूट गये। उन्होंने ३०० दंड भरा।

नागपुर केस के कागजात जेल से खरीदी हुई पेटी में वापस किये। उमा की छत्री व घंटी भी।

प्रार्थना, भजन का काम पुरुषोत्तमभाई को सौंपा। रात को चर्खा काता।

२-१०-३०

सुबह पांच बजे प्रार्थना करने के बाद 'गांधी-शिक्षण' में से पूज्य बापूजी के अंगत विचारों में से कुछ पढ़ा।

व्यायाम। बाद में चर्खा चालू किया। श्री रणछोड़भाई व कीकुभाई से बातचीत। पीछे से निंदा करना खराब है तथा किसी के चरित्र के संबंध में खासकर माता-पिता का पूछना बहुत ही अनुचित है यह मैंने कहा। उन्होंने कबूल किया।

सुपरिंटेंडेंट के साथ आज थोड़ी गरमागरम बातचीत हुई। सूत मोल देने का उन्होंने निश्चित वचन दिया था, आज आई० जी० पी० के पत्र के कारण इनकार किया। बुरा मालूम हुआ, मन में विचार बना रहा। सब मिलकर एक घंटा चर्खा काता। रात को प्रार्थना, बाद में बापूजी के जीवन में से एक घंटा पढ़ा गया। तकली पर एक घंटे में २४ तार काते गये।

३-१०-३०

रात में विचार खूव आने के कारण निद्रा कम आई। (विचार खराव नहीं थे)। नागपुर-केस के गवाहों का नाम लिखा। अंग्रेजी अभ्यास।

मासिक जेल-कमेटी जेल का चक्कर लगा गई। कलेक्टर ने पूछा कुछ कहना है? मैंने कहा 'नहीं'।

एकादशी थी। फलाहार किया। थोड़ा आराम। चर्खा।

खुरशेद वहन की गिरफ्फतारी की खवर पढ़ी।

हरिभाऊजी उपाध्याय का अजमेर जेल से लिखा पत्र मिला। पढ़कर संतोष हुआ। आज शाम को वर्षा आदि खूव जोर से आई।

प्रार्थना के वाद कांग्रेस का इतिहास साथियों-मित्रों से कहा।

४-१०-३०

दाढ़ी वनाई, स्नान जल्दी कर लिया। सितम्वर मास का सूत अलग रखा दिया।

अंग्रेजी अभ्यास, चर्खा, भोजन आराम। आज अभ्यास व चर्खा ठीक काता गया।

आज सुवह ८॥ से १० तक खूव जोर की वर्षा हुई।

आज के 'जामे जमशेद' में ता० ३ की स्त्रियों की भारी सभा का समाचार पढ़ा। सुश्री जानकीदेवी सभापति हुई थीं। उनका भाषण छपा था। पढ़ा, भाषण वहुत ठीक था। श्री पेरीन वहन, मीरावहन, लीलावती देवी वगैरा भी वोली थीं।

प्रार्थना के वाद कांग्रेस अनुभव। इस वर्ष जवाहरलाल को सभापति वनाना ही उचित हुआ, यह समझाया।

५-१०-३०

भोजन के वाद थोड़ा आराम। अंग्रेजी अभ्यास। शतरंज खेली। एक तरफ मैं अकेला, दूसरी तरफ श्री मुकंद मालवीय, रणछोड़भाई, डा० चोकसी। प्रार्थना के वाद डा० चौकसी के साथ विनोद।

आज किशोरलालभाई को तारीख के हिसाव से ४० वर्ष पूरे हुए।

सुवह ४॥ वजे वत्ती जलाई, प्रार्थना, भजन। अंधेरे में ही थोड़ा चर्खा काता।

आज धुलिया से वी-वर्ग के कैदी आये। श्री गद्रे वकील भी उसमें आये। सुपरिंटेंडेंट आज आनंद में दिखाई दिये।

अभ्यास ठीक हुआ। टाल्स्टाय की दो वूढ़े आदमियों की कहानी उत्तम मालूम हुई। चर्खा काता। प्रार्थना। चर्चा—हिंदू मुस्लिम एकता के संवंध में।

आज रात में नींद प्रायः नहीं आई। कई तरह के विचार आते रहे।

७-१०-३०

तारीख से आज जेल में छः महीने हो गये। रात में १२ वजे तक लिखता रहा।

कटेली ने कहा आज चन्द्रग्रहण है।

कुरलकर ने कहा कि चिट्ठी, पोस्टकार्ड पर भेजने से साहव नाराज होते हैं। उनका कहना समझ में नहीं आया।

श्री नथमलजी चोरडिया का पुत्र चि० माधोसिंह आ० सुदी ४ शनिवार को इंदौर में गुजर गया। पढ़कर दुःख हुआ। उनको पत्र लिखा।

ता० २५ सितम्वर को रात के तीन वजे चि० उमिया गौरी के पुत्र होने का पत्र मिला।

पू० वापूजी का जानकीदेवी को लिखा स्नेह भरा हुआ पत्र पढ़कर सुख हुआ। पू० राजगोपालाचारी का पत्र पढ़ा। ता० १० को छूटेंगे। और भी पत्र पढ़े। नागपुर मुकदमे संवंध में वर्धा पत्र भेजा।

आज प्रार्थना खुले में की। सुपरिंटेंडेंट रात में ९ वजे जेल के अंदर घूमने आये। श्री वल्लभ पुरोहित की वहन पर दुःख पड़ गया। पढ़कर रंज हुआ।

८-१०-३०

आज पूणी खतम हो गई, जिससे भोजन के वाद ही कातना हुआ। व्यायाम व अंग्रेजी अभ्यास। आज पत्र लिखकर आफिस में भेजे—केशव-

देवजी, मार्तण्ड, सौभागमल चोरडिया, वल्लभ पुरोहित, जानकीदेवी आदि के नाम। चर्खा काता।

रात में थोड़ी देर काता। ९। वजे सो गया।

आज पुरुषोत्तमजी ने अपना नाटक सुनाना शुरू किया।

९-१०-३०

सुबह पांच बजे प्रार्थना करके सो गया। आज सुस्ती व थोड़ी बेचैनी मालूम होती थी। कुनैन दिन भर में १० ग्रेन से ज्यादा लिया। स्नान नहीं किया। २-३ पत्र लिख रखे। खूब आराम किया। चर्खा काता। अंग्रेजी कहानियां पढ़ीं।

भोजन रोज के अनुसार ही किया। दोनों डाक्टर ने भोजन करने को कहा। 'जामे जमशेद' पढ़कर व वर्धा का मुकदमे संबंध में पत्र पढ़कर खुशी हुई। शाम को प्रार्थना के बाद पुरुषोत्तमजी का नाटक सुना व चर्खा काता। रात में नींद थोड़ी कम आई।

१०-१०-३०

चर्खा काता। छः बजे तक अच्छा मालूम हुआ। दातौन करके थोड़ा घूमा। दवा ली, चाय पी, पत्र लिख रखे।

भोजन ठीक लगा। आराम नहीं किया। अंग्रेजी अभ्यास किया। आज चर्खा ठीक काता गया। करीब १००० तार हुये। आज ४ बाजी शतरंज खेली गई उसमें एक हार हुई।

सेनगुप्त का भाषण ठीक हुआ। आज बी-वर्ग व सी-वर्ग के एक आदमी को जेल की सजा होने का सुना—आवाज करने, खिड़की में बैठने, पत्ते खेलने आदि के बारे में।

११-१०-३०

विलेपारले की छावनी पर सरकार ने कब्जा कर लिया।

प्रार्थना व भजन बाद चर्खा काता। धुन गाते हुए छः बजे तक आनद आया। श्री राजगोपालाचार्य कल, ता० १० को, छूट गये।

आज भी चर्खा ठीक काता गया। अंग्रेजी अभ्यास भी ठीक हुआ। श्री

कटेली से श्री पुरुषोत्तमजी के लिए जेल रूल की छूट व माफी वगैरा के वारे में वातचीत।
शाम को प्रार्थना। पीछे आज से शतरंज टूर्नामेंट शुरू हुई। मुकंद मालवीय से दो वाजी खेली। वह दोनों हार गये।
चर्खा। १०। वजे सोया। रात को जानवर वहुत थे।

१२-१०-३०

वजन १८२ रत्तल हुआ। वजन ३ रतल वढ़ा जिसमें एक रत्तल शायद चाय-दूध का हो।
आज विलेपारले छावनी के सव लोगों को कल ता० ११ को सुवह गिरफ्तार कर के सजा दे दी गई। पढ़कर खुशी हुई। छावनी का मकान भी जव्त हो गया। कोसांवीजी १८ मास, दिलसुखभाई छः महीने, दिवावाला १५ महीने, ४१ स्वयंसेवक, ७ नौकर स्त्रियां, ३ लूले-लंगड़े। आज वार-डोली आश्रम भी सरकार ने जव्त करके वहां यूनियन-जैक चढ़ाया। वहां १५० लोग गिरफ्तार हुए।
नागपुर मुकदमे का 'वर्डन आफ प्रूफ' वादी पर रहा। यह ठीक हुआ। श्री किशोरलालभाई, गोकुलभाई से मिलना हुआ। चर्खे की रसीद भी आ गई।
प्रार्थना के वाद शतरंज।

१३-१०-३०

निवृत्त होकर पौन घंटा चर्खा काता। १८० तार हुए। व्यायाम। अभ्यास। आज कोठरी फिनाइल से साफ की। सोने की जगह वदली। चर्खा, वरंडे में आराम।
नेता लोग छूटे। श्री गगाधरराव देशपांडे ता० ९, श्री राजगोपालाचारी ता० १०, जवाहरलाल ता० ११ को तीन वजे।
आज वी में से सी में ८वीं वार कौंसिल मेंवरों को भिजवाया।
प्रार्थना के वाद पुरुषोत्तमजी का नाटक पूरा हुआ। एक वाजी शतरंज खेली। चर्खा काता। रात में स्वप्न में नागपुर-मुकदमे के विचार आये।

१४-१०-३०

श्री केशवदेव, पालीरामजी, वेंकटलालजी पित्ती, अत्रे, श्री मिठुवहन पेटिट, रावजीभाई, स्वामी के मित्र भट्ट मिलने आये। चि० केशव गांधी भी आया था।

सुपरिंटेंडेंट से कान के व कब्जियत के वारे में थोड़ी वातें।

श्री गोमती वहन व दया वहन ढवण को ता० ११ को साढ़े तीन मास की सजा हुई, जानकर संतोप हुआ।

विलेपारले से १७ चर्खे पिंजन आई। वह सी में ११, वी में ५, ए में १ ऐसा वंटवारा किया।

१५-१०-३०

प्रार्थना के वाद चर्खे से निवृत्त होकर श्री पुरुषोत्तमजी के साथ उनकी स्थिति के संवंध में वातचीत।

व्यायाम, आसन। भोजन के वाद डा० चौकसी व जेल डाक्टर ने कान देखा। अंग्रेजी अभ्यास, चर्खा।

प्रार्थना के वाद वी-वर्ग में 'गांधी-अंक' आया था, वह पढ़कर सुनाना शुरू हुआ। १५ रोज में १२ आंटी सूत की हुई।

१६-१०-३०

श्री नारायणदासभाई का पत्र, साथ में २३-९-३० को 'सर्व धर्म समभाव' पर वापूजी ने यरवडा जेल से विचार लिख भेजे, वह पढ़े। साथ में ३०-९ (मंगल प्रभात) को 'सर्व धर्म समभाव' पर लिखे लेख के संवंध में जो पत्र भेजा, वह पढ़ा। सुख मिला।

कल ता० ८ को श्री नरिमान, नागीनदास मास्टर वगैरा को सजा हुई। सरकार ने (ववंई की) तमाम कांग्रेसी कमेटी गैरकानूनी करार की। १८९ लोग पकड़े गये। लड़ाई ठीक जमी है। अच्छा मालूम हुआ। सुपरिंटेंडेंट ने कान यंत्र से देखा। सिविल सर्जन को वताने का विचार रहा। प्रार्थना वाद 'गांधी-अंक' सुना। चर्खा काता। माल टूट जाने से कातना कम हुआ।

१७-१०-३०

सुपरिंटेंडेंट के पास व्यापारी मुलाकात, पत्र वगैरा का खुलासा। उन्होंने कुरलकर को समझा दिया। वगीचे में घूमने की परवानगी मिली। पींजना सीखने की व्यवस्था स्वीकार की गई। और वातें हुईं।

१८-१०-३०

आज एकादशी होने के कारण आलू और काढ़ा लिया। दोपहर को सिर भारी मालूम हुआ। थोड़ी वेचैनी। अंग्रेजी अभ्यास में आनंद नहीं आया। रात में स्वप्न व विचार खूब आये। खासकर वीमारी के। सासून अस्पताल में आपरेशन वगैरा की तथा मोतीलालजी की वीमारी की खबरों से मन में चिंता हो रही थी, इसी कारण आज स्वप्न भी उसी माफिक आये।

१९-१०-३०

प्रार्थना के वाद धुन के साथ चर्खा काता।

भोजन के वाद जु० नि० रा० भाई से मिले। सी-वर्ग में शांति से रहने के लिए उनके द्वारा कहलाया। पत्र लिखे। श्री गणेश शास्त्री जोशी वैद्य का पूना से तार आया। पंडित मोतीलालजी के इलाज के लिए। उसका जवाव लिखकर श्री कटेली के पास भेजा परंतु आज सुपरिंटेंडेंट के न होने के कारण तार नहीं जा सका।

अंग्रेजी अभ्यास। शतरंज एक वाजी। किकूभाई से उनके विवाह के संवंध में विचार।

प्रार्थना के वाद 'गांधी-अंक' पूरा हुआ। चर्खा काता।

२०-१०-३०

सुपरिंटेंडेंट इंस्पेक्शन को आये। श्री गणेश शास्त्री जोशी वैद्य का जवावी तार आया। उस पर से श्री जवाहरलाल नेहरू को कल जो तार लिखकर भेजना था वह सुपरिंटेंडेंट ने स्वीकार नहीं किया। उसपर से भविष्य के लिए इं० ज० को चिट्ठी व तार भेजे।

पंडितजी की वीमारी के वारे में श्री कमलादेवी नेहरू को पत्र भेजा। श्री सरला वहन अम्वालाल अहमदावाद की डिक्टेटर हुईं यह तथा श्री

जवाहरलालजी की (ता० १९ को हुई) गिरफ्तारी के समाचार पढ़े। 'जामे जमशेद' में मीरा बहन के बारे में तमीना जोशी का लेख अच्छा मालूम हुआ।
चर्खे का जोत ठीक किया। काता। प्रार्थना।

२१-१०-३०

बबंई में हाजी नूर मोहम्मद व दिल्ली में श्रीमती आसफअली ता० २० को गिरफ्तार हुईं।
विलेपारले—श्रीमती कमलाबाई सोनावाला, भाईदास भाई भूता, पुरुषोत्तम कानजी, बी० डी० कोरा, आर० डी० बाटलीवाला, चुन्नीलाल-बरफीवाला, जयंतीलाल, सी० नानावटी, शांताराम (चैंबूर का), और दूसरे सात, ये ता० २० को गिरफ्तार हुये। बबंई में ता० २० को लाठी-चार्ज हुआ।
२० ता० को जानकीदेवी विलेपारले छावनी की डिक्टेटर हुईं। कमलादेवी सोनावाला की जगह।
आज महत्व के पत्र तीन लिख रखे। प्रार्थना बाद चर्खा काता। सुपरिंटेंडेंट करीब ९॥ बजे रात को आये।

२२-१०-३०

चर्खा। मित्रों को उठाया। कुरलकर को हिसाब की भूल बताई। चाय पी। The Complete Works of Count Leo Tolstoy-Vol. XII में से What Men Live By पढ़ा। बहुत उत्तम उपदेश पूर्ण मालूम हुआ।
रुई साफ की। उसे पींजकर १८ पूनी बनाई। १८१ तार सूत हाथ की पींजी हुई पूणी का काता।
थोड़ी वर्षा हुई। प्रार्थना के बाद एक घंटा ४ लोगों ने मिलकर काता। आज सबों ने जो पूणी बनाई थी वह काम आई।
पूज्य बापूजी की आत्मकथा का पहला भाग पढ़ना शुरू किया। एक घंटा रात में पढ़ा।

आज रात को स्वप्न—जेल के वी-वर्ग में मारपीट व दंगा हुआ, वाहर आग लगी वगैरा। विचित्र विचार आये।

२३-१०-३०

सुवह प्रार्थना, वाद में ५-१० से ६ तक पचास मिनिट में २२५ तार काते। सुपरिटेंडेंट ने कहा तुम्हारे नाम के तीन तार आये हैं। आफिस में वुलाऊंगा। थोड़ा विचार मन में आया।

सुपरिंटेंडेंट ने जानकीदेवी, पंडित मोतीलालजी व मार्तण्ड उपाध्याय के तार खोलकर सुनाये व चर्चा की। इन्होंने पंडितजी के वारे में आई० जी० पी० को लिखने को कहा है।

वर्धा से जानकीदेवी, चि० मदालसा, महादेव सराफ ११ की गाड़ी से मिलने आये। मिलकर २॥। की गाड़ी से ववंई गये। जानकीदेवी से मिलकर सुख व संतोष मिला। जेल में किस प्रकार खानपान रखना आदि के वारे में चर्चा हुई। मंदिर के अन्नकूट के चने वह लाई थीं। उनका आग्रह होने के कारण थोड़ा खाया।

प्रार्थना के वाद डा० चौकसी आदि से कांग्रेस कार्यक्रम आदि की चर्चा। वाद में वापूजी की जीवनी पढ़ी।

२४-१०-३०

आज से दिनचर्या में परिवर्तन किया। याने व्यायाम के वाद रुई साफ की, ीिंजी, पूनी वनाई और भोजन के पहिले कातने का पूरा किया। भोजन, वाद में अखवार वगैरा पढ़े। फिर अंग्रेजी अभ्यास।

शाम को भोजन, घूमना, प्रार्थना। डा० चौकसी कल जाने वाले थे। उनसे वातचीत, विनोद आदि।

पू० वापूजी की जीवनी १० वजे रात तक पढ़ी।

२५-१०-३०

डा० चौकसी के साथ चाय पी। उन्हें वरावर सात वजे विदा किया। वह आज छूटकर गये। वी०-वर्ग में से जौहरी, कृष्णस्वामी, पाटील, नारायण स्वामी, पडवीदरी भी छूटे ऐसा सुना।

घूमने का व्यायाम। चर्खा काता। अखवार पढ़े। रुई पींजी, पूनी वनाई, चर्खा काता।

भोजन के वाद श्री अनसुया वहन की भेजी हुई टालस्टाय की वार्ता। अंग्रेजी अभ्यास व 'जामे जमशेद' पढ़ा। विलेपारले में ता० २३ को लाठीचार्ज हुआ। ८० लोगों को सजा हुई। मुकदमे का हाल पढ़ा। गोविंद मालवीय गिरफ्तार हुए (१२४ धारा में)। प्रार्थना के वाद पूज्य वापूजी की जीवनी पढ़ी।

२६-१०-३०

वजन १८४ रत्तल हुआ।

श्री राजगोपालाचारी को एक वर्ष जेल में रहने का हुक्म हुआ।

अंग्रेजी अभ्यास। मुले ने हाथ देखा। ठीक वतलाया। इसी ता० ५ नवंवर तक सवों के छूट जाने का भविष्य उसने कहा।

विलेपारले में जो पकड़े गये थे उनमें से वरफीवाले छोड़ दिये गये। कमला-वहन ने ठीक कहा था।

प्रार्थना के वाद वापूजी का जीवन पढ़ा।

२७-१०-३०

श्री गोमती वहन को आज ३३ वर्ष पूरे हुए।

सुपरिंटेंडेंट ने कहा वीमारी वगैरा के संवंध में तार भेजने की स्वीकृति आ गई। वी-वर्ग के वारे में तथा अन्य वातें हुईं।

रुई साफ की। 'टाइम्स' सुना। कल ता० २६ को लाठीचार्ज हुआ। चि० मदनलाल पित्ती, सूरजी वल्लभदास की लड़की व ८९ दूसरे गिरफ्तार व ४०० जख्मी हुये, जिनमें से २० स्त्रियां छोड़ दी गईं। श्री सेनगुप्त अमृतसर में गिरफ्तार हुए।

श्री किशोरलालभाई, मोहनलाल पंड्या व वल्लभभाई से मिलना हुआ। इतवार की घटना की चर्चा, शांति रहने की आशा।

शाम को वर्षा। चर्खा काता। पढ़ा। प्रार्थना। पुरुषोत्तमजी से विनोद। पूज्य वापू की जीवनी पढ़ी।

रात भर थोड़ी-थोड़ी वर्षा होती रही।

२८-१०-३०

चर्खा, ६३० तार से ज्यादा काते। आई० जी० व्यापारिक मुलाकात व पत्र-व्यवहार के संबंध में आये।

इं० ज० को पत्र सुपरिंटेंडेंट की मार्फत लिखकर भेजा। अवंतिका बाई गोखले गिरफ्तार हुई। चि० गुलाबचंद बजाज के कपड़वेज में गिरफ्तार होने की खबर का आज टाइम्स में ता० २५ का पत्र छापा है।

थोड़ी देर अंग्रेजी अभ्यास। बाद में रणछोड़भाई से बातें होती रहीं।

शाम को चक्कर के बगीचे का नाप कीकूभाई ने लिया। बताया कि पांच चक्कर में एक मील होता है।

शाम को प्रार्थना। चर्खा। पूज्य बापूजी की जीवनी पढ़ी। आज सुबह थोड़ी वर्षा हुई। रात में भी थोड़ी होती रही। राजगोपालाचारी का पत्र मिला।

२९-१०-३०

एक बाराबंदी व दो कानटोपी सिलने को दी। रुई पींजी, अखबार सुने। पुरुषोत्तमदास त्रीकमजी कल छूटने वाले थे, इसलिए उनके साथ भोजन किया।

सुपरिंटेंडेंट ने बुलाया। आई० जी० पी० को व्यापारी मुलाकात के पत्र भेजने के संबंध में बातें कीं। पत्र कल भेजने को कहा। अन्य चर्चा।

श्री पुरुषोत्तम त्रीकमजी से बहुत देर तक बातचीत। उनके मित्रों का ठिकाना पता पूछा। उन्होंने बंबई में एक रूम नवंबर से ५० रु० मासिक से भाड़े पर लेने का निश्चय किया।

आज पोस्ट से चिट्ठियां मिलीं। जानकीदेवी कलकत्ता से बिहार गईं जानकर संतोष हुआ।

३०-१०-३०

प्रार्थना। चर्खा। मुंह हाथ धोकर श्री पुरुषोत्तमजी के साथ चाय, ब्रेड ली। उन्हें सात बजे प्रेम के साथ विदा किया। पुरुषोत्तमजी बैरिस्टर एक

वहादुर व साफ सज्जन मालूम हुये।
आज से दोनों वार्ड में केवल चार लोग ही रह गये।
चर्खा काता। अखवार सुना, रुई पींजी, पूनी वनाई।
श्री जवाहरलाल नेहरू को दो वर्ष और ७०० रु० दंड। तीन धारायें लगाईं।
श्रीमती आसफअली को एक वर्ष।
आराम। अंग्रेजी अभ्यास। प्रार्थना के वाद तकली। तुलसी रामायण।
दिनचर्या में परिवर्तन की चर्चा।
वापू का जीवन पढ़ा।

३१-१०-३०

मिती से जेल में सात महीने हुये।
आज से सुवह मित्रों ने मेरे लिए अंग्रेजी वोलने का निश्चय किया।
अखवार सुना, रुई पींजी। १० मिनट से ज्यादा आसन। पत्र लिखे।
सूत का हिसाब (४२००० वार) घर की पूनी का सूत ११ सितंवर तक का घर भेज दिया। ११ सितंवर से ३० सितंवर तक १५०००। १ अक्टूवर से ३१ अक्टूवर तक २००००। कुल ७७००० गज हुआ। तकली का ३३३ वार अलग है।
पूज्य वापूजी की जीवनी का प्रथम खंड पूरा हुआ।

१-११-३०

चर्खा एक घंटे में ३५० वार सूत काता गया, भजन गाते हुए। पूनी व समय ठीक था।
रुई साफ की। चर्खा काता। रुई पींजी, पूनी वनाई। अखवार सुने। मिसेज सेनगुप्त गिरफ्तार हुईं। (प्रथम अंग्रेज महिला की गिरफ्तारी)। अंग्रेजी अभ्यास।
आज एक घंटा वरावर सव के साथ मिलकर काता। २९५ तार—३९३ वार हुआ। ठीक काता गया।
प्रार्थना के वाद तकली, घंटे में ३५ वार की गति है। घंटे में १०० वार तक कर लेना है।

लिखे हुये पत्र ठीक किये। आज रात में वर्षा बहुत जोर से हुई।

२-११-३०

रुई पींजी, अखबार पढ़े।

आज एकादशी का उपवास था। फराल नहीं किया, जल भी नहीं पिया। दोपहर को आराम। बाद में काता, एक अंटी पूरी की। बचपन के जीवन की थोड़ी हकीकत लिखी।

प्रार्थना के बाद श्री नारायणदासभाई को लिखा हुआ पत्र पढ़कर सुनाया, उस पर चर्चा।

श्री रणछोड़भाई के मन में कुछ गैरसमझ थी वह दूर हो गई। संतोष हुआ। भविष्य में सच्चे मित्रों के साथ भी ज्यादा सावधानी रखने की जरूरत मालूम हुई।

३-११-३०

मिती से जन्म दिन। आज ४१ वर्ष पूरे हुये।

सुपरिंटेंडेंट से वंदेमातरम।

श्री शंकरलालभाई, महादेवभाई, गंगाधररावजी देशपांडे, जाजूजी, रामेश्वरजी, राधाकृष्ण, रामकृष्ण, प्रहलाद, केशर, मदू, गुलाब, नर्मदा, डा० रजबअली मुलाकात के लिए आये।

जन्मदिन निमित्त बहुत से प्रिय मित्रों के दर्शन व प्रेमपूर्वक भेंट हुई। सी व बी आदि के मित्रों के दर्शन हुए। आज मुकंदजी ने खूब भोजन सामग्री बनाई थी। बाजरे की रोटी व दाल भी बनाई। आज का दिन परमात्मा की दया से खूब उत्साह व आनंद से बीता। पत्र भी कई आये।

४-११-३०

तारीख से आज जन्मदिन है। सुपरिंटेंडेंट ने बुलाया। श्री गद्रेजी आये। जेल के बगीचे के संबंध में चर्चा। मुकंदजी के संबंध में तथा अन्य चर्चा।

पंडित मोतीलालजी को आज जन्मदिन के निमित्त पत्र भेजा। (भाई जवाहरलालजी को भी उसमें लिखा)।

कल जो इस वर्ष के लिए प्रयत्न करने का कार्यक्रम बनाया उसमें अस्पृश्यता

के लिये कम-से-कम एक मंदिर व पांच कुंए खुलवाना रखा। एक वाल विधवा या अंतर उपजातीय संबंध करवाना। विवाह नहीं।
परदा करने वाली कम-से-कम दो वहनों का परदा छुड़वाना।
एक सच्चा मित्र प्राप्त करना, संभव हो वहां तक मुसलमान, अस्पृश्य, पारसी, क्रिश्चियन या अंग्रेज।
एक परिवार को देश-सेवा के लिए तैयार करना।
कम-से-कम एक परिवार की, जो सच्चाई से सेवा कार्य करता हो, सहायता करना।
कीर्ति की लालसा व होशियारी का घमंड निकालना (कम करना)।
रात में ११ वजे तक चर्खा काता।

५-११-३०

सुपरिंटेंडेंट ने वुलाया। कोयाजी ने माफी मांगी, यह समाचार पढ़कर वुरा लगा। आई० जी० पी० को व्यापारिक मुलाकात के वारे में, उनके पूछे हुए प्रश्नों का खुलासा भेजा। रुई पींजी, चर्खा काता व अखवार पढ़े।
सेनगुप्त, श्रीमती सेनगुप्त, गोविंद मालवीय, वालजीभाई देसाई आदि को सजा हो गई। दो रोज पहिले वंवई में ही वहुत-सी प्रतिष्ठित वहिनों को सजा हुई है।
आज सर्द हवा के कारण शरीर में दर्द था। दोपहर को चाय पी। थोड़ा अंग्रेजी अभ्यास।
वालपन व युवापन की घटनायें थोड़ी लिखीं।
प्रार्थना के वाद एक घंटा सव मिलकर काता। ३२० वार। 'जामे जमशेद' पढ़ा।

६-११-३०

आज से थोड़ी ठंड पड़ने लगी।
घूमने का व्यायाम किया। अखवार पढ़ा।
श्री वल्लभभाई व जैरामदासजी कल वंवई में छोड़ दिये गये।
पींजकर पूनी वनाई, काता, पूनी अच्छी वनी थी। १ वजे करीव भोजन हुआ।

थोड़ा आराम। कातना थोड़ा रह गया था वह काता। अंग्रेजी अभ्यास। शब्द याद किये।

रणछोड़भाई का शरीर थोड़ा भारी था, दोपहर को चाय के बाद उनके साथ शतरंज खेली। 'जामे जमशेद' पढ़ा।

श्री चट्टोपाध्याय कल गिरफ्तार हो गये।

चांदनी रात होने के कारण प्रार्थना के बाद पौन घंटा घूमे। अच्छा लगा।

७-११-३०

आज से कार्यक्रम में थोड़ा फरक किया। सुबह पांच बजे प्रार्थना। मुंह हाथ धोकर दो मील घूमा। बाद में आसन आदि व्यायाम का काम खतम करके चाय-ब्रेड ली। बाद में कातना शुरू किया। आज ठंडी थी, रात को ओवर कोट व सुबह के समय कबल ओढ़ना पड़ा।

रुई आज करीब १५ मिनट पींजी। फिर काता।

भोजन। चिट्ठियों में निशान लगाये। नोटबुक में पन्ने डाले।

अंग्रेजी अभ्यास। चाय, चर्खा, प्रार्थना। 'जामे जमशेद' सुना, चांदनी में आधा घंटा घूमना। बापूजी की जीवनी में से थोड़ा पढ़ा।

८-११-३०

कमर में आज दर्द था।

बारडोली पिंजण से थोड़ी रुई पींज कर पूनी बनाई व काती।

कमर में हाथ से ही तेल व कपूर के अर्क की मालिश की।

भोजन के बाद रणछोड़भाई के पास एक घंटा करीब अंग्रेजी नाटक सुना।

अंग्रेजी अभ्यास। आज शाम को भी दो मील घूमना हुआ।

प्रार्थना, बाद में चर्खा, कल के लिए काता। पूनी खतम हुई। नींद ठीक आई।

९-११-३०

वजन १८६ रत्तल हुआ।

सुबह पांच बजे प्रार्थना, भजन। मुंह हाथ धोना। दो मील घूमना, आसन, स्टेशनरी रनिंग वगैरा सात बजे तक हो गये।

जन्मदिन के संबंध में मित्रों की बधाई, उपदेश, संदेश आये थे उसकी

नोंघ की। छोटी पींजण से रुई ठीक पींजी, पूनी वनाई।
रविशंकरभाई की कमर में दर्द था, दवा मली।
अखवार पढ़े। रणछोड़भाई ने अंग्रेजी का नाटक सुनाया।
वचपन की वातें नोंघ की। एक वाजी शतरंज रणछोड़भाई के साथ खेली।
प्रार्थना, वाद में चर्खा। करीव २२५ तार।

१०-११-३०

मुकंद मालवीय ने आज ६६ दिन में एक लाख गज सूत कातकर पूरा किया। चर्खा कातते समय मुकंद मालवीय के भविष्य कार्यक्रम आदि के वारे में चर्चा। आज सुवह ही प्रायः ६ लटी काती गई, कारण रुई साफ नहीं थी। इससे पींजने का समय वच गया।
मुकंदजी की जली व कच्ची वाजरे की रोटी में भी प्रेम व स्वाद मालूम हुआ। वालजीवन नोट किये। अंग्रेजी अभ्यास, चर्खा, पूनी वनाई। प्रार्थना के वाद विनोद व हास्य के खेल-कूद। दूसरा काम नहीं हुआ। आज आसन ठीक हुये।

११-११-३०

चर्खा काता, मुकंदजी से वातचीत, उन्होंने अखवार सुनाया।
रुई पींज कर पूनी वनाई। भोजन के वाद 'विविध वृत्त', 'साप्ताहिक टाइम्स' पढ़ा। अंग्रेजी अभ्यास।
वाल व युवावस्था के नोंघ लिखे।
घूमने वगीचे गये थे।
प्रार्थना के वाद काता। आत्मकथा पढ़ी।

१२-११-३०

चर्खा काता।
मुकंदजी से कौसल्या व कला के विवाह संवंध के मेरे विचारों की चर्चा।
मु० माताजी को पंडों व मंदिर के संवंध में कहलाया और वातें।
पींजण, आसन, स्नान, भोजन। रणछोड़भाई ने अंग्रेजी वार्ता सुनाई। कुछ पढ़ा।

थोड़ी अंग्रेजी पढ़ी। वाद में वसंत कुरलकर का पांच वर्ष का लड़का तकली सीखने आया।
शाम को खाली काढ़ा लिया। प्रार्थना के वाद 'आत्म जीवन' ग्यारह वजे तक लिखता रहा। प्रायः एक भाग पूरा हुआ।
रात में जाट की हत्या किसी ने कर डाली यह स्वप्न वहुत देर तक चलता रहा।

१३-११-३०

मुकंद मालवीय से आज भी ठीक वातचीत हुई। उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति कही। अन्य विचार व आदर्श वताये। एक तरह से उनका अधिक परिचय हुआ। सुख हुआ।
पूनी वनाई। चर्खा काता। अंग्रेजी अभ्यास।
डा० सेटना पारसी ग्रांटरोड पर रहते हैं। उनके पास क्षय की अच्छी दवा है। उनसे परिचय करना है।
आज वंबई से उसमान सोवानी ए-वर्ग में व महेश्वरी आदि वी-वर्ग में आये।

१४-११-३०

उसमान सोवानी की व्यवस्था करनी चाही। उसमान से आर्थर रोड का हाल सुना। सुपरिटेंडेंट ने वुलाया। व्यापारी मुलाकात ज्यादा नहीं मिल सकती यह लिखकर कहा। अखवार पढ़े।
श्री रणछोड़भाई के व्यवहार आदि से मन में विचार व दुःख मालूम हुआ। किस जगह भूल होती है उसका मन से समझने का प्रयत्न किया। आखिर में प्रार्थना के वाद उन्होंने मिलकर जो मन में लगता था कह दिया।
मुकंद मालवीय के भविष्य का कार्यक्रम, जीवन के संवंध में विचार विनिमय किया।
चर्खा कताई। आज श्री नरीमान आर्थर रोड से यहां ए-वर्ग में नागपुर मेल से आये। खुशी हुई।
'जामे जमशेद' पढ़ा। दुर्गावाई जोशी, पार्वतीवाई पटवर्धन व चौधरी की सजा की खवर पढ़कर खुशी हुई।

१९-११-३०

प्रार्थना के वाद आज पहली वार ५।।। वजे तक सोया। वाद में नित्य कार्य। घूमना। चाय, चर्खा, आसन। ९।। वजे स्नान। फिर चर्खा। ११ वजे भोजन। वाद में अखवार पढ़े। फिर एक से दो तक काता।

आज ४ रोज के वाद अंग्रेजी पढ़ना शुरू किया। शाम को आधा घंटा से ज्यादा पींजा। ठीक व्यायाम हुआ।

'जामे जमशेद' पढ़ा। पढ़ते-पढ़ते सो गया।

२०-११-३०

सव नित्य का काम ८ वजे तक हो गया।

रणछोड़भाई से अहमदावाद में छोटी, देश को उपयोगी हो ऐसी इंडस्ट्री, जहां नवयुवकों को सीखने को मिले इस विषय में विचार-विनिमय।

वनारसी के वारे में कहा। अखवार पढ़ा। अंग्रेजी अभ्यास।

उसमान का चर्खा ठीक कर दिया।

रुई पींजी। भोजन, घूमना, प्रार्थना, चर्खा, वापू की आत्मकथा पढ़ी।

चर्खा ठीक करने को भेजा।

२१-११-३०

वाल कटाये। गानू गया। रामा वापस आया काम पर।

योरप में जान ग्रेहम कोनर आफ चेस्टर वारर्ड आफ डरहम ने ९७ वर्ष की उम्र में मिस ई० अंस्टन आफ शोटली व्रिज से विवाह किया। पत्नी की उम्र ७० साल की है।

'टाइम्स' व 'ईवनिंगन्यूज़' वहुत देर तक पढ़ा। अंग्रेजी अभ्यास।

घूमा। 'जामे जमशेद' व आत्मकथा पढ़ी।

आज वत्ती नहीं लगी, विगड़ गई थी। रात को कमर में दर्द था जिससे नींद पूरी नहीं आई।

२२-११-३०

प्रार्थना के वाद कमर में दर्द होने के कारण व वत्ती न होने के कारण वापस सो गया।

मुंह हाथ धोकर चाय के साथ गोली खाई। सुदर्शन मलहम पीठ में लगाया। पीठ में दर्द था, थोड़ा घूमा।

रंग लगाने वाले दो मराठे लड़के आठ आने रोज कमा लेते हैं यह देख ठीक मालूम हुआ।

उसमान सोवानी से व्यापारी जीवन की घटनाएं आदि पर चर्चा।

अखवार व आत्मकथा पढ़ी।

२३-११-३०

आज पढ़ने में, वातचीत में, व विनोद में समय विताया।

वजन १८१ रतल हुआ। पांच रतल कम हुआ।

पूज्य मालवीयजी को नैनी जेल में जोर का बुखार आने की खवर पढ़कर थोड़ी चिंता हुई।

विविध वृत्त, इलस्ट्रेटेड वीकली, ईवनिंग न्यूज़ आदि ठीक तौर से पढ़े। इलस्ट्रेटेड वीकली में Cannibals of the Congo in darkest Africa लेख पढ़कर आश्चर्य हुआ। एक वाजी शतरंज खेली।

२४-११-३०

सुपरिंटेंडेंट का इंसपेक्शन। घूमना, चर्खा, पीठ में थोड़ा दर्द था।

जेल का सूत सव मिलकर पांच रतल, आजतक हुआ। इस महीने की २५ आंटी आजतक हुई। वह सव जेल आफिस में कुरलकर ले गये। इस महीने का आजतक चौवीस रोज में २१००० वार सूत हुआ। सव मिलकर ९८००० हजार वार हुआ, जिसमें ५६ हजार वार जेल का है।

रुई पींज कर पूनी वनाई। भोजन किया।

प्रार्थना के वाद उसमान भाई ने उर्दू कविता पढ़ी।

२५-११-३०

सुपरिंटेंडेंट घूमने आये। चर्खा।

कुरलकर आये और कहा आज से ८। वजे वंद होने का हुक्म मिला है।

अखवार आया। श्री ब्रेलवी, सदानंद, कापड़िया गिरफ्तार हुए। श्री सरोजनी

को एक हजार व खुरशेद वहन को सौ रुपये दंड, नहीं तो १५ दिन सादी सजा। ए-क्लास।
पूज्य मालवीयजी की तवियत की चिंता होने से तार लिखकर भेजा। उसे सुपरिटेंडेंट ने आज नहीं भेजा। वहुत वातें हुईं।
अखवार आदि पढ़े। रणछोड़भाई से एक वाजी शतरंज।
आज से ८। वजे वंद होने का हुक्म मिला। प्रार्थना जल्दी करके आत्मकथा पढ़ी।

२६-११-३०

सुपरिटेंडेंट से लाकअप में रात ८ वजे वंद करने व रविशंकरभाई के वारे में वातचीत। इन दो महीनों में इनके व्यवहार में वहुत फर्क मालूम हुआ।
भोजन, आराम, अखवार व चर्खा।
श्री महादेवभाई कल अहमदावाद में गिरफ्तार हुए।
दुर्लभजी पी० पिठावाला ने अस्पृश्यता संवंध में कांग्रेस के विरुद्ध आज के टाइम्स में लेख लिखा।
रुई पींजी, जीवा को पींजना सीखने को कहा। पूनी इसने वनाई।
प्रार्थना के वाद आत्मकथा पढ़ी।

२७-११-३०

डाक आई। भोजन के वाद पढ़ी, सूत पूरा कातने के वाद जवाव लिखना शुरू किया।
आज सफेदी व रंग होने के कारण पीछे के ब्लाक में नं० ५ की खोली में रहने गये।
घूमने के वाद पत्र लिखे। प्रार्थना।
श्री उसमान ने पढ़कर सुनाया, वहुत ठीक मालूम हुआ। श्री रणछोड़भाई से उसपर वातें। उन्होंने ठीक उदारता से उसे नहीं लिया उस कारण वुरा मालूम हुआ। 'जामे जमशेद' व आत्मकथा पढ़ी।

२८-११-३०

आज चिरंजीव रामेश्वर को पत्र लिखकर भेजा। मुकुंदजी व शकरलाल-

बैंकर को भी पत्र लिखा। चर्खा काता। भोजन। अखबार पढ़े। बाद में फिर चर्खा।
शाम को मालूम हुआ कि पत्र आज नहीं गये। कल जायेंगे। वार्षिक टाइम्स का स्पेशल अंक आया।
प्रार्थना के बाद आत्मकथा पढ़ी। नरीमान के प्रेम के कारण ७ बादाम सेंके हुए खाये।

२९-११-३०

पूनी खत्म हो गई। पींजण दुरुस्त करके मंगाई। पींजा और पूनी बनाई। आज ज्यादा काता यानें १३७५ बार के लगभग।
श्री रणछोड़भाई ने अंग्रेजी 'जस्टिस' नाटक का एक अंक पढ़कर सुनाया। आत्मकथा का दूसरा भाग पूरा कर दिया गया।

३०-११-३०

पींजना ठीक हुआ। बाल कटवाये।
आज भोजन ११॥ बजे किया। श्री रणछोड़भाई का प्रेम तथा उनके जल्दी छूटने के कारण उनका बनाया हुआ आटा व देशी शक्कर व घी में बने हलवे में से थोड़ा-सा खाया।
अखबार पढ़े। श्री खेर सालिसिटर ता० २८ को व बाबूराव गोखले ता० २६ को छूट गये।
सूत अब तक कुल १०३०४० हुआ। जेल में ६१०४०।

१-१२-३०

प्रार्थना, गीता का तीसरा अध्याय। काता।
आज गीता-जयंती होने के कारण पूज्य बापूजी का अनासक्तियोग पूरा पढ़ डाला। एकादशी व्रत किया। पानी ठीक पिया।
मुनिजी के समाचार श्री रणछोड़भाई ने कहे। अहमदाबाद का हाल मालूम हुआ।
'जस्टिस' नाटक में से श्री रणछोड़भाई ने पढ़कर सुनाया। बाद में एक बाजी शतरंज खेली।

शाम को थोड़ा घूमे। सुस्ती व नींद मालूम होने से प्रार्थना के बाद जल्दी सो गया।

२-१२-३०

श्री रणछोड़भाई व उसमान से अनुभव की बातें। पींजना हुआ। काता। सुपरिंटेंडेंट ने बुलाया। व्यापारी मुलाकात संबंध में बंबई से पत्र आया था उसका जवाब देने के बारे में उन्होंने संतोषकारक बात की।
ईवनिंग न्यूज में सर डी० टयूलस (ए व्हाइट मारवाड़ी) की जीवनी पढ़ी। ठीक मालूम हुई। रणछोड़भाई ने 'जस्टिस' नाटक में से पढ़कर सुनाया। वह खतम हुआ। दिसंबर का टाईमटेबिल बनाया।

३-१२-३०

कोठरी साफ की। ९ से १० तक अंग्रेजी अभ्यास। स्नान आदि।
भोजन के समय, श्री किकुभाई को विशेष व रणछोड़भाई को भी, मेरे बोलचाल के व्यवहार व टीका आदि के बारे में बुरा मालूम हुआ, जानकर दुःख हुआ। भविष्य में बोलचाल की रीति सुधारने का विशेष ख्याल रखने का निश्चय किया।
दोपहर को चर्खा कातते समय उसमान भाई से बातें—उमर की मृत्यु आदि संबंध में। बोलते समय मेरा आवाज जोर का रहता है, उसका उन्होंने प्रेम व नम्रता से ध्यान खींचा। इसमें सुधार करने का निश्चय। श्री रणछोड़भाई से चर्खा-संघ आदि की ठीक चर्चा।

४-१२-३०

पींजा व पूनी बनाई।
कल रात को अर्ध जाग्रत स्वप्न में जानकीदेवी की मृत्यु आदि के विचार आने से मन को दुःख। उदासीनता, हिम्मत आदि कई तरह की परिस्थिति के विचार चालू रहने से सुबह उत्साह कम रहा। इस प्रकार स्वप्न आने का कारण नहीं मालूम हुआ।
आज के 'जामे जमशेद' में ता० २ वर्धा का तार, नीलाम के समय के पिकेटिंग का, पढ़ा। बजाज-कुटुंब का सामान है।

५-१२-३०

कुरलकर के बोलने में असभ्यता लगी।

श्री रणछोड़भाई ने कहा कि मुकुंदजी का तार बड़े मालवीयजी की तबियत ठीक होने का मिला। दिनचर्या मुजब कार्य किये।

नागपुर केस के बारे में आज से लिखना शुरू किया। उसमान सोबानी से व्यापार व जीवन सत्यता से बिताने के बारे में बातें।

श्री रणछोड़भाई से अस्पृश्यता-निवारण, विधवा-विवाह, उपजातीय संबंध की चर्चा। मेरे विचार कहे।

चर्खा व तकली काते।

'जामे जमशेद' में पढ़ा कि जानकीदेवी ने कलकत्ता में ता० ३ को अलबर्ट हाल में स्त्रियों की सभा में व्याख्यान दिया।

स्वामी आनंद छूट गये।

६-१२-३०

अखबार पढ़े।

नागपुर केस १ से २ तक। बाद में चर्खा, तकली। रणछोड़भाई से विवाह-संबंध में चर्चा।

घूमना व चर्खा। प्रार्थना करके जल्दी सोया।

रात में ९ बजे बाद सुपरिंटेंडेंट आये थे। नरीमान से बात करके चले गये। उनके साथ कोई सिख आफीसर भी थे।

७-१२-३०

वजन १८२ रतल हुआ। तारीख से आज आठ महीने पूरे हुए।

अखबार पढ़े। महादेवभाई को छः महीने की सख्त सजा व २५० रुपये जुर्माना हुआ। जुर्माना न देने पर डेढ़ महीने की सजा और।

गंगाधरराव देशपांडे गिरफ्तार हुये। बंबई में ता० ५, गांधी-दिन, को लाठीचार्ज व गिरफ्तारी हुई। २५० आदमी जख्मी हुये। बंबई और नागपुर में पिकेटिंग का जोर ठीक है। पंडित मोतीलालजी की बीमारी की चिंता है।

शतरंज की दो वाजी खेली।
रात में स्वप्न में वहन सुवटादेवी की मृत्यु का दृश्य। आश्चर्य हुआ।

८-१२-३०

सुपरिंटेंडेंट का इंस्पेक्शन। अभ्यास।
वल्लभभाई ता० ६ को गिरफ्तार हुए। वंवई लाये गये।
माणिकलाल सेन (उमर १७ वर्ष) राजनैतिक कैदी ने ६० दिन के उपवास में प्राण छोड़े। उसकी अरथी वनारस लाई गई। ता० ६ का तार अखवार में है।
वी० जे० पटेल कोयंवटूर जेल में। ता० ६ का तार। करांची में लाठीचार्ज, १५० जख्मी हुए।
रणछोड़भाई ने अंग्रेजी में पढ़ सुनाया। थोड़ा काता।

९-१२-३०

चिट्ठियां आईं। जानकीदेवी व मदालसा आदि के पत्रों से संतोष हुआ।
मेजर खानवाला से कनानूर सेंट्रल जेल (मद्रास प्रांत की जेलों) में चर्खा, पींजन, तकली आदि के संवंध में वात की। शंकरलाल से भी वात हुई यह कहा। पत्रों के जवाव लिखे। ४ घंटे लगे।
आज दोपहर को रणछोड़भाई ने जमीकंद की पकौड़ी जवर्दस्ती (प्रेम से) खिलाई।

१०-१२-३०

आज दरवाजा खोलने वाला भूल गया था।
नित्य कार्य। अव सर्दी ठीक पड़ने लगी। आज कोठरी साफ करवाई।
श्री कुरलकर को केशवदेवजी के नाम का पत्र भेजने को दिया। सुवह सात वजे चिट्ठी वंवई चली गई।
अखवार पढ़े। चर्खा। उसमान से वातें।
शाम को आज से एक रोटी सी-वर्ग की मिलने लगी। वाजरा या जवारी की। वड़ी अच्छी लगी।
'जामे जमशेद' पढ़ा। वाद में प्रार्थना। 'मेरा जीवन'–इसाडोरा डंकन की जीवनी—अंग्रेजी में एक घंटा पढ़ी।

११-१२-३०

आज से किकुभाई ने पांच बजे उठना वंद किया। अकेले ही चर्खा। वर्तमान पत्र, इसाडोरा डंकन की जीवनी पढ़ी। चर्खा, तकली। रुई पींज कर पूनी, वनाई। रणछोड़भाई ने पढ़ कर सुनाया।

ए० डी० सासून मिल की शर्तों के वारे में चर्चा।

१२-१२-३०

प्रार्थना। अकेले चर्खा। वीच में वत्ती थोड़ी देर खराव हो गई थी। आज करीव चार मील घूमना हुआ होगा।

सुपरिंटेंडेंट ने वुलाया। वी-वर्ग के जेल के काम के संवंध में पहले चर्चा की। काम ज्यादा होना चाहिये। मेंवाद १२ से २।। तक जनरल शिस्त व्यवहार आदि के संवंध में मेरे विचार मैंने साफतौर से कहे। उन्होंने प्रेम और उदारतापूर्वक सुन लिये। अपनी अड़चन कही। वहुत-सी विचार करने योग्य। चर्खा, रणछोड़भाई से वातें।

रात में इसाडोरा डंकन की जीवनी थोड़ी पढ़ी।

१३-१२-३०

उसमान से खादी-संवंधी वातें। अखवार पढ़े। अभ्यास।

श्री वद्री नारायण ट्रस्ट, फतेहपुर के संवंध में श्री केशवदेव गनेडीवाल का पत्र आया था, उसका जवाव लिखकर ववई केशवदेवजी को भेजा।

श्री छगनलाल (सी० डी० श्रॉफ) नासिक को विधवा होम के लिए जगह व अस्पृश्यों के लिए मंदिर खोलने की कोशिश करने को कहा।

श्री उसमान ने अपने कर्ज आदि के वारे में मेरी सलाह ली। उचित मालूम हुआ सो कहा।

श्री रणछोड़लालभाई से उनके स्वभाव के संवंध में चर्चा।

१४-१२-३०

आज से ५।। वजे दरवाजा खुलने लगा।

उसमान से वातें। 'विविध वृत्त', 'इलस्ट्रेटेड वीकली', 'ईवनिंग न्यूज' देखा। मांटेग्यू की डायरी पढ़ने योग्य मालूम हुई।

कातते समय श्री रणछोड़भाई ने मेरे स्वभाव आदि के संबंध में उनके मन पर जो ख्याल हुआ वह लिखकर मेरे आग्रह के कारण दिया। मेरी इच्छा थी कि उसपर चर्चा की जाय, परंतु उन्हें वह पसंद नहीं आया। मुझे इससे आत्म निरीक्षण में मदद होती।

श्री नरीमानजी ने खानगी तौर से राजनीतिक परिस्थिति के बारे में चर्चा की। अपने विचार मैंने उन्हें कहे।

१५-१२-३०

सुपरिंटेंडेंट को, चप्पल की दुरुस्ती का १। रुपया बहुत ज्यादा चार्ज है, यह कहा। चाय खराब आती है यह भी कहा। उन्होंने ठीक तौर से सुन लिया। पत्र लिखने, श्री कुलकर्णी वगैरा जेल-विजिटर आये।

श्री रणछोड़भाई के जाने के सम्मान में किकुभाई ने दावत की। खीर स्वदेशी शक्कर की, दूध जेल का, मेवा सेव उसमान भाई का, पकौड़ी, भजिए, साग, मोल के समान के, बाकी जेल राशन।

किकुभाई की भौजाई गिरजादेवी के मृत्युका तार। शाम को भोजन नहीं किया। रणछोड़भाई से शतरंज व जीत।

१६-१२-३०

आज प्रार्थना में कीकूभाई भी शामिल हुए। थोड़ा चर्खा। बाद में रणछोड़-भाई के जाने की तैयारी में मदद। वह सुबह ९॥। के करीब छूट गये। मन पर थोड़ा असर हुआ।

श्री शंकरलाल बैंकर, प्रताप सेठ, चि० रामेश्वर व सीताराम शास्त्री आज मिलने आये।

पू० बापूजी के स्वास्थ्य के कारण शायद उनका नासिक आना नहीं हो सका तो मुझे यरवडा जेल जाना पड़े।

समाचार पढ़े। जवाब लिखे, आज एकादशी व्रत किया।

शाम को घूमना। प्रार्थना। आज रात ८। बजे सोकर ५॥। बजे सुबह उठना हुआ, याने ९॥ घंटा सोना।

टिप्पणी

तारीख १६-१२-३० के वाद से डायरी नहीं लिखी गई, ऐसा लगता है। १-१-३१ से ३१-१२-३१ तक की डायरी अप्राप्य है, इस वीच के काल में २६ जनवरी १९३१ को देश के प्रमुख नेता राजनैतिक वार्ता के लिए छोड़ दिये गये, जमनालालजी भी २ फरवरी को छूटे। ६ फरवरी १९३१ को पंडित मोतीलाल नेहरू का देहावसान हो गया और मार्च में सरकार के साथ कांग्रेस का अस्थायी समझौता, गांधी-ईर्विन पैक्ट के रूप में हुआ। फलस्वरूप हिंसा के अपराधों को छोड़ कर शेप राजनैतिक सत्याग्रही कैदी छोड़ दिये गये और सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। गांधीजी अगस्त में दूसरी राउंड-टेवल कांफरेंस में शामिल होने के लिए कांग्रेस के एकमात्र प्रतनिधि की हैसियत से विलायत गये। भारत में सरकार और कांग्रेस के वीच मतभेद बढ़ते रहे। नवम्वर तक कई प्रांतों में आर्डिनेंस जारी किये गये और खान अव्दुलगफ्फार खां तथा पं० जवाहरलाल नेहरू जैसे कांग्रेस के प्रमुख नेता, समझौते के वावजूद, गिरफ्तार कर लिए गये। विलायत में राउण्ड टेवल कांफरेंस दिसवंर में समाप्त हुई। २८ दिसवंर को गांधीजी भारत पहुंचे। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की वैठक वंबई में १ जनवरी १९३२ को हुई और गांधीजी ने वायसराय से फिर वार्ता शुरू की। लेकिन इस वार वायसराय का रुख समझौते का न होकर लड़ाई और दमन का था। वार्ता भंग हो गई और ४ जनवरी १९३२ में कांग्रेस गैर-कानूनी घोपित कर दी गई, गांधीजी के सभी प्रमुख साथी नेता गिरफ्तार कर लिये गये और फिर से सत्याग्रह शुरू हो गया। १९३२ के शुरू में यह स्थिति थी।

—संपादक

१९३२

हृदय हेरि हारेउं चहुं ओरा। एकहि भांति भलेहि भल मोरा॥
गुरु गोसाईं साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू॥

—भारत

यदन्तरं तद् बाह्यं यद् बाह्यं तदन्तरम्।

बम्बई, १-१-३२

पूज्य बापूजी के पास।
माटूंगा, सेवादल कैंप में कुछ कहना पड़ा। जो बहनें जाना चाहती थीं, उन्हें उपदेश। चि० शांता व सज्जन विलेपारले गईं।
वर्किंग कमेटी का काम १२ बजे तक। शाम को फिर वर्किंग कमेटी होकर काम खतम हुआ। कल रात्रि को ३॥ बजे सोये। तबतक कमेटी की बैठक हुई।

२-१-३२

सुबह कृष्णदासजी व सीतारामजी सेकसरिया से बंगाल के काम की चर्चा। श्री राजगोपालाचारी से बातें। उनके खर्च की व्यवस्था। चि० लक्ष्मी का सम्बन्ध देवदास से आज निश्चित हुआ।
एफ० ई० दिनशा के साथ इण्डिया बैंक में गये। वहां से सेंट्रल बैंक में जाकर आफिस व्यवस्था।
पूज्य बापूजी से बातें, वर्धा रहने के संबंध में तथा अस्पृश्यता आदि के बारे में। चि० शांता व रमा से बातें

३-१-३२

पूज्य बापूजी के पास पैदल गये। रास्ते में मुकुन्द मालवीय व सीतारामजी

से व्यापारिक वातें। पूज्य वापू से वातें। वल्लभभाई पटेल से विचार-विनिमय। उन्हीं के साथ भोजन।
विलेपारले छावनी में गये। कार्यकर्ताओं से वातें, मिलना-जुलना। महिला-आश्रम में गये। चि० कमला से मिले। चि० शांता से वातें। श्री गोविंदलालजी से घरेलू वातें।

४-१-३२

सुवह मणिलाल कोठारी करीव ४ वजे आये। उन्होंने वताया कि पू० वापूजी व वल्लभभाई को ३-२५ को वंवई रेग्युलेशन ९५ सन् १८२७ के अनुसार गिरफ्तार किया। दोनों को मोटर से यरवदा जेल ले गये। मैंने भी जेल की तैयारी कर ली। कार्यकर्ता व इष्ट मित्रों से वातचीत एवं विचार-विनिमय। फादर एलविन, महादेवभाई देसाई, मणीलाल कोठारी, मथुरादास आदि से चर्चा।
आज नागपुर मेल से वर्धा जाने की तैयारी। डा० देसाई ने जाने से रोक दिया।

५-१-३२

सुवह केशवदेवजी आदि से वातें। श्री जयदयालजी गोयनका व हनुमान-प्रसादजी पोद्दार मिलने आये, उनसे वातें। श्री गोविंदलालजी व शांति वहन से चि० वेंकट के वारे में वातचीत।
डा० हार्डीकर, सफिया सोमजी, कृष्णा घुमरकर मिलने आईं। धोत्रे, निंवालकर, वावा सा० सोमण से वातें।
कमला नेहरू से मिलते हुए, दांत के डाक्टर देसाई के यहां जाकर स्टेशन। मित्र लोग पहुंचाने आये। इन्टर से वर्धा रवाना। जानकीदेवी साथ थीं। रास्ते में गिरफ्तार होने की संभावना।

वर्धा, ६-१-३२

सुवह नागपुर मेल से वर्धा पहुंचे। पूज्य जाजूजी आदि से वातें। मदालसा के हाथ का भोजन किया।
गांव की वहिनें मिलने आईं। कुछ कार्यकर्ता तथा मित्र लोग भी मिलने आये।

शाम को नेहरू चौक में बड़ी सभा हुई। बहुत आग्रह के कारण जाना और कुछ बोलना पड़ा।

७-१-३२

जानकीदेवी व चि० राधाकृष्ण से बातें।

बंबई की गिरफ्तारियों की खबरें पढ़ीं, नरीमान, विट्ठलभाई, किशोरलाल भाई, गोकुलभाई आदि की।

श्री जाजूजी, बाबासाहेब देशमुख, तिजारे आदि से बातें। श्री लीला, बनारसी आदि से बातें।

८-१-३२

रामनारायणजी चौधरी आये। सस्ता साहित्य मण्डल व हटुंडी आश्रम की हालत समझी।

पूज्य विनोबा, गोपालराव, द्वारकानाथ आदि की गिरफ्तारी की व जलगांव की खबरें सुनीं। श्री दास्ताने आदि भी पकड़े गये।

९-१-३२

नागपुर से बाबा सा० देशमुख व श्री गणपतराव टिकेकर मिलने आये; उन्होंने वहां की हालत बताई।

१०-१-३२

चि० हरिशंकर विद्यार्थी (कानपुर वाला) व उसके साथ पन्ना (वस्तर वाले) आये। उनसे कानपुर व 'प्रताप' की हालत जानी। थोड़ी व्यवस्था कर दी। चि० हरी विद्यार्थी दो बजे की गाड़ी से कानपुर गया।

श्री खेतूरामजी अग्रवाल से बातें। श्री माखनलालजी चतुर्वेदी आये।

नागपुर से श्री गणपतरावजी टिकेकर व हरीभाऊ मोहनी वहां की परिस्थिति कहने आये। आवश्यकता हो तो जानकीदेवी के नाम का उपयोग करने का उन्हें कहा। आश्रम गया।

११-१-३२

श्री रामजीभाई कलकत्ता गये। श्री खेतूरामजी भोपाल गये।

श्री रामनारायण चौधरी से बातें। श्री माखनलाल चतुर्वेदी से बातें। श्री दांडेकर व दो विद्यार्थी मिलने आये।

श्री माधवराव अणे से करीब दो घंटे बातचीत, विचार-विनिमय व व्यवस्था।

पूज्य मालवीयजी के नाम पत्र भेजा।

चि० तारा अकोला गई।

सब-रजिस्ट्रार कार्ट में पावरनामा (अधिकार पत्र) रजिस्टर किया।

१२-१-३२

प्रभातफेरी की, बहिनें आईं।

चि० मार्तण्ड आज गया। श्री विट्ठलदास बजाज से बातें। श्री देवगिरीकर मिलने आये।

पू० बा, मणी, मिठू बहेन व अब्बास सा० की पोती इतने सब पकड़े गये।

श्री नर्मदाप्रसादजी गांधी-सेवा-संघ से मुक्त हुए। श्री देवगिरीकर मेल से वापस गये।

१३-१-३२

डा० चौइथराम व लालजी बंबई से मिलने आये, बातचीत।

श्री मनोहर पंत से खुलासा बातचीत। पत्र-व्यवहार।

आज शाम को गांव में सभा थी। श्री माधवरावजी अणे, ब्रिजलालजी बियाणी, श्री दुर्गाताई जोशी अकोला से मोटर में आये। व्याख्यान आदि देकर रात में १२॥ बजे वापस गये।

श्री लालजी व चौधरीजी एक्सप्रेस से गये।

चि० शान्ती व गोमती बहन की गिरफ्तारी का तार मिला।

रात में १ बजे के बाद में सोना हुआ।

१४-१-३२

डा० चौइथराम ग्रांडट्रंक से नागपुर गये।

बैरिस्टर अभ्यंकर व पूनमचन्दजी रांका की सजा व दंड की खबर पढ़कर सरकार की नीति का पूरा पता लगा।

चि० राधाकिशन सीकर गया। जानकीदेवी सेलू गईं। श्री मथुरादासजी मोहता आदि मिलने आये।

आज तबीयत थोड़ी सुस्त मालूम हुई।

बंबई से पूज्य मालवीयजी का तार आया। मिलने बुलाया। एक्सप्रेस से बंबई रवाना।

श्री जानकीदेवी को साथ नहीं लिया।

बम्बई, १५-१-३२

मनमाड में अखबार पढ़े। बंबई पहुंचे। बिड़ला हाउस में पूज्य मालवीयजी के पास ठहरे। पूज्य मालवीयजी से बातें। वर्किंग कमेटी का हाल, पूज्य बापूजी की मनःस्थिति, वाइसराय के नाम के तार तथा व० क० के ठराव बताये। उनके विचारों में परिवर्तन हुआ।

कमला नेहरू व मीरा बहेन से मिले।

पूज्य मालवीयजी व माडरेट नेताओं की कांफरेंस हुई। सर कावसजी से बोलचाल हुई। दुःख हुआ।

टिप्पणी

जेल-जीवन की यह डायरी १६-१-३२ से शुरू होकर ५-४-३३ के अन्त तक चलती है। ५-४-३३ को जमनालालजी छोड़ दिये गये। इस बीच वे १२-३-३२ को पैरोल पर उनके "मना करते हुए भी" छोड़े गये। पैरोल की शर्तें भंग करने पर १४-३-३२ को फिर गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें एक वर्ष की सजा दे दी गई। १५-३-३२ को उन्हें वीसापुर जेल तथा २५-३-३२ को धुलिया जेल भेज दिया गया। बाद में उनके कान के इलाज के लिए महात्मा गांधी के प्रयास से, १७-११-३२ को यरवदा जेल में, जहां महात्माजी नजरबंद थे, उनकी बदली हुई ताकि जमनालालजी के कान का इलाज महात्माजी की देखरेख, सलाह व संतोष के मुताबिक हो सके। २५-३-३३ को डाक्टरी जांच व इलाज के लिए वह बंबई में आर्थर रोड जेल भेजे गये। ५-४-३३ तक वहां के अस्पतालों और प्रसिद्ध सरकारी तथा

निजी डाक्टरों की देखरेख में उनका इलाज हुआ। ५-४-३३ को उन्हें अचानक छोड़ दिया गया।

डायरी के इस काल की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं—ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रेम्जे मैकडोनल्ड द्वारा दिये गये साम्प्रदायिक निर्णय का अछूतों-संबंधी धारा के विरुद्ध यरवदा जेल में किया गया महात्मा गांधी का आमरण अनशन; उसके परिणामस्वरूप अछूतों और सवर्ण हिन्दुओं के नेताओं के बीच हुआ समझौता, और सांप्रदायिक निर्णय में किया गया परिवर्तन तथा "हरिजन सेवक संघ" की स्थापना। —संपादक

भायखला हाउस आफ करेक्शन (जेल)

१६-१-३२

सुबह पूज्य मालवीयजी से बातें।

श्री शंकरलाल बैंकर व बेलगांववाला से बातें।

ठाणा जेल में चि. शान्ती, गोमती बहन व किशोरलालभाई आदि मित्रों से मिला। ठाणा जेल के सुपरिंटेंडेंट मि० वारनेर से परिचय।

चि० कमला से मिलकर शंकरलाल वगैरा से बातें। वहां मालूम हुआ कि पुलिस मेरी तलाश कर रही है। जल्दी ही दादी के बंगले भाग्यवती से मिलकर वहां पहुंचे।

श्री चौधरी पुलिस आफिसर ने संदेह में गिरफ्तार किया। पूज्य मालवीयजी आदि से मिलकर पुलिस कमिश्नर के यहां होते हुए भायखला जेल पहुंचे। बहुत से मित्र मिले।

१७-१-३२

वजन २०४ रत्तल हुआ।

भायखला हाउस आफ करेक्शन में। मुंह हांथ धोया। जेल की ब्रेड खाई मित्रों से बातचीत, खेल-कूल, स्नान। जेल का भोजन।

कपड़े धोने की व्यवस्था बराबर नहीं मालूम हुई।

कुछ देर आबिदअली आदि के साथ खेलकर सो गये। शाम को नीचे गये,

कुछ देर अलीबहादुर के साथ खेले। थोड़ा घूमना, व्यायाम आदि, शाम को नीचे प्रार्थना की। श्री मूलराजजी से ठीक परिचय।

१८-१-३२

रात में नींद ठीक आई।

कर्नल थामस ने कान देखा व जेल के डाक्टर से कह दिया। डा० मोदी ने ३२ की जगह भूल से १९३१ लिख दिया।

मित्रों से बातचीत व विचार-विनिमय। खेलकूद।

शाम को प्रार्थना।

१९-१-३२

फलाहार किया।

मुलाकात। चि० कमला उसकी सासू, चि० रामनिवास, केशवदेवजी, मदनमोहन अन्दर आये। सामान आदि लाये। नानू बाहर रहा।

अलीबहादुर से आज से उर्दू सीखना शुरू किया।

मित्रों से बातचीत व विचार-विनिमय।

आज ईश्वरभाई पटेल गये, उनकी जगह आबिदअली आये।

शाम को प्रार्थना। रात में खेलते रहे।

२०-१-३२

टाइम्स पढ़ा। आबिदअली से बातें।

सेनगुप्ता स्टीमर पर गिरफ्तार हुये।

आज नीचे केवल शाम की प्रार्थना में जाना हुआ।

२१-१-३२

फोड़े में दर्द के कारण बराबर नींद नहीं आई।

टाइम्स पढ़ा, खेले।

फ्रीप्रेस वाले सदानंद गिरफ्तार होकर आये।

नानू गरम दूध लेकर आया।

शाम को मटरू बाजोरिया के साथ भोजन किया।

सदानन्द, आबिदअली व अन्य मित्रों से बातचीत। विचार ११ बजे तक।

२२-१-३२

जेल कमेटी आई; मि० दस्तूर आदि। यह 'फार्स' मालूम हुआ।

आज गुमडे में खूब दर्द था। शाम को काले मलम की पट्टी बांधी जिससे दर्द कम हुआ।

शाम को नीचे थोड़ी देर घूमने गया था।

करेन्सी, गवर्नमेंट-सिक्यूरिटी आदि की चर्चा व विचार।

रात में ११। बजे तक खेलते रहे।

२३-१-३२

सुबह फोड़ा फूट गया। दवाकर पीप निकला उससे ठीक मालूम हुआ। थोड़ा आराम, बाद में खेलकूद।

ट्रस्ट फण्ड की रकम चालीस हजार, जो सेंट्रल बैंक में जमा थी, वह गवर्नमेंट ने जब्त कर ली।

२४-१-३२

अल्मोड़ा में ता० १४ को पुलीस का हुक्म नहीं मानने के कारण कमलनयन गिरफ्तार हुआ। ६ महीने की सजा व ११० रु० दंड हुआ। सी-क्लास दिया गया।

अखबार सुना। आज मकान की सफाई हुई।

खेलना आदि हुआ। शाम को प्रार्थना में शामिल हुए।

२५-१-३२

कर्नल थामस ने ब्लड प्रेशर, छाती आदि भलीप्रकार से देखी। फिर तपास करने की जरूरत बतायी।

श्री दुर्गादत्त सांवलका व त्रिकमदास द्वारकादास आज गिरफ्तार होकर आये।

२६-१-३२

सुबह नीचे बुलाया। वहां गये। जेल में किस प्रकार रहना, उस पर चर्चा व विचार-विनिमय।

सुपरिंटेंडेंट से मुलाकात के नियम आदि के बारे में चर्चा।

पूपाला पकड़ कर आये। श्री देशपाण्डे, आचरेकर, मणीभाई, ये चार जने पेरोल पर गये। त्रिकमदास से बातें।

२७-१-३२

अखबार देखा, गरम पानी से स्नान किया।

आबिदअली से उसके आपरेशन के बारे में विचार-विनिमय।

मित्रों से आपस में चर्चा। जीवनी की थोड़ी चर्चा। खेल-कूद।

आज बहुत-सी गिरफ्तारियां हुईं।

२८-१-३२

मि० रेमन्ड पुलिस डिप्टी इंस्पेक्टर, गोकुलदास तेजपाल अस्पताल में ले गया। वहां डा० मूस ने तपास की। एक्सरे लिया। बिजली से तपासा, दो घंटे वहां लग गये। डा० ने बीमारी का व दर्द के दौरे का इतिहास पूछा।

दो बजे वापस आकर भोजन किया।

चि० शान्ता, सौभाग्यवती आदि मिलने आए। जेल कानून के कारण मुलाकात लेने की इच्छा कम हुई, परन्तु जेलर के कहने से दोनों बहिनों से मिला।

खेल-कूद में थोड़ा भाग लिया।

२९-१-३२

चर्खा (यरवडा चक्र) काता, १०० तार से ज्यादा हुआ।

श्री रणछोड़भाई ने जो पत्र अहमदाबाद आफीसर को भेजा, वह पढ़कर दुःख हुआ।

डा० प्रफुल्ल घोष कंटाई में पकड़े गये।

पत्र भेजा, डा० मोदी का पत्र भी उसके साथ भेजा।

३०-१-३२

वजन २०० रत्तल हुआ।

श्री अणे, शिवराज, थत्ते आदि की गिरफ्तारी की खबरें टाइम्स में पढ़ीं।

जयमतसिंह ने आबिदअली से जो तकरार की वह देख व सुनकर जी में बहुत दुःख हुआ।

चर्खा काता—१०० तार।

रामदास, इंद्रजीत ठाकुर, घुरेन्द्र आदि आज गये।

कल फ्रंटियर दिन मनाया गया। कई जगह—खासकर वम्वई में, गोली व गिरफ्तारियां ठीक हुई।

३१-१-३२

चर्खा काता। अलीवहादुर खां से मुस्लिम धर्म के वारे में वातें।

आविदअली से लेवर-संगठन के वारे में चर्चा।

रात को जेल में पहली वार दूध पिया। भारीपन मालूम देने लगा।

१-२-३२

रात में दूध पीने से भारीपन मालूम हुआ। आज १७५ तार काते।

चि० सुशीला के विवाह की खवर टाइम्स में पढ़कर संतोष हुआ।

मित्रों से वातचीत, खेल-कूद।

२-२-३२

चर्खा काता। मित्रों से आपस में वातचीत व विचार-विनिमय।

आज एकादशी थी। करना भूल गये।

मूलराज का सिर दुखता था। उसकी थोड़ी मालिश की।

जयमत सिंह को पुलीस ले गयी।

चि० सुशीला, राजेन्द्रलाल का व सर शादीलाल और रामनिवास का मारवाड़ी ड्रेस में फोटो देखा।

३-२-३२

टाइम्स में सुशीला व राजेन्द्र का फोटो देखा।

माहेश्वरी की जन्मगांठ। ३८ वर्ष पूरे हुये।

डा० चौगिथरामजी इडवाणी गिरफ्तार होकर आये। उनकी राय में आज तक की गिरफ्तारी का अंदाज इस प्रकार है—

फ्रन्टीयर,	यू० पी०,	विहार,	वंगाल,	गुजरात,	महाराष्ट्र,	वम्वई
१०,०००	७५००	४०००	२५००	१०००	७५०	७५०

कर्नाटक,	सिंध,	दिल्ली,	पंजाव,	आसाम,	उड़ीसा,	सी० पी०—वरार—द० भारत
५००	५००	७५०	१२५	२५०	५००	२०००

डा० चौंइथराम से उनकी तबीयत की तथा अन्य बातें।

४-२-३२

डा० चौंइथराम के साथ बातचीत। इनकी समझ है कि आजतक तीस हजार तक गिरफ्तारियां हो चुकी हैं।

सुपरिटेंडेंट मि० लास्टन ऊपर आये। उनसे मुलाकात आदि के सम्बन्ध में बातचीत हुई। उनका व्यवहार व जवाब आदि असंतोपजनक मालूम हुआ।

पत्र वगैरह पढ़े।

आज मुलाकात होने वाली थी। चि० शान्ता वगैरे आये भी थे, पर मुलाकात नहीं दी। थोड़ा बुरा लगा। जेलर और सुपरिटेंडेंट दोनों का व्यवहार अनुचित मालूम हुआ।

५-२-३२

१६५ तार सूत काता।

टाइम्स देखा। आई० जी० पी० को पत्र भेजने का मसविदा बनाया।

आज दोपहर को कान का सेंक किया।

कल सालीसीटर रोमर को जो पत्र लिखा था, वह आज सुपरिटेंडेंट ने भेजना कबूल नहीं किया।

आई० जी० पी० को, मुलाकात के बारे में, दरख्वास्त लिखकर जेलर को दी।

चि० शान्ता व सौभाग्यवती से मिलने की सु० डे० ने इजाजत दी।

चि० कमलनयन को हरदोई जेल भेजा।

६-२-३२

चर्खा काता—करीब २०० तार।

दुर्गादत्तजी सांवलका ने बातें करना शुरू की। उन्हें जो कहना था वह उन्होंने पूरा किया। बाद में मैंने उन्हें, मेरे मन में उनके प्रति जो विचार थे, वह स्पष्ट और साफतौर से उन्हें समझा कर कहे। उन्होंने कबूल किया।

दुर्गादत्तजी आज गये। बालुंजकर पकड़े गये।

जानकीदेवी व केशवदेवजी आदि का पत्र मिला।

७-२-३२

चर्खा काता, अखबार पढ़ा। चिट्ठियां लिखीं।

मटरूमल वाजोरिया व झावरमल जोशी से वातें।

मथुरादास त्रिकमजी से वातें। इनके स्वभाव में क्रोध तथा अभिमान की मात्रा वहुत ज्यादा दिखाई देने लगी। उन्हें प्रेम के साथ समझा कर कहा। कल का श्री नरीमान के साथ का उनका व्यवहार अनुचित था।

८-२-३२

आज रमजान की ईद है। सव मुसलमानों ने आज मिलकर नमाज पढ़ी। चर्खा ठीक काता, दो सौ से ज्यादा तार।

नगीनदास मास्टर, भगवानजी महेश्वरी, नरवणेकर, वावू झवेरी, वाव-रेकर पेरोल पर छूटे।

वर्धा से पच्चीस संतरे आये।

रात में चर्चा व विचार। ब्रिज खेले।

एक आर्डीनरी (साधारण) कैदी नीचे वहुत वुरी तरह से गाली-गलौज करता रहा।

९-२-३२

आज सुवह जल्दी उठे। फरनीचर वगैरा चले जाने से ठीक परिवर्तन मालूम देने लगा।

सौभाग्यवती प्रमुख हुई, यह सुना।

दिन में खेले, और सोये।

सदानन्द के पांव में छोटा आपरेशन किया, उसके पास वैठे।

१०-२-३२

चर्खा काता, अखवार पढ़ा। 'गवन' प्रेमचंद का हिन्दी उपन्यास पढ़ना शुरू किया।

अलीवहादुर खां वगैरा गये। नगीनदास मास्टर, वावरेकर आदि को सजा हुई।

मूलराज की जीवनी सुनी।

११-२-३२

चर्खा काता। मुलाकात। चि० शान्ति व श्रीमती शान्ता बहन पित्ती आदि मिलने आये। औरों को अन्दर नहीं आने दिया।

डा० चोइथराम ने अपने जीवन की मुख्य-मुख्य घटनायें कहीं। ठीक व उत्साहकारक मालूम हुई। इनसे ज्यादा प्रेम हुआ।

रात में आबिदअली ने अपनी जीवनी कही।

चर्खा काता।

१२-२-३२

आज चि० मटरू, नूरअली वगैरह, १६ जनों को पुलिस पेरोल के लिये ले गई। सुपरिटेंडेंट ने क्लास का खुलासा किया। इन नौ आदमियों को ए—वर्ग दिया—जमनालाल बजाज, के० एफ० नरीमन, के० एम० मुंशी, मथुरादास त्रिकमजी, जी० वी० कापडिया, मूलराज, एस० सवनीस, डा० चोइथराम, और सदानंद।

वर्धा पत्र भेजा। रात में आबिदअली ने अपनी जीवनी कही।

१३-२-३२

वजन २०३ हुआ। चर्खा काता। घारपुरे गये। अमृतलाल सेठ को, जो आज ही ईस्ट अफ्रीका से आये थे, पकड़ कर यहां ले आये। और भी पांच जने पकड़े गये।

आज ऊपर से नीचे जाने के बारे में तथा सी—वर्ग के मुलाकात तथा बन्द करने की चर्चा थी। मैंने अपना मत जेलर से समझा कर कहा। उसके ध्यान में आया।

श्री एस० सवनीस की जीवनी सुनी।

१४-२-३२

चर्खा काता। आबिदअली व डा० चोइथराम से जेल कानून की चर्चा। महाराजा बीकानेर के लड़के विजयसिंहजी की अकाल मृत्यु ११ फरवरी को बीकानेर में हुई। पढ़कर दुःख हुआ। कल तार भेजने का विचार।

सवनीस ने विलायत के अपने अनुभव सुनाये।

१५-२-३२

चर्खा काता।

'गवन' पढ़ा, खेले और सोये।

आज भी नीचे सब राजनैतिक कैदी एक ही जगह रहें, इस बारे में चर्चा व वाद-विवाद चलता रहा। बाटलीवाला व शर्मा की आपस में बोलचाल हो गई, यह ठीक नहीं था।

जेलर से बद्रीनारायण ट्रस्टके बारे में मुलाकात के लिए कहा।

१६-२-३२

चर्खा। मूलराज, कृष्णदास वाडाई, जमनादास द्वारकादास व दूसरे दो जने आज यहां से गये।

सब राजनैतिक कैदी आज एक जगह हो गये।

'गवन' पढ़ा। जेलर से ट्रस्ट के इण्टरव्यू की बातें, सुपरिंटेंडेंट ने स्वीकार किया।

खेल-कूद। आज प्रथम बार नीचे सोया।

१७-२-३२

चर्खा। 'गवन' पढ़ा। खेले।

श्री मुंशी, मथुरादासभाई, नरीमान, चौइथराम आदि से विचार-विनिमय। शाम को मुन्शी के साथ पट्टी खेले।

सुपरिंटेंडेंट करीब ५।।। बजे आया। लाकअप के बारे में उसका व्यवहार बहुत ही अपमानजनक मालूम हुआ। दुःख हुआ। नरीमान की दयाजनक हालत।

श्री नरीमान व मुंशी को राते में नौ बजे के बाद ले गये।

१८-२-३२

बाल कटवाये। चर्खा काता। हजामत के समय पुलिस कमिश्नर सर कीली, सु० डे० के साथ आया।

आज से किसी ने स्वयंसेवकों को चाय वगैरा मेरे नाम से भेजना शुरू किया। मथुरादास त्रिकमजी, पाटील, झीनाभाई, गुणवंत कापड़िया छूटे।

मुलाकात में सौभाग्यवती की माता आई।
ट्रस्ट के कागजात पढ़े।

१९-२-३२

अखबार सुना। चर्खा काता।
वर्धा में जानकीदेवी की गिरफ्तारी हुई, यह सुना। उसे भी अब जेल जीवन का अनुभव होगा। थोड़ी शांति मिलेगी।
आज बद्रीनारायण ट्रस्ट के बारे में श्री माधोप्रसाद जी सालीसिटर व केशवदेवजी से मुलाकात हुई। ट्रस्ट के बारे में मेरे विचार कहे।
आजतक की कुल गिरफ्तारियां—वर्धा–२००, जिनमें २० स्त्रियां। सारे भारत में कुल ४० हजार से ज्यादा।

२०-२-३२

चर्खा। एक घंटे आबिदअली के साथ मुकाबला; ३१७ तार हुए।
'गबन' पूरा हुआ।
आराम। थोड़ी देर खेलना। अखबार पढ़े।
'खादी किस प्रकार सहायक धंधा है', इसपर मित्रों से चर्चा व विनोद किया।
जेलर से बातें, कल के खान-पान विनोद आदि के बारे में।
रात में स्वप्न में मौलाना अबुलकलाम आजाद आए। नींद कम आई।

२१-२-३२

आज चर्खा नहीं काता।
आज सबों ने मिलकर गायन, कांग्रेस इतिहास पर विचार चर्चा, भाषण, खान-पान आदि में समय बिताया।
जानकीदेवी को कल (ता० २० को) वर्धा जेल में छः मास की सजा, एक हजार रुपये का जुर्माना व पहिला वर्ग दिया गया।
आज शाम को चर्चा, सभा, खाना-पीना, विनोद, खेल आदि।

२२-२-३२

अखबार पढ़े, चर्खा काता। वर्धा चिट्ठी भेजी।

हिन्दुस्तानी सेवादल के वारे में मुकन्द पई से वहुत देर तक वातें।
खेलना, सोना।

२३-२-३२

जेलर से वातें। उसको समझाया। उसकी भूल थी। चर्खा काता।
श्री गोवर्धन गिरधरलाल सालीसिटर के लड़के से वातें। उसने चर्खा काता।
सु० डे० मि० लेस्टन मिलने आया। मुलाकात के वारे में जवाव और व्यवहार असंतोषकारक मालूम हुआ।
आज जाजूजी और नारायणदासभाई को वम्वई दूकान पर पत्र भेजा।

२४-२-३२

मि० दमडी से स्वयं सेवकों के रुपये जमा कराने के व कपड़े के वारे में वातचीत। वह वहुत ही डरने वाला, और अस्थिर मन का मालूम हुआ।
चर्खा काता। खेले। 'दि डॉन आफ इण्डिया' पढ़ना शुरू किया।
करांची में सरोजिनीदेवी को नौ मास की सजा व दो सौ रुपये जुर्माना।

२५-२-३२

अखवार पढ़े। चर्खा।
अमृतलाल सेठ व गोवर्धन गिरधरलाल को आज पुलिस ले गई।
दिवेकर (सालीसीटर का भाई) व केतकर (पुलिस सी० आई० डी० इंसपेक्टर) व्यापारी दस्तावेज सही कराने आये।
मुलाकात। निर्मला, पुष्पा, लक्ष्मण वर्धा से आया। जानकीदेवी का नागपुर ट्रांसफर हुआ।
मूलराज को कड़ी सजा हुई। गुलावचन्द को वर्धा में सजा हुई।

२६-२-३२

अखवार पढ़ा। स्वदेशी विस्कुट खाया। चर्खा काता।
वीरचन्द भाई, जयंत दलाल व धीरूभाई देसाई को पुलिस ले गई।
मुकुन्द देसाई गिरफ्तार होकर आया। गायन-वादन हुआ।
टाइम्स और जामे जमशेद में सरकारी रिपोर्ट के अनुसार सन् १९३०-३१ में ६०४९८ सत्याग्रही जेल में गये। विगत नीचे मुजव—

१२२८५–बंगाल	४०९३–सी० पी०
१२१६२–विहार	३७७७–पंजाब,
११२२२–बम्बई	११७३–दिल्ली
९३७८–यू० पी०	११५८–आसाम
४३१४–मद्रास	९२८–फ्रंटियर ९-कुर्ग

२७-२-३२

वजन १९९ रत्तल। चार रत्तल कम हुआ। चर्खा। आज गणपती शंकर खाने में साथ आये।

श्री पुरुषोत्तम वैरिस्टर को आज पुलिस ले गई और आज ही एक वर्ष की सजा और ५०० रु० जुर्माना, जुर्माना न दें तो ५ महीना अधिक की सजा दी गई।

आज वम्बई के इक्कीस कार्यकर्त्ता राउण्ड-अप में पकड़े गये और यहां लाये गये।

२८-२-३२

संडे टाइम्स पढ़ा। चर्खा काता, ४१५ वार।

भोजन के वाद भी चर्खा काता।

शाम को श्री मेनन से जेल शिस्त व नियम की चर्चा-विचार। श्री वाटली-वाला व मेहरअली को समझाने के लिए कहा।

२९-२-३२

सफाई।. चर्खा काता। अखवार पढ़ा।

आविदअली और कृष्ण मेनन को आज पुलिस ले गई। दो व्यापारी पकड़ कर लाये गये।

'सोहागरात' पढ़ना शुरू किया।

आज आविद के जाने से थोड़ा ठीक नहीं मालूम होता था। रातमें थोड़ी देर पढ़े। वाद में खेले।

१-३-३२

अखवार पढ़ा। चर्खा काता। 'सोहागरात' पढ़ा।

मेहरअली और मुकन्द मालवीय को यहां से व कमलादेवी को आर्थर रोड से पुलिस ले गई।

पत्र लिखे—बम्बई चि० राधाकिशन व चि० राधिका गांधी को सावरमती।

आविदअली व मेनन को एक वर्ष और तीन सौ रुपये की सजा हुई।

२-३-३२

आज टाइम्स में छपा पार्लमेंट का भारत के संबंध में विवाद पूरा पढ़ा।

डा० जीवराज मेहता, डीन व डा० दिवाकर को पुलिस आज पकड़ कर ले आई।

३-३-३२

(फाल्गुन कृष्ण ११, गुरु)

चर्खा काता। 'सोहाग रात' पढ़ी।

डा० जीवराज से बातें। चि० शान्ति व रामेश्वर की माता मिलने आई।

आज से सोमवार तक दूध, दही, छाछ, फल आदि लेने पर, अगर इस जेल में रहना हुआ तो, विचार किया।

४-३-३२

'सुहागरात' पुस्तक पूरी हुई।

जेल में किस प्रकार के नियम आदि पालना इस पर विचार-विनिमय हुआ। दोपहर को भी इसकी ठीक चर्चा हुई।

फ्री-प्रेस वाले सदानन्द को आज ले गये। श्री जाल नौरोजी को आज पुलिस ले आई।

५-३-३२

(महाशिवरात्रि)

श्री जाल नौरोजी से बातें; सकलातवाला की बातें कही।

जानकीदेवी, राधाकृष्ण व बम्बई को पत्र लिखे, देव शर्मा को भी।

बीकानेर महाराज के पुत्र की मृत्यु के बारे में डा० जीवराज ने नई बातें कहीं।

डा० जीवराज ने कान के बारे में समझा कर कहा।

६-३-३२

कमरे में सफाई हुई। कमरा सुन्दर हो गया।

ग्राम-संगठन पर निवेचन किया। चर्खा, श्री जाल के साथ शतरंज, ब्रेन एक्सरसाइज़ आदि के खेल। डा० जीवराज व श्री जाल का ठीक परिचय हो रहा है।

७-३-३२

दूध व छाछ का प्रयोग आज पांच रोज से बरावर चला। ठीक मालूम हुआ।

८-३-३२

सफाई, चर्खा।

पांच रोज बाद आज अनाज खाया।

श्री जाल ए० दादाभाई नौरोजी से बातें। उन्हीं के साथ खेले।

मोडक व दरू आज गये। कीकाभाई, प्रेमचन्द जेल मुलाकात को आये, ऊपर नहीं आये।

'आंख की किरकरी' पढ़ना शुरू किया।

९-३-३२

चर्खा काता। आज नीचे सर्व साधारण पंगत में भोजन किया।

श्री जमनादास खुशाल वोरा आज चला गया। उसके साथ अपने साथियों का वर्ताव ठीक नहीं मालूम हुआ। श्री बाटलीवाला का व्यवहार अनुचित हुआ।

बाई केशर और लक्ष्मण की बीनणी जेल में गई, सुना।

१०-३-३२

कांच का गिलास फूट गया, बुरा मालूम हुआ। ट्रस्ट के कागजात पढ़े। पू० बा (कस्तूरबा), चि० शांती वगैरा मुलाकात को आये। सु० डे० ने बा को मिलने की परवानगी नहीं दी। इससे सुबह मुलाकात नहीं ली। शाम को चि० शान्ती मिली।

मदनमोहन से मालूम हुआ कि जानकीदेवी का स्वास्थ्य थोड़ा खराब है। चिन्ता हुई, मन में विचार रहा। उसे दवा आदि के लिए कहा।

११-३-३२

रात में नींद पूरी नहीं आई। जानकीदेवी को नागपुर सेंट्रल जेल पत्र भेजा। चि० चन्द्रा को पोस्टकार्ड। नागपुर तार भी भेजा।

पंगत में भोजन। चर्खा अधिक काता।

कृष्ण ऐयर का फैसला। वह बेजवाबदार और जोखमकार साबित हुआ। अहिंसा पर विवेचन किया।

यहां से कल जाने की तैयारी की सूचना मिली।

भायखला जेल-बंबई, १२-३-३२

सुबह तीन बजे आंख खुल गई। निवृत्त होकर श्री मुंशी तथा अन्य मित्रों से बातें।

आज सबने साथ मिलकर भोजन किया। मित्रों ने खूब प्रेम दिखाया। आंख में पानी आया। बाटलीवाला के प्रति प्रेम। उसके साथ जेल वालों ने ठीक व्यवहार नहीं किया।

१२ बजे जेल से छूटे। पुलिस कमिश्नर सर केली से बातें। जबान से नहीं कह देने पर भी पेरोल आर्डर। सोफिया सोमजी को छोड़ कर दुकान गये।

डा० मोदी को कान दिखाया।

बम्बई, १३-३-३२

सुबह जल्दी निवृत्त होकर मित्रों से बातें। एडवोकेट से सब परिस्थिति समझी।

माटूंगा में श्री केशवदेवजी से तथा घरवालों से बातें। कालबादेवी मित्रों से बातचीत।

पू० जाजूजी से बातें। श्री सूरजमलजी, चि० शान्ता, मदनलाल पित्ती से बातें।

जोहरा आबिदअली से मिला। चि० शान्ता के साथ भोजन। श्री सुबटा-बाई, नाथजी, नारायणलाल से बातें। बच्छराज कम्पनी की सभा, श्री कालीदासभाई का फैसला।

१४-३-३२

जल्दी ही निवृत्त होकर पत्र वगैरह लिखे। श्री गोविन्दलालजी, दुर्गादत्त मिले।

सर पुरुषोत्तमदास से फेडरेशन, अस्पृश्यता-निवारण, जेल-लमुाकात की चर्चा।

श्री शान्ता बहन पित्ती के साथ भोजन किया। मित्रों से बातें।

१०॥ बजे डिप्टी इंसपेक्टर ने गिरफ्तार किया। प्रिंसेज स्ट्रीट पर करीब एक घंटे बाद खण्डावाला के कोर्ट में ले गये। वहां एक वर्ष सख्त मजूरी की सजा--पांच सौ रुपये दण्ड, दंड नहीं भरा तो छः महीने ज्यादा। ऐस्प्लेनेड लॉकप में रमाकान्त के साथ। आर्थर रोड जेल में सी-वर्ग। रात में भायखला से वीसापुर रवाना हुए।

पूना-धोंड़-वीसापुर जेल, १५-३-३२

पूना स्टेशन पर मुंह हाथ धोया। नाश्ता किया। श्री त्रिवेदी, देव, जयसुखलाल भाई, काशी बहन, दुर्गा, लक्ष्मी, मोती वगैरे मिले।

धोंड़ में त्रिवेदीजी ने जो खाना दिया था वह खाया।

स्टेशन से दस माइल अंदाज २॥ बजे धूप में वीसापुर पैदल पहुंचे। वहां जाते ही कपड़े धूप में ही खड़े रहकर बदले। जेल चड्डी व बंडी पहनी। सेक्स्टन अ० जेलर पहिचान का था। उसने सेल में रहने को कहा। आखिर मेरे आग्रह के कारण मुझे नं० ७ में रखा। बैरक मित्रों से बातें। शाम को प्रार्थना।

वीसापुर जेल, १६-३-३२

रात में नींद खूब आई। सुबह प्रार्थना दादा कराते थे।

चक्कर में घूमते समय मित्रों से बातचीत।

जेल का दृश्य कांग्रेस के कैम्प जैसा मालूम देता था। पायखाने में कांटों के तार लगे हुए थे।

आज तोल हुआ। अस्पताल का कांटा छोटा पड़ा। अनाज तोलने के कांटे पर किया, २०७ रत्तल हुआ (कपड़े सहित)। उंचाई ५--११॥ इंच हुई।

मित्रों से परिचय करना शुरू हुआ। भोजन के वाद आराम। वातचीत। घूमना। शाम को स्नान। भोजन, प्रार्थना, शयन।

१७-३-३२

नित्य कार्य; चक्कर में घूमना। आज सु० डे० मि० क्वीन ने भोजन के वाद बुलाया।

वहुत देरतक खड़े-खड़े वातचीत। जेलर एलीस का व्यवहार थोड़ा अपमानकारक था। मैंने परवाह नहीं की। सु० डे० ने राजनैतिक वातें की। खुद को आईरिश वतलाया। मुझे अस्पताल में रहने को जोर से आग्रह किया और कहा कि तुमको यरवडा भेजूंगा, यहां कान का इलाज वरावर नहीं हो सकता। आज अस्पताल में नहीं गया। शाम को प्रार्थना के वाद थोड़ा कहा—जेल के सम्वन्ध में।

१८-३-३२

नाश्ता करने के वाद आज अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। वहां के रहन-सहन, वीमार व डाक्टर के व्यवहार का अध्ययन शुरू किया। श्री पाटिल भी, बुखार आने के कारण, वहां आ गये। उनसे वातचीत। अस्पताल में श्री गोणसे, शंकरभाई आदि मित्र थे। दोनों समय प्रार्थना शुरू की। यहां पर भी मामूली भोजन चालू रखा।

पानी की तंगी, स्नान की जगह नहीं, धूल खूव उड़ती है।

१९-३-३२

कल मालूम नहीं पड़ी, इससे आज एकादशी का उपवास किया। केवल पानी पिया। शंकर वार्डर शहद निकाल कर लाया और वोला मैंने वहुत पाप किया है।

४ वजे अंदाज कुंडे वाला भाग गया। शाम को साढ़े पांच वजे से दौड़धूप खूव मची। देखने योग्य दृश्य था। जेलर ने पूछा उसे कव देखा था? मैंने कहा ३।। वजे। आज से पुलिस आदि पर सख्ती शुरू हुई।

२०-३-३२

सुवह उठकर प्रार्थना की। कान का इलाज चालू।

जेल में कैदी भाग गया, उसकी काफी चर्चा। पाटील से वातें। डाक्टरों से परिचय। सु० डे० वगैरा कई वार, कैदी भागा उसका मौका देखने, आये। ज्यादा सख्ती से पहरे वगैरा का काम शुरू हुआ।

दोनों वक्त अस्पताल के वगीचे में घूमना, मित्रों से वातें करना, चर्चा। रात में नींद कम आई। वीमारों से वातचीत की, जेल की हालत के वारे में। जेल का लड्डू खाया।

२१-३-३२

पाटील से ठीक वातें हुई। आज सु० डे० का इंसपेक्शन-दिन था तो भी वे अस्पताल में नहीं आये ; जेलर आया उससे वातें हुईं।

पुलिस जमादार डेविड को वरखास्त किया, कैदी भाग गया इसलिये। शंकर वार्डर को तीन महीने चक्की व दंडा-वेड़ी, किशन वाचमैन को दंडा-वेड़ी दी। डेविड को ज्यादा सजा हुई।

२२-३-३२

प्रार्थना व नित्य कार्य। पाटिल से वातें।

सु० डे० आज आए, वहुत देरतक वातचीत। अस्पताल में वाथरूम वनवाना, पानी की व्यवस्था करना आदि उन्होंने कवूल किया। कैदी भाग गया उस वारे में ठीक चर्चा।

आज पाटील डिस्चार्ज हो गये।

शाम को प्रार्थना के वाद भाऊ करवारे वार्डर ने अपनी जीवनी का हाल सुनाना शुरू किया, मनोरंजन कथा लगी उसकी।

२३-३-३२

आज थोड़ा हवा पानी आया शाम को। जेलर मि० एलीस से वातचीत। जेल-संवंधी सुधार के वारे में मेरे विचार उनसे कहे। उन्होंने सु० डे० को कहने का कहा।

शाम को डाक्टरों से वातें। प्रार्थना के वाद भाऊ करवारे का वाकी का जीवन सुना।

मास्तर क्रिश्चियन-वार्डर अच्छा आदमी मालूम हुआ।

बीसापुर जेल-मनमाड़, २४-३-३२

आज यरवडा ट्रांसफर की खबरें आईं।

तोल हुआ, २०१ रत्तल हुआ, ६ रत्तल कम।

११ बजे यरवडा-पार्टी चली गई। भोजन, बाद में सो गया। सु० डे० आये थे। मुझे सोते देख उठाया नहीं। दो बजे मालूम हुआ कि धुलिया जाना पड़ेगा।

जेल-आफिस में मित्रों से मिलकर स्टेशन धूप में जल्दी भागना पड़ा। गाड़ी आ गई थी, आखिर गाड़ी मिल गई। पुलिस सिपाही भले आदमी थे। रास्ते में बरसात खूब पड़ी। मनमाड़ में छः घंटे घूमना व आराम। वहां की पुलिस भी ठीक थी।

धुलिया जेल, २५-३-३२

चालीसगांव से धूलिया पहुंचे। रास्ते में अखबार पढ़ा। धुलिया स्टेशन पर मित्र लोग मिले।

जेल तक मित्र लोगों के साथ पैदल ही गया, मोटर में बैठने को कहा लेकिन इन्कार कर दिया। जेल में पहुंचने पर पू० विनोबा, दास्ताने, पुरुषोत्तमजी आदि कई मित्र मिले। मिलकर सुख व आनन्द मिला। जेलर मि० ईश्वर लाल वैष्णव व सु० डे० कंट्राक्टर ने ठीक तरह से बातें की।

२६-३-३२
(चैत्र कृष्ण ४, शनिवार)

पूज्य विनोबाजी की संगत तथा अन्य वातावरण ठीक मालूम हुआ। कान का इलाज चालू हुआ।

वजन किया २०५ रत्तल हुआ, कपड़े का दो रत्तल बाद करके। शाम को रामायण वर्ग आदि।

कल रात में नींद खूब आई थी। पर आज बराबर नहीं आयी।

२७-३-३२

विनोबा का गीताप्रवचन, छठा अध्याय का, बहुत ही भावपूर्ण हुआ। मन को संतोष हुआ।

आज इतवार होने के कारण सुवह बाजरी की रोटी व साग; शाम को गुड़, तेल, आचार व वाजरी की रोटी मिली। गुड़ का पानी भी पिया, रोटी के साथ भी खाया। अचार भी खाया। इससे रात में थोड़ी खांसी आई।

२८-३-३२

सु० डे० ने इंस्पेक्शन किया। चर्खा तथा तकली भी काता। प्रताप सेठ व वनारसी ने स्वास्थ्य की खवर पूछी।

शाम को विनोवा से चर्चा। अस्पताल में स्नान, दवा।

शाम को प्रार्थना विनोवा के साथ वरावर चालू।

२९-३-३२

आज सुवह ४ वजे विनोवा के साथ प्रार्थना शुरू की, व शाम को आठ वजे भी। जेलर व सु० डे० से जेल, खासकर अस्पताल आदि की चर्चा। जेल-कमेटी आई। मि० भिड़े कलेक्टर, व्यास सेशन-जज आदि थे, ठीक वातें हुई, पांव में वेड़ी, धूप में वाहर सोना, साग आदि के वारे में। शाम को तुलसी-रामायण की चर्चा।

३०-३-३२

सुवह ४ वजे विनोवा के साथ प्रार्थना, चर्खा, तकली। सुखाभाऊ के काम का परिचय।

सु० डे० मि० कंट्राक्टर ने कान, गला, नाक की तपास की।

स्त्रियों के लिए भी सप्ताह में एक रोज विनोवा का प्रवचन निश्चय हुआ।

तुलसी-रामायण। विनोवा के साथ प्रार्थना।

३१-३-३२

सुवह चर्खा। प्यारेलाल से वातें।

तकली। मिलने वालों से वातें, खासकर रामकिशनजी डागा (वांसल गांववालों) से।

वहनों के वार्ड में भी जगह की तंगी, तथा अन्य गैर-व्यवस्था की वातें सुनी।

जेलर के साथ सव देखा। पाखाने आदि की अड़चन वताई।

जेलर से वहुत देर तक वातें।

१-४-३२

सुवह आज थोड़ी देर हो गई। ४।।। वजे करीव विनोवा के साथ प्रार्थना। प्यारेलाल से देवदास के वारे में वातें।

कमिश्नर के साथ मि० भिड़े कलेक्टर आये। पांव की वेड़ियां, वाहर सोने आदि के वारे में चर्चा।

सु० डे० ने नाक व गले में दवा लगाई। उसने कहा, ऊपर से लिख कर आया है, कान कैसा है?

सु० डे० व जेलर के साथ वहनों के वार्ड में पाखाने, नहाने, सोने की व्यवस्था आदि की चर्चा व व्यवस्था।

२-४-३२

विनोवा के साथ प्रार्थना। विनय पत्रिका में से ९३वां भजन समझा। चर्खा काता। सु० डे० ने वुलाया। डा० भूतेकर के पत्र के वारे में कहा और वहनों के वार्ड में पाखाने का नकशा वदला।

पूज्य वापूजी का पत्र वीसापुर होकर आज यहां आया, पढ़ा।

पूर्व-खानदेश के कार्यकर्त्ताओं से विचार-विनिमय ठीक हुआ। व्राह्मण, अव्राह्मण आदि प्रश्नों का खुलासा। वीसापुर का अनुभव कहा।

रात में पूज्य वापूजी को पत्र लिखकर रखा।

३-४-३२

कड़ी वैरक में मारवाड़ी मित्रों से परिचय।

विनोवा का गीता-प्रवचन।

आज वहुत-से परिचित मित्र वीसापुर-जेल ट्रांसफर हुए। रिषभदास भी वीसापुर-जेल को ट्रांसफर हुआ।

४-४-३२

पूज्य वापू को फिर से पत्र लिखकर भेजने के लिए जेल-आफिस में भेजा।

सु० डे० का इंसपेक्शन-दिन। खोली की मरम्मत, सफ़ेदी, खिड़की वड़ी करने आदि की चर्चा।

५-४-३२

विनोवा के साथ तारों का परिचय।

लालजी मिलने आया।

धीरजलाल बैंकर की मृत्यु अपेंडिक्स के कारण एकाएक हुई। समाचार सुनकर दुःख हुआ। और सवों के राजी-खुशी के समाचार मिले। कान का एक्सरे भेजने व घीया का तेल तथा चोपड़ी (किताब) भेजने के लिए लालजी से कहा।

कोटरी की सफाई हुई।

६-४-३२

नामा जमादार वाराकोठा वुलाकर ले गया। वहां जो सार्वजनिक प्रार्थना वगैरा हुई वह वताई। जेलर से वहुत देरतक वातचीत।

विनोवा का वर्ग, भावी स्वराज्य व समाज रचना के वारे में।

जापानी खेल व मस्तक का व्यायाम। खेल। प्रार्थना-आज से शाम ६॥। से।

७-४-३२

चर्खा ठीक काता।

सु० डे० ने कहा कि तुम्हारे लिए वी-वर्ग का आदेश आया है, इसपर वहुत-सी चर्चा।

वी-वर्ग के प्रोटेस्ट का मसविदा तैयार किया। जेलर से वातें।

विनोवा का वर्ग।

८-४-३२

सुवह घूम कर चर्खा कातना शुरू किया। वी-वर्ग के प्रोटेस्ट व वीमारी के हाल का मसविदा तैयार करके सु० डे० को दिया।

सु० डे० को होम सेक्रेटरी, वंवई गवर्नमेंट के नाम लिखा वी-वर्ग के प्रोटेस्ट का पत्र पढ़कर सुनाया। उन्होंने आज भेज दिया होगा।

चि० राधाकिशन और मदनमोहन को ता० ३१-३ को ६ महीने और ५० रु० दण्ड व वी-वर्ग मिलने की खवर मिली।

९-४-३२

सुवह चार वजे प्रार्थना। घूमना। जेलर व सु० डे० से वहुत देरतक वातें। आज चर्खा कम काता गया। विनोवा का वर्ग हुआ।

आज जेल का विल्ला व टोपी लगाई।

१०-४-३२

वजन हुआ १९६ रत्तल, यानी ९ रत्तल कम हुआ।

महिला-आश्रम का परिचय वहिनों को।

विनोवा का प्रवचन-गीता का आठवां अध्याय; "मृत्यु" का सुन्दर विवेचन हुआ।

११-४-३२

चर्खा ३०० तार काता।

सु० डे० का इंसपेक्शन। वजन घटा इसलिये व्लड प्रेशर लेने को कहा।

आश्रम के समाचार सुने व पढ़े।

गंगूवाई व शान्तावाई काले छूटे।

आज गर्मी ज्यादा थी।

दोपहर को विनोवा-वर्ग में। विनोवा का गला वहुत खराव हो गया। उन्हें रातभर नींद नहीं आई। मुझे भी पिछली रात को नींद नहीं आई। देश की हालत व सरकार के अत्याचार का विचार।

१२-४-३२

प्रार्थना के वाद निवृत्त हो कर सफाई की।

आज नासिक के चार व्यक्ति छूटे। चर्खा। माधवजीभाई से ठीक परिचय करना शुरू हुआ।

अहमदावाद से मणीलाल कोठारी आज यहां ट्रांसफर होकर आये।

१३-४-३२

आज भी विनोवा का गला खराव था।

श्री मणीलाल कोठारी से वातचीत की।

राधावाई आप्टे वगैरह १६ जने छूटे।

गिट्टी फोड़ने का काम सुवह का रखने के वारे में सु० डे० से वातचीत।
वहां जाकर काम की तलाश की।
डा० से वातें। मणीलाल कोठारी और शंकरलाल वैंकर की चर्चा।

१४-४-३२

रात में गलजारी नन्दा की तवीयत वहुत खराव हो गई थी। यह सुवह मालूम पड़ा। उन्हें सु० डे० को दिखलाया। उनसे वातचीत की।
आज ८७ वड़ी सजा वाले क्रिमिनल कैदी छूट गये जिसमें कैदी ५२, वाचमैन १८, और वार्डर १७ थे।
आज रात में गर्मी कम थी।

१५-४-३२

द्वारकानाथजी, भाऊ, दत्तू आज छूटे। श्री वैंकर व जानकीदेवी को संदेश भेजा।
आज रामनवमी का उपवास रखा। सकरकन्द फलाहार में मिली।
श्री गुलजारीलाल की तवीयत खराव थी। उनके पास वैठे और उन्हें सूचना की। चर्खा काता।

१६-४-३२

रात में ठंडी थी, कंवल ओढ़ना पड़ा।
'मनाचे श्लोक' के पाठ अच्छे लगे। तीन लट्टी से भी ज्यादा चर्खा काता।
गुलजारीलाल के पास वैठा। उनसे वातें। देवकीनन्दन ने खानदेश खादी-कार्य का वर्णन सुनाया।
जेलर को, रसोई के वर्तन कैसे गंदे हैं, उसका चित्र वताया। रसोई आदि मणीभाई के जिम्मे हुई है। आशा है अव ठीक सुधार होगा।

१७-४-३२

४ वजे से ८ वजे तक प्रार्थना, मनाचे श्लोक, चर्खा, देवकीनन्दन, गोपालराव, माधवजी से वातें।
एकादशी का फलाहार—आलू, गाजर, थोड़ा खरवूजा लिया। आज इतवार था इससे गुड़ का पानी निम्वू डालकर पिया।
विनोवा का प्रवचन वहुत ही मनन योग्य हुआ। मन पर अच्छा परिणाम हुआ।

गुलजारीलाल से बातें। ता० २८ जून तक छूटने का भविष्य छपा है।

१८-४-३२

आश्रम का समाचार सुना। होम सेक्रेटरी के पत्र की नकल की।
पडवेकर व पूनमचन्द विक्री-पत्र रजिस्टर कराने व सही कराने आये।
एक्सरे वगैरा लाये थे। पट्टी, पेन्सिल वगैरा भी। धुलिया सब-रजिस्ट्रार के सामने सही की। पडवेकर को शांताक्रूज की जगह वेचान पर सही करने के अधिकार-पत्र वापस किये।
आज रात में बहुत से लोग मणीभाई के उद्योग से बाहर सोये।
आज चर्खा नहीं काता।

१९-४-३२

विनोबा ने तुकाराम का जीवन-चरित्र बताया। अभंग। विनोबा के जीवन-चरित्र संबंध में चर्चा। चर्खा काता।
नासिक मन्दिर-सत्याग्रह से आज ३२ अस्पृश्य आये, उसमें २० स्त्रियां व १२ पुरुष थे। उनके लिए थोड़ी कोशिश। गुलजारीलाल की व्यवस्था।
मणीलालभाई को सफलता मिल रही है, यह खुशी की बात है।

२०-४-३२

विनोबा ने ज्ञानेश्वरी के प्रकरण पढ़कर बतलाये। ठीक थे, अहिंसा के संबंध में।
चर्खा काता। माधवजी, देवकीनन्दन से बातें।
आज १॥ बजे से ४॥ बजे तक तुकाराम के अभंग पढ़े व कुछ लिखे।
आज रात में प्रथम बार दो बजे तक बाहर सोया।

२१-४-३२

२५ मनाचे श्लोक अर्थ सहित पढ़े।
अस्पृश्यों से बातचीत। चर्खा। देवकीनन्दन से बातें, खानदेश संबंध में।
अगर गोगटे ७५ रु० में रहने को तैयार हों तो व्यवस्था करेंगे।
प्यारेलाल से बातें। तुकराम के अभंग पढ़े, लिखे। विनोबा से मन की स्थिति

के बारे में बातचीत। रात में बाहर सोये। आज सी-वर्ग मंजूर होकर आगया।

२२-४-३२

गुलजारीलाल से बातें।

आज से अधिक कड़काई शुरू हुई।

चर्खा। दास्तानेजी से गोकटे व आठवले के बारे में बातचीत। तुकाराम के अभंग पढ़े, लिखे।

आज से जेल में शिस्त की कड़ी तालीम शुरू हुई।

विनोबा से मन की स्थिति की ठीकतौर से बातें।

रात में बाहर सोये।

२३-४-३२

यरवडा से माधवजीभाई का आया पत्र पढ़ा। वहां की स्थिति मालूम हुई।

कल और आज भोजन के समय, विनोबा के लिये जो खरबूजा आता है, उसकी फांक उनके कहने से ली, परन्तु मन में संतोष नहीं रहा।

चर्खा काता, तुकाराम के अभंग पढ़े और लिखे। विनोबा से पत्र-व्यवहार के सम्बन्ध में चर्चा व विचार-विनिमय।

२४-४-३२

आज थोड़ा चक्कर (गिडीनेस) मालूम हुआ। वजन हुआ; २०५ में से ९ रत्तल पहिले कम हुआ था १९६ रहा था। उसमें से ४ रत्तल इस समय कम हुआ, १९२ रहा।

विनोबा का गीता पर प्रवचन—१०वां अध्याय। ठीक हुआ।

रामचन्द्र नाम का बालक आलपीन खा गया, उसकी व्यवस्था।

आज बादल, बिजली, गड़गड़ाहट खूब रही। रात में थोड़ी बरसात भी हुई।

२५-४-३२

विनोबा से उनके अपने जीवन-चरित्र लिख देने पर चर्चा, विचार। मित्रों के साथ विचार-विनिमय।

२६-४-३२

मुझे अपनी अल्पता, गलती आदि का ठीक परिचय हुआ—विचार और दुःख हुआ। बाद में संतोष भी हुआ।

अस्पताल में गुलजारीलाल से बातचीत। मणिभाई से सीताराम भाऊ के बारे में बातचीत हुई।

सु० डे० व जेलर आये। आज जो दृश्य हुआ उससे मन को कष्ट तथा दुःख हुआ। खासकर मणिभाई को लेकर। उनका व्ययवहार तो अपमान-कारक था ही पर मेरा व्यवहार भी ठीक नहीं रहा। उसका मन को दुःख व विचार रहा। आज ४ बजे जाकर पानी पिया। भोजन नहीं किया, दिनभर में केवल कांजी ही ली थी। रात में नींद भी बराबर नहीं आई, परमात्मा की प्रार्थना।

२७-४-३२

मणिभाई के पास गये। बहुत देर तक वहां बैठे। रात में उनकी तबीयत खराब हो गई थी, इससे चिन्ता हुई।

जेलर से बातें। कल रात में १।। बजे सु० डे० मणिभाई को देखने आये थे। यहां पर भी आये। पलंग, गादी आदि लेने का आग्रह किया। मैंने इंकार किया।

विनोबा व सु० डे० की स्वभाव के बारे में बहुत देर तक बातचीत हुई। चक्कर आये। कल से आज मन शांत था।

२८-४-३२

चक्कर जोर के आते रहे। दाहिने पांव के अंगूठे के पास दर्द। विनोबा से बातचीत।

घोंडू, महादू नाई को (नासिक के पास खून के आरोप के कारण) आज जेल में फांसी दी गई, ७-७।। के लगभग।

चर्खा काता। दास्तानेजी से बातचीत। उनकी जीवनी सुनी।

पूज्य बापू का दूसरा पत्र आया। उसपर विनोबा से खूब चर्चा। दूध लेने के संबंध में विनोबा का संतोषकारक उत्तर।

विनोवा से स्वप्न-दोष के सम्वन्ध में विचार विनिमय।

२९-४-३२

विनोवाजी से दास्तानेजी की सेवा के संवंध की चर्चा। श्री दास्तानेजी की जीवन-चर्या उन्हींसे सुनी। चर्खा काता।

आज भी चक्कर आते रहे। तुकाराम के अभंग।

विनोवा से खानदेश के काम व कार्यकर्त्ताओं के संवंध में विचार-विनिमय।

मणिभाई व गुलजारीलाल से वातें।

३०-४-३२

आज भी थोड़े चक्कर आये थे। गोपालराव काले व दास्तानेजी से वातें। चर्खा काता।

१-५-३२

वजन १९० रत्तल हुआ।

गायकवाड़, रणखम्भे, दानी वगैरा से परिचय, वातें, विचार-विनिमय।

विनोवा का वहिनों में प्रवचन। परिचय आदि संतोषकारक हुआ।

गायकवाड़ का भाषण व विचार अस्पृश्यों की स्थिति के वारे में वाराकोठा में सुने।

विनोवा का गीता के ११वें अध्याय का सुन्दर प्रवचन हुआ। दास्तानेजी आदि के साथ शाम की प्रार्थना।

२-५-३२

प्रार्थना के वाद पानी खीचा।

चर्खा काता। आज जेलर का मिजाज गरम था।

आज सुवह निश्चित किये मुताविक शाम को चि० कृष्णदास, गिरधारी वजाज व भाऊ से जेलर ने मुलाकात नहीं दी।

विनोवा के जरिये वर्धा की, घर की व आश्रम की खवर मिली।

वत्सला के वाल कटाने की चर्चा। विचार-विनिमय। उसकी इच्छा पर छोड़ने का निश्चय।

३-५-३२

प्रार्थना। मनाचे श्लोक। मणिभाई आदि मित्रों से वातचीत।

डायाभाई पटेल की पत्नी यशोदा के देहान्त की खबर मणिभाई ने दी।

पूज्य मालवीयजी आदि छूट गये। गांधीजी के छूटने की मित्रों को आशा होने लगी।

सरोजिनी देवी के छूटने की खबर सुनी। विश्वास नहीं हुआ।

आज विनोवा से ठीक चर्चा हुई। चक्की का काम व स्त्रियों का प्राचीन काल में दर्जे के विषय में।

चर्खा। तुकाराम के भजन।

४-५-३२

थोड़ी देर पानी खींचा, पसीना आया, स्नान किया।

आज फिर चक्कर आये।

कलेक्टर श्री भिड़े आये, वहुत देरतक वातचीत करते रहे।

सु० डे० ने वुलाया। ट्रांसफर के संवंध में तथा जेल के अन्य काम के वारे में वहुत देरतक वातचीत हुई। जेलर को भी वुलाया।

श्री पुरुषोत्तमभाई से ठीक वातें हुईं।

विट्ठलदास भाटिया, (महाजनवाड़ी वाले) का एकाएक देहान्त होने का सुना, दुःख हुआ।

५-५-३२

चक्कर आये। "गांधी विचार दोहन" देखना शुरू किया।

मणिभाई आये, उनसे वातें।

चर्खा काता। तुकाराम के अभंग लिखे।

६-५-३२

चर्खा काता। 'गांधी विचार दोहन' पढ़ा।

वालासाहव मराठे व सीताराम शास्त्री से वातचीत।

पुरुषोत्तमभाई वैरिस्टर के मित्र पितांवरभाई के व्यापारी-परिचय का नोट सु० डे० की आज्ञा से दिया।

तुकाराम के अभंग व 'गांधी विचार दोहन'।

प्रहलाद व रामचन्द्र वालकों से वातें।

७-५-३२

प्रार्थना। मनाचे श्लोक। उर्दू कविता विनोवा के साथ। चर्खा।

सु० डे० ने व्लड प्रेशर लिया। नारमल वताया। जुलाव लिया।

'गांधी विचार दोहन' आज पूरी हुई।

घाट पर स्नान किया। तुकाराम के अभंग। रात में तुलसी रामायण पढ़ी।

चि० मदालसा व नर्मदा के पत्र पढ़ने को मिले।

८-५-३२

वजन १८५ रत्तल हुआ, सात रत्तल कम हुआ।

चि० मदालसा, नर्मदा, उमा, श्रीराम के पत्र पढ़े। मदालसा का पत्र पढ़-कर विशेष संतोष व सुख मिला।

विनोवा का गीता-प्रवचन का १२वां अध्याय-सगुण भक्ति व निर्गुण भक्ति का सुन्दर विवेचन। भरत व लक्ष्मण तथा उद्धव व अर्जुन के सुन्दर दृष्टांत दिये।

तुकाराम के अभंग पढ़े, रात में रामायण।

वापू के प्रति मीरावहन की सगुण भक्ति व विनोवा की निर्गुण भक्ति है। मैंने विनोवा से कहा, उन्होंने यह स्वीकार किया।

९-५-३२

कविता कौमुदी, उर्दू, विनोवा के साथ। मनाचे श्लोक।

चर्खा काता।

सु० डे० का इंसपेक्शन हुआ। वाद में आफिस में वुलाया और आमली गुड़ चार औंस, एक नींबू और पपीता लेने को कहा।

विनोवा से सगुण भक्ति व निर्गुण भक्ति पर विचार-विनिमय हुआ।

तुकाराम के अभंग पढ़े व लिखे

आज अन्नासाहव दास्ताने को कोढ़ की वीमारी के कारण अस्पताल ले गये। थोड़ा वुरा लगा।

१०-५-३२

पानी खींचा। स्नान, कपड़े धोये।

आज से गुड़ और इमली, पपीता व नींबू व सुवह साग आने लगा, आज शाम को भोजन नहीं किया।

मणिभाई की व राजाराव की वोलचाल हुई।

तुकाराम के अभंग लिखना पूरे हुये। चर्खा। लड़कों को भजन का भावार्थ समझाया। आनन्द आया।

अस्पताल में दास्तानेजी की व्यवस्था ठीक हो गई।

११-५-३२

पानी खींचा। तुकाराम के कठिन शब्दों का कोप देखा।

रामदास लड़के से वात करके सुख मिला। चर्खा। प्रह्लाद व रामचन्द्र से भजनों का अर्थ।

राजाराव के वारे में जेलर मिलने आया। राजाराव को वहुत देरतक समझाया।

रामकृष्ण डालमिया का रमा के विवाह का तार आया।

अन्नासा० दास्ताने की ठीक व्यवस्था हो गई।

१२-५-३२

पानी के ३० डोल खींचे।

तुकाराम, गोपालराव व विनोवा के साथ पढ़े।

मणिलालभाई, राजाराव व राजा जोशी से वातें। समझाना। वोल-चाल शुरू हो गई।

जेलर मिलने आये, मणिभाई के लोभी मन के वारे में कहा।

अंत्याक्षरी खेली, नौ वजे वाद सो गये। नींद ठीक आई।

मन शांत रहा। टालस्टाय की वार्ता पढ़ना शुरू किया।

१३-५-३२

पानी खींचा-१६ डोल।

टालस्टाय की अंग्रेजी कहानियां पढ़ना शुरू कीं। तुकाराम के अभंग विनोवा से समझे। चर्खा काता।

रात में अंत्याक्षरी ८ बजे तक।
आज रात में भी गर्मी ज्यादा थी।

१४-५-३२

पानी खींचा-३३ डोल। पसीना ठीक आया। आज मझे दूसरी सजा के दो महीने पूरे हुए। सी-वर्ग का अनुभव। विनोवा व गोपालराव की सजा के आज चार महीने पूरे हुए। आज से दण्ड के वदले की सजा इन दोनों की चालू हुई।
टालस्टाय की तीसरी कहानी पूरी हुई। गोपालराव से विनोवा के जीवन-काल की चर्चा। उन्हें जितना मालूम है, वह नोट करके देने का उन्होंने स्वीकार किया।
श्री रामकृष्ण डालमिया को चि० रमा के विवाह के वारे में कानपुर तार भेजा।
गर्मी ज्यादा थी (रात को भी)। मस्तक का व्यायाम। तुलसी रामायण पढ़ी।
सु० डें० ने वुलाया था।

१५-५-३२

पानी खींचा-५१ डोल।
टालस्टाय की चौथी कहानी What men live by पढ़ी, सुख मिला। "If a man says, I love God and hateth his brother, he is a liar." "One may live without father or mother, but one cannot live without God."
तुलसी रामायण व तुकाराम के संवंघ में विचार-विनिमय।
गीता के १३वें अध्याय पर विनोवा का सुन्दर प्रवचन हुआ।
कड़ी वैरक के मित्रों से व वाराकोठा के अस्पृश्यों से वातचीत।
थोड़ी देर चर्खा। मस्तक व्यायाम।

१६-५-३२

विनोवा से रामायण के संवंघ में चर्चा।

पानी खींचा-३१ डोल। आज थकावट मालूम हुई।
आज एकादशी व्रत होने से कांजी नहीं ली। फलाहार–मणिभाई के प्रताप व आग्रह से जेल के ४ केले, १ पपीता व आलू लिया।
सु० डे० ने इंसपेक्शन किया।
टालस्टाय की A shark neglected burns the house कहानी पढ़ी।
तुलसी रामायण रस से पढ़ी। विनोवा से रामायण के संवंध में चर्चा।
चर्खा। रामचन्द्र व प्रल्हाद को थोड़ी प्रसादी। सुन्दर चर्चा, लड़कों की उदारता देख सुख मिला।

१७-५-३२

पानी खींचा-५५ डोल। पसीना खूव आया।
टालस्टाय की Two old men कहानी पढ़ी।
तुलसी रामायण में वालकांड पूरा किया। चर्खा। गर्मी ज्यादा थी।
श्री मणिभाई व देवकीनन्दन के वीच में गैरसमझ हुई, दुःख हुआ।
विनोवा से वातें।
जेलर दो वार आये थे।
वंवई में भयंकर हिंदू मुस्लिम दंगा हुआ–मुहर्रम के कारण ऐसा सुना।
रात को भी गर्मी वहुत थी।

१८-५-३२

पानी खींचा-६१ डोल। रात में गर्मी वहुत थी, नींद कम आई।
आज रमा का विवाह कानपुर में होगा। कल कानपुर पत्र भेजा है।
टालस्टाय की Where Love is God is कहानी पढ़ी।
तुलसी रामायण में अयोध्या कांड। खूव प्रेम आया। मन गद्‌गद् हुआ। आंखों में आंसू आये।
आज गर्मी ज्यादा थी, दोपहर को तीन वजे थोड़ी वरसात आई। विनोवा के साथ वरसात में स्नान किया। टंडक हुई।
जेलर आये। प्यारेलाल की मुलाकात के संवंध में दुःख प्रगट किया।
लड़कों को टालस्टाय की कहानी सुनाई।

१९-५-३२

पानी खींचा—७१ (५०+२१) डोल।

टालस्टाय की Ivan the Fool कहानी पढ़ी। तुलसी रामायण में अयोध्याकांड करीव ६० पन्ने पढ़े। प्रेम मिला।

कुसुमवहन प्यारेलाल से मिलने आई।

चर्खा काता। रामचन्द्र व दूसरे वालकों से वातें।

गर्मी अधिक थी, विनोवा से वातें।

रात में नींद देर से आई। टालस्टाय की कहानी, व तुलसी रामायण का विचार चलता रहा।

कांग्रेस-संगठन, पूज्य वापू को मंत्री, फादर एल्विन व एंड्र्यूज सरीखे सहायक-मंत्री आदि के विचार।

रात में १। वजे व २॥ वजे भी थोड़ी वरसात हुई।

२०-५-३२

पानी खींचा—७५ (५०+२५) डोल।

टालस्टाय की "Evil allures but good endures," "Little girls wiser than men" और "Ellias and Sham-Shamagi." तीन छोटी-छोटी कहानियां पढ़ीं। इनमें इलियास की कहानी वहुत पसंद आई।

तुलसी-रामायण के अयोध्याकांड में भरत-संवाद की खूब-ही करुणा-जनक कथा है।

चर्खा। रामचन्द्र, प्रल्हाद से वातें। मस्तक व्यायाम किया।

तुलसी-रामायण पढ़ी। भरत चित्रकूट पहुंचे।

२१-५-३२

आज सुवह प्रार्थना के समय विनोवा को उठाना पड़ा। पानी खींचा—७५ डोल।

टालस्टाय की The Three Hermits कहानी पढ़ी।

आज तुलसी-रामायण का अयोध्याकांड पूरा हुआ।

चर्खा काता। अन्नासा० दास्ताने से वातें। उनका स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ। रामचन्द्र, प्रह्लाद से वातें। इनायतअली (मालेगांववाला) आज छूट कर गया। आज भी गर्मी ज्यादा थी।

विपिनचन्द्र पाल की मृत्य हुई, यह सुना।

वंबई में हिंदू-मुस्लिम झगड़े में १२०० आदमी गिरफ्तार हुये, ऐसा सुना।

२२-५-३२

पानी खींचा—७५ डोल।

वजन इसवार भी ४ रत्तल कम हुआ। १८१ रत्तल रहा। तवीयत ठीक है। चक्कर इस सप्ताह में नहीं आये।

हुकमीचन्दजी (भुसावल वाले) व पोतनीस मिलने आये।

विनोवा का प्रवचन १४ वें अध्याय पर वहुत-ही उत्तम था।

नासिक के अस्पृश्यों में काम करने वाले मित्रों से मिला।

आज गर्मी वहुत ज्यादा थी।

२३-५-३२

आज पानी नहीं खींचा। कारण, डोल कुंवे में पड़ गया था। आज सुवह ही स्नान करके कपड़े धोये।

आज तवीयत ढीली रही।

टालस्टाय की How much Land does a man need कहानी पढ़ी। तुलसी-रामायण अरण्यकांड, पढ़ा। चर्खा काता।

२४-५-३२

पानी ६० डोल खींचा।

टालस्टाय की A grain as big as a hen's egg, The God's Sons और The Repentent Sinner. कहानियां पढ़ी।

तुलसी-रामायण अरण्यकांड, वालिवध।

चर्खा। रामचन्द्र लड़का व प्रह्लाद तथा सोमा से वातें। जेलर ने आफिस में वुलाया।

विनोवा से वातें। पुरुषोत्तमभाई आदि से वातें। रात में थोड़ी ठंडी पड़ी।

आज से विनोबा ने रोजनिशी (डायरी) लिखना शुरू किया।

२५-५-३२

पानी ६० डोल खींचा।

टालस्टाय की The Empty Drum और The Coffee House of Surat कहानियां पढ़ीं।

तुलसी-रामायण का अरण्यकांड पूरा होकर सुन्दरकांड शुरू किया। आज से, बाजरा महंगा होने के कारण, बाजरे की जगह सप्ताह में दो दिन गेहूं की रोटी आने लगी।

आज खानगी में जेलर से उनके संबंध में मेरे जो विचार थे, साफ कह दिये।

२६-५-३२

पानी ६० डोल खींचा। दवा ली।

मुंडन करवाया—वसन्त नाई (देवलाली वाले) से, उमर १५ वर्ष की। स्नान, कपड़े धोये।

टालस्टाय की Too dears, Stories given to aid the persecuted Jews कहानियां। मणिभाई व दूसरे मित्र आये।

तुलसी-रामायण का लंकाकांड शुरू किया। आज सुस्ती ज्यादा मालूम हुई।

चर्खा। बालकों से बातचीत।

"वैदिक-विनय" पढ़ना शुरू किया।

आज प्रथम बार कंबल व चद्दर बिछाकर सोया।

२७-५-३२

पानी ६० डोल खींचा। आ० स० दवा ली।

टालस्टाय की Work, Death and Sickness और Three Questions कहानियां पढ़ीं।

तुलसी-रामायण लंकाकांड में रावण-वध प्रसंग आया।

चर्खा। प्यारेलाल से सुशीला के पत्र के संबंध में उसे तार व पत्र देने को कहा। पपीता बहुत बड़ा आया (पेट भर गया)।

आज जेलर ने, लड़कों के रहन-सहन में क्यों परिवर्तन करता हूं, उसका कारण कहा। पर बराबर समझ में नहीं आया। आज पुरुषोत्तमभाई व राजाराव अस्पताल सोने गये। मुझे इसी कोठरी में रहने का हुक्म मिला।

रात में थोड़ी ठंडी रही।

२८-५-३२

प्रार्थना, मनाचे श्लोक। पानी ६० डोल खींचा। निंबू शरवत। बालकों के साथ लिया। दवा ली।

टालस्टाय की कहानी पूरी हुई। आज से Dr. Jekyll and Mr. Hyde, fables by Robert Luis Stevenson पढ़ना शुरू किया। तुलसी-रामायण में लंकाकांड पूरा हुआ। उत्तरकांड शुरू हुआ। राम का अभिषेक हुआ।

चर्खा। दवा ली।

आज शाम से लड़कों के साथ खेले-कूदे। विनोबा ने और मैंने प्रार्थना शुरू की। तुलसी-रामायण।

२९-५-३२

प्रार्थना। लड़कों के साथ। मनाचे श्लोक। पानी ६० डोल खींचा। निंबू शरवत बालकों के साथ।

आज अस्पताल में वजन करने गया। १८० रत्तल वजन हुआ। इस सप्ताह में कांजी व शाम का भोजन न लेकर भी केवल एक रत्तल ही घटा। इससे संतोष हुआ। कुल मिलाकर २५ रत्तल कम हुआ।

Dr. Jekyll and Mr. Hyde (Story of the door) पढ़ा।

अस्पताल में मणिभाई की बातचीत व व्यवहार से दुःख हुआ। खूब विचार किया। विनोबा से ठीकतौर से विचार किया। ईश्वर की प्रार्थना की। कड़ी बैरक में मारवाड़ के भाइयों से सामाजिक सुधार की खासकर चर्चा की। विनोबा का गीता के १५वें अध्याय पर प्रवचन ठीक था। परंतु आज मन पूरा नहीं लगा।

३०-५-३२

पानी ६० डोल खींचा।

डा० जेकिल और मि० हाइड में Search for Mr. Hyde पढ़ा।

तुलसी-रामायण उत्तरकांड पूरा हुआ। अब दोहा-चौपाई का संग्रह शुरू किया।

चर्खा। आज एकदशी का उपवास होने से आलू, पपीता, साग लिया।

जेलर ने आफिस में बुलाया। मुलाकात का पत्र बताने व जेल संबंधी थोड़ी चर्चा करने। बबलभाई कोठारी आये। उनसे मणिभाई के स्वास्थ्य के बारे में व मन किस प्रकार ठीक रह सके, उसका विचार करके प्रयत्न करने का कहा।

अन्नासा० दास्ताने को कहा कि आप जहांतक हो सके अधिकारियों से संबंध कम आये, ऐसा करें।

विनोबा से, राम-भक्ति किस प्रकार हो सकती है, इसपर विचार।

रात में ठंडी लगी।

३१-५-३२

महुं सनेह-संकोच-वस, सनमुख कहे न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन॥

पानी ६० डोल खींचा।

डा० मोदी के पत्रों की नकल के पत्र छांटे।

तुलसी-रामायण की चौपाई थोड़ी देर देखी। दिनचर्या व जेल-जीवन लिखा।

रामदास चौधरी (भालोद वाला) को थोड़ा उपदेशप्रद लिख दिया।

विनोबा का गीता प्रथम व दूसरा अध्याय का थोड़ा भाग रामदास की कापी में से पढ़ा। चर्खा।

विनोबा से स्वभाव के संबंध में, खासकर आलस्य कम हो, और राम की भक्ति किस प्रकार हो, उसपर विचार।

नागपुर में ता० २९ को बहुत-से लोग पकड़े गये हैं।

१-६-३२

हृदय हेरि हारेउं सब ओरा। एकहिं भांति भलेहिं भल मोरा।।
गुरु गोसाईं साहिब सिय रामू। लागत मोहिं नीक परनामू।।

पानी ६० डोल खींचा।

आज मुलाकात हुई—श्री केशवदेवजी, गंगाविशन, शिवनारायणजी, चि० निर्मदा, मदालसा व उमा मिलने आये। सब राजी-खुशी है, कहा। मेरे वजन घटने व तबीयत के बारे में समझाया। आज मुलाकात के मामले में ही अधिक समय गया।

आज जेल में बने हुए शुद्ध खादी के कपड़े पहनने को मिले।

गोपालराव ने जो विनोवा का 'जीवन-चरित्र' मेरे बहुत आग्रह से लिखना शुरू किया था, वह देखा।

कल दोपहर को चने व गेहूं की रोटी-दाल खायी थी, जिससे आज दस्त नहीं हुआ। शाम को पपीता खाया।

लड़कियां व केशवदेवजी जेल देखने आये। वजन १७० से नीचे नहीं जायगा उसका ख्याल रखूंगा, ऐसा मैंने कहा।

२-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

The Concise Oxford Dictionary कल आई, वह थोड़ी देखी। आज आलस्य मालूम देने लगा।

भोजन के बाद थोड़ा आराम। 'मनाचे श्लोक' उतारना शुरू किया।

दीपचंदजी (भुसावल वालों) से बातचीत। सज्जन नवयुवक मालूम हुये। मुले मिलने आया।

मणिलालभाई, मणी, हरकरे के दर्शन हुये।

३-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। कमजोरी व चक्कर मालूम हुआ।

आज से सुबह चर्खा कातना शुरू किया। तार का प्रमाण भी बढ़ाने का

विचार है। गोपालराव ने Dr. Jekyll and Mr. Hyde में से पढ़ कर सुनाया।

वर्धा-आश्रम, वगीचा, पीला वंगला, गायें, वैल, सामान आदि पुलिस ने जब्त कर लिये, यह सुना। ठीक हुआ।

'मनाचे श्लोक' लिखे। हुक्मीचन्दजी आदि से वातें। विनोवा से उनकी जीवनी के संवंध में वातें।

४-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। आज भी चक्कर आये।

Dr. Jekyll and Mr. Hyde गोपालराव ने पढ़कर सुनाया। चर्खा काता। मनाचे श्लोक लिखा।

आज वरसात का रंग हुआ। कुछ छींटे भी पड़े। आज से लड़कों को व वाराकोठा के लोगों को अंदर वंद करना शुरू किया। मवूमदाने लड़का रात में मस्ती करता था। सर दोरावजी टाटा जर्मनी में गुजर गये। रामलाल खेमका की स्त्री का खून दिल्ली में हुआ (धन के लोभ के कारण)।

५-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। अस्पताल के मित्रों से वातचीत, संतोष मिला। वजन १७७ रहा। मनाचे श्लोक लिखे।

कड़ी वैरक में सामाजिक चर्चा। वाद में विनोवा का गीता के १६ वें अध्याय का प्रवचन वहुत ही व्यावहारिक व सुन्दर हुआ।

गायकवाड़, रणखंभे आदि से मिला।

६-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। स्नान। चर्खा वालकों के साथ।

इंसपेक्शन हुआ। सुपरिंटेंडेंट ने आमली व गुड़ वंद करने को और सी-वर्ग की पूरी खूराक खाने को कहा।

सुपरिंटेंडेंट से सव लोगों के वाहर सोने के वारे में कहा, उन्होंने एक प्रकार से मंजूर किया। मनाचे श्लोक लिखे। वाद में रामचरण सोनी के लड़के (येवले वाले) से वातें। लड़का ठीक मालूम हुआ।

आज एक एंग्लो इंडियन वी-वर्ग में आया, उसकी थोड़ी गड़वड़ रही। मेरी खोली में उसे सुलाया। वी व सी-वर्ग की कुछ गड़वड़ थी।

७-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। आज जोर ज्यादा आया।

जेलर ने वुलाया और कल की घटना का खुलासा किया। संतोष तो नहीं हुआ।

चर्खा। Dr. Jekyll and Mr. Hyde गोपालराव से सुना। मनाचे श्लोक लिखे।

सुमान विद्यार्थी से सत्य व अहिंसा के वारे में वातचीत।

जेलर व मराठे और गोखले के वीच में गैरसमझ वढ़ती हुई दिखाई दी। रात में करीव नौ वजे जेलर आया और मराठे व गोखले के साथ कड़ा व अनुचित व्यवहार किया।

८-६-३२

आज पानी नहीं खींच सका क्योंकि रात में वा० मराठे व गोखले को लेकर जेलर से जो गैरसमझ हुई उस कारण जेलर व मित्रों से करीव ३॥ घंटे वातचीत होती रही। परिणाम ठीक आया ऐसा मालूम हुआ। सुपरिंटेंडेंट ने अंदर वुलाया। सभी के अंदर सोने के वारे में वात की। विचार करके उसे कहा। मि० नौरोजी वी० सकलातवाला को सर दोरावजी के वारे में समवेदना का पत्र भेजा।

चर्खा। मनाचे श्लोक थोड़ी देर।

जेलर व मराठे व गोखले का आपस में प्रेम संवंध ठीक हो गया। दिन का वहुत-सा हिस्सा आज इसी काम में गया।

९-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। केले व दवा ली।

Dr. Jekyll and Mr. Hyde सुना। चर्खा काता। मनाचे श्लोक लिखे।

जगजीवनभाई मास्तर (पाचोरे वाले) ने वहां के स्कूल की हालत कही।

जेल में मुलाकात : बाएं से फादर वेरियर एलविन, श्री जमनालाल बजाज, श्री प्यारेलाल और श्री धननारायण दाणी

बंबई दंगे में अभीतक १७४ मारे गये व १९५१ जख्मी हुए।
जेलर आये। विनोबा का वजन कम हो रहा है, उसकी चर्चा व विचार। विनोबा से बातें।

१०-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। स्नान। केले व दवा ली।
चर्खा। मनाचे श्लोक पूरे हुए। तुलसी-रामायण की चौपाई छांटी। ४ बजे जेलर ने बुलवाया। दानापुर से आम का पार्सल आया था। उस संबंध में मैंने उन्हें कह दिया स्त्रियों, बालकों व बीमारों में बांट दें।
आज विनोबा से करीब एक घंटा बातचीत—भक्ति व श्रद्धा बढ़ने के बारे में।

११-६-३२

आज से ४। बजे प्रार्थना। मनाचे श्लोक। पानी ६० डोल खींचा। चर्खा। तुलसी-रामायण की चौपाई लिखीं।
फादर एलविन विनोबा से मिलने आये। उन्होंने चप्पल पहनना शुरू कर दिया व तबीयत का ख्याल रखने का भी विनोबा से कहा।
विनोबा से विचार-विनिमय।

१२-६-३२

४। बजे प्रार्थना। निवृत्त होकर मनाचे श्लोक। पानी ६० डोल खींचा। स्नान किया। अस्पताल गया। कान की दवा; आज पीप बहुत निकला। वजन (१७७) कायम रहा। एक सप्ताह में घटा नहीं।
मित्रों से मिलना हुआ।
विनोबा की 'गीताई' छपकर आई। आफिस में जाकर लाना पड़ा। बांटी।
लेवा पाटीदारों से उनके सामाजिक सुधार, जैसे बाल-विवाह, फजूल खर्च, कर्जदार, सामाजिक बहिष्कार वगैरह पर, ठीक चर्चा व विचार।
विनोबा का गीता के १७-वें अध्याय पर भावपूर्ण प्रवचन हुआ। गायकवाड़ व रणखंभे से मिले।

१३-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

जेलर ने बुलाया। मराठे के बारे में सुपरिंटेंडेंट ने भी बात की। मराठे ने जल्दी की और दोनों बातें मिला दीं। जेलर ने खूबी से जिन की भूल थी, उन्हें बचा लिया। यहां के वातावरण से असंतोष मालूम देता है।

आनंदी, गोले, वैद्य, दीघे से बातें। चर्खा। आराम। पटना से आम आये थे, वह जेलर ने बांट दिये।

शाम को अस्पताल गया। बारुताई को देखा। बालकों में थोड़ी देर खेला। विनोबा से बातचीत।

१४-६-३२

पानी के ६० डोल खींचे। शर्बत, स्नान।

जेलर ने बुलाया। कल की घटना के बारे में खुलासा करने लगा। सुपरिंटेंडेंट आये। वह भी बोलने लगे। बाद में भी बहुत चर्चा हुई। खूब मन में असंतोष हुआ।

अन्नासा० ने बुलवाया, बारुताई की तबीयत के बारे में, कन्या पाठशाला की चर्चा।

एकदशी के फलाहार में केले व साग खाया। चर्खा काता। नासिक के गायकवाड़, रणखंभे, दानी वगैरह मिलने आये। उनसे बातें। वे कल छूटनेवाले हैं। बालकों को ठीकतौर से समझाया व उनकी व्यवस्था की। परिणाम ठीक आया। विनोबा से बातें।

१५-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। २ केले खाये।

मणिलालभाई से बातें, उन्हें मेरे विचार व राय पसंद आई।

गोले, आनंदी वगैरह से बातें, आफिस के काम के बारे में मेरे विचार मैंने उन्हें समझाकर कहे। चर्खा। प्यारेलाल से बातें।

शाम को लड़कों को समझाने का प्रयत्न किया। विनोबा से चर्चा व विचार-विनिमय।

१६-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

लक्ष्मण शास्त्री ने खुलासा किया। गोले वात करने आये, उनसे वहुत देर तक विचार-विनिमय।

भोजन के वाद सुपरिंटेंडेंट व जेलर के साथ खानगी तौर से नीचे लिखे विषय पर चर्चा—

(१) इतवार को गुड़ की जगह तुवर की दाल, जो चाहें उन्हें मिले। मटन (मांस) का भाव ६। रत्तल व गुड़ का भाव १२॥ रत्तल होने के कारण गुड़ व दाल मिले, (२) पायखाने, (३) डाक्टर की वदली, (४) सजा की नीति के वारे में, (५) कमेटी के वारे में, ठीक खुलासेवार चर्चा हुई। दास्ताने के वारे में भी।

आज थोड़ी वरसात हुई, रात को वाहर सोया। जेलर मिलने आया, वहुत वातें कीं। मराठे के कल यरवदा जाने का उन्हें कहा। रात में थोड़ी देर मराठे व गोखले से वातें। जहांतक हो सका उनकी सान्त्वना की।

१७-६-३२

कमल को ए-वर्ग मिला और वह आज हरदोई जेल से वरेली डिस्ट्रिक्ट जेल गया। वजन १२० रत्तल लिखा है।

पानी ६० डोल खींचा। चर्खा।

खण्डूभाई, कृष्णलाल, जेलर व मणिभाई वगैरह आये। कल की सु० डें० जेल से हुई वातचीत की चर्चा। मणिभाई ने सु० डें० से पूछकर खातरी कर ली, उससे मन में थोड़ा दुःख हुआ। जेलर कई वार आया।

आज मराठे व आप्टे यरवदा गये। यहां पुरुषोत्तमदासभाई, राजाराव वैद्य रहने आये। थोड़ी वरसात हुई। शाम को जेलर के सामने खेले। व्यायाम के वाद पुरुषोत्तमभाई से वातें। तीन वजे तक वाहर सोये।

१८-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

आज विनोवा को चक्कर आया।

चर्खा। मणिभाई समझौते की तैयारी की खबर लाये। जयकर, सप्रू सिमला पहुंच गये। भोजन के बाद आराम। बाद में गीताई के दो अध्याय विनोबा के साथ पढ़े।

जेलर बहुत देर तक बैठा।

पुरुषोत्तमभाई की कुछ गैरसमझ। प्यारेलाल व खण्डूभाई मिलने आये। शाम को खेल-कूद। विनोबा के पास।

आज १० बजे बरसात आई, अन्दर सोये।

पुलिस के आने-जाने से नींद कम आई।

१९-६-३२

गीताई व गीताबोध का पाठ किया। १८-वां अध्याय विचारपूर्वक पढ़ा। पानी ६० डोल खींचा।

वजन १७५ रहा, कुल ३० रत्तल कम हुआ। अस्पताल में मणिभाई, दास्तानेजी दीपचन्दजी, मेयर आदि का स्वास्थ्य देखा। डाक्टर ने अलग लेजाकर अपने स्वभाव में फरक करने का विश्वास दिलाया।

ता० २५ से पहिले छूटने का मित्रों का भविष्य।

गीता के १८-वें अध्याय पर विनोबा का सुन्दर उत्साहपूर्वक विवेचन हुआ। गीता-प्रवचन समाप्त हुआ।

खेल-कूद। अन्दर सोये। गर्मी। रात में मृत्यु का स्वप्न देखा।

२०-६-३२

आज इंसपेक्शन नहीं हुआ, देर से खाना मिला। आराम किया।

प्यारेलाल से बातें। विचार-विनिमय।

जेलर ने आफिस में बुलाया। 'गीताई' जिल्दबन्द मिली। राजनैतिक वातावरण की तरह-तरह की गप-शप व बातें सुनने में आती हैं।

विनोबा से बातचीत।

रात में बाहर सोये। गर्मी बहुत थी। नींद कम आई।

२१-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

सुपरिंटेंडेंट इन्सपेक्शन को आये। कान के वारे में लिखा-पढ़ी। भोजन, विश्राम। प्यारेलाल व गुलजारीलाल से वातें। माधवजी के वारे में मणिभाई से मिला। उन्होंने साफ कहा कि सु० डें० ने वचन दिया था, चर्चा-विचार। आज अस्पताल में कान की दवा की।

खेल-कूद। घूमना। रात में गर्मी। वाहर सोया।

२२-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। आज सफेदी हुई।

श्रीकृष्ण, विश्वनाथ जोशी, टिकेकर (पूना) व गोले छूटे।

चर्खा। प्यारेलाल से उनके कुटुम्व का साधारण परिचय कर लिया। जेलर से माधवजी के वारे में समझकर कहा। खानगी रुई, व कपड़े का तकिया वनाने के वारे में कहा।

खेलना। विनोवा से वातचीत।

रात में ११ वजे थोड़ा पानी आया। अन्दर सोया।

२३-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

स्नान। कुंडे वालों को सावुन। चर्खा, दो घंटे। Sandford and Merton पढ़ा। टाइम्स की खवर पर चर्चा व विचार। चर्खा ठीक काता, ५०० तार के ऊपर। गुलजारीलाल नंदा व सुमंत ने जन्म-कुण्डली को शुद्ध करने के लिए शरीर के कई निशान देखे। नंदा ने हाथ की रेखा के वारे में लिखना शुरू किया। जेलर आये। वाद में खेल-कूद, रात में ४ वजे तक वाहर सोया।

सिमला की सरकारी रिपोर्ट के मुताविक जनवरी में १४,८००, फरवरी में १७,८००, मार्च में ६,९००, अप्रैल में ५३०२, मई में ३,८००, इस प्रकार कुल ४८,६०२ मई आखीर तक जेल में।

२४-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

सु० डें० से, कान में से पीप निकलता है उस सवंध में, वातें। डा० मोदी को पत्र उन्होंने भेजा।

इतवार को जो गुड़ नहीं लेना चाहें, उन्हें तुवर की दाल मिलनी चाहिए, यह कहा। चर्चा, निर्णय।

चर्खा। प्यारेलाल से वातचीत व विनोवा के संबंध में मेरा अनुभव कहा।

घोत्रे, वारुताई गोपालराव से मिलने आये।

कान की दवा। खेल-कूद। रात में वाहर सोये।

२५-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

कल व आज सुवह पेट साफ नहीं हुआ था, वह १० वजे हो गया। स्नान। ऐसा याद पड़ता है कि आज प्रथम वार मसूर की दाल खाई। ठीक मालूम हुई।

सु० डें० व जेलर के सामने वर्धा से आये हुए दो पानों पर सही करके भेजी।

सहाने मास्टर, गोखले, विनोवा से वातचीत (दोपहर को)।

विश्राम। चर्खा। प्यारेलाल से वातें। भोजन, कान की दवा।

शाम को थोड़ा खेला।

आज से अंदर जल्दी वन्द करना शुरू हुआ।

पुरुषोत्तमदासभाई ने कुछ पढ़कर सुनाया।

२६-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

घुलिया-जेल में आये आज वरावर तीन महीने हुए।

अस्पताल में वजन लिया। १७४ रतल हुआ, यानी इस अर्से में इकतीस रत्तल वजन कम हुआ। मित्रों से वातचीत। चर्खा, कड़ी वैरक में वीमारों से मिले। विनोवा के साथ विचार-विनिमय। प्रश्न-उत्तर ठीक हुए। गंगाधरराव पकड़े गये व राजेन्द्रवावू छूट गये, यह सुना।

जेलर वुलाकर आफिस में ले गया।

आज ५ वजे वन्द किया। वरसात ठीक शुरू हुई, विनोवा से कार्यकर्त्ताओं के सम्वन्ध में ठीक चर्चा व विचार।

२७-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

रात में गुलजारीलाल, मणिभाई व नायक की तवीयत खराव रहने के समाचार मिले। छोटे डाक्टर की शिकायत वहुत सुनी। सु० डें० से वात करने का विचार।

सु० डें० का इंसपेक्शन। छाती का नाप लिया, ३६॥ हुई। अव वजन कम न हो, उसके लिए चर्चा हुई। गेहूं, तेल, गुड़ लेने की वात की।

सु० डें० ने सीताराम भाऊ के वारे में वुलाया। उनसे साथ-साफ वात हुई। उनके व्यवहार के वारे में मित्रों से, खासकर विनोवा, पुरुषोत्तमभाई, प्यारेलाल आदि से वातचीत। शाम को जेलर आये। वातें की।

२८-६-३२

पानी ६० डोल खींचा। वाल वनाये। (सफाई) व स्नान किया। मणिभाई वातें कर रहे थे कि इतने में जेल-कमेटी, मि० भिड़े कलेक्टर आदि आये। तवीयत के वारे में पूछा। वाद में मीट ६। व गुड़ १२॥ की चर्चा। इतवार को गड़ व तुवर दाल की चर्चा। सु० डें० को अपशव्द (abuse), हाथ उठाना, मारना आदि का हक है या नहीं? मि० भिड़े व कमेटी के साथ ठीक चर्चा हुई, करीव एक घंटे के ऊपर।

प्यारेलाल, पुरुषोत्तमभाई, विनोवा, गोपालराव, खंडूभाई, मणिभाई से विचार-विनिमय।

शाम को जेलर आया। एंग्लो इंडियन का ख्याल रखने को कहा।

प्रार्थना के वाद घूमना ९ वजे तक।

आज से कड़ा वन्दोवस्त हुआ।

२९-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

जेलर आया। सु० डें० के हुक्म व शिस्त के वारे में कहा। पाखाने के लिए जा सकते हैं परन्तु उधर के लोग इधर नहीं आवें, इत्यादि। प्यारेलाल, माधवजीभाई अस्पताल, खण्डूभाई, हुक्मीचन्दजी, वावू के वारे में उनका

स्वास्थ्य ठीक नहीं वताया। कमलनयन का पत्र पढ़कर मणिभाई पर टीका की। चर्खा। सु० डें० व जेलर आये। उनसे वातचीत की, संतोष-कारक परिणाम नहीं आया, जवकि सु० डें० का हृदय शान्ति व समझौता करने का मालूम हुआ।

प्यारेलाल से वातें, शाम को जेलर आया।

वाद में मणिभाई आये। लड़कों के वारे में मन में दुःख हुआ।

३०-६-३२

पानी ६० डोल खींचा।

मणिभाई आये। वहुत देर तक उनका जो कहना था, वह सुना। वाद में शांति व प्रेम के साथ उनसे कहा कि हम दोनों में दुर्भाग्य से गैरसमझ होती है। इसलिए कुछ समय तक न वोलना ठीक रहेगा।

चर्खा। विनोवा से वातचीत। उन्हें मणिभाई की वातचीत का मतलव कहा।

प्यारेलाल से थोड़ी वातें।

कान की दवा। वाद में थोड़ी देर खेलकर विनोवा से वातचीत।

८ वजे शाम की प्रार्थना। मनाचे श्लोक, तुकाराम के अभंग, गीताई का पाठ।

१-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।

विनोवा को अस्पताल में देर लगी। मणिभाई से उन्हें भी कड़ी भाषा में साफतौर से वातें करनी पड़ीं।

खानदेश के पिप्राला आश्रम के देवकीनन्दन व वर्धा आश्रम के गोपालराव काले के सम्वन्ध में चर्चा हुई।

आज भोजन में चने की दाल ज्यादा लेकर देखना है कि उसका क्या परिणाम होता है।

शाम को थोड़ी वरसात आई।

मणिभाई विनोवा के पास आये थे। वोले नहीं, इसका मेरे मन में दुःख हुआ, परन्तु दूसरा उपाय नहीं मालूम दिया।

२-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।

गोपालराव, माधवजी, जेलर आये मुले को लेकर। उसको 'कुंडा काम' दिया, उसका कारण कहा। मुझे कहा, तुम्हें सब जगह जाने की इजाजत है, परन्तु अभीतक मैं अधिकारी-तौर से आपको इजाजत नहीं देता। उसमें good reasons (उचित कारण) हैं। मैंने कहा, इसकी मुझे जरूरत नहीं। भोजन के समय खानदेश के कार्यकर्त्ताओं के संबंध में चर्चा। आज उत्साह कम मालूम होता था। आज कान की दवा नहीं हुई।

थोड़ा दांत का व्यायाम। जेलर दो-तीन बार आये।

विनोबा से बातचीत। प्रार्थना के बाद पुरुषोत्तमभाई से ११ बजे तक बातचीत हुई।

३-७-३२

पानी ५८ डोल खींचा। रस्सी टूट गयी थी।

वजन करने गये। कांटा खराब था, बाद में ठीक किया। सात दिन में ३ रत्तल कम हुआ, १७१ रहा।

गुलजारीलाल व दास्ताने से बातें करने की इच्छा न होने से भी आखिर बात करनी पड़ी। थोड़ा खुलासा। मणिभाई से केवल प्रणाम।

भोजन के समय कार्यकर्त्ता व सार्वजनिक फंड में से सहायता के बारे में ठीक चर्चा हुई।

आज गर्मी बहुत ज्यादा पड़ी। शाम को ठीक चार बजे बरसात हुई। चर्खा। विनोबा से ठीक विचार-विनिमय। आत्म-शुद्धि, नियम-पालन, परमात्मा-प्राप्ति के संबंध में।

वजन कम होने पर भी विचार।

४-७-३२

पानी ६० डोल खींचा। चर्खा।

सु० डें० इंसपेक्शन को आये। वजन में कमी के कारण एक रत्तल दूध व गेहूं लेने को कहा। दूध लेने की इच्छा कम थी, परंतु उन्होंने कहा कुछ रोज

लेकर देखना। विनोवा की राय भी थी कि मुझे स्वीकार कर लेना चाहिए। कल से एक रत्तल दूध व गेहूं की रोटी मिलेगी।

आज सीताराम भाऊ का फैसला मणिभाई ने बीच में पड़कर ठीक कर दिया। एक प्रकार से मन का भार हलका हुआ। परंतु अधिकारियों के व्यवहार के वारे में थोड़ा असंतोष कायम है।

चर्खा—६७५ तार अंदाज आज काते। ए० एच० शीहन से खुलासा हुआ, संतोष हुआ।

आज भी वहुत गर्मी पड़ी। शाम को थोड़ी वरसात हुई।

५-७-३२

पानी ६० डोल।

अस्पताल में जाकर वरावर कांटा ठीक करके वजन किया तो जेल-वजन १६९॥ रत्तल हुआ, असली वजन १६८, याने १६८ रत्तल वजन पर जेल कांटा डेढ़ रत्तल वजन ज्यादा वताता है।

स्नान, चर्खा, भोजन। पावभर दूध भोजन के समय गेहूं की रोटी के साथ लिया प्रथम वार।

रूप-रंग व गुणों की चर्चा।

विनोवा से गीता के श्लोकों का चुनाव करवाया। अठारह अध्यायों में से अठारह श्लोक चुने।

चर्खा, गर्मी वहुत थी। शाम को भोजन में पावभर दही लिया। कान की दवा।

सुमान को समझाया कि हठ वुरी वात है। सत्य का आग्रह रखना ठीक है। हाथ का व्यायाम। रात में नींद कम।

६-७-३२

पानी ६० डोल खींचा। स्नान, चर्खा।

विनोवा से उपनिषद् का पाठ व कठोपनिषद् का भावार्थ सुना। ठीक मालूम हुआ। विनोवा से गीता के श्लोकों के अर्थ के संवंध में, खासकर अध्याय १८ के ६६वें श्लोक पर अधिक विचार किया।

प्रताप सेठ, केलकर, वनारसी, सु० डें० से वातें।
गर्मी थी, शाम को वरसात हुई। भोजन में दही होने के कारण रोटी ज्यादा खायी गई।
कान का इलाज। थोड़ा खेले। विनोवा से बातें।

७-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।
विनोवा से मुंडकोपनिषद् अर्थ-सहित सुना।
घुलिया-जेल में याददाश्त से राजनैतिक कैदियों के सव मिलकर १२५ के ऊपर नाम पट्टी पर लिखे।
चर्खा। विनोवा से वातें।
आज शाम को वरसात खूव जोर की हुई, चारों ओर पानी भर गया।
सु० डें० ने एक सत्याग्रही को मारा व अपशब्द कहे, यह सुना। मणिभाई पर छोड़ दिया। रात में नींद वरावर नहीं आई।

८-७-३२

पानी ६० डोल खींचा। चर्खा।
माधवजीभाई से थोड़ी वातें। भोजन। विश्राम। चर्खा। पुरुषोत्तमभाई व प्यारेलाल आये। वहुत देर तक पुरुषोत्तमभाई से सु० डें० के साथ जो वातें हुई, वह कहीं।
पुरुषोत्तमभाई अस्पताल जाकर आये और कहा कि कल जिस लड़के को मारा, उस सम्वन्ध में ठीक संतोषकारक फैसला हो गया है।
विनोवा को फैसले का हाल जो सुना वह कहा, बातें, विनोद।
विनोवा ने घुलिया व जलगांव की गिरफ्तारी का हाल कहा।

९-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।
गुलजारीलाल आये, उन्होंने अपना दुख कहा। आज रामकृष्ण व गनपत (एरंडोल वाले) छूटे। गीता-प्रवचन ठीकतौर से लिखकर एक नकल कर रखने को कहलाया।

चर्खा। देशपांडे (नासिकवाले) से वातचीत।
वर्धा से आठ दावे सही करने आये थे, उनपर आफिस में जाकर जेलर के सामने सही की। वहां जेलर का व्यवहार, मणिभाई व दूसरे कैदियों के साथ, देखकर वुरा लगा।
जेलर के व्यवहार की चर्चा, विचार विनोवा व प्यारेलाल से। खेले।

१०-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।
लड़कों को ज्यादा आवाज न करने को समझाया।
चर्खा। इस सप्ताह में पांच घुंडी तार (३२००) हुए। भोजन। विनोवा से वातें। सौ० यशोदावाई भट्ट की "दो वार्ता" पढ़ी। आराम।
पूज्य वापू ने भाऊ को गीता के ध्यान के वारे में पत्र लिखा, उसकी नकल की।
कड़ी वैरक में विनोवा के जाने के वारे में श्री खरे ने, विनोवा के कारण जो लाभ हुए, वह कहे। विनोवा ने जवाव में खानदेश के प्रति उत्तम श्रद्धा प्रगट की। आखिर में श्री खरे ने 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी,' भावपूर्वक गाया। जल्दी भोजन। थोड़ा खेले। विनोवा से वार्ता, नियम-पालन के वारे में व निंदा-स्तुति की चर्चा के विषय में।

११-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।
सुवह समाज-सुधार के संवंध में, खासकर स्त्रियों का दर्जा ऊंचा है या पुरुषों का, विनोवा से वातें।
चर्खा। प्रताप सेठ और चि० वावू आया। श्री काल्हाडकर की दवा चालू हुई, उसकी सगाई अभी नहीं करना है, यह साफ कह दिया।
भोजन करते समय सु० डें० ने वुलवाया। पानी परेड में इंसपेक्शन के समय कुछ गड़वड़ हुई, सुना। भोजन के कारण वहां जाना नहीं हुआ, यह वहुत ठीक हुआ।
मणिभाई के साथ जेलर के वहुत अनुचित व्यवहार की वातें सुनीं। चिंता हुई। द्वारकानाथ व मोघे आये।

१२-७-३२

पानी ६० डोल खींचा। विनोबा से उपनिषद् सुना।

सी-वर्ग को भी वर्तमान पत्र मिलें, इस बारे में लिखकर जेलर को दिया—होम सेक्रेटरी, वम्वई के पास भेजने के लिए।

भोजन के वाद जेलर के साथ अस्पताल गया, मणिभाई, राजाराव, गुलजारीलाल, खण्डूभाई, अन्ना सा०, नायक, वामन, देशपांडे, आदि का स्वास्थ्य देखा। विनोवा से गुलजारीलाल की वातचीत।

थोड़ा हाथ का व्यायाम। फिर विनोबा से प्रेमपूर्वक वातें।

१३-७-३२

प्रार्थना के वाद पानी खींचा। ६० डोल। निवृत्त होकर मनाचे श्लोक, तुकाराम के अभंग, गीताई ६-ठा अध्याय पढ़ा। आर्य-स्त्री-रत्न पढ़ा। वह पूरा किया।

आज वजन किया। मेरा १७१ हुआ, विनोवा का ९४ (९२), गोपालराव ८९ (९१)। अस्पताल में राजाराव जेलर के ऊपर चिढ़े हुए मालूम हुए। पांच-सात मिनट वहां रहकर वापस आया। चर्खा काता।

विनोवा से वातें। गोपालराव को कुछ वातें कहीं।

विनोवा को घुलिया में ही गिरफ्तार करने की जो तीन-चार रोज से चर्चा सुनी जाती है, उसपर विचार। वहुत करके ऐसा नहीं होगा।

१४-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।

आज विनोवा व गोपालराव छूटे, १० वजे तक उनके साथ। विनोवा के जाने से मन भर आया। तुलसीदास की चौपाई 'विछुरत एक प्राण हरि लेहीं' का स्मरण वार-वार आया। विनोबा के सत्संग से ठीक सुख व लाभ मिला।

राजाराव को भी आज छोड़ दिया गया।

आज आषाढ़ी एकादशी के कारण कड़ी वैरक में हरिकीर्तन हुआ।

विनोवा की कोठरी में प्यारेलाल आये।

आज से पलंग व गादी का, कान के दर्द के कारण, व्यवहार करने की परवानगी हुई। शाम की प्रार्थना, प्यारेलाल के साथ।

१५-७-३२

पानी ४७ डोल।

वर्षा की झड़ी, कल से वर्षा ठीक हो रही है, झड़ी लग गई है।

चर्खा। जल्दी भोजन। पूरा भत्ता खाया।

सी-वर्ग को वर्तमान पत्र मिलें इस वारे में होम सेक्रेटरी वम्वई को जो दरख्वास्त लिखी थी, उस पर सु० डें०, गुलजारीलाल, खण्डूभाई, मणिभाई को सुझाव देने थे, वे सुने। गुलजारीलाल व प्यारेलाल ने मिलकर फिर से मसविदा वनाया।

आज वी व सी-वर्ग (भोजन गृह) में कुछ असंतोष होने से भत्ता देर से आया। आखिर में समझौता वी व सी-वालों से सु० डें० ने किया, यह सुना।

१६-७-३२

पानी ६० डोल, चर्खा।

ता० १२ की दरख्वास्त होम सेक्रेटरी की आज गई, उसमें फेरफार के वाद खूव चर्चा। सु० डें० व जेलर आये। चर्खा।

जेलर आये। गवर्नर के आने के समय की व्यवस्था की चर्चा की और भी चर्चा जेलर को समझा कर उसके दोष कहे। पुरुषोत्तमभाई व प्यारेलाल से इस संवंध में वातें। एक मत। आज आखिर वर्तमान पत्र के वारे में मेमोरेंडम यहां से रवाना हुआ, इस मेमोरेंडम ने भी विना कारण कष्ट दिया।

१७-७-३२

पानी २० डोल खींचा। रस्सी टूट गई और पीपा कुवें में गिर गया। वजन करने अस्पताल गया, १६९ हुआ।

चर्खा। जेलर आये। भोजन के वाद आफिस में जाकर जेलर के सामने सेलडीड पांच व दावे पर सही की। गुलजारीलाल व खण्डूभाई आये। फड़के, देवकीनंदन व पोतनीस से वातें।

कड़ी बैरक में बीमारों की फेरिस्त बनाई। उन्हें तीन कोठे में लाने का प्रयत्न। जेलर बहनों के पास ले गये। बरसात हुई। पुरुषोत्तमभाई से बातें।

१८-७-३२

आज पानी नहीं खींचा। डोल और रस्सी तैयार नहीं थी।

सुबह तीन बजे उठकर निवृत्त। आज प्रार्थना ४ के बाद, थोड़ी देर से हुई। चर्खा, ५६० तार काते।

भोजन ११। बजे आया। इंसपेक्शन शाम को ४।। बजे हुआ, जल्दी व शांति के साथ समाप्त हुआ।

मणिभाई ने साग वगैरह की व्यवस्था, बीमारों की व्यवस्था व गवर्नर के बारे में बातें की। मैंने अपने विचार कहे।

शाम को थोड़ा खेल-कूद के बाद प्रार्थना। उसके बाद प्यारेलाल से ९-५० तक बातें कीं।

१९-७-३२

जीवनी में से पढ़ा। पानी ६० डोल। चन्द्र (रात्रि-विद्यार्थी) से बातें। केले, दवा, चर्खा ५६० तार, भोजन के पहले।

श्री भिड़े कलेक्टर, सु० डें० व जे० आये। पहले मैंने उनसे बातें नहीं कीं। बाद में जब दरवाजा खोलकर नजदीक आये तब बातचीत हुई। उन्होंने कहा कि आपका पत्र मैंने ऊपर भेज दिया है।

'गांधी विचार-दोहन', मि० हाईड व डा० जेकिल की कहानियां, तुकाराम के अभंग आदि देखे।

कान की दवा। थोड़ा खेले-कूदे। सेंक।

प्रार्थना के बाद जल्दी ही नौ बजे सो गया।

२०-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।

लड़कों को समझाकर बाराकोठे में से कड़ी बैरक में भेजा।

चर्खा। जेलर दो बार व सु० डें० आये। करीब १०-३० बजे गवर्नर आये। दरवाजों को ताला लगाया गया था। मैं तो हमेशा की तरह

बिना कुरता पहने चर्खा कातता रहा। उन्होंने व उनके साथ वालों ने देख लिया (बातचीत नहीं हुई)। किसी ने नाम लेकर उन्हें कहा भी। जेलर आये। गवर्नर के रिमार्क आदि की चर्चा, उन्हें खूब संतोष था। भागप्पा, मदन से बातें। पुस्तकें पढ़ीं।

२१-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।
बाराकोठा में दो आदमी बीमार थे, उन्हें अस्पताल भिजवाया।
जेलर व मणिभाई से बीमारों के बारे में बातचीत। व्यवस्था। अस्पताल में मालूम हुआ कि गुलजारीलाल व मणिभाई में थोड़ा असंतोष हुआ. इसकी चर्चा ज्यादा न हो यही ठीक समझा गया।
आनंदराम व महाजनी की बीमारी की पूरी हालत जान ली।
डा० मोदी का सु० डें० कंट्राक्टर के पास आया पत्र देखा। महाजनी व उत्तम के बारे में जेलर से बातें।
गुलजारीलाल प्यारेलाल की खोली में रहने आये। थोड़ा हाथ का व्यायाम।

२२-७-३२

पानी ६० डोल खींचा। चर्खा।
प्यारेलाल ने ४३ पृष्ठ पढ़कर बताये, उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती में बहुत ही बारीक व साफ लिखे हुए थे। चर्खा। रानडे, उत्तम, गुलजारीलाल से बातें। कान की दवा आज से बदल कर नई दूसरी दवा शुरू हुई (डा० मोदी की)। जेलर आये। सवेरे की घटना, आफिस, राजाराव की चर्चा की।
थोड़ा हाथ का व्यायाम, बातचीत। जल्दी सो गया।

२३-७-३२

पानी ६० डोल खींचा। चर्खा।
रानडे विद्यार्थी शंकाएं पूछने आया।
आराम। बाद में प्यारेलाल, मणिभाई खण्डूभाई आदि से बातचीत।
आज से प्यारेलाल के साथ दूसरी बार डा० जैकिल व मि० हाईड पढ़ना शुरू किया।

आज वहुत-से वीमारों का फैसला हो गया, अव थोड़े रह गये।
भोजन। कान की दवा। थोड़ा हाथ का व्यायाम।
प्यारेलाल व गुलजारीलाल से थोड़ी वातचीत।
रात में स्वप्न व जाग्रत अवस्था में कृष्णराव कुलकर्णी (नाना) की मृत्यु व वाद में जीने का दृश्य देखा, वहुत देरतक।

२४-७-३२

पानी ६० डोल खींचा। चर्खा।
तुकाराम के अभंग छांटे।
वालकों के साथ ९॥ से १०॥ तक वातचीत।
भोजन (पूरा भत्ता)। मदान से वातें, उनके साथ खानदेश के मित्रों से परिचय।
कड़ी वैरक के श्री सहाने को कम दलने व हलका काम—झाड़ू का काम करने को समझाया, तवीयत के कारण।
जेलर से वातें, आई० जी० पी० के मार्फत विना मतलव का पोस्टकार्ड आया व हिस्ट्री टिकट में लिखा, इस वारे में व खादी वनाने के वारे में।
हाथ का व्यायाम ठीक हुआ, पसीना आ गया। पुरुषोत्तमभाई से वातचीत।

२५-७-३२

पानी ६० डोल खींचा।
सहाने मास्तर व भिका डांगरी वाले विद्यार्थी से वातचीत, चर्खा।
ए० एच० शीहन और जगन्नाथ गोपाल गोखले का आज नासिक जेल से ट्रांसफर हुआ। दोनों से वातचीत।
जेलर आये। चक्की वैरकवालों का वहुत दिनों से आग्रह था कि मैं रोज वहां आया करूं, इसपर विचार करने को कहा। वाद में आराम।
इंसपेक्शन नहीं हुआ।
शाम को थोड़ा खाया। आज भी रामेश्वरदास का अपमान हुआ, सुना।
रामेश्वरजी का जेल में लोगों से मिलने आने का प्रयत्न अनुचित मालूम होता है।

गुलजारीलाल शीहन की कोठरी में रहने आये। हाथ का व्यायाम ठीक हुआ। थोड़ा दर्द मालूम हुआ। प्यारेलाल से वातें।

२६-७-३२

आज प्रार्थना में देर हुई। घंटा नहीं सुना। पानी ६० डोल खींचा। जेलर ने वुलाया। कुमारी शांतावाई पनवेलकर, कमला गोखले, नर्मदा भुसकुटे तीनों लड़कियां आज छूट गई। इनमें से शांता व नर्मदा सावरमती जाना चाहती हैं।

जेलर से मणिभाई को यहां विनोवा की कोठरी में रहने को भेजने के लिए आग्रहपूर्वक कहा।

चर्खा। भोजन। आराम। प्यारेलाल व रामचंद्र सोनी (येवले वाले) से वातचीत।

डा० चव्हाण आये। आंख तपासी, आगामी मंगलवार को चश्मा लाने को कहा।

मणिभाई और प्यारेलाल कड़ी वैरक में सोने गये। हाथ का खेल। प्रार्थना अकेले की।

२७-७-३२

पानी ६० डोल अकेले खींचा। ३ केले खाये, चर्खा।

कड़ी वैरक के रामचंद्र, शहाने व जेठमल से वातें।

चर्खा। पूर्व खानदेश का नक्शा देखा। आज दिन में करीव १।। घंटे सोया।

प्यारेलाल, भाईदास भाई, ईच्छाराम (फैजपुर), राम, (मुगलाई), देवकीनंदन से कातते समय वातचीत।

हाथ का व्यायाम।

जेलर ने विनोवा को पत्र व फोटो भेजा, उस संवंध में चर्चा। जेलर से वातें।

उसके मन की तैयारी देखी, सुख मिला।

गुलजारीलाल से अधिक परिचय शुरू हुआ।

२८-७-३२

पानी ६० डोल। चर्खा ज्यादा काता। जेलर से वातें। प्यारेलाल, राम (मुगलाई) आदि से वातें।

पूर्व खानदेश का नक्शा देखा, १० तालुके—१. जलगांव, २. भुसावल, ३. रावेर, ४. यावल, ५. चोपडा, ६. एरनडोल, ७. अमलनेर, ८. चालीसगांव, ९. पाचोरा, व १०. जामनेर।

गुलजारीलाल से वातचीत। रात में नींद थोड़ी कम आई।

२९-७-३२

पानी ६० डोल।

भाऊ को सेपरेट-सेल में देखा, डोंगरे से वातें, स्नान, चर्खा।

मणिभाई विनोवा की कोठरी में रहने आये। शाम की प्रार्थना उनके साथ की। उन्होंने अच्छे तरीके से भजन व प्रार्थना की। मनाचे श्लोक २७ चुनकर स्याही से लिख डाले।

श्री जयंती व वहनें जेल देखने आये। एकादशी के कारण दूध व केले ६, साग व दही। शाम को साग लिया।

कड़ी वैरक में जेलर ने फेरफार किया।

३०-७-३२

पानी ६५ डोल। चर्खा।

प्रह्लाद, गजराज, मामा वगैरा छूटे।

तुकाराम के अभंग लिखे। कंट्राक्टर के भाई से वातें।

जेल के पाखाने में किसी सत्याग्रही ने जो लिखा है, उसका पता लगाने व विचार करने में खासकर सत्याग्रही आगे क्यों नहीं आता, इसका विचार।

शाम को मणिभाई के साथ प्रार्थना। वुद्धदेव का भजन सुन्दर गाया।

३१-७-३२

प्रार्थना वाद भजन लिखे। आज पानी ज्यादा निकाला—१०१ डोल।

वजन किया, १६९ रतल।

अहिंसा व सत्य के महत्व के संबंध में लड़कों से वातचीत।

मि० कंट्राक्टर, उनके भाई, उनकी पत्नी आये, मामूली वातचीत।
पश्चिम खानदेश का नक्शा देखा। वहां के कार्यकर्त्ताओं से वातचीत, कार्यकर्त्ता, अस्पृश्यता, दारू, जेल के उपवास, सत्याग्रही का कर्तव्य आदि के विषय में।
सुवह नांदेडकर व दास्ताने से वातचीत।
आज वाराकोठा में अपमान हुआ, जेलर ने खुलासा किया। शाम को मुले ने अपनी भूल कवूल की।

१-८-३२

पानी ६० डोल खींचा।
कल शाम की प्रार्थना के वाद मणिभाई से खूब प्रेम व समझाकर वातचीत। चौदस को कल सात दस्त लगे, उसे पूरा आराम लेने को कहा है। सुका ने कपड़े धोये, वरतन साफ किये।
चर्खा। कंट्राक्टर के भाई आये, थोड़ी वात।
आज डोंगरे आदि चार लड़कों को फटके (कोड़े) की सजा सु० डें० ने सुनाई, उसकी चर्चा।
पुरुषोत्तमदास वैरिस्टर ने पत्र लिखा, उपवास किया।
सु० डें० व जेलर का व्यवहार ठीक नहीं मालूम हुआ।
मणिभाई ने प्रार्थना की। अंग्रेजी भजन, जेलर वहुत देरतक वैठा रहा।

२-८-३२

प्यारेलाल से वातें। पानी ६५ डोल खींचा। चर्खा।
आंख के डाक्टर के पास जाना पड़ा था। इसलिए मणिभाई के साथ जल्दी भोजन किया।
चर्खा। प्रातःकाल की प्रार्थना के श्लोक लिख डाले। वर्तमान पत्र मिलने के लिए जो ता० १६-७ को पत्र भेजा था उसका ववंई सरकार के होम डिपार्टमेंट सं० नं० ७१८१-२-९ ता०२९ जुलाई का जवाव आज मालूम हुआ। इंकार किया।
मणिभाई ने वी व सी-वर्ग की पूरी जवावदारी ली। उनका उत्साह देखकर

खुशी हुई। परन्तु जेलर से झगड़ा होने की पूरी संभावना है, यह उन्हें समझाकर कहा। (क्योंकि जेलर नहीं चाहता है)।
शाम को रोटी नहीं खाई, केले, पपीता व थोड़ा दही लिया।
गुलजारीलाल से ठीक वातें।

३-८-३२

पानी ६० डोल। चर्खा।
जामा जमादार ४ वजे आया। मणिभाई वी व सी-वर्ग के काम के लिए गये।
आज जेलर की व सु० डें० की आपस में वोलचाल हुई, यह सुना। जेलर व मणिभाई वहुत देरतक वैठे। जेलर के पास विनोवा का पत्र आया, उससे उन्हें वहुत सुख मिला, मालूम हुआ।
आज कॉलरा के इंजक्शन लेने की चर्चा। जेल में वहुतों को दिया। मैंने और कई मित्रों ने नहीं लिया।
आज से अन्नासा० की तीन कोठे में रहने की व खाना-पीना मेरे पास करने की व्यवस्था हुई।
व्यायाम, प्यारेलाल से वातचीत।

४-८-३२

पानी ६० डोल।
गुलजारीलाल के वारे में जेलर से वातचीत। सहाने व रामचन्द्र को अस्पताल में देखा। पानी की सफाई आदि की चर्चा, विचार। जेलर से वातें। मणिभाई व प्यारेलाल की आपस में नाराजी हुई। मणिभाई ने डेढ़ घंटे तक समझाकर अपनी हालत कही।
अन्नासा० से सुवह उनकी खूराक का खुलासा, विचार-विनिमय।
चर्खा। प्यारेलाल ने अपनी भूल कवूल की।
शाम को लड़कों ने ठीक नकल करके वताई, खासकर डोंगरे व शुक्ला ने।
प्यारेलाल का भगवानदास को लिखा पत्र पेटी में डालने को जेलर के पास भेजा।

५-८-३२

पानी ६० डोल खींचा।

घनजी सखाराम पाटील (विरुल, ता० रावेर, पू० खानदेश) आज ज्यादा वीमार हो गया। उसकी जितनी देखरेख व चिंता होनी चाहिए थी वह जेल अधिकारियों ने नहीं की, उसका मन पर वहुत विचार रहा।

जानकीदेवी आज छूटनेवाली हैं, ऐसा सुना।

प्यारेलाल, मणिभाई की आपस में थोड़ी वोलचाल। मणिभाई को दुःख हुआ। मणिभाई करीव डेढ़ घंटे तक अपना दुःख कहते रहे।

चर्खा। अन्नासा० व गुलजारीलाल के खाने पीने की चर्चा।

६-८-३२

पानी ४० डोल खींचा।

घनीराम राघव पाटील, क्रिमिनल कैदी (विरुल) आज सुवह मर गया। अस्पताल की ओर से संतोपकारक व्यवस्था वीमारों की नहीं होती, उस पर विचार, दुःख व चिंता १० वजे तक होती रही।

सु० डें० व जेलर जीमते समय आये, गुलजारीलाल के केस की चर्चा-विचार। मेरा कान देखा। प्यारेलाल के पत्र की चर्चा।

मणिभाई, पुरुषोत्तमभाई, प्यारेलाल आदि से ठीक विचार-विनिमय। जेल में वीमारों की व्यवस्था के वारे में विचार, स्टेटमेंट आदि। जेलर व सुपरिंटेंडेंट से वात करने का निश्चय। कंट्राक्टर के भाई से सु० डें० के वारे में कहा।

७-८-३२

पानी ६३+२० डोल खींचा।

कड़ी वैरेक के जेठमल से मिलकर अस्पताल में सहानेजी से मिले। ठीक व संतोषकारक वातचीत। अन्य व्यवस्था का विचार, सुवह प्यारेलाल से वातें। प्रार्थना के वाद रात में मणिभाई का उन्होंने पूरा संतोष कर दिया, कहा। लड़कों से अहिंसा व हिंसा के फर्क की चर्चा। मणिभाई व प्यारेलाल भी आये। भोजन। विश्रांति। चर्खा। प्यारेलाल ने नोट लिये।

सु० डें० की स्त्री व कोठारी (जलगांव के सर्जन), उनकी स्त्री व वच्चे जेल देखने आये। मणिभाई की लड़कियां आई। बीमारों के ऐंडमिशन की चर्चा जेलर से की। उसे दिखाया। हाथ का व्यायाम।

८-८-३२

प्यारेलाल के साथ पानी ७० डोल खींचा।

प्रार्थना के वाद प्यारेलाल से वातें, खासकर यहां के जेल की, मेडिकल डिपार्टमेंट की जांच के वारे में। सु० डें० से मिलकर कहने को कहा। मणिभाई के पूछने पर सूचना की।

वजन १६९ रत्तल हुआ। २६ रत्तल कम है।

प्यारेलाल ९॥ वजे छूटे। लाहौर का टिकट देना नक्की हुआ। प्यारेलाल का वियोग हुआ।

मां, जानकी, गुलाववाई, कमलनयन, रामकृष्ण, गुलावचन्द, प्रह्लाद, केशवदेवजी, लालजी मुलाकात को आये। सभीकी तवीयत ठीक मालूम हुई। आज शाम को ही वे लोग वापस गये।

श्री राजगोपालाचारी के जमाई—वरदाचारी की मृत्यु की खवर सुनी। दुःख हुआ। पत्र भेजा।

आज चर्खा नहीं काता गया, शामको भोजन नहीं किया। कान की दवा। थोड़ा हाथ का व्यायाम। मणिभाई, पुरुषोत्तमदास, आनंदी आदि से चर्चा।

प्यारेलाल सु० डें० से मिल गये।

९-८-३२

पानी १८ डोल खींचा। वाद में कील निकल गई।

सुवह प्रार्थना, मणिभाई के पास वैठा। उनकी तवीयत थोड़ी नरम थी।

जेलर चक्की की चर्चा करने आये। करीव डेढ़ घंटे चर्चा की। मैंने उन्हें साफ कह दिया कि आटा पूरा करने का कंट्राक्ट हम लेवेंगे, परन्तु शर्तें विलकुल साफ हो जाना जरूरी हैं। उन्होंने स्वीकार किया। खूव चर्चा

व विचार के वाद मणिभाई, खण्डूभाई, केट्टी, वावूभाई आदि के समक्ष सव शर्तें निश्चित होकर, उसपर जेलर की व मेरी सही हुई। वाद में उसे कड़ी वैरक में सूवेदार व जमादार के सामने पढ़कर चक्कीवालों को वताया। प्रायः सभीको संतोष हुआ। जेलर से साफतौर से कसरत, व्यायाम, फेर-वदल तथा सव प्रकार की मदद देने का खुलासा कर लिया।
जेलर से गिट्टी के वारे में भी थोड़ी वात हुई। आज शाम का भत्ता देर से मिला। आज भी शामका भोजन नहीं किया। केले लिये।

१०-८-३२

पानी ७० डोल खींचा।
छह वजे करीव जेलर खुद आप होकर चक्की में आये, और सूवेदार, हवलदार, वावू व चक्की के आदमियों को कल का फैसला (पैक्ट) समझाकर खुलासेवार मेरे सामने कह दिया। चक्कीवालों को सुवह एक गरम रोटी मिलने की कल से व्यवस्था करेंगे।
जेलर से कह दिया कि चक्की में मंगू पाटिल, पानी में पोतनीस, तकली में आनंदराम कार्यकर्ता और देखरेख मेरी। तीन कोठे को नहीं वदलने की व वर्तन पर ढक्कन ढांकने की चर्चा। वी व सी-वर्ग व दवाखाना (वीमार) मणिभाई के जिम्मे।
चक्की वैरक के चर्खा संघ का हाल मालूम हुआ।
ए० एच० शीहन नौकरी मांगने आया, उसे पत्र दिया, मनोहर (शं) गुलजारीलाल की तवीयत की चर्चा।
चक्की वैरक शाम को सुखी मालूम हुई। प्रार्थना में एक घंटे की देरी। कल से गीताई मणिभाई के साथ।

११-८-३२

पानी ७० डोल खींचा।
रानडे ने कहा मेरा वर्धा का निश्चय हो गया। चर्खा।
चक्की काम, आज से उन्हें गरम रोटी थोड़ी-थोड़ी मिलना शुरू हुई। जेलर वहां आये।

जेलर व मणिभाई की वी व सी-वर्ग के संबंध में बोलचाल। सु० डें० कंट्राक्टर ने बुलाया। उनसे दवाखाना, मेडिकल ट्रीटमेंट, चक्की वी व सी के संबंध में खुलासेवार बातचीत। मैंने उन्हें कहा कि सब जवाबदारी जेलर पर छोड़ देनी चाहिए। अस्पताल और बीमारों को आपको ठीकतौर से संभालना चाहिए। आज भी सुस्ती बहुत मालूम होती थी।

जेलर ने वी व सी-वर्ग की बात कही। उन्हें उनकी भूल बताई और मणिभाई से फैसला करने को कहा।

प्रार्थना के बाद कलापी के पत्र सुने। मणिभाई ने सुनाये।

१२-८-३२

पानी ७० डोल खींचा।

चक्की। जेलर से मिले। उन्होंने वी व सी-वर्ग के संबंध में तथा अन्य चर्चा की।

आज एकादशी के कारण दूध व केले। दोपहर को गुड़ का पानी व निम्बू, शाम को कल का थोड़ा दही व तीन केले लिये।

नासिक जि० बागलान के रचनात्मक काम वाले पोतनीस, देशपांडे, ओक, देवचन्द, पाटिल, दांडेकर, महाजन आदि से परिचय बातचीत। इन लोगों ने (यानी पानी फाइल वालों ने) आज से एक माप आटा दलने का निश्चय किया।

कलापी के पत्र पढ़े। शाम को प्रार्थना बाद मणिभाई ने 'कलापी नो कैकाख' में से कुछ गाकर सुनाया।

१३-८-३२

आज चार का घंटा नहीं सुना। सो ५ बजे उठे। पानी ५० डोल खींचा। चक्की। आज चक्कीवालों को रोटी नहीं मिली। आज से वी व सी क्रिमिनल ही चलाते हैं—वी व सी वालों व राजनैतिक वालों का काम बदल दिया।

शालिगराम जेलर के पास आये थे। मैंने भी उन्हें हिम्मत व धैर्य रखने को कहा। गुलजारीलाल ने दोनों हाथ काले किये और छापे लिये।

आराम। चर्खा। पोतनीस व ओक से विशेप परिचय, वातें। रामचरण से वातें। गुड़ का पानी पिया।
आज विल्ली ने दूध की शीशी फोड़ डाली व दूध खराव कर दिया। चक्की के लोगों से मिला। मणिभाई को सु० डें० ने वुलाया।
जेलर आये, मामूली वातचीत।
प्रार्थना वाद मणिभाई ने कलापी सुनाया।

१४-८-३२

पानी ७५ डोल खींचा। गीता का पाठ।
चक्की। वजन १६६ हुआ, यानी ३ रत्तल कम हुआ। जेलर आये।
मनाचे श्लोक २७ अर्थ सहित पढ़े।
यहां से ४० जनों के नासिक ट्रांसफर होने की खवर सुनी। मेरा, मणिभाई, माधवजी, व पुरुषोत्तमभाई का ट्रांसफर मंजूर होकर नहीं आया। अन्ना दास्ताने व देवकीनन्दन, सहाने, रामचन्द्र, खरे के ट्रांसफर का थोड़ा विचार। विशेप प्रयत्न नहीं करने का निश्चय। कड़ी वैरक में सदाशिव श्रीकृष्ण चिटनीस का कीर्तन ठीक हुआ।

१५-८-३२

पानी ७० डोल खींचा।
चक्की वैरक में जेलर का शिस्त पालन करवाने की अव्यवस्थित हुक्म पद्धति का दृश्य देखा। अनन्तपुर के (स्वावलम्वन) काम का काशीनाथ से हाल सुनकर सुख मिला। सुवह पोतनीस ने उन्हींके कार्यकर्त्ता का परिचय दिया। ट्रांसफर का प्रयत्न करना उचित रहेगा या नहीं, इसका सुवह चार वजे की प्रार्थना-भजन वाद खूव विचार करके चिट्ठी डाली। 'प्रयत्न नहीं करना' यह चिट्ठी आई।
(पांडुरंग) सदाशिव सहाने से ठीकतौर से वातचीत, उन्होंने वचन दिया कि वह मुझसे विचार किये विना कोई भी जोखम का मार्ग नहीं अपनायेंगे। देशपांडे-नासिक, ओक, रामचरन, उत्तम, अन्ना, देवकीनन्दन की सहाने के वारे में चर्चा।

सौभाग्यवती व राजगोपालाचारी का पत्र दिनांक १२-८-३२ का देखने को मिला। व्यवहार के बारे में जेलर को बहुत समझाया।

१६-८-३२
(रक्षाबंधन)

पानी ७० डोल खींचा।
आज से चश्मे का उपयोग शुरू करना पड़ा।
कड़ी बैरक में जेलर ने बुलाया। सु० डें० ने आज इंसपेक्शन किया।
देवकीनन्दन से बातें। आश्वासन, छोटे भाई का व्यवहार।
गुलाब, भाग्यवती ने रक्षाबन्धन किया। मि० भिड़े कलेक्टर व जस्टिस मंडगांवकर आये। ठीक प्रेम के साथ बातचीत कीं। पेपर के संबंध में 'टाइम्स' मिलना ही चाहिए कहा। 'गीताई' मंडगांवकर को व मि० भिड़े को दी।
अन्ना दास्ताने, देवकीनन्दन, सहाने, रामचरण, खरे, पाटील आदि ४१ जने आज यहां से नासिक रोड जेल में बदल कर गये। अन्ना साहब, देवकीनन्दन, सहाने को वहां विशेष कष्ट न हो उसकी थोड़ी व्यवस्था। अन्नासा० की दवा, पथ्य आदि सब लिखवाया। अन्नासा०, देवकीनन्दन व रामचरण की आंखें भर आईं। मित्रों के वियोग का दिन।
शाम की प्रार्थना के बाद मणिभाई से दिल खोलकर बातचीत।

१७-८-३२

पानी ७० डोल खींचा। ८ से ९ भजन छांटे।
चक्की का काम देखकर आया। तकली फाइल में व पानी फाइल में भर्ती की। आज महंत सीताराम शास्त्री व मुनशीजी के साथ भोजन। बाद में आराम।
चर्खा। गुलजारीलाल ने हाथ की रेखा के नोट लिये। मित्रों के नाम लिखे। चक्की काम देखने गया, जेलर के डर से शिवराज ने ३ बजे ही चक्की का काम बन्द कर दिया। चक्की के काम के बारे में जेठमल व मंगू पटेल को समझाया।

मणिभाई का आज से शाम को ७ बजे प्रार्थना करने का निश्चय।

१८-८-३२

पानी ७१ डोल खींचा।

चक्की बैरक में। जेलर को चक्की के बारे में जरा जोर से समझाकर कहना पड़ा। उनका कल का व आज का व्यवहार भविष्य की सावधानी।

सु० डें० जेलर की बहुत देरतक इधर-उधर की बात कर गये।

रामदास ('मुक्ति' वाला) लड़का आज छूट कर गया। मोतीराम पाटिल व दूसरे तीन मुक्ति वाले रह गये।

भजन लिखे। कार्यकर्त्ता के नाम लिखे। चर्खा काता।

सु० डें०, मणिभाई व जेलर का समझौता करा दिया। ठीक हुआ।

शाम को सात बजे प्रार्थना। गीताई, भजन, कलापी।

१९-८-३२

पानी ७० डोल खींचा।

चक्की बैरक में। जवारी खराब आई। जेलर से बातें। भजन लिखे।

राजाराम भाऊ (आसोदेवाले) व जेठमल (जलगांववाले) से बातचीत।

चक्की बैरक। वहां बातचीत।

कान की दवा। सेंक। एक घंटे के करीब पढ़ा।

शाम को सात बजे प्रार्थना। गीताई, तुलसी रामायण, गीतांजली, ब्रह्मानन्द भजन।

मणिभाई, पुरुषोत्तम आदि के साथ। रात में ९ बजे तक भजन उतारे।

२०-८-३२

पानी ७० डोल खींचा। चक्की बैरक।

गुड़ का पानी लिया। पपीते की जगह ६ केले शुरू हुए। २ केले खाये। 'जनमन' भजन लिखा। गुलजारीलाल के साथ 'वाग्भट' देखा। पूरा भोजन। जेलर आया। सितम्बर ११ को छूट जाने का सपना कहा। विनोद, आराम, चर्खा।

मोदक, सीताराम, कुलकर्णी (जलगाव वाले) से वातचीत। मन को संतोष हुआ। चक्की वैरक में।
गलजारीलाल के श्वसुर गुरुदासपुर से इन्हें देखने आये।

२१-८-३२

चक्कर ज्यादा। पानी ७० डोल खींचा।
वजन १६६। चक्की वैरक में वातचीत। साग में तेल ज्यादा, दाल में कम, रोटी सेंकी हुई मिलनी चाहिए।
कंट्राक्टर के पिता, वहिन, भीठूवाई, भाई, स्त्री, लड़की आई। पिता और वहन ने वातें की, सभी सरल स्वभाव के मालूम हुए।
आज भी गर्मी वहुत ज्यादा पड़ी।
प्रार्थना के वाद भजन लिखे। ९ वजे सोया।

२२-८-३२

पानी ७० डोल खींचा।
सुवह चौंदश, भिका से वातें। वह, मोदक व भिक्का, डोंगरी वाले आज छूटे। चक्की वैरक में।
रात में मणिभाई की तवीयत वहुत खराव हो गई थी, यह पुरुषोत्तम (वावूभाई) ने कहा। चिन्ता हुई।
आज गर्मी वहुत ज्यादा पड़ी। डा० केवलकृष्ण मेहता (गुरुदासपुर वाले-गुलजारीलालजी के श्वसुर) ने कान व हार्ट देखा और कहा ५-७ रत्तल वजन और भी कम हो जाये तो हर्ज नहीं। कान की दवा लिख दी। चिंता की वात नहीं वतलाई।
चर्खा। आज महंत सीतारामजी ने चूरमा वनाकर खिलाया। ज्यादा खाया। चक्की वैरक में गये। साग में लट देखी। केले खाये। जेलर आये। भजन लिखे।

२३-८-३२

चक्कर। पानी ७० डोल।
चक्की। विश्वनाथ (येवले वाले) व अन्य मित्रों से वातें। केले दो। स्नान,

गुड़ का पानी, भजन उतारे। पूरा भोजन। चक्की वैरक। एक घंटे कुछ अनुभव की बातें। डोंगरे, मुरलीधर से बातें। आराम। चर्खा। आज से ९ केले आने लगे, केले का भाव २ आने दर्जन बतलाया। पपीता कम-से-कम २ आने का आता था।

जेलर ने काम बदला। चक्की वालों का व दूसरों का। उनका व्यवहार जो साग लाये उनके साथ अनुचित दिखा। बातचीत। चक्की बातें।

आज गर्मी बहुत ही ज्यादा पड़ी।

२४-८-३२

पानी ७०।

चक्की वैरक का इतिहास, चर्चा। जेलर ने विनोबा को पत्र दिया। मणिभाई का आज जन्म-दिन।

जन्म-अष्टमी व्रत। केले, दूध। सुबह मूंगफली, गुड़। कड़ी वैरक में हरिकीर्तन व नागपुर के हरिदास का सुदामा व्याख्यान। पेटी, तबले वाला व साथी ठीक था।

बापूजी का लंदन में ग्रामोफोन कंपनी को दिये गये भाषण का रेकार्ड सुना। सुन्दर था। आज का कार्य ठीक संतोषप्रद हुआ।

लड़का टाइफाइड से ज्यादा बीमार है, उसे देखा। यरवदा कैम्प जेल का हाल सुना। बगीचा वापस होने की बात सुनी।

२५-८-३२

पानी ७०।

चक्की वैरक। विश्वनाथ, साठे, शंकर, मंगूभाई आदि से बातें। जोशी व देशपांडे को अस्पताल में देखा। राजाराम, भाऊ, गोविंद, मुरलीधर (अडावद वाला), कुलकर्णी (अमलनेर वाले) आज छूटे।

वाग्भट पढ़ा। जेठमल व मंगू पटेल से चक्की के काम की चर्चा। विचार। जेठाल से बातें। जेलर से सूत के भाव का फैसला। चक्की में कम आदमी का खुलासा। जेठमल को चक्की वैरक में पहुंचाया।

२६-८-३२

चक्कर आये। पानी ७०। चक्की। जेठमल आज छूट गया।

विनोवा का पत्र मेरे व जेलर के नाम मेरी तवीयत के वारे में आया। जेलर ने जवाव भेज दिया।

वजन का हिसाव—जितने इंच उंचाई हो उसमें से ४२ घटाकर जो वाकी रहे उसे साढ़े पांच से गुणा कर लेना। जैसे मेरी ऊंचाई ७२ इंच है, उसमें से ४२ गये, ३० रहे, उसे ५॥ से गुणा करके १६५ आया; इतना रत्तल मेरा उचित वजन है।

भोजन। आराम। चर्खा।

२७-८-३२

पानी ७० डोल खींचा। चक्की। आज पानी खींचने में ज्यादा जोर आया।

उरवाभाऊ (सावदा), दत्तात्रेय, कुलकर्णी (भुसावल), भाईदास, सवाई मुक्ति, हीरामण, भाऊराव व दगडू आज छूटे।

डा० शान्तिलाल को चक्की काम करने वालों के अपमान आदि के वारे में खूब कहा।

चर्खा। आज तीन कोठे में फड़के, दुवे, पोतनीस आदि के प्रश्नों का खुलासा किया। वाद में दुवे से वातें।

आज सीताराम शास्त्री की पंजीरी, उनके वहुत कहने पर, अस्पृश्यता के के कारण खाई। मणिभाई से उनके उपवास की चर्चा।

२८-८-३२

पानी ७०। चक्की। अस्पताल। वजन १६५ हुआ।

मणिभाई ने चार दिन के उपवास शुरू किये। लड़कों को स्वच्छता के वारे में समझाया।

पूरा भोजन। सु० डें०, उनके पिता, वहिन, स्त्री मिलने आये। पिता सरल स्वभाव के व विनोदी मालूम हुए।

चक्की वैरक। अस्पृश्यता-निवारण व गणपती-उत्सव की चर्चा, दो घंटे।

श्री वैष्णव, जेलर के लड़के आये। अस्पताल, बीमारों को दोनों बार देखा। हनुमान जोशी ठीक है।

२९-८-३२

घंटी नहीं सुनी, पुंगा सुना। पानी ७०। चक्की, दवाखाना।
दयाराम, लोटन (खिरोदेवाले) व दौलत आज छूटे।
चर्चा, मदनलाल जलगांव वाले से बातें। सु० डें० का इंसपेक्शन। वजन कम होने की चर्चा। चक्कर व कमजोरी की चर्चा होने के बाद २ औंस ओलिव-आइल मेरे खर्च से व आधा रत्तल दूध ज्यादा, जेल से, कल से मिलने का निश्चय। जेलर, गुलजारीलाल से बातें।
तीन कोठा। करीब दो घंटे विचार-विनिमय होता रहा।
अस्पताल। जोशी व दुबे से बातें। मणिभाई के उपवास का दूसरा दिन। साथ में प्रार्थना।

३०-८-३२

दस्त साफ नहीं हुआ। पानी ७०।
चक्की बैरक। तीन केले व आलिव तेल १। चम्मच लिया (आज से)। आज से दूध भी डेढ़ रत्तल आने लगा। अधिक खूराक लेने में थोड़ा संकोच तो हुआ, परन्तु उपाय नहीं था।
मदनलाल (जलगांववाला) आज छूट कर गया। तीन कोठा में दुबे आदि के प्रश्नों का खुलासा। चर्चा। Manual of Jail Hygiene और Macfadden's Encyclopedia of Physical Culture–V मंगाया। गुलजारीलाल ने पढ़कर सुनाया।
मणिभाई के साथ शाम की प्रार्थना। गीतांजली। विचार-विनिमय। थोड़ी बरसात हुई।

३१-८-३१

पानी (७०)।
श्रीमद्‌रामचन्द्रजी के बोधप्रद उपदेश सुने। श्री गुलजारीलाल ने पढ़कर सुनाये।

जेलर का मणिभाई के साथ असभ्यता का व्यवहार।
मुरार घोंडायचे वाले को समझाकर सुवह कांजी व शाम को भोजन कराया। जेलर का वर्ताव कड़ा। चक्की के वारे में भी उन्हें कंट्राक्ट भारी मालूम देने लगा।
चक्की वैरक। दो वजे से करीव साढ़े तीन वजे तक सामाजिक चर्चा। वाल-विवाह, विधवा-विवाह, स्त्री-शिक्षण, वृद्ध-विवाह, सामाजिक कुरीति। थोड़ी वरसात। जेलर ने चक्की-आटा कम लाने की फरियाद। सिपाही की थोड़ी चूक। मणिभाई से प्रार्थना के वाद उनके पथ्य व अस्पताल की चर्चा।

१-९-३२

दस्त साफ हुआ। चर्खा, पानी ७०।
चक्की। दुवे आज छूटे। मणिभाई के चार उपवास आज पूरे हुए।
Manual of Jail Hygiene और M. E. Volume देखा। भोजन। विश्राम। मंगेश, भूता व साखरचन्द—पश्चिम खानदेश के कार्यकर्ताओं का परिचय। वर्षा ठीक हुई। जेलर व उनके भाई से चक्की की चर्चा। उन्होंने स्वीकार किया कि काम से उन्हें पूरा संतोष है।
गुलजारीलाल व पुरुषोत्तमदास ने जयकर आदि के स्वभाव की चर्चा की। चर्खा। प्रार्थना के वाद मणिभाई के पास। वाद में नन्दाजी ने पढ़कर सुनाया।

२-९-३२

पानी ७०।
चक्की वैरक। अस्पताल। जोशी आदि को देखा। गर्मी वहुत ज्यादा। जेलर का आज का व्यवहार भी अनुचित था, खासकर मणिभाई के साथ। सु० इं० आये।
भोजन। विश्राम। एम० ई० पढ़ा, कुछ उतारा। चर्खा। नान्देड़कर वात करने आया। उसे समझाया।
आज खूब वरसात हुई, उससे ठंडक हुई।

जेलर ने कहा मैंने चक्की में क्रिमिनल को भेज दिया है। सोमवार से चक्की का काम वन्द। वहुत चर्चा होने के वाद एग्रीमेंट ससपेंड व कैंसिल हुआ।

३-९-३२

पानी ८० डोल।

रात में वरसात ज्यादा होने के कारण जेल देर से खुला।

कड़ी वैरक में, रात को वत्ती की तकरार के कारण, वैरक देरतक जेल अधिकारियों ने वंद रखी। सिपाही व सूवेदार का नैतिक दोप ज्यादा होते हुए भी वहां के सत्याग्रहियों को सजा दी गई। सु० डें० से गरम चर्चा। जेलर से वहुत खुलासेवार व साफ वातचीत।

चर्खा। ज्यादा काता। गर्मी वहुत ज्यादा पड़ी।

कड़ी वैरक वाले ४३ सत्याग्रहियों के पांव में डवल वेड़ी डाली गई। जेलर के व्यवहार व वर्ताव से असंतोप रहा।

४-९-३२

(गणेश चतुर्थी)

चर्खा। जेलर ने आज से पानी वंद किया।

कड़ी वैरक में मंगूभाई आदि से वातचीत। उन्हें सांत्वना व उत्साह दिया। दवाखाने में जोशी को देखा।

मणिभाई से जेल की वर्तमान परिस्थिति पर चर्चा-विचार।

भोजन। विश्राम। मणिभाई व गुलजारीलाल के साथ चर्चा-विचार, जेलर तथा कड़ी वैरक के संवंध में।

जेलर आ गये। ईश्वरलाल के नाते थोड़ी वात कर गये।

सु० डें० को पत्र भेजा। वह मिलने आये। उनसे खुलासा व सव परिस्थिति समझाकर व साफतौर से कही।

गणेश चतुर्थी का चन्द्रमा, सु० डें०, मणिभाई, पुरुषोत्तमभाई, गुलजारीलाल व मैंने देखा, विनोद।

५-९-३२

मणिभाई से वोलचाल।

कड़ी बैरक में मित्रों से बातचीत। उत्साह रखने को कहा।
आज जेलर ४॥ बजे आया, सुना। वह आज गरम था। उसने बड़ी बैरक आदि जगह में जाने से रोका। आज से शिस्त के नाम से कड़ा व्यवहार शुरू हुआ। जाने-आने में रुकावट पैदा हुई। चक्की में आखिरी में सिपाही के साथ जाना हुआ। जेलर पीछे से वहां आया। बाद में कड़ी बैरक में तो वह भी मौजूद थे। उनकी उपस्थिति में मंगूभई आदि से मिलना। मामूली शिस्त की बातचीत। इंसपेक्शन। सु० डें० ने बहुत बातें कीं। सजा के बारे में।
आज का दृश्य जीवन में (जेल जीवन में) अनोखा था। मेरी पूज्य मां, गुलाब व मंगू का पेट भरकर अपमान हुआ। सु० डें० में शैतान का प्रवेश ठीकतौर से देखा।

६-९-३२

कड़ी बैरक में जेलर की रुकावट तो थी, परन्तु भूल से आज किसी ने रोका नहीं। मंगूभाई आदि से मिलाप, उत्साह, शांति की चर्चा तथा सत्याग्रह के नियम की थोड़ी चर्चा।
दवाखाना जाने में अटकाये गये। बाद में बीमार जोशी के पास बहुत देरतक बैठा। बातें कीं। उसकी परिस्थिति जानी। उसका हृदय हलका हुआ, उसे सान्त्वना दी। मुन्शीजी बीमार पड़े, हनुमान ठीक था। सूबेदार ने जाने-आने के बारे में जेलर का कहना सुनाया, उसे कहना था सो कहा। जेलर आया। १०॥ बजे तक बैठा रहा। उसे खूब व साफ-तौर से कहा।
सु० डें० ने मणिभाई व पुरुषोत्तम से बातें कीं। मैं नहीं गया, ठीक हुआ। रात में मणिभाई ने सब हाल समझाकर कहा। उसके बाद भी पत्र भेज देना ही उचित मालूम हुआ। मसविदा तैयार हुआ, कल भेजने का निश्चय।

७-९-३२

आज भी बाहर आने-जाने की सख्त मुमानियत थी। अपनी हद में ही थोड़ा घूम-फिर कर व्यायाम कर लिया।

सु० डें० को अफिसियल पत्र भेजा। सोमवार व आजतक की घटनाओं का सारांश व उनके स्वभाव के वारे में विरोध व अपनी (मेरी) परिस्थिति का पूरा परिचय कराया। जेलर वहुत देरतक वातें करते रहे।
भोजन। आराम। विचार-विनिमय, जहांतक पूरी सजा नहीं मिलती वहां तक मानसिक असंतोष।
सुवह की प्रार्थना के वाद सत्याग्रह की तैयारी, समवुद्धि, मन को मजवूत वनाये रखो, व शारीरिक कमजोरी निकालने आदि की प्रार्थना।
चर्खा। मित्रों से चर्चा, विचार। रानडे की वही में से वोध-वचन पढ़े।

८-९-३२

उत्तम विचार। जेल अधिकारियों के साथ लड़ाई का सव मामला सम्मान के साथ निपटाना चाहिए। वे भविष्य में विश्वास दिलावें तो अपनी ओर से तैयारी। मन हलका हुआ। चर्खा।
रात में कोई वीमार के कराहने की आवाज से नींद में खलल।
चर्खा। जेलर की स्थिति पर मन में थोड़ा विचार रहा जिससे मन अस्वस्थ रहा। मणिभाई, पुरुषोत्तमभाई ने वहुत देरतक सु० डें० से वातचीत की। सारांश सुनाया, मन को संतोष नहीं हुआ।
जेलर की वातचीत पर थोड़ा विचार आया। वाद में दूसरी वार जेलर आया और वैठा। उसकी भूल स्पष्ट करके वतलाने का प्रयत्न।
प्रार्थना के वाद जल्दी सो गया।

९-९-३२

चर्खा, घूमना, व्यायाम।
जेलर से गुलजारीलाल की वातचीत, विचार-विनिमय।
मणिभाई व जेलर आकर सु० डें० कंट्राक्टर के पास ले गये। करीव साढ़े-तीन घंटे से ज्यादा वहां वैठना पड़ा व सव परिस्थिति देखते रहना पड़ा। आखिर एक प्रकार से मणिभाई ने वर्तमान परिस्थिति का अंत पूरा कराया। दो वजे वाद भोजन। सीतारामजी शास्त्री भूखे रहे। मित्रों से वातचीत। जेलर आये। प्रार्थना के वाद, पुरुषोत्तमभाई, गुलजारीलाल, आनन्दी,

मवोलकर से पहले जेल के संबंध की थोड़ी चर्चा। 'सत्य' से व्यावहारिक फायदे भी वहुत हैं, इस पर सुंदर विचार-विनिमय।

१०-९-३२

घूमते समय दीपचन्दजी व हुकमीचन्दजी से वातचीत। हुकमीचन्दजी ने अपनी गोद की माता जडाववाई के वारे में वातें कीं। विधवा-विवाह की पुष्टि की वातें की।

मणिभाई व जेलर की वातों से समझौता पार पड़ने की आशा कम मालूम हुई।

विनोवा जिसमें रहे थे उस रूम में मि० भिड़े, डि० म० जेलर के साथ आये। उस समय गुलजारीलाल के साथ फलाहार व वातें हो रही थीं। उनके वहुत आग्रह पर, मुझे सु० डें० को जो पत्र भेजा था, उसकी नकल वतानी पड़ी। जेल के वारे में ज्यादा वातें नहीं कीं।

सु० डें० सा० वहुत गरम हो गए। तीन महीने सालिटरी कनफाइनमेंट (एकांतवास), प्रिविलेज वन्द करने की सजा दी। चर्खा भी ले लिया। जीवन में नया अनुभव मिलना शुरू हुआ। सजा शुरू हुई।

शाम की प्रार्थना अकेले की। चारों खोली व वी-वर्ग का कोठा सव खाली हुआ।

११-९-३२

भजन। घूमना। चर्खा नहीं। वजन लिया। १६५ रत्तल हुआ। जेलर मिल गये; मैं आनंद में हूं, कहा।

मेरे पास केवल तुलसी-रामायण, गीताई व आश्रम-भजनावली रखी थी। चर्खे के विना सुनसान मालूम देने लगा। भजन, घूमने, खाने एवं सोने में विशेष समय विताया। मन की शांति भी ठीक। संतोषकारक अनुभव मिल रहा था, परमात्मा की प्रार्थना व स्मरण ठीक तरह से होता जा रहा था। झाड़ों व पक्षियों की ओर भी ठीक से देखा करता था।

शाम को भी प्रार्थना, भजन वाहर वैठकर की। खूब शांति मालूम हुई। रात संतोष व शांति से गई।

विनोबा जन्मदिन (तारीख के हिसाब से) है; ३८वां वर्ष शुरू हुआ।

१२-९-३२

भजन व घूमना।

सु० डें० इंसपेक्शन। उसकी इच्छा समझौते की मालूम हुई। साढ़े तीन घंटे की बातचीत व थोड़ी गरमी के बाद संतोषकारक समझौता हुआ। वापस अपनी कोठरी में जाना पड़ा। एकांतवास का ज्यादा दिन अनुभव नहीं मिला।

चर्खा मिला। काता।

मणिभाई व मैं कड़ी बैरक में गये। वहां के भाइयों से, खासकर मंगूभाई से, मिलकर सुख मिला।

१३-९-३२

दवाखाना—जोशी, देव, बावदे, मुंशीजी से मिला।

नागपुर-केस की गवाही—हरिकिशन, नाथूलाल खंडेलवाल, केसरीचन्द सौभाग्यमल, मदनगोपाल, देवकरण की पढ़ी व वापस की।

नवनीत, वाग्भट थोड़ा पढ़ा।

शाम को हुकमीचन्दजी, दीपचन्दजी, कांतिलाल, चतुर्भुज आदि से सामाजिक-सुधार की चर्चा। प्रश्नों के उत्तर।

मणिभाई व खण्डूभाई ने 'बाजार बहुत तेज' कर दिया। बहुत ज्यादा आशा के बाद समझौते के बारे में पुरुषोत्तमभाई बिलकुल निराशा रखते हैं। मुझे व गुलजारीलाल को लगता है, शायद इस समय कुछ हो।

आज आलस्य व सुस्ती मालूम हुई, सुबह व्यायाम कम हुआ।

सवेरे पेट भारी होने के कारण स्वप्न आते रहे, निद्रा कम।

बाल-विधवा-विवाह पर रात में खूब, अपने-आप विचार आते रहे।

१४-९-३२

(चन्द्रग्रहण)

४।७ प्रा० चर्खा।

आज से पानी का काम फिर से चालू हुआ, ६० + २० डोल खींचे। हुकमीचन्द-

जी, देवचन्द, कांती, साठे, मंगूभाई, शंकर भाऊ से अस्पताल में मिले। गुलजारीलाल के पास उर्दू सीखना शुरू किया।

भोजन। आराम के समय मणिभाई व गुलजारीलाल की घबराहट। आवाज सुनी। बात करने पर बताया कि बापू ता० २० से आमरण उपवास करेंगे। इस खबर से गुलजारीलाल तो एकदम जोर-जोर से रोने लगे। मेरे मन में थोड़ा विचार आया। बाद में सब मित्रों को समझाया।

बापू के अनशन का निश्चय। बापू-मैंकडानल्ड १८ अगस्त, पत्र; मेकडानल्ड—बापू ८ सितम्बर, पत्र; बापू-होर (तार) ११ मार्च; होर-बापू १३ अप्रैल, पत्र; बापू-मैंकडानल्ड ९ सितम्बर, तार; पढ़े। आज से शाम को भी पानी निकालना शुरू हुआ। नया बौंरा (डिब्बा) मिला। रात में १२-४० से २-२० तक ग्रहण देखा। खग्रास था। उस समय चर्खा काता।

१५-९-३२

पानी ५०+१७ डोल खींचा। डिब्बा बड़ा होने के कारण पानी खींचने में काफी जोर आने लाग, पचास डिब्बे में थकावट हुई।

गुलजारीलाल से उर्दू के दस अक्षर सीखे। बापू की आज-कल में छूटने की अफवाह। पानी निकालने में दो बज गये। १७ डिब्बे निकाले।

बापू की छूटने आदि की खबरें पढ़ीं। यहां धुलिया में भी आज कलेक्टर सभा करने वाले हैं, ऐसा सुना।

चि० कृष्ण गांधी आया। जेलर ने बुलाया—राजीखुशी की बातें। पार्वती का लड़का इन्द्र भाग गया। जानकर थोड़ी चिंता हुई।

आज भी थोड़ी सुस्ती मालूम देती थी। मन में कुछ चिंता का कारण भी हो सकता है।

१६-९-३२

चर्खा। पानी ५०। आज भी दस्त बराबर नहीं हुआ। सुबह केले नहीं खाये।

उर्दू शिक्षण। भोजन। विश्राम।
चर्खा। लक्ष्मण शास्त्री (वाई वालों) से ठीक वातचीत व परिचय हुआ।
नवनीत में से संतों का समय–काल देखा।
मित्रों ने कहा वापू आज नहीं तो कल छूट जाने वाले हैं।
ईश्वर-भक्ति अंक देखा, दवाखाना में बीमारों को देखा।
प्रार्थना करके जल्दी ही सो गया।

१७-९-३२

४।७ प्रा०। चर्खा। पानी ५०। उर्दू सीखा। भोजन।
१२-१॥ तक ईश्वरांक (रानडे ने पढ़ा)। चर्खा ठीक काता। रानडे, देव, चन्द्रराय से बातें। खासकर चन्द्रराय को अस्पृश्यता निवारण व वापू के उपवास के कारण वर्तमान परिस्थिति में उसका क्या धर्म है, समझाकर कहा।
दवाखाना। आज सु० डें० ने साखरलाल को बुलाकर फिर चौकसी शुरू की। गुलजारीलाल से बातें।

१८-९-३२

स्वास्थ्य–पथ-प्रदर्शक पढ़ा। पानी २५।
उर्दू शिक्षण। भोजन। अस्पृश्यता का प्रश्न। वाराकोठे के लोगों को पानी की तकरार के वारे में उन्हें समझाया। आज नासिक सत्याग्रह के १० अस्पृश्य, अपील में छूटने के कारण, यहां से गये। उन्हें गीताई दी।
डा० कंट्राक्टर के पिता, स्त्री, वहन, भाई आदि आये। कंट्राक्टर के श्वसुर भी आये। छोटूलाल माकड़ से वातें।
शाम को उर्दू का थोड़ा अभ्यास।
चतुर्भुज के हाथ से दूध गिर गया। उसे समझाया।
गुलजारीलाल से अस्पृश्यता-निवारण संबंधी वातें।

१९-९-३२

४।७ प्रा०। हिस्ट्री-टिकिट में से नोट किया। पानी ५०। उर्दू शिक्षण, इंसपेक्शन। लक्ष्मण शास्त्री को नासिक का राम मंदिर खुला करने के

विचार समझाकर कहे। देव, चन्द्रराय व मंगूभाई से बातचीत, उनके घर की स्थिति, खासकर प्रथम स्त्री के बारे में।

उर्दू। चर्खा। नादिरशा कंट्राक्टर से बातचीत, नोट किया।

सीरसी (कर्नाटक) 'मरी कंवा' देवी का मंदिर खुलने का तार मिला—ट्रस्टियों की ओर से।

देशपांडे, फौजदार को उपवास न करने को कहा।

रात में स्वप्न में श्री सरोजिनी नायडू व पद्मजा का विचार ज्यादा आया।

२०-९-३२

बापू का उपवास शुरू। २४ घंटे का उपवास—सार्वजनिक प्रार्थना हुई। भजन। मंदिर-प्रवेश के पत्र लिखे। पानी ६० डोल।

गुलजारीलाल से विनोदात्मक चर्चा, उसमें भी मन की सत्य भावना। चतुर्भुज से बातें। उर्दू। लक्ष्मण शास्त्री (बाई वाले) आज छूटे, उन्हें दो नोट दादा सा० गर्दे व गायकवाड़ के ऊपर मंदिर व अस्पृश्य के बारे में दिये। मिठू बहन व नादिर मिल गये। चर्खा।

कड़ी बैरक में गांधीजी के लिये सार्वजनिक प्रार्थना, बहुत ही शांति, गंभीरता व भावना से हुई। श्री मणिभाई व मुंशीजी ने सुंदर प्रवचन किया।

बालकृष्ण मोरेश्वर जोशी बीमार थे। उसके पास बैठा। कल छूटने वाले चन्द्रराय व चतुर्भुज से बातें।

२१-९-३२

(बापू के उपवास का दूसरा दिन)

उर्दू लिखना। पानी १३। डोल फूट गया इससे कम निकाले।

चतुर्भुज, जेठमल (अहमदनगर), वामन, चंद्रात्रे (नासिक), बालकृष्ण मोरेश्वर जोशी (नासिक-मनमाड) आज छूटे। हनुमान काम करने लगा।

जेलर को साफ-साफ नई परिस्थिति पैदा नहीं करने को समझाकर कहा।

भोजन। विश्राम। ईश्वर-अंक। चर्खा।

जेलर के आफिस में वर्धा से आये हुए सेलडीड पर सही की। लीज व

दावा वापस विना सही के भेजने को कहा, कारण नोट में लिख दिया। शाम को मामूली व्यायाम।

२२-९-३२
(बापू के उपवास का तीसरा दिन)

'संयम की स्वैराचार' पढ़ा। पानी का डोल तैयार नहीं था, सो पानी नहीं खींचा। सर्वांग आसन की कसरत की। उर्दू। जेलर, डाक्टर, मणिभाई से वातें। असंतोष का वातावरण।

भोजन। विश्राम। चर्खा। ईश्वर-अंक। 'संयम की स्वैराचार' पढ़ा। बापू के समाचार सुने।

जेलर ने बुलाया। अस्पृश्यों के वारे में प्रश्न-उत्तर भेजा, वह वतलाया। मंगाले के वारे में पूछा। मैंने साफ कह दिया। प्रताप सेठ मिलने आये। तवीयत, महात्माजी उपवास, मिल-मजदूर आदि की वातें व भविष्य के वारे में कहा। मामूली व्यायाम।

२३-९-३२
(बापू के उपवास का चौथा दिन)

उर्दू। कब्ज रहा। पानी ६० डोल।

सु० डें० मेजर शाह को लेकर आये। जेलर ने आफिस में बुलाया।

भोजन। विश्राम। चर्खा। वाद में भालचन्द्र, हरिश्चन्द्र (हीरा) मांजरेकर। तुलसीदास वोहरा की करुणाजनक हालत जानी, उसे हिम्मत दी। कालूराम वाजोरिया वर्धा से, घनश्याम रीवोडवाले में व० कम्पनी की रकम लेनी उस वारे में, सलाह लेने आया। रामदास सवाई (मुक्ति वाला) वर्धा गया। वर्धा में हरदत्तराय जाजोदिया की मृत्यु के समाचार सुने। सम्वेदना का पत्र लिखा।

वर्धा तालुका में तीन मंदिर व हिंगनघाट में एक मंदिर खुला हुआ।

२४-९-३२
(बापू के उपवास का पांचवां दिन)

४।७ प्रा०। गांधी विचार दोहन पढ़ा। पानी ७०।

भालचन्द्र, मांजरेकर, वालक की तवीयत थोड़ी नरम थी, उससे थोड़ी बात की। पूज्य वापू ने यरवदा जेल से ता० २१।९ को मेरे व मणिभाई के नाम पत्र भेजा वह आज मिला। पढ़कर अपनी योग्यता व जवावदारी का विचार आया। परमात्मा से प्रार्थना। वापू का प्रेम।

चर्खा, ईश्वर-अंक। हनुमान नाई—वालक से वातचीत।

आज अस्पृश्यता संवंधी समझौता जल्दी होने की आशा सुनी।

वरसात ठीक हुई। दीपचन्द, पोतनीस, हुकमीचन्दजी से वातें।

२५-९-३२

(वापू के उपवास का छठा दिन)

समझौते का तार कल लंदन गया। मदनमोहन का पूना से तार भी आया, दूकान से भी तार आया।

सुवह ६ वजे व ९ वजे वजन लिया, १७० हुआ, पांच रत्तल वढ़ा। जेलर से १० वजे तक चर्चा-विवाद (पत्र, मुलाकात, वार्ता, कड़ी वैरक)।

देव, मांजरेकर, हनुमान, वंसी, रोहीदास आदि १० लड़के, अमलनेर के, आज छूटे।

चर्खा। वातें गुलजारीलाल से। ४३ सत्याग्रहियों से मुलाकात व पत्र-व्यवहार की चर्चा। आज का दिन थोड़ा उद्वेग में गया।

भालचंद्र, मांजरेकर, व श्रीकृष्णदेव व हनुमान चोथमल नाई, भुसावल वालों से ठीक परिचय, वातें।

लंदन के प्राइम मिनिस्टर की स्वीकृति की राह। रात में जल्दी सो गया, खूव नींद आई।

२६-९-३२

(वापू की प्रतिज्ञा शाम को ५-१५ वजे पूरी हुई)

४।७ प्रा०। गांधी वि० दो०। पानी ८०।

दीपचन्दजी, हनुमान के वारे में तथा हुकमीचन्दजी, चतुर्भुज के वारे में वातें की। पानी। व्यायाम ठीक हुआ। उर्दू पढ़ना। चर्खा।

वर्धा से राधाकिशन का भेजा राम-मंदिर खुलने का तार आया।

प्रीमियर ने पूना एग्रीमेंट स्वीकार किया। बंबई "श्री" का नीचे मुजब तार एक बजे का यहां १-३५ को आया: Premier Sonctions Poona Agreement.

प्रार्थना। गुलजारीलाल से बातचीत।

बापू की जन्मगांठ की चर्चा। पूना से राजाजी का तार आया—
Bapu broke fast quarter past five evening Monday. Tagore leading prayer. Ba gave juice. Mrs. Nehru and Kamla Ashram children others present—RAJA

२७-९-३२

बापूजी का जन्म-दिन (रेंटिया-बारस)

४।७ प्रा०। पूज्य बापू को पत्र लिखा। (पानी का काम कमेटी के कारण बन्द)।

जेल-कमेटी (श्री भिडे वगैरा की त्रैमासिक) आई। बापू की तबीयत, उपवास छोड़ने की बात श्री भिडे कलेक्टर को मैंने कही। अस्पृश्यता-निवारण, मंदिर वगैरा यहां खुलने चाहिए। उन्होंने उद्योग करने का स्वीकार किया।

आज बापू को ६३ वर्ष पूरे हुए और ६४वां वर्ष शुरू हुआ।

चार चर्खे व तकलियां अखंड चलीं। चार घंटे चर्खा कातना मेरे जिम्मे आया।

पूज्य बापू को आज सुबह जो पत्र लिखा था, वह आज शाम को भेज दिया गया।

गर्मी बहुत पड़ी। चने व गुड़। मणिभाई ने चन्दा शुरू किया।

बापू का स्वास्थ्य सुधर रहा है।

२८-९-३२

चर्खा सुबह। पानी ० डोल खींचा।

उर्दू पढ़ना। भोजन में चने भी खाये (प्रथम बार)।

चर्खा, दीपचन्दजी व कान्तिलाल से बातें। यशवंत (नासिकवाले) तथा पोतदीस से भी बातें। ४ से ५ चर्चा गांधी-सप्ताह में।

घूमना, बालकों से बातचीत। यशवंत मराठा लड़का (नासिक का) १७ वर्ष का, जिसका चार महीने में सत्रह रत्तल वजन बढ़ा, कल छूटेगा। गर्मी बहुत ज्यादा पड़ी।

प्रार्थना के बाद रात में ९ बजे तक गुलजारीलाल से बातचीत, विचार।

२९-९-३२

४।७ प्रार्थना। उर्दू। पानी ८५ डोल खींचा।

हुकमीचन्दजी (भुसावल वाले) व यशवंत से बातें। गुलजारीलाल थोड़ा बीमार हो गये। पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास से बातचीत, खुलासा।

मणिभाई वगैरा ने कहा 'बापू तीन तारीख के पहले छूट जावेंगे।' स्थिति आशाजनक।

चर्खा। हुकमीचन्द जी से बातें। पुरुषोत्तम बैरिस्टर से दुबारा खुलासेवार बातचीत।

दीपचन्दजी से उनके साथ उर्दू पढ़ी। बापू-सप्ताह के निमित्त ४।-५ चर्खा। पुरुषोत्तम से विनोद हो रहा था, मणिभाई का विनोद चुभानेवाला था। रात में १२ के बाद नींद कम आई।

३०-९-३२

दीपचन्दजी व देवचन्द पटेल से बातें। रामेश्वरदास मिला। बापू के जानकी के नाम के पत्र की नकल, पत्र सुंदर।

भोजन के समय थी कंट्राक्टर की स्त्री, बहिन व बहनोई आये।

सु० डें० ने कान देखा, दवा के लिए डाक्टर को कहा, अंदर छोटा जख्म है।

उर्दू। चर्खा। दीपचंदजी व हुकमीचंदजी से बातचीत।

खण्डूभाई ने खबरें सुनाई कि बातचीत चल रही है।

चर्खा, बापू-सप्ताह निमित्त। आज से कान को पट्टी लगना शुरू किया। घूमना। थोड़ा व्यायाम। जल्दी सो गया।

१-१०-३२

(नवरात्र आरंभ)

मणिभाई बात करने आये। पानी ९५ डोल खींचा।

थोड़ा दुःख हुआ, मित्रों के व्यवहार की याद आई।
हुक्मीचंदजी व दीपचंदजी (भुसावल वाले) आज छूटे, उनसे ठीक प्रेम-संबंध हो गया।
गुलजारीलालजी से उर्दू-शिक्षण ठीक हुआ।
चर्खा। मंगूभाई व शंकरभाऊ मास्तर से सामाजिक प्रश्नों के उत्तर।
जेलर आये, पूज्य बालारामजी का हरिद्वार में ता० २८-९ को (बहुत करके) देहान्त हो जाने के शोकजनक समाचार कहे।
आज समझौते की बहुत ही निराशाजनक खबर खण्डूभाई ने सुनाई, तथापि मुझे अभी आशा है।

२-१०-३२
(बापू का जन्म-दिन अंग्रेजी ता० से)

४—७ प्रार्थना। भजन नहीं। बालारामजी की मृत्यु पर पत्र लिखा। आज एक ही साथ एक सौ एक (१०१) डिब्बे पानी निकाला (डिब्बा बड़ा था)। वजन करके देखा तो १६६ हुआ, याने चार रत्तल कम हुआ। वर्धा पत्र भेजा (बालारामजी की मृत्यु के बारे में)। उर्दू पढ़ना।
मणिभाई व गुलजारीलाल की बोलचाल, दुःखदायक दृश्य (मेरी भी कमजोरी का पता लगा)।
चर्खा। देवदत्त पाटिल से बातें। बापू से बातें। बाद में ४ बजे चर्खा कातने गया। वहीं पहले कान की दवा डाली। थोड़ी देर बाद जी बहुत घबड़ाया।
गले में जलन, दवा ली, आराम, बाहर सोया। शांति मिली।
गुलजारीलाल से बातें।

३-१०-३२

गांधी-विचार-दोहन पढ़ा। उर्दू। पानी ६०।
खुशाल व बालकों से बातें।
खुशाल ने संगत के परिणाम का हाल कहा।
माधवजीभाई, खण्डूभाई, बालूभाई से बातें।

सु० डॉ० ने कान साफ किया, और कल कान की दवा अंदर गई होगी, कहा। आज कान में दूसरी दवा डाली जिससे कान साफ हो जाय।
खुशाल, पांडु, कांती से बातचीत।
चर्खा, गांधी-सप्ताह में एक घंटा।
बापू ने जानकी को जो पत्र लिखा उसका उर्दू किया।
जेलर आये, विनोबा का पत्र, तीन नियम की चर्चा। प्रतिज्ञा ली, कहा।
प्रार्थना के बाद ठीकतौर से भजन हुए।

४-१०-३२

पानी ७५।
बालकों ने गांधी-सप्ताह आज पूरा किया : भजन, प्रार्थना आदि में शामिल, प्रसाद।
यादव से थोड़ी बातें।
सीताराम शास्त्री ने आगामी बापू के जन्मदिन तक १२ मंदिर खुलवाने का निश्चय किया।
डोंगरे, त्रिम्बक आदि चार बालक आज आये (सजा लेकर)। डोंगरे को खूब लाभ।
रामेश्वरजी आये, वर्धा चि० राधाकिशन से बालारामजी के खर्च (मोसर) के बारे में पुछवाया। नारायणदासभाई (आश्रम) मिले।
यादव (खीरोदे के लड़के) ने वर्धा जाने की इच्छा बताई व अपना जीवन कहा। चर्खा। मंगूभाई व शंकरभाई ने अपना प्रश्न-उत्तर।
उर्दू का कायदा पूरा हुआ।

५-१०-३२

उर्दू की पहली किताब पढ़ी। पानी ७५।
नाटू (सांवदा-वाले लड़के) से परिचय।
चर्खा। देवचंद पाटिल, त्र्यंबक साठे (येवला), नाटू (सांवदा) से बातें।
४ केले, दूध, कान की दवा डाक्टर ने डाली।

जेलर व उनके भाई ने तीन प्रतिज्ञा की —
१. क्रोध मन में भी नहीं रखना।
२. कोई के साथ वैर लेने की वृत्ति नहीं रखना।
३. जल्दी सोना १० तक व जल्दी उठना।
पुरुषोत्तमभाई, गुलजारीलाल आदि से विनोद, चर्चा—जेलकिट के वारे में।

६-१०-३२

पानी ९०।
उर्दू। आज कोठरी की धुलाई। सफाई की। नारायण (खिरोदे वाले) से वातें। उसने भी अपनी जीवनी साफ कही। चोरी आदि संगत का परिणाम कहा।
डोंगरे को अस्पताल में देखा, थोड़ी वातें।
जेलर आये, अपने स्वभाव के वारे में वातचीत करते रहे।
चर्खा। खुशाल ने लिखकर दिया। त्र्यंवक साठे व विश्वनाथ (येवले-वालों) से सत्य के वारे में चर्चा, समझाकर कही।
फलाहार ४ केले व दूध।

७-१०-३२

पानी ९०।
दगडू, गोपाल देशपांडे से वातें।
उर्दू पढ़ी। भोजन। कंट्राक्टर की वड़ी लड़की, छोटी लड़की, लड़का व वहिन की लड़की मिलने आये।
चर्खा। खुशाल, यादव (नाचणगाव वाले) ने पट्टी लिखकर वताई। मणिभाई से वोलना व उन्हें न जाने को समझाया।
गुलजारीलाल से उर्दू पढ़ी।
पुरुषोत्तम त्रिकमजी से वालकों में हस्तमैथुन आदि दोष पड़ने के व उसे दूर करने के वारे में चर्चा-विचार। यूरोप आदि देश का हाल उन्होंने वताया।

८-१०-३२

'संयम की स्वैराचार' पुस्तक पढ़ी। पानी ९०।

साटें, विश्वनाथ, खिरोदे के चार जने, नंदुरबार आज छूटे। नाचणगांववाले की जीवन घटना—अमलनेर नाटक कंपनी (वर्तक) संबंधी—सुनकर मन गरम हुआ, थोड़ी देर बाद शांति मिली।

उर्दू गुलजारीलाल से।

फलाहार। शाम को लड़कों से विनोद, मस्तक व्यायाम का खेल सिखाया। प्रार्थना के बाद पुरुषोत्तमभाई व गुलजारीलाल से कार्यकर्त्ताओं विषयक चर्चा, विचार।

९-१०-३२

(विजयादशमी)

वजन २०५—३५—२ (१६८)

'संयम की स्वैराचार' पढ़ा। पानी ९०।

सुक्का, डोंगरे, तुकाराम व कांती से बातें।

वजन १६८ रत्तल हुआ, दो रत्तल कम हुआ।

हस्त-दोष आदि पर गुलजारीलालजी ने अपने विचार लिखे, वे पढ़े।

१२ से १ तक बालकों से सत्य के बारे में विचार-विनिमय।

देशपांडे, फौजदार व तुकाराम, वाणी मास्तर व गिरधर सवाई (मुक्ति वाले) से बातें, चर्खा।

बालकों से विनोद।

उर्दू नहीं पढ़ी। गुलजारीलाल व मित्रों से चर्चा, विचार-विनिमय।

१०-१०-३२

'संयम की स्वैराचार' पढ़ा। पानी ९०।

गंगाधर बाबू, सूर्यकांत, पांडे आदि लड़के कोठे में। पानी वालों का निश्चय। शिवराम मांग से बातें। गुलजारीलाल से बातें, बाद में उर्दू। माधवजी व खण्डूभाई से विचार-विनिमय।

एकादशी का फलाहार। चर्खा।

काशीनाथ लड़का (उद्योग मंदिर साबरमती), मगूगाऊ व फड़के से बातचीत।

चिम्मन आया। खिरोदेवाले से आश्रम का हाल जाना।
उर्दू। बालकों से थोड़ा विनोद।
जेलर, आडिटर वगैरा से बातें। मामूली नित्यकार्य।

११-१०-३२

'संयम की स्वैराचार' पूरा हुआ। चैतन्य-गाथा शुरु किया। पानी ९०। डोंगरे, त्रिंवक से दवाखाना में, सूर्यकांत से घूमते हुए बातें। उर्दू पढ़ना। धूप (गर्मी) बहुत ज्यादा पड़ रही थी।
विश्राम के बाद कांतीलाल (अमलनेरवाले) व चिम्मन मामा से बातचीत-चर्चा। फतेचंद, गंगाविशन, मदनमोहन मिलने आये। कागजों पर सही, शेयर डीड आदि।
रात में ८ से ९ तक उर्दू पढ़ी।

१२-१०-३२

प्रार्थना, कागजात पढ़े, छांटे व वापस किये। पानी ९०।
म० मो० से सुपरिंटेंडेंट की मामूली बात। भोजन के बाद भी उर्दू पढ़ना। गुलजारीलाल से बातचीत। चर्खा।
आराम के बाद कागज-पत्र सही करके मदनमोहन को वापस दिये। वह बंबई गया। उसने सीवनी जेल, बापू के पास बिताये आठ दिन आदि के हाल कहे।

१३-१०-३२

प्रार्थना। चैतन्य-गाथा तथा बापट का 'ब्रह्मचर्य जीवन' पढ़ा। पानी ९० डोल खींचा।
डोंगरे, गंगाधर, सेतान, त्र्यंबक (बाल) मुधोलकर छूटे। उन्होंने अपने हाथ का बनाया हुआ कलमदान दिया। उर्दू-अभ्यास।
चर्खा, कृष्णदास (टि०) से उनके भविष्य कार्य के बारे में विचार-विनिमय। सेतान सोनार ने कई आश्चर्यकारक बातें कहीं।
फलाहार किया।
बापू का ता० १०-१० का यरवदा जेल से लिखा हुआ पत्र जेलर ने साढ़े तीन बजे आज दिया।

१४-१०-३२

प्रार्थना। 'ब्रह्मचर्य हेंच जीवन' पढ़ा। पानी ९० डोल खींचा।

नई चप्पल पहनने को निकाली।

उर्दू। 'ब्रह्मचर्य हेंच जीवन—वीर्यनाश हा च मृत्यु', पढ़ा।

चर्चा। देशपांडे व फौजदार से भविष्य-जीवन व अस्पृश्यता-कार्य संबंधी चर्चा।

जेलर कल काठियावाड़ को जानेवाले हैं इस कारण बहुत-सी बातों का खुलासा। शरदपूर्णिमा—१॥ बजे बाद नींद नहीं आई।

१५-१०-३२

'ब्रह्मचर्य हेंच जीवन—वीर्यनाश हा च मृत्यु' पढ़ा। पानी ९० डोल। डोंगरे की दिनचर्या सुनी। जेलर पानी खींचने की जगह आकर मिल गये।

गुलजारीलालजी से उनके बच्चों के शिक्षण-संबंधी तथा अन्य विचार-विनिमय। सुबह व शाम को भी उनकी बहन के बारे में बातें।

चर्चा। काशीनाथ व त्र्यंबक लड़के से बातचीत। आज शाम को आधी रोटी खानी शुरू की।

कपास आदि की व्यवस्था। रात में करीब १। घंटे उर्दू पढ़ी।

१६-१०-३२

पानी ९०।

वजन १६६ हुआ। एक सप्ताह में दो रत्तल कम हुआ।

बालकों के साथ तीन घंटे सत्य-आचरण पर ठीक विचार-विनिमय किया।

सु० डें० की बीच की लड़की 'गुल' मिलने आई। विनोदी मालूम हुई।

मित्रों की गैरसमझ का खुलासा। माधवजीभाई को पंच मुकर्रर किया।

सक्कर मिल की खबर।

उर्दू पहली पुस्तक आज पूरी हुई।

१७-१०-३२

पानी ९०। पानी निकालने के बाद थोड़ी उर्दू।

मुरारभाई से वातें। कंट्राक्टर की वड़ी लड़की मिलने आई। चर्खा।
मुरार (घोंडामचेवाले) व पटवर्धन डाक्टर (अमलनेर वालों) से वातें की।
माधवजीभाई से वातें। मुझे वातचीत में सुधार करने की आवश्यकता।
सक्कर मिल के कागजात पर थोड़ा विचार-विनिमय।
वालकों से वातें। गुलजारीलाल से ठीकतौर से वातचीत—आगे के जीवन के संबंध में।

१८-१०-३२

पानी ९०।
पुंडलीक, जयराम (नांदेड़) के लड़के ने अपनी करुणाजनक हालत कही। सक्कर मिल आदि के कागज छांटे।
गुलजारीलाल व माधोजीभाई से वातें।
खण्डूभाई को टैगोर का पत्र सुनाया। लखनऊ की रिपोर्ट कही। संतोष।
चर्खा। आश्रम समाचार से समाचार नोट किये।
फतेहचंद वंवई से आया। सक्कर मिल के वारे में वोर्ड ने मेरी राय पूछी, वह कही।
वर्धा-समाचार पढ़े।
रात में वहुत जोरों की वारिश हुई।

१९-१०-३२

पानी ९०।
डोंगरे ने अपना हाल कहा, उसे हिम्मत व उत्साह दिलाया।
श्री कंट्राक्टर की छोटी लड़की से थोड़ी वातचीत। चर्खा।
रानडे, खुशाल व काशीनाथ से वातचीत।
शाम का भोजन करके लड़कों के साथ ठीक खेलकूद हुआ।
आज से उर्दू की दूसरी किताव शुरू की गई।
गुलजारीलाल ने अपने मित्र का ठीकतौर से परिचय कराया।

२०-१०-३२

पानी ९०। विनोबा के बोध वचन।

आज खांसी मालूम देने लगी। स्नान के बाद गरम पानी में गुड़ व निंबू पिया। उर्दू पढ़ी। भोजन थोड़ा कम किया।

सु० कंट्राक्टर ने गले में दवा लगाई व खाने की दवा ४-५ रोज लेने को कहा। गांव में इंफ्लुएंजा का जोर रहा।

तुलसी व चीनी घास की चाय, दूध में सोंठ डालकर गुलजारीलाल ने बताई, वह पी। शाम का भोजन बंद। पीछे रात को गरम पानी व घास की चाय पी।

पुरुषोत्तम त्रिकमदास की स्त्री से हिन्दू महिला मंडल, अस्पृश्यता-निवारण आदि के बारे में बातचीत।

२१-१०-३२

पानी ९०। कान में टी० बी० की चर्चा।

रात में खांसी थी। स्नान। दवा। उर्दू पढ़ी। मदनमोहन व धोत्रे आये, कान के बारे में डा० मोदी का अभिप्राय लाये। थोड़ा विचार।

कंट्राक्टर ने समझाकर कहा—अगर हड्डी में छेद होता तो टी० बी० का चिह्न समझा जाता। यह छेद टी० बी० का नहीं है।

मदनमोहन और धोत्रे को समझाकर कह दिया।

आज शाम को भोजन नहीं किया, केवल गरम दूध व थोड़ा साग लिया।

आज दोपहर को गुलजारीलाल व खंडूभाई से बहुत देरतक बातचीत।

आज जेल में प्रथम बार गले व सिर को तेल की मालिश करवाई, गंगाराम से, गुलजारीलाल के आग्रह से।

मणिभाई आज शाम से प्रार्थना में शामिल होने लगे।

२२-१०-३२

कान के लिए ट्रान्सफर का प्रयत्न नहीं करना। पानी ९०।

तुकाराम मास्तर, कृष्णराव, डा० पटवर्धन, सेतान, बुवा, गोखले (नासिकवाले) आदि दस जने आज छूटे।

धूप में बैठना और सांस लंबा लेने का प्रयोग किया। आज से दाल बंद, केले भी नहीं लिये, गुड़, नींबू भी नहीं।
गुलजारीलाल से बातें। चर्खा। ता० ३० को प्रयाग में कांफ्रेंस की बात आई।
आज से शाम को वापस पपीता शुरू हुआ।

२३-१०-३२

वाग्भट देखा। पानी नहीं खींचा।
स्वास्थ्य थोड़ा नरम मालूम दिया। पूरा उपवास किया। नामा व काशी-नाथ (येवले वाले) से बातें।
वजन १६८ हुआ। आज गरम पानी बहुत पिया। पेशाब भी कई बार जाना पड़ा।
गुलजारीलाल, माधवजीभाई, खण्डूभाई आदि से मेरे खानपान में दूध बढ़ाने के बारे में (इन दो के आग्रह से) चर्चा खूब हुई, बाद में आपस के संबंध में चर्चा।
चर्खा। रात में ९ बजे सोया।

२४-१०-३२

आज पानी नहीं निकाला।
सुबह करीब ६ बजे पपीता व थोड़ा ओलिव-आईल लिया।
घूम कर आये। खुशाल व मुरलीधर (येवले वालों) से बातें।
गलीचा व सतरंजी देखी, अच्छी बनाई थी। लड़कों को कल शाम को आवाज करने के बारे में खूब समझाया, खीझ कर भी कहा।
इंसपेक्शन हुआ। सु० डें० ने कहा कि डाइट का फैसला बंबई से वापस लौट कर, ता० २८-२९ को करूंगा।
चर्खा। आज कल का व आज का मिलाकर तीन रत्तल दूध व पपीते खाये, साग भी। कच्चा प्याज खाया, उससे रात भर मुंह में बास रही।
राजाराम पहलवान को समझाया।
गुलजारीलाल ने डाइट का स्केल बनाया।

२५-१०-३२

आज भी पानी नहीं खींचा।

बाबू (नाचनगांव वाला), व ओंकार से बातें। आज एकादशी है।

चौंदश मीक्का (आसोदे वाला) आज जेल में वापस आया कमजोर होकर। जेलर व गुलबाई, कंट्राक्टर सा० की लड़की, आये। बैठे, विनोद, चर्चा। चर्खा। चौंदश, यादव, मंगूभाई, खण्डूभाई, माधवजीभाई से बातें। गुलजारीलाल ने आंख का इंजेक्शन लिया——उन्हें तकलीफ रही। देशपांडे व फौजदार ने अपना पुलिस का अनुभव कहा। भजन।

२६-१०-३२

याद का घंटा सुनाई नहीं पड़ा।

तीन बजे का सुना था। पानी नहीं खींचा।

गुलजारीलाल के पास, देशपांडे व फौजदार से चर्चा। माधवजीभाई से ठीक बातें ।

दांडेकर छूट गया।

वजन कर देखा, १६३ हुआ । जेलर से खादी, चर्खा, गेहूं, मुलाकात, चौंदश आदि के बारे में बातें।

ता० २३-१० को जलगांव में श्री रामगोपालजी के मालकी के दो कुवें व एक महादेव का मंदिर हरिजनों के लिए खुला है।

हिंगनघाट में राधाकिशन ने ३५ कुवें व १० मंदिर खुले करवाये।

रात में देशपांडे व फड़के ने भजन सुंदर गाये।

२७-१०-३२

पानी २० डोल खींचा।

देशपांडे, फौजदार व फड़के से बातचीत। हल्दी-तुलसी का दूध लिया। जेल-आफिस में खादी की कीमत २९ इंच पने (डबल) की साढ़े चार आना वार और सूत सात आना रत्तल नक्की हुआ।

शालिग्रामजी, रामेश्वर, वासू काका, रामनारायणजी चौधरी के पत्र। चर्खा। पोतनीस व फड़के से बातें।

शाम को गेहूं का प्रयोग।
राजपूताना वाले देशपांडे से आफिस में मिला।
शाम को विनोद, गायन आदि।
अर्जुनलाल सेठी ने अपना नाम गाजी अब्दुल रहमान रखा।

२८-१०-३२

दत्तात्रेय पोतनीस, फडके, देशपांडे से बातें। वह आज छूटे।
गोला गोकर्णनाथ से केशवदेवजी को नोटिस बरेली कलेक्टर को देने के लिए पत्र का मसौदा श्री गोपेश्वरबाबू मेहरा (बरेली वकील) के मार्फत भेजा। उसमें पुरुषोत्तमभाई ने थोड़ा फेर किया।
चर्खा, एक से दो तक कताई का मुकाबला। एक घंटे में ३३० तार याने ४८० बार मैंने काता। प्रथम नंबर आया।
कमलनयन के बारे में बरेली के कलेक्टर को नोटिस, जेल के मार्फत, भेजा।

२९-१०-३२
(दीपावलि)

पानी ६०।
यादव, दगडू, कुलकर्णी आज छूटे। यादव के साथ बहुत ही प्रेम, मोह व कुटुंबी भाव हो गया था। वह जाते समय रोया, मुझे भी बुरा लगा।
'ब्रह्मचर्य व वीर्यनाश' में से कुछ लिखा। चर्खा, मित्रों से बातचीत।
गेहूं का दलिया, दूध, पपीता, एक केला व चाय ली। गुलजारीलाल बड़े प्रेम से गेहूं का प्रयोग कर रहे हैं।
कृष्णदास व बायदे से बातचीत, विचार-विनिमय।
दीपावली। जेलर अपने रंग में थे।

३०-१०-३२

पानी ६०।
कांती से पुत्रवत् संबंध की चर्चा।
वजन १६४ रत्तल हुआ।
गुलजारीलालजी ने शीरा आलिव-आइल में बनाकर खिलाया।
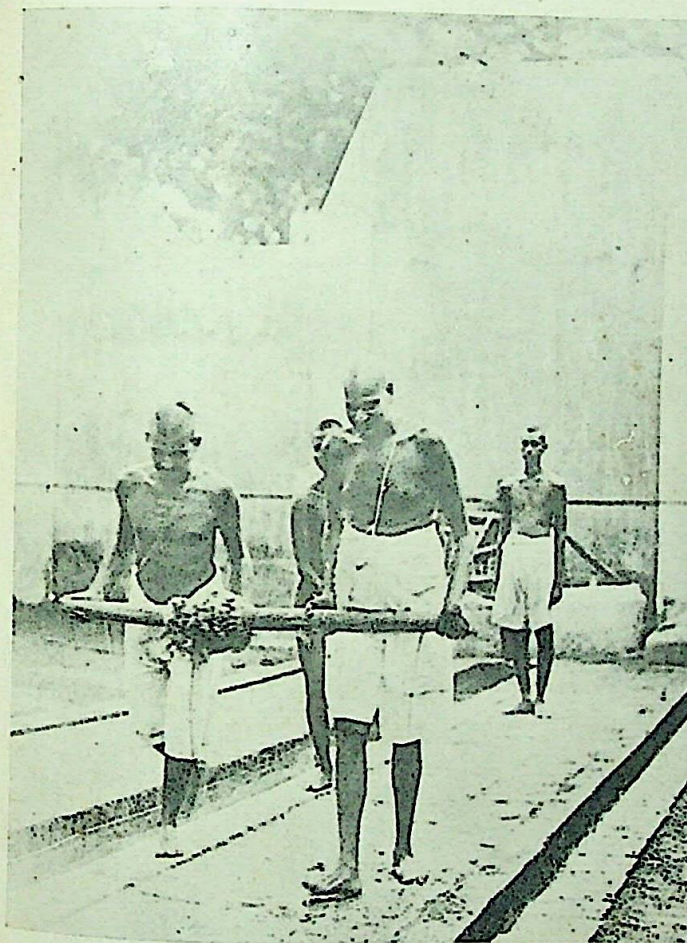
श्री जमनालाल बजाज : धुलिया जेल में साथी कैदियों के साथ
पानी खींचते हुए

भोजन। विश्रांति, चर्खा। चि० कांतीलाल (अमलनेरवाले) के प्रश्नों का खुलासा व निश्चय। मन को समाधान हुआ।

शाम को नंदाजी ने दूध फाड़कर चार चीजें व चार दूसरी ऐसी आठ चीजें बनाई। खाई।

द्वारकादास भइया मिले। बहनों के वार्ड में जेलर ले गये।

३१-१०-३२
(भ्रातृ द्वितीया)

पानी ६०।

फांसी के कैदी को देखा। उसे घूमने-फिरने के लिए कहा।

आज से नई दिनचर्या शुरू की।

इंसपेक्शन। कंट्राक्टर सुपरिंटेंडेंट, श्री भिड़े कलेक्टर, श्री दामले (फर्ग्युसन कालेज वाले) आये। सुपरिंटेंडेंट ने कानटोपी व पीकदानी की परवानगी दी। सुपरिंटेंडेंट व जेलर फिर से आये। कल से दूध दो रत्तल, व बटर (लोणी) अपने खर्च से लेने का नक्की हुआ।

चर्खा। फादर एलविन के बारे में विचार किया। शाम के भोजन के बाद पढ़ा। बहनों के वहां शालिगरामजी, रतन बहन व रुक्मणी से बातें।

१-११-३२

कांती से बातें। सूर्यकांत आज छूट गया।

माधवजीभाई व खंडूभाई से आपसी कठिनाई की थोड़ी चर्चा की।

आज से दूध दो रत्तल व मक्खन एक औंस शुरू हुआ। जेल में प्रथम बार आज मक्खन खाया। चर्खा।

जेलर आये बातें। रेमीशन के नियम।

पानी ६० डोल खींचा।

२-११-३२

अस्पताल में बुवा, ओंकार व पुंडलीक को देखा। नाश्ता। उर्दू पढ़ी। भोजन के समय महंतजी से विनोद। आज भैंस के दूध का थोड़ा दही लिया।

आराम। 'ब्रह्मचर्य हेंच जीवन' (प्रथम भाग) के नियम लिखे। चर्खा। दानी (येवलेवालों से) से बातचीत, परिचय।
गुलजारीलाल से बातें। घूमना।
पूज्य बापू का तार यरवदा मंदिर से मेरे स्वास्थ्य के बारे में आया, उसका जवाब तैयार किया। बाद में उर्दू पढ़ी।

३-११-३२

पानी ६० डोल खींचा।
ठंड ठीक पड़ने लगी। डोंगरे व कांती से बातें। उर्दू पढ़ी।
पूज्य बापू को, उनके कल स्वास्थ्य के बारे में आये तार का जवाब, खुलासेवार सुपरिंटेंडेंट से विचार करके व कुछ फेरफार करके भेज दिया गया। तार भेजने के बाद सुपरिंटेंडेंट ने डा० मोदी का जो अभिप्राय आया था, वह मुझे बतलाया व दिया।
चर्खा, कोल्हटकर से बातचीत। स्नान।
शाम का भोजन। कान की दवा। घूमना। पीकदानी आई।
शाम को सुस्ती मालूम हुई, जल्दी सोया।

४-११-३२
(जन्मदिन : अंग्रेजी तिथि से)

पानी ६०।
बापू के पत्र का मसौदा बनाया।
बाद में बापूजी को सविस्तार पत्र लिखा। जेलर को पढ़कर सुनाया। उसी समय पूज्य बापूजी का ता० २-११ का लिखा हुआ दूसरा पत्र मेरे नाम का मिला। बाद में उस पत्र का जवाब भी पत्र में बढ़ाया। नकल वगैरा २॥ बजे तक की। आज बापू के पत्र का ही काम हुआ। साढ़े पांच घंटे लगे। चर्खा।
जेलर ने कहा बापू का पत्र गया। बाद में कहलाया सुपरिंटेंडेंट ने सही तो किया परंतु कल भेजेगा।
गुलजारीलाल, गंगाराम से बातें।

५-११-३२

पानी ६० डोल खींचा।

विनोबा के वचन पढ़े।

कांती से वातें। गंगाराम सोमवार आज छूट गया।

उर्दू। वापू को लिखे पत्र के वारे में सुपरिंटेंडेंट से वातें। उसके व्यवहार से दुःख हुआ। उसका व्यवहार वहुत ही अपमानकारक मालूम दिया। आराम। वाद में जेलर के कहने से फेरफार करके दूसरा पत्र लिखकर दिया। मन में विचार आता रहा।

भाई एलविन की मनःस्थिति जानकर खूव विचार आया। ईश्वर मेरा इनका संवंध कायम रखे, यह प्रार्थना की।

६-११-३२

भाई एलविन प्रार्थना में। पानी ६० डोल खींचा।

डोंगरे आदि वालकों से वातें। वजन १६६ हुआ।

सुपरिंटेंडेंट ने कल शनिवार को कहा था कि तुमको मैं खाने-पीने आदि जो अधिक देता हूं वह आवश्यकता से ज्यादा है। उस वारे में भी मित्रों से विचार-विनिमय होने पर उन्हें पत्र लिखकर भेजने का निश्चय हुआ। उसके अनुसार मसौदा तैयार किया। आज वहुत-सा समय इसी में गया। वच्चों से ९ से १० वातचीत। प्रार्थना। 'व्रह्मचर्य' आदि पर अंश पढ़े।

७-११-३२

आज पानी नहीं खींचा गया, कारण कि खींचने का लकड़ा निकल गया था। काम वंद रहा। प्रार्थना के वाद सु० डें० का मसविदा देखा। ठीक था। सुपरिंटेंडेंट का इंसपेक्शन हुआ। भोजन के वाद उन्हें लिखित पत्र स्वास्थ्य, खुराक व शनिवार की घटना के संवंध में भेजा।

डाक्टर ने व जेलर ने सुपरिंटेंडेंट के नाम का पत्र देखकर उनके घर पर भेज दिया, यह सुना।

कलेजे में दर्द मालूम हुआ। डाक्टर ने दवा लगाई।

गुलजारीलाल से 'गांधी सेवा-संघ' के वारे में चर्चा।

८-११-३२

विनोवा के वचन सुंदर लगे। पानी नहीं खींचा।

चि० कांतीलाल (अमलनेर वाले) से वातचीत। आज वह छूटा। श्री शांतावाई गोखले भी आज छूटीं।

सुपरिंटेंडेंट ने छाती व कलेजे के दर्द की जांच की और डा० को तेल मालिश करने को वनाकर देने को कहा। नाक में दवा रखने को भी कहा।

सुपरिंटेंडेंट कंट्राक्टर ने करीव तीन घंटे वात की। ठंडे स्वभाव से मैंने बहुत से प्रश्नों के जवाव साफ-साफ व शांति के साथ दिये।

चर्खा। हरिदास मोहनी व शांतावाई गोखले शाम को आये थे।

जेलर का व्यवहार विचित्र मालूम हुआ।

रात में छाती पर व सिर पर तेल की मालिश की।

९-११-३२

पानी नहीं खींचा।

विनोवा के वचन पढ़े। जेलर की वातें।

आज वालकों के साथ भोजन किया।

चौदस वीमार हो गया। कोठरी साफ करवाई। सामान जमाया।

चर्खा। गुलजारीलाल से वातें।

शाम को सही आदि के कागजात जेल के मार्फत देखने को मिले, वह देखे। नोट करना था सो किया।

प्रार्थना के वाद पढ़ता-लिखता रहा। ९ वजे सोया।

१०-११-६३

(जन्म दिन : देसी तिथि से : कार्तिक शु० १२)

पानी नहीं खींचा।

प्रार्थना के वाद मुलाकात के वारे में कुछ पढ़ा, कुछ लिखा व नोट किये।

मुलाकात—जानकी, केशर, भाग्यवती, हरगोविंद व उसकी मां, मदालसा,

चि० कमलनयन, व्यंकटलाल, कांतीलाल, राधाकिशन, मदनमोहन, लालवाज[1] वर्धा से, रामेश्वर नेवटिया गोला से आया।
आज सुवह सुपरिंटेंडेंट के साथ फिर गरमागरमी हुई।
आज भी भोजन वालकों के साथ किया।
डा० कंट्राक्टर का कुटुंब आया। प्रणाम प्रेम से किया। आशीर्वाद।
पूज्य वापू का पत्र।

११-११-३२

पानी नहीं खींचा।
आज भी लड़कों के साथ भोजन। आनंद व खुशाल से वातचीत।
माधवजी के कोठे में वापू के पत्र की नकल करवाई, वातचीत।
सुपरिंटेंडेंट करीव २ वजे तक मेरी खोली में वैठा व गत शनिवार की घटना, खाने-पीने के वारे में वहुत-सी चर्चा व विचार। वाद में निराश होना पड़ा, कोई भी सीधा रास्ता नहीं निकलता दीखा। उसके वारे में विचार। क्रोध आया। मणिभाई को भी वोलना पड़ा।
मुलाकात, जानकी व चि० मदालसा को स्वास्थ्य के वारे में समझाकर कहा। शेयर ट्रांसफर फार्म पर सही की।

---

१. १९२३ में नागपुर झंडा-सत्याग्रह के सिलसिले में जमनालालजी जव जेल में थे तव कत्ल के गुनाह में सजा पाया हुआ लालवाज नाम का पठान कैदी वार्डर उनकी निगरानी के लिए रखा गया था। उसके व्यवहार से जमनालालजी वहुत संतुष्ट और खुश हुए थे और लालवाज की भी जमनालालजी के प्रति भक्ति और श्रद्धा पैदा हो गई थी। जव वह अपनी सजा पूरी करके जेल से छूटा तो जमनालालजी ने उसे अपने यहां चौकीदार की जगह रख लिया और जल्दी ही वह अपने परिश्रम और सेवा के वल पर जमनालालजी के वड़े परिवार का सदस्य वन गया। इस नाते वह परिवारवालों के साथ जेल में भी उनसे मिलने जाया करता था।

१२-११-३२

आज कृष्णदास, त्रिकमलाल देसाई, आनंदी, शिवप्रसाद, आनंद व खुशाल छूटे। उनके व मित्रों के साथ नाश्ता किया।

चर्खा, लड़कों के साथ एक घंटे में तीन सौ तार निकाले।

जेल की गरम बंडी आखिर आज मिली।

आज से उर्दू शुरू हुआ। धूप में बैठना भी शुरू किया।

शाम को मित्रों से, जेलर से वातचीत। विनोद।

१३-११-३२

विकास व यशोवन देखा। घूमना। धूप में बैठना। लड़कों से एक घंटा वातचीत, उनके साथ भोजन।

दूध की शीशी बिल्ली फोड़ गई व दूध खराब कर गई। जूठा इलजाम किस प्रकार आ सकता है इसका विनोद बना।

आज चक्कर व कमजोरी मालूम होती थी। शरीर में कुछ ताप का अंश होने की संभावना लगती है।

शाम की प्रार्थना के वाद सो गया।

१४-११-३२

पांच वजे उठा। घूमना हुआ।

तवियत का हाल सुपरिंटेंडेंट को कहा। उर्दू पढ़ा।

पूज्य बापू का पत्र ता० १० को आया था उसका जवाव आज लिखकर इंसपेक्शन के टाईम पर दिया।

भोजन। विश्राम। चर्खा। वातचीत।

शाम को पूज्य वापू का कान के वारे में डा० मोदी के पास से तपास कराने के लिए तार आया। इसपर आपस में विचार करके पूज्य वापू व आई० जी० पी० को तार भेजने का निश्चय हुआ। ये दोनों तार जेलर के पास भेज दिये।

१५-११-३२

खांसी, रात में भी दर्द कम था।

जेलर को पूज्य बापू को भेजनेवाला पत्र बराबर पढ़कर बतला दिया।
अस्पताल में ठीक घूमना।
पू० बापू व आई० जी० पी० के तार के मसविदे में श्री मणिभाई व दूसरे मित्रों की सलाह से थोड़ा फेरफार किया।
आखिर में आज पूज्य बापू को व आई० जी० पी० को तार चले गये।
पूज्य बापू को कल जो पत्र लिखा था वह और आज के तारों की नकल भी चली गई। मन हलका हुआ।
आज घर की गरम बंडी मिली।

१६-११-३२

उठा। घूमना।
अस्पताल गया। सु० डें० ने आफिस में बुलाया। श्री गोविंदलालजी का एजेंट, घनश्यामदास (रिसोडवाले) के ऊपर वच्छराज कंपनी की डिग्री के बारे में, वह ज्यादा बीमार है, उसपर चर्चा।
भोजन। आराम। चर्खा।
आज जवारी के झगड़े में कंट्राक्टर के साथ जेलवालों की बातचीत का दिन था।
आज बापू का फिर तार आया—तबीयत के बारे में।
बनारस से गौरीशंकर का तार शिवप्रसादजी गुप्ता के तबीयत के बारे में आया। धीरे-धीरे ठीक होती जा रही है। बंबई से गोविंदलाल का एक्सप्रेस तार उनके एजेंट को भेजने के बारे में आया।
मित्रों से विनोद-बातचीत।

१७-११-३२

दो माइल घूमना। उर्दू पढ़ा। आज ठीक हुआ।
चर्खा। भंगाले से बातें। 'कल्याण' देखा।
डा० मोदी की मामूलीतौर से फीस एक रोज की एक हजार, परंतु मेरे लिए पांच सौ व अन्य सब खर्चा। यह सूचना मिली।
गुलजारीलाल ने नीरा पीया। विनोद।

१८-११-३२

'कल्याण' पढ़ा। २॥ मील घूमना हुआ।
उर्दू, ठीक। सु० डें० आये, अस्पृश्यता-निवारण संबंधी चर्चा।
चर्खा। भास्कर ने 'कल्याण' सुनाया।
पते वगैरा बरावर लिख लिये।
जेलर से आडीटर व सूत के हिसाब की गड़बड़ी की बातचीत।

१९-११-३२

'कल्याण' पढ़ा। घूमना २॥ मील।
चर्खा—एक से दो बजे तक, लड़कों के साथ २९५ तार आज निकले।
पुरुषोत्तमभाई से पुशाराम की गवाही के बारे में थोड़ी चर्चा।
जेलर से हाथ के सूत के हिसाब का झगड़ा, बहुत देरतक चर्चा।
शाम को सुस्ती व भारीपन मालुम होता है।

२०-११-३२

'कल्याण' पढ़ा। सुंदर वचन। घूमना २॥ मील।
आज वजन लिया १६६ रत्तल हुआ।
उर्दू की दूसरी किताब आज पूरी हुई।
लड़कों के साथ भोजन किया। चर्खा। भास्कर की डायरी सुनी।
खण्डूभाई से प्रयाग-समझौते पर विचार।
बाल बनाये। जेलर आ गये। मामूली बातें।
आज शाम भोजन में कच्ची मूली खाई।
सुंदर वचन पढ़े व सुनाये। आनंद रहा।

२१-११-३२

'मृत्यु को दूर', 'कल्याण' में पढ़ा।
इंसपेक्शन हुआ। कुनैन बंद, खाने की दवा बदली।
पत्र लिखे। चर्खा। जेलर ने आफिस में बुलाया। पूज्य बापू को तार भेजा।
वहां श्री देशपांडे से परिचय—उन्होंने मेरा टिकट देखा।
गिडवानी का कराची से तार आया।

आज शाम के वातावरण से मालूम होने लगा कि मुझे शायद पूना भेजें। मन में आनंद और शांति। मित्रों से बातचीत।

२२-११-३२

'मृत्यु को दूर', सुंदर वचन। घूमना २॥ मील। पानी २० डोल खींचा। घूमते समय अच्युत देशपांडे से बातें। ७ ता० के बाद आज पानी के २० पीपे निकाले।

उर्दू की तीसरी पुस्तक पढ़ना शुरू। थोड़ी कठिन लगती है। आज सुभान, चंद्रराय मिलने आये।

भोजन के बाद सु० डें० ने बुलाया। लाहोटी नौकरी के लिए आये थे। सु० डें० व जेलर बहुत देरतक बातें करने लगे।

असूदमल गिडवानी के करांची के तार का जवाब भेजा। मदनमोहन के तार का जवाब जेलवालों ने भेजा। थोड़ा आश्चर्य।

बापू का पत्र गया। श्री शांतिकुमार के बारे में फतेहचंद को पत्र भेजा।

२३-११-३२

घूमना २॥ मील। पानी २० डोल खींचा।

अच्युत देशपांडे व चंद्रराय से बातें। जेलर व मित्रों से विनोद, बातचीत। खानगीतौर से मालूम हुआ कि शायद शुक्रवार को जाना पड़े। भोजन। मित्रों से बातें। चर्खा।

मणिभाई ने सुबह और दोपहर को अपनी खोली में मुझे बुलाया। उनका व्यवहार पूर्ण असंतोषकारक व अपमानजनक होते हुए भी, उन्हें जो खास-खास बातें कहना थीं वे साफतौर से मैंने कह दीं।

मंदिर खुलने के बारे में व अपने बारे में चर्चा।

तार आया सुना। एक बार जाना बंद रहा। मणिलाल से फैसला हुआ। एक प्रकार से मन को शांति मिली।

२४-११-३२

अच्युत व माधवजीभाई से बातचीत, मणिलाल कोठारी के व्यवहार के बारे में।

पुलिस कमिश्नर विल्सन व डी० एस० पी० आये। सुवह ही विल्सन से ठीकतौर से वातचीत हुई। उसने मेरी गैरहाजिरी में तीन-चार वार मेरी याद की।
सु० डें० से वातें। उनके भाई रुस्तम के वारे में उन्होंने खूब उत्साह के साथ उसकी सिफारिश की।
वहनों को वापू का पत्र। जेलर की उपस्थिति में अस्पृश्यता-निवारण का हाल सुना।
रात में जेलर आये। शायद शनिवार को जाना पड़े।

२५-११-३२

अस्पताल वगैरा गये। मित्रों से मिलना—सवों के साथ वातें।
जेलर व सु० डें० ने मुझे ऐसी इत्तिला दी कि वहुत करके कल मुझे यहां से जाना पड़ेगा।
रुस्तम कंट्राक्टर से थोड़ी वातें।
वालकों से वातें। चर्खा। दोपहर के वाद मालूम हुआ कि शायद आज ही जाना पड़े।
शाम को सवों के साथ पांच वजे प्रार्थना। कई मित्र रोने लगे, खासकर सीताराम पंडित, मुंशीजी। मेरा भी मन भर आया। जेल के अधिकारियों ने भी खूब प्रेम प्रकट किया।
स्टेशन पर सव अधिकारी, सु० डें०, जेलर व सु० डें० के घर के लोग पहुंचाने आये। चार पुलिस व एक इंस्पेक्टर पूना तक। चालीसगांव में प्रार्थना।
रामेश्वर, गंगूवाई मिले। रातभर रेल में सोने को नहीं मिला।

रेल में : यरवदा जेल, २६-११-३२

यरवदा सेंट्रल जेल १२ वजे।
कल्याण स्टेशन पर प्रार्थना की। गाडोदियाजी आदि के दर्शन हुए।
कल्याण से ९ वजे रवाना होकर खिड़की स्टेशन पर यूरोपियन आफिसर ने उतारकर मोटर में यरवदा जेल पहुंचाया। ठीक १२ वजे यरवदा जेल में

पहुंचा। श्री कटेली, मेजर भंडारी आदि को देखकर व बापू की जगह होने के कारण मन को खूब संतोष हुआ।

मुझे क्वारेंटेन नं० १ अस्पताल यार्ड में मि० तारापोरवाला के साथ रखा।

सब व्यवस्था ठीक हो गई। मन में शांति और आनंद।

बापू दर्शन की इच्छा। बापू का पत्र मिला, जवाब भेजा।

मेजर भंडारी व मेहता मिल गये।

दूध व पाव रोटी खाई। चर्खा।

यरवदा मंदिर, २७-११-३२

४ बजे उठना। प्रार्थना। फिर ६ बजे पूरी प्रार्थना।

मुंह-हाथ धोना व घूमना। वजन १६२ हुआ।

हरीदास गांधी ने नाश्ते की व्यवस्था की।

मेजर भंडारी व मेजर मेहता दोनों आये। खूब ठीकतौर से तपास वगैरा की। दूध व मक्खन अधिक लेने का मेजर मेहता ने आग्रह किया। मेजर भंडारी ने दाल खाने को कहा। मैंने बापू को पूछकर करने का कहा।

मन को खूब शांति व प्रसन्नता मिल रही है। यहां कुछ महीने रहने से अवश्य लाभ मिलेगा।

शाम को चर्खा, प्रार्थना, तेल की मालिश, दो खूराक दवा। कुल्ले किये।

२८-११-३२

४ बजे उठना। प्रार्थना। निवृत्त होकर फिर सोना। घूमना।

सु० डॆं० मेजर भंडारी आये, मामूली देखभाल व बातचीत। ११॥ बजे करीब डा० मेहता आये, तपास वगैरा की। मुझे अस्पताल में दाखिल कराने को कहा व खाने को जो चाहिए सो मांगने को कहा। आज थोड़ी कमजोरी मालूम देती थी।

सुबह भोजन करीब १२॥ बजे कर पाया।

आराम। घूमना। तकली काती।

२९-११-३२

(बापू-दर्शन दिन)

'अनासक्तियोग' संशोधन किया। 'गीताबोध' की गलती दुरुस्त की। चर्खा, भोजन आज ११॥ बजे किया। डा० मेहता आये। नाक व कान की दवा व भोजन के बाद टानिक लेने को कहा।

सु० डें० का बुलावा आया। पूज्य बापूजी वहां थे। प्रणाम किया। स्वास्थ्य-खान-पान की चर्चा व मिलने के बारे में लिखा-पढ़ी।

मेजर भंडारी से स्वास्थ्य का पत्र लिखकर भेजने के बारे में, दास्ताने व पूणी के बारे में बात।

आराम के बाद तीन बजे भोजन। घूमना, गपशप, मुंह-हाथ धोना, दवा। आज सब मिलकर चार बार खाया। दवा आज से शुरू हुई।

३०-११-३२

डा० मेजर मेहता आये, ठीक बात कर गये। खांसी ठीक हो गई सो खांसी की दवा कल से बंद करने को कहा। भोजन के बाद टानिक लेने का मेजर ने आग्रह किया, वह शुरू किया। कान की दवा दो बार डालने को कहा। रात में बरसात हुई, हवा में फर्क पड़ा।

१-१२-३२

बरसात पड़ने के कारण ठंडी हवा, धूप नहीं निकली।

मेजर मेहता से मामूली विनोद। अन्नासा० से मिलने की परवानगी। अन्नासा० का उन्हें परिचय दिया। तुलसी-रामायण।

जानकी के नाम पत्र लिखकर वर्धा भेजा—स्वास्थ्य आदि का हाल। अन्नासा० से भेंट। उनका धुलिया से यरवदा आने के बाद आजतक का हाल मैंने जान लिया। उनकी यहां व्यवस्था करनी है। यहां उन्हें लाभ पहुंचेगा।

चर्खा। शाम को दूध नहीं लिया। सुस्ती मालूम दी।

२-१२-३२

मेजर मेहता आये, कान देखा, संतोष प्रकट किया।

दही लेने को अभी मना किया।
तुलसी-रामायण। चर्खा।
जे० कटेली को पत्र पढ़कर सुनाया। अन्ना की दवा लिखकर भेजी।
घनश्यामदासजी आये यह सुना। हाथ व मस्तक का व्यायाम।

३-१२-३२

सुबह भूख खूब लगती है। सुबह आधा रत्तल बकरी का व एक रत्तल भैंस का दूध लिया।
सुना बापू ने आज दूध नहीं लिया। वही दूध मैंने आधा रत्तल भैंस के बदले लेकर देखा।
भोजन के बाद तुलसी-रामायण। बाद में चर्खा। अन्ना से बातें, परचुरे व हरोलीकर के बारे में।
नागपुर-केस के कागजात आये। शाम को अपनी ओर की गवाहियां पढ़ीं, एक प्रकार से संतोष हुआ।
ब्रेन-व्यायाम। बापूजी के उपवास की उड़ती हुई चर्चा सुनी, थोड़ा विचार।

४-१२-३२

गीता का पाठ सुबह रह गया था वह पूरा किया। नागपुर-केस के कागजात देखे। करीब ४ घंटे शाम को चर्खा।
बापूजी ने उपवास का विचार एकबार छोड़ा, ऐसा सुना; तथापि अभी फैसला नहीं हुआ, ईश्वर सब ठीक करेगा।
इतवार को ३।। बजे ही बंद कर दिया।
इस एक वर्ष में आज प्रथम बार कान में से सूखा मैल निकला। मेजर मेहता का कहना है कि यह बहुत ठीक लक्षण है।

५-१२-३२

नागपुर-केस के कागजात देखे।
मेजर मेहता व कटेली आ गये, इंसपेक्शन कर गये। तबीयत ठीक सुधरती जा रही है।

जेलर कटेली को व्याज के व पुलगांव की विक्रीपत्र के कागज सही करके वापस करने को दिये। अचानक महादेवभाई दिखाई दे गये।
चर्खा। तात्या से विनोद।
तुलसी-रामायण में से उतारा किया।
वजन देखा तो करीव ७ रत्तल वढ़ा मालूम दिया।

६-१२-३२

रात को स्वप्न में जयपुर राज्य की सुंदर व्यवस्था का विचार आया।
नागपुर-केस—गंगाविशन व जमनालाल की गवाही के संवंध में दूसरी वार नं० ४ फाइल देखी। शाम को वादी नं० २, गोपीजी का स्टेटमेंट पढ़ा।
घूमना। सव मिलकर आज पांच माइल हुआ। चर्खा। तुलसी-रामायण। तात्या से विनोद थोड़ी देर। महात्माजी के रचनात्मक कार्य से देश को व खुद को लाभ के वारे में चर्चा।

७-१२-३२

रात स्वप्न में पी० एस० पाठक व जयाजी पेटिट का ठीक विचार आया।
मेजर मेहता आये। वापू की प्रसन्नता के समाचार कह गये। मुलाकात का आई० जी० पी० से पूछ कर कहेंगे।
वापू का पत्र मिला, स्वास्थ्य के वारे में, व कमल को सिलोन भेजने के वारे में। मैंने जवाव भेजा, दक्षिण अफ़्रीका भेजने की राय लिख भेजी।
नागपुर-केस, गोपीजी की गवाही, क्रास एग्जामिनेशन आदि पूरा देख गया।
चर्खा। तुलसी-रामायण।

८-१२-३२

रात में विचार व स्वप्न। आई० जी० पी० से वहुत देरतक जेल की वर्तमान व्यवस्था में वुराइयां हैं, उसकी स्पष्ट तौर से चर्चा आदि। गुरुवयूर मंदिर है, वहां जाने का विचार।
मेजर मेहता व जेलर कटेली मिले। व्यापारी मुलाकात शनिवार व सोमवार को होगी।
आज दस्त साफ नहीं आया, तीन वार जाना पड़ा।

नागपुर-केस में हरिकिशन व उनकी गवाही पढ़ी।

चर्खा। तुलसी-रामायण

९-१२-३२

आज कान में से पीप निकला, बहुत दिनों के बाद, याने २०-२२ दिन के बाद।

नागपुर-केस के कागजात देखे व नोट किये।

मेजर मेहता ने कान अपने हाथ से साफ किया, पीप व बहुत-सा मैल अंदर से निकला।

मुलाकात—गंगाविशन, पूनमचंद, मदनमोहन आये। नागपुर-केस के संबंध में बातें व तबीयत की चर्चा।

रात में फिर कागजात देखने लगा तो बिजली बंद हो गई। चर्खा। प्रार्थना।

१०-१२-३२

रात में नींद थोड़ी कम आई। आज तबीयत ठीक मालूम देती थी।

मेजर मेहता कान साफ कर गये, थोड़ी बातें।

अन्नासा० मिल गये। बातें। उन्होंने ब्रह्मचर्य पालन का नियम १२ जून १९२८ को वर्धा में करीब ४६ वर्ष की उम्र में लिया। बारूताई उस समय ४० अंदाज की थीं। उनका भी अनुभव कि बारूताई ज्यादा मजबूत उनसे इस मामले में थी।

एक बजे गंगाविशन, पूनमचंद, मदनमोहन मिलने आये। नागपुर-केस के बारे में उन्होंने जो प्रश्न पूछे थे, उनका खुलासा किया। गंगाविशन व पूनमचंद, तीन बजे की गाड़ी से वर्धा गये। मदनमोहन ने कहा कि वह आई० जी० पी० से ता० २८।११ व ६।१२ को मिला था। बहुत बातें हुई, लंदन जाने का उन्होंने कहा।

११-१२-३२

डा० मेजर मेहता आये। लंदन आदि जाने, कान के बारे में, आई० जी० पी० के विचार।

उन्होंने कहा—आपका कान मैं ठीक कर सकूंगा, अगर ५-६ महीने बराबर इलाज करने को मिला तो।

आज दोपहर को सो गया, आराम पूरा लिया।

वापू का सुंदर पत्र मिला। जवाव में भंडारी को पूछकर भेजना है। किताव आज से पढ़ना शुरू किया। चर्खा। तुलसी-रामायण।

१२-१२-३२

आज इस जेल में एक आदमी को फांसी दी गई।

सु० डें० इंसपेक्शन को आये। वापू के पत्र, कर्नल डोइल व लंदन के वारे में मेजर भंडारी ने कहा कि उन्हें भी कर्नल डोइल ने कहा था।

वापू का पत्र कल मिला था, उसका जवाव आज भेजा।

आज हवा ठंडी चली।

आराम। 'दाम्पत्य-रहस्य-विज्ञान' (Secrets of Sexual Science) पढ़ी।

भोजन के वाद घूमना। पांव में थोड़ा दर्द।

चर्खा। Old age deferred सुना। तुलसी-रामायण पढ़ी।

१३-१२-३२

डा० मेजर मेहता मिल गये, कल कान देखने वाले हैं।

'दाम्पत्य-रहस्य-विज्ञान' पूरा हुआ।

आज खुली हवा में वैठना, पढ़ना व लिखना किया।

आज ब्रेड आने में देर हुई तो तारापुरवाला के कहने से आधी ज्वार व आधी वाजरी की रोटी खाई, थोड़ा प्याज भी।

चर्खा। Old age deferrad सुनी। तुलसी-रामायण।

१४-१२-३२

रात में स्वप्न में विचार चलते रहे तथापि कल से आज नींद ठीक आई।

मेजर मेहता ने कान तपासा, ठीक सुधार हो रहा है, कहा। उनके खान-पान आदि की चर्चा। खुली हवा की परवानगी दी।

मनोवांछित संतति व तुलसी-रामायण।

वापू ने फाउंटेनपेन की स्याही भेज दी। उनका वजन १०३ रत्तल हुआ सुना। व्राउन ब्रेड में शक्कर पड़ती है, उसका वापू से खुलासा करना। दो रत्तल

गेहूं में तीन रत्तल की तीन रोटी होती है याने २६॥ तोले गेहूं दिनभर में खाया जाता है।
चर्खा। तुलसी-रामायण।

१५-१२-३२

मेजर मेहता ने, खुराक में क्या फेरफार चाहिए यह लिखकर मांगा।
मनोवांछित संतति व तुलसी-रामायण। भूरालाल जैन (उदयपुर वाला) घास खोदने में लाया गया, उसे क्रिमिनल में रखा, आश्चर्य।
ब्रेड की जगह रोटी व चपाती बरावर नहीं आई, कम खाई, भूख रही।
जेलर से ब्रेड व विदेशी शक्कर आदि के बारे में बातें हुई।
चर्खा। प्रार्थना। तुलसी-रामायण।

१६-१२-३२

मेजर मेहता ने कान देखा। कब्जियत का विचार कर रहे हैं। शायद टानिक से हो, कहा।
आज सुवह तात्या (लक्ष्मण झगड़े) व काजड (ता० ईदापुर, जि० पूना, स्टेशन दिकसल या बारामती) ने हमेशा के लिए मटन (गोश्त) नहीं खाने का निश्चय किया बताया।
मनोवांछित संतति, उसके बाद तुलसी-रामायण। भरत-प्रकरण पूरा किया।

१७-१२-३२

सुवह ७ वजे जलाव लिया, ९॥ वजे एक दस्त हुआ। २॥ वजे दूसरा व ५॥ वजे तीसरा हुआ।
मेजर मेहता कान देख गये। जीभ खराब बताई। तोल आठ दिन से करने को डा० को कहलाया। कान की दवा एकवार ही डालने को कहा।
'मनोवांछित संतति' बाद में तुलसी-रामायण, रामकथन।
आज टोस्ट बनाकर खाया। ठीक मालूम हुआ। शाम को भी ठीक घूमना हुआ। चर्खा। तुलसी-रामायण।

१८-१२-३२

रात में तीन वजे आंख खुल गई। सुंदर विचार। प्रार्थना वाद 'आश्रमवासी प्रत्ये' में बापू के लेख आदि पढ़े।

आज मेजर मेहता की इच्छा के अनुसार तोल हुआ, १६९ था। एक रत्तल वढ़ा। पिछली वार के तौल से, यहां आने के वाद, सात रत्तल वढ़ा।

तुलसी-रामायण। राम के वचन पूरे हुए।

आज इतवार था, इससे साढ़े तीन वजे करीव वंद कर दिये गए।

चर्खा। शिक्षण पद्धति पर विचार-विनिमय। आज शाम को अंदर ही खाना पड़ा। दूध देर से (पांच वजे) मिला। आज साथियों के साथ भोजन को बैठा। उनके पास से थोड़ा दही चावल (प्रथम वार यहां) गुड़ डालकर लिया। वदले में उन्हें दूध, रोटी, टोस्ट व साग दिया।

१९-१२-३२

रात में स्वप्न में लार्ड इरविन व लार्ड वेलिंगटन वर्धा में हमारे जूने वाजार के घर में आये, उनसे वातचीत आदि। वड़ा विचित्र स्वप्न था।

आज जिला-कमेटी के दो मेंवर, एक मेहता, पारसी मजिस्ट्रेट व एक यूरोपियन आये।

मेजर मेहता ने कान देखा, आवाज सुनी जाती है या नहीं, वह घड़ी से देखा। मेजर मेहता ने तारपोरवाले को मेरी वातचीत के वारे में सूचना की। मेजर भंडारी से खुलासा करने का निश्चय।

आज हवा वहुत जोर की चल रही थी; मन थोड़ा सुस्त रहा।

शाम को भोजन कम किया। तुलसी-रामायण दोनों वक्त। चर्खा।

२०-१२-३२

वापू से दूसरी वार मिलना हुआ।

भोजन करते समय जेलर श्री कटेली आये।

सु० डें० ने जल्दी वुलाया कहा। भोजन पूरा करके वहां गया।

मेजर भंडारी से, मेजर मेहता ने कल सी-वर्ग के लोगों के साथ मिलने-जुलने के वारे में संकोच दिखाया, उसका खुलासा किया। आई० जी० पी० की

नोट ली। गुरुवयूर की फाइल वापू भेज देंगे। अस्पृश्यता-निवारण के सब कागजात मैं देख सकता हूं, यह खुलासा हुआ। टोस्ट, अस्पताल में वनाकर लेने को कहा। स्वदेशी शक्कर की व्यवस्था की चर्चा।

पूज्य वापू से मुलाकात हुई। आज मालुम हुआ कि बंवई सरकार से मुझे वापू से मिलने के वारे में पूरी छूट मिल गई। वापू से ब्रेड व शक्कर की चर्चा। गुरुवयूर के वारे में वापू ने कहा शायद उपवास नहीं करना पड़ेगा। मुझे फाइल भेज देंगे। दंड के वारे में विनोदात्मक चर्चा। कमल की पढ़ाई के वारे में भी।

मेरे खादी के जेल के कपड़े साठे को देने का निश्चय। पेशाव ज्यादा होने का कहा। रामायण। चर्खा।

२१-१२-३२

'आश्रमवासी प्रत्ये' पढ़ा। रात में नींद ठीक आई।

मेजर मेहता से स्वास्थ्य के वारे में व जेल शिस्त के वारे में मामूली वातचीत।

तुलसी-रामायण। लक्ष्मण-संवाद लिखना शुरू किया।

दास्ताने आज छूटे।

ववन (अहमदनगर वाले) व तलवलकर को काम दिलवाया। उन्हें सादी सजा थी।

वापू की अस्पृश्यता-निवारण की फाइल आई। वह शाम को ७॥ से ९ व सुवह ६ तक पढ़ी। शाम को चर्खा ६-७ काता।

२२-१२-३२

प्रार्थना वाद ४॥-६ तक वापू की अस्पृश्यता-निवारण संवंधी फाइल पढ़ी, फिर वापस भेजी।

कटेली को कागजात दिये। वाद में मेजर भंडारी से वापू के पास रखने या उन्हें मिलने देने व मुलाकात के समय के संवंध में ठीक चर्चा।

वापू से तीसरी वार आफिस में सु० डें० के सामने मुलाकात। गवर्नमेंट को पत्र या तार भेजने के वारे में। अभी नहीं भेजने का निश्चय। वापू का समय विना कारण थोड़ा ज्यादा ले लिया गया, उसका विचार।

हिंदुस्थान शुगर मिल की शक्कर का नमूना देखा।
अस्पृश्यता-निवारण फाइल पढ़ी। चर्खा, बापू ने Old age deferred का कुछ भाग पढ़ा।

२३-१२-३२

आज एक राजनैतिक कैदी गणपत पानवाला (किसन गणु) सड़क पर रोल चलाने का काम करता था, वह यकायक पत्थर की मार सिर पर लगने से मृत्यु का शिकार हुआ। इस भयंकर अकस्मात का मन में विचार। ईश्वर से प्रार्थना की कि उसे सद्गति देवें, वह तो अमर हो गया। उसके छूटने के कुछ ही दिन बाकी थे, यह सुना।
अपनी दिनचर्या में विघ्न न पड़ने पावे, उसका मैंने ख्याल रखा। ईश्वर की प्रार्थना कई बार की।
तुलसी-रामायण। लक्ष्मण, शत्रुघ्न, सुमित्रा, सुनयना, मंदोदरी के वचन लिखे।
चर्खा दोपहर व शाम को भी।
प्रार्थना बाद पढ़ना।

२४-१२-३२

आज थोड़ी सुस्ती मालूम दी। लेटा। आज लिखना-पढ़ना न करके दोपहर को थोड़ी चर्चा, परिचय डिसोजा व वसंत का कर लिया। घूमना।

२५-१२-३२

बापू से १०॥ से १२ तक चौथी बार मिलना हुआ। संतोष मिला।
आज वजन लिया। ता० १८ के वजन से एक रत्तल कम हुआ व ता० ११ को जितना था उतना ही रहा।
अस्पृश्यता-निवारण की फाइल देखी, तीन बजे वापस की।
आज क्रिसमस दिन था, बैरक में थोड़ा आनंद-विनोद। सब मिलकर खान-पान किया।
आज २॥ बजे करीब बंद कर दिये गए। चर्खा। बंद होने के बाद सत्य आचरण पर विचार-विनिमय।

२६-१२-३२

कान में डाक्टर ने दवा डाली तो बहुत जलन हुई।

सु० डें० मेजर भंडारी इंसपेक्शन को आये। बापू की ट्रीटमेंट व मुलाकात की चर्चा। मेजर मेहता छुट्टी पर गये, सुना।

दोपहर को थोड़ा आराम। सो गया।

'मनोवांछित संतति' व उर्दू किताब देखी। साप्ताहिक इलेस्ट्रेटेड का क्रिसमस-अंक देखा। उसमें फोटो व सर सप्रू के व बिड़ला के विचार थोड़े पढ़े।

२७-१२-३२

बापू की हरिजन की फाइल नंबर एक देखकर पूरी की व वापस की।

करीब चार घंटे हरिजन फाइल पढ़ने में दिये।

कान में दवा डाली, आज जलन थोड़ी हुई।

चर्खा। थोड़ा पढ़ना। विनोदात्मक बातें।

चि० कमल व मदनमोहन का पत्र आज वर्धा से कमल की पढ़ाई के बारे में आया।

आज थोड़ी देर सर्वांग आसन किया।

२८-१२-३२

मेजर भंडारी ने कान देखा। कहा कि अंदर चमड़ी उतर गई है, जिससे जलन होती है, दवा डालते समय।

'मनोवांछित संतति' पूरा किया व Old age deferred पढ़ा।

जेलर को कहलाया, देशपांडे सब-इंस्पेक्टर की भूख हड़ताल के बारे में।

उन्होंने मिलने को कहा, परन्तु आ नहीं सके।

चर्खा। आज सूत उलझ गया, थोड़ी देर लगी।

'The Epic Fast' प्यारेलाल का लिखा पढ़ना शुरू किया।

२९-१२-३२

बापू को फाइल के लिये पत्र भेजा।

सुबह व दोपहर को The Epic Fast पढ़ा।

वापू की नं० २ हरिजन फाइल आई, उसे ३॥ वजे तक देखी। शाम को वापस की।

आज शाम को दूध देर से आया, इसलिए देर से भोजन। आज भूख ठीक लगी थी।

चर्खा। प्रार्थना। The Epic Fast पढ़ा।

देशपांडे के वारे में आखिर जेलर मिलने नहीं आ सके।

३०-१२-३२

प्रार्थना। वाद The Epic Fast पढ़ा।

हरिजन फाइल नं० २ पढ़ी। वापस भेजी।

वापू को लिखकर गुरूवायूर के रेफरेंडम का परिणाम व उस संवंध में वापू का स्टेटमेंट मंगवाया। शाम को वह आया। तीन वार पढ़ा।

मन को थोड़ी शांति हुई। वापू को यह शरीर उपवास के जरिये ही छोड़ने का विचार पैदा हुआ। ईश्वर इच्छा।

३१-१२-३२

वापू का स्टेटमेंट देखा।

रात में दो वजे के वाद नींद नहीं आई, चार वजे के पहले ही प्रार्थना आदि करके वापू ने गुरूवायूर अनशन के वारे में जो स्टेटमेंट दिया उसकी नकल की। करीव ३॥ घंटे लगे। वापू को पत्र भेजा।

वर्धा से नागपुर-केस के कागजात व एक अर्जीदावा आया। वे सव कागजात पढ़े। रामनाथ जी, हरिवकस, खरेसा० की गवाही पढ़ी।

अस्पृश्यता-निवारण की फाइल वहुत देर से आई। अस्पृश्यता-निवारण व मंदिर-प्रवेश संवंधी कानून का मसविदा देखा।

भोजन के वाद सेनेटोजन लेना शाम से थोड़ा शुरू किया।

चर्खा। प्रार्थना। तुलसी-रामायण।

१९३३

मानों एक भक्ति कर नाता।

हृदय हेरि हारेऊं सब ओरा। एकहि भांति भलेहि भल मोरा॥
गुरु गोसांई साहिब सिय रामू। लागत मोंहि नीक परिनामू॥

—भरत

जिस शिक्षा से त्याग न आया, शांति शील संतोष न आया,
दीन दुःखी को नहिं अपनाया, बार - बार धिक्कार।
शिक्षा वही जो सत्य सिखाती, अहिंसा सेवा धर्म लखाती,
हरिचरणों से नेह लगाती, करे देश उद्धार॥

सुख के माथे सिल परे, नाम हृदय ते जाय।
बलिहारी वा दुःख की, पल-पल नाम रटाय॥

—कबीर

कहं जानो कहवां मुवो, ऐसे कुमति कुमीच।
हरिसों नेह बिसारिके, सुख चाहत है नीच॥

यरवदा-मंदिर, १-१-३३

मम गुन गावत पुलक सरीरा।
गद्गद् गिरा नयन बह नीरा॥ —राम

४ से ७ प्रार्थना, निवटना, घूमना, व्यायाम, स्नान, झाड़ के नीचे वन-भोजन। आज वजन किया। १६८ ही रहा।

सुबह से शाम के दो बजे तक बाहर खुली हवा में ही रहा। "ब्रह्मचर्य हेंच जीवन" का दूसरा भाग देखा। चर्खा आज बाहर ही कात लिया।

निवृत्त होकर जल्दी बंद हुए। आज क्रिश्चियन लोगों का नया वर्ष-दिन

होने के कारण व इतवार भी था इसलिए सबने साथ बैठकर भोजन किया, पार्टी के माफिक। आज शाम से गाय का दूध मिलना शुरू हुआ।
आज सुस्ती मालूम होने के कारण सात बजे के बाद जल्दी सो गया।
आज के इलस्ट्रेटेड वीकली में चि० सुशीला व सुवटा बहन के माफक फोटो देखे।

२-१-३३

काम आदि मद दंभ न जाके।
तात निरंतर बस मैं ताके॥--राम

ठंडे पानी से स्नान। भोजन जल्दी में किया।
सुपरिंटेंडेंट मेजर भंडारी इंसपेक्शन को आये। मेजर मेहता मिल गये।
पूज्य बापू से करीब डेढ़ घंटा मुलाकात। मुझे उनका पत्र ९।।। बजे करीब मिला, इसलिए पूरी तैयारी नहीं कर पाया।
यहां आने के बाद चार मुलाकातें पहिले हो गई। आज पांचवीं थी।
सुपरिटेंडेंट से देशपांडे आदि की ठीक चर्चा, जेलर कटेली से भी।
हरिजन फाइल आई उसे शाम की प्रार्थना के बाद दो घंटे करीब देखी।
चर्खा काता।

३-१-३३

गुरु पितु मातु बंधु पति देवा।
सब मोहिं कहं जानहि दृढ़ सेवा॥---राम

हरिजन फाइल सुबह दो घंटे करीब पढ़ी।
पांडुरंग रामचंद्र देशपांडे रिटायर्ड इंस्पेक्टर पुलिस की आज १२ दिन की हंगर स्ट्राईक मैंने उन्हें समझाकर खतम करवाई। उन्होंने बहुत प्रेम और आदर से मेरा कहना मान लिया। इन्हें १२ रोज तक २४ घंटे खोली में बंद रखा गया था। स्नान-हजामत नहीं, धार्मिक पुस्तकें भी नहीं दी गई थीं। आज स्नान व हजामत करवाई और दूध आदि पिलाया, मेजर मेहता के सामने।
मेजर मेहता ने कान देखा, दवा आज डालने को मना किया।

बापू को पत्र भेजा, देशपांडे ने उपवास छोड़ा आदि। देशपांडे को मेरे पास ४-५ रोज मेजर मेहता ने रखने को कहा था, परंतु बाद में दूसरा बी-वर्ग का पेशेंट यहां भेजने को कहकर उन्हें अस्पताल वार्ड में ले गए।
हरिजन फाइल देखी। चर्खा की माल टूट गई।

४-१-३३

परहित बस जिन्हके मन मांही।
तिन्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥—राम

धूप में थोड़ी देर पढ़ना। बाद में चर्खा, सोना।
हरिजन फाइल दिन में व रात में भी पढ़ी।
मेजर मेहता आज नहीं आये। कान में दो बार पैराफाइन से साफ किया।
चर्खा।

५-१-३३

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानऊं एक भगति कर नाता॥—राम

सुबह ४॥ से ६। तक हरिजन फाइल पढ़ी।
मेजर मेहता से देशपांडे के बारे में उनका व्यवहार, पाटे व प्रूंस के बारे में व मेरे रहने आदि के बारे में चर्चा, विचार हुआ।
पांडुरंग रामचंद्र देशपांडे को आज डिस्चार्ज किया। उनको आर्डिनरी डायट पर कर दिया।
चर्खा। हरिजन फाइल पूरी की।

६-१-३३

जाति पांति कुल धर्म बड़ाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई॥—राम

बापू से १२ से १ तक एक घंटा मुलाकात। संतोषजनक बातचीत। मंदिरों की फेरिस्त, फाइल के बारे में। विनोबा ने नालवाड़ी में आश्रम कायम किया, आश्रम का कब्जा मिल गया, बालकोबा चार्ज में। देशपांडे व

दास्ताने के बारे में कहा। वर्धा-मुकदमे, वर्धा-जेल, कान के दर्द, जनेऊ आदि के बारे में चर्चा। चर्खा काता।

७-१-३३

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥ —राम

श्री कटेली व मेजर मेहता आये आज।

हरिजन फाइल पढ़ी। बापू का पत्र मेडलीन रोलां विलनव के नाम। बापू के नाम विनोबा ने नालवाड़ी से ता० ३०-१२-३२ को भेजा पत्र व छोटेलालजी का पत्र भी पढ़ा। विनोबा का पत्र पढ़कर एक प्रकार से सुख व प्रेम मिला।

सनातन-धर्म के नाम से खूब विरोध चलते देख अब यह प्रश्न जल्दी तय होने की आशा हुई। चर्खा। प्रार्थना। बाद में हरिजन फाइल देखी। वर्धा-आश्रम की इमारत में ता० २५-१२ को बालकोबा वगैरह गये। उसी रोज विनोबा नालवाड़ी गये।

८-१-३३

करहिं मोह बस नर अघ नाना।
स्वारथ रत परलोक नसाना॥—राम

आज वजन हुआ १६६ याने दो रत्तल कम हुआ।

आज बाहर खुली हवा में भोजन; सुंदर और आनंदकारक।

धूप के कारण गोखले जेलर आये, तब एकदम खड़े होने से जरा चक्कर आ गया। आराम लेने से ठीक।

अस्पृश्यता व देवालय—लेखक प्रो० नाथहरि पुरंदरे एम० ए०; Aims and Objects, Scheme of Propaganda by Anti-untouchability League देखा। The Impending-Fast of Gandhiji by C. Rajgopalachari.

श्री तारापोरवाला कल शाम को आनेवाला था। इसलिए सब साथियों के साथ भोजन किया। चर्खा।

९-१-३३

रघुवंसिन्ह कर सहज सुभाऊ।
मनु कुपंथ पगु धरै न काऊ॥—राम

एच० तारापोरवाला वार्डर वंवई गया।

मेजर भंडारी सु० डें० इंसपेक्शन को आये। वजन दो रत्तल घटा कहा। मेजर मेहता आये। वजन घटने के कारण २० तोला ब्रेड ज्यादा लेने का नक्की हुआ।

१२ से १ तक पूज्य वापू के साथ मुलाकात। विड़ला कमेटी की घटना के वारे में तथा अन्य वातें। वापू के हाथ का इलाज विजली से अंवालाल की मशीन पर मेजर मेहता ने किया, वह देखा।

मेजर मेहता, वाद में भंडारी व कटेली से, जेल-संवंध में वातचीत, खास करके मारपीट, सजा, रोटी, गड़ वगैरह के वारे में।

हरिजन फाइल, चर्खा। राजेंद्रवावू व प्यारेलाल की गिरफ्तारी का समाचार सुना।

१०-१-३३

मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी।
जेहि सपनेहु परनारी न हेरी॥—राम

आज ठंडी व आलस मालूम देने से दोपहर को करीव १॥ घंटा सो गया।

हरिजन फाइल पढ़ी, नोट किये। चर्खा, प्रार्थना।

११-१-३३

चारि पदारथ करतल ताके।
प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके॥—राम

रात में सुखकारक स्वप्न आया याने आकाशवाणी हुई व प्रत्येक मंदिरों की देव मूर्तियां कहने लगीं कि "गांधी का कहना वरावर है। उसी मुताविक करो। अस्पृश्यता का भेद निकाल डालो" आदि।

उत्तम विचारवाला स्वप्न।

वापू को आज सुवह प्रार्थना के वाद व दोहपर को The All India Anti-untouchability League की, जिसका नाम अव The Servants of Untouchables Society हो गया है, घटना (विधान) के वारे में तथा कार्य पद्धति व अन्य मेरे विचार पू० वापू के कहने पर उन्हें सविस्तार लिख भेजे।

शाम को चर्खा व प्रार्थना वाद श्री जानकीदेवी के नाम पत्र लिखना शुरू किया।

१२-१-३३

हृदय हेरि हारेऊं सव ओरा।

एकहि भांति भलेहिं भल मोरा॥—भरत

रात को दो वजे वाद निद्रा नहीं आयी। तीन वजे वाद लिखना-पढ़ना शुरू कर दिया।

श्री कटेली व गोखले से वापू की फाइल, पत्र वगैरे की चर्चा।

आज जानकी व दूकान के मुकदमे के वारे में पत्र लिखकर वर्धा भेजा।

वापू की हरिजन फाइल आई, पढ़ना शुरू किया। रात में नींद कम हुई थी। इसलिए वीच में नींद आ गई।

चर्खा। हरिजन फाइल में रणछोड़भाई पटवारी के ८८ प्रश्न व वापू के उत्तर पढ़ने योग्य थे। विचारपूर्वक पढ़े।

डा० वसंत व फ्रेड सोजा ने कान के मेरे प्रश्नों का खुलासा सुंदर लिखकर दिया।

१३-१-३३

गुरु गोसाइं साहिव सिय रामू।

लागत मोहि नीक परनामू॥—भरत

हरिजन फाइल में से श्री रणछोड़भाई पटवारी के ८८ प्रश्न व वापू का जवाव विशेष ध्यान से पढ़े, कुछ नोट किये।

वापू से आठवीं मुलाकात १२ से १ वजे तक। घनश्यामदासजी को घटना (विधान) के वारे में तथा अन्य सूचना का पत्र भेज दिया। रणछोड़भाई

के प्रश्न २, ३, ९, १८, ३७, ७४, ७७ प्रश्नों के जवाव के वारे में मैंने मेरे विचार उन्हें कहे। वे लोग आज उन्हें मिलनेवाले थे। रोहित मेहता के वारे में उन्होंने पूछताछ की। मेजर मेहता की परवानगी लेकर रोहित मेहता से मिला। डा० भाटवडेकर के साथ प्रथमवार वीमारों की वैरक आज देखी। रोहित को हिम्मत वगैरे दी। उन्होंने पेरोल के लिए मेजर भंडारी के कहने पर लिखा है, ऐसा कहा।

आज वापू से मिलने के वाद थोड़ी देर सो गया। वाद में नई हरिजन फाइल देखना शुरू की। चर्खा।

१४-१-३३

गुरु प्रसन्न साहिव अनुकूला।
मिटी मलीन मन कल्पित सूला ॥—भरत

स्थान परिवर्तन। आज दुवारा जेल के १० महीने जेल में पूरे हुए हैं। मेजर मेहता आये। आज डिस्चार्ज किया करके कह गए। खुराक में भी फर्क की याने कम करने की उनकी इच्छा मालूम हुई। निश्चय नहीं किया।

आज अस्पताल क्वारंटीन (वी) वर्ग में से शाम को मुझे अंधेरे सालीटरी यार्ड में लाये। पलंग का पीछा छूटा, श्री नगीनदास मास्टर आदि मिले। जल्दी वंद होना पड़ा, पत्थर के चवूतरे की व्यवस्था हुई।

आज पत्र जानकीदेवी को वर्धा गया। श्री कटेली को पढ़कर सुना दिया। यहां हवा वहुत कम, घूमने की जगह कम।

चर्खा। जेलर ने गजानन नारायण कानिटकर, पूना की लिखी कुछ कितावें भेज दीं।

रामचंद्र एकनाथ दर्जी (लातूरकर) ने सेवा की।

१५-१-३३

जो सेवक साहिवहिं संकोची।
निज हित चहइ तासु मति पोची ॥—भरत

वरतन व कपड़े साफ किये। आज वापू की वकरियां व उनके वच्चों के

दर्शन नहीं हुए सुवह व शाम को भी। वापू का नाई गणपत भी नहीं आया।

श्री नगीनदास मास्टर व अन्य मित्रों से वातचीत, परिचय।

भोजन के वाद वजन किया। १७५ हुआ। कपड़े व भोजन के पांच रत्तल वाद करने पर १७० वजन नोट किया गया।

इतवार का लड्डू नगीनदासजी ने व अन्य मित्रों ने दिया। वदले में गुड़ व थोड़ी रोटी उन्हें दी।

चर्खा। हरिजन फाइल। दो वजे वंद हुए। रात को ९ वजे तक पढ़ते ही रहे, खासकर किर्लोस्करवाड़ी का जनवरी का अस्पृश्यता-निवारण-विशेषांक देखा।

इस वार्ड व कोठरी में गर्मी वहुत ज्यादा होती है—सामने मैदान वहुत ही कम चौड़ा याने करीव २॥ फुट चौड़ा, व १०० फुट करीव लंवा यार्ड है।

१६-१-३३

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरुस्वामी।
पूज्य परमहित अंतरजामी॥—भरत

आज जेल में पूरे १२ महीने हुए।

जानकी का जन्मदिन। प्रार्थना, रामायण में से पाठ, झाड़ू, कपड़े धोना, वरतन मांजना आदि कार्य हुए। वाद में स्नान, भोजन। संभव है कि आज मेरा पत्र जानकी को मिल गया होगा।

पूज्य वापू से १२-२५ से १-३० तक ९वीं मुलाकात। हरिजन-प्रश्न, नगीनदास मास्टर का प्रश्न, जेल व मारपीट आदि। सु० डें० भंडारी ने विश्वास दिलाया भविष्य में ऐसा नहीं होगा।

थोड़ा आराम, वाद हरिजन फाइल, चर्खा आदि। नगीनदास मास्टर से वातें।

जेल में सुधार की चर्चा पू० वापू से व जेल अधिकारियों से करने का निश्चय:—

(१) मारपीट विलकुल वंद होनी चाहिए। (२) वंद होने के सी-

वर्ग के समय में फर्क—देर करना। (३) पोस्टकार्ड की जगह पत्र। (४) इतवार को तेल, नमक। (५) जो गुड़ न लेवें उन्हें दाल। (६) सी-वर्ग को लिखने का साधन। (७) रोशनी का इंतजाम। (८) पेशाब के कुंडे ढंके रहने की व्यवस्था। (९) साग-रोटी में दुरुस्ती। (१०) गेहूं इस वर्ष सस्ता है; बाजरी की जगह दे सकते हैं। (११) वर्तमान पत्र, कम से-कम साप्ताहिक।

१७-१-३३

समरथ सरनागत हितकारी।
गुन गाहक अवगुन अघहारी॥—भरत

नगीनदास मास्टर की तरफ का विचार, खास करके भोजन के समय। मेजर भंडारी या मेहता व्यवस्था कर देगा तो ठीक, नहीं तो विचार करना पड़ेगा, ऐक्स्ट्रा लेने के बारे में।

जेल-काम आया, ऊन खोलने का। भोजन के बाद थोड़ी देर किया। हरिजन फाइल पढ़ी करीब २॥ घंटे।

आज रहने की कोठरी की दुरुस्ती होना शुरू हुआ। दूसरी कोठरी नं० २ में रहने गया।

१८-१-३३

को साहिब सेवक ही नेवाजी।
आपु समान साज सब साजी॥—भरत

आज से दूध डेढ़ रत्तल व मक्खन कम हुआ। आज एक-ही रत्तल दूध आया, गुड़ भी एक-ही औंस रहा।

मेजर मेहता ने बुलाया। मैं ९॥ बजे तैयार हो गया, परंतु सी-वर्ग के अमलदार के कारण अस्पताल में १०॥ बजे करीब पहुंचा। जूनी जगह ठहरने के लिए कहा गया।

मेजर मेहता ने कान देखा व आज उन्होंने अपने हाथ से साफ किया। ठीक दर्द व तकलीफ हुई। अंदर से मैल व दवा मिलाकर एक बड़ा-सा कंकड़ निकला। बीच में चक्कर सरीखे आये। मेजर मेहता ने कहा खुराक में

मैंने फर्क किया है। मैंने उन्हें कह दिया कि आप जो कुछ ज्यादा समझें अवश्य कम कर देवें। नींबू खराब आते हैं सो बंद कर दीजिए, (यदि) अच्छे देना संभव न हो तो।

नवीनचंद्र से परिचय, संतोष हुआ।

भूख नहीं मालूम होने से शाम को भोजन नहीं किया। हरिजन फाइल पूरी कर भेजी। चर्खा।

१९-१-३३

सहज सनेह स्वामि सेवकाई।
स्वारथ छल फल चारि बिहाई॥—भरत

सुपरिंटेंडेंट ने इंसपेक्शन किया। दवा के लिए स्टैंड नहीं है कहा, खैर। हरिजन फाइल आई, देखी।

विनोबा की गीताई पर काकासा० का अभिप्राय आया। प्रवचन सुंदर, वह शरीर को विशेष कष्ट देते हैं। बापू से बात करना।

बापू से आज १०वीं मुलाकात १२-१० से १-३० तक। बातचीत, खासकर सनातनियों को अपील के बारे में। समझौते का खुलासा पढ़ा, संतोष हुआ। ता० १४ के स्टेटमेंट का खुलासा उन्होंने समझाया। कमल के बारे में, नगीनदास मास्टर व नवीनचंद्र के बारे में, बरेली नोटीस उन्हें पसंद है। वाइसराय का जवाब नहीं आया। प्यारेलाल को सजा हुई। विनोबा के व मेरे खान-पान के बारे में उन्होंने दोनों मेजर से चर्चा की। मैंने उन्हें चिंता न रखने को कहा।

चर्खा, हरिजन फाइल।

२०-१-३३

आज्ञासम न सुसाहिब सेवा।
सो प्रसादजन पावई देवा॥—भरत

बरतन, कपड़े धोना, दवा, भोजन। बाद में हरिजन फाइल। थोड़ा आराम। फाइल वापिस की।

जेलर ने कहा कि आप डा० मोदी को यहां बुलाना चाहते हैं क्या? कल

सरकार ने मंजूरी दी है। आपके लड़के व सेक्रेटरी ने पुछवाया है। मैंने कहा कि वर्तमान में बुलाने की इच्छा नहीं है।

जानकी, बालकों के पत्र। मुकदमे की खबर का हाल पत्र द्वारा मिला। मेरे छूटने की तारीख वर्धा कोर्ट ने पुछवाई है। डा० मोदी की परवानगी के पत्र-व्यवहार की नकल देखी। चर्खा, प्रार्थना-पत्र आदि कागजात देखे। जेल-सुधार के संबंध में नोट किये।

२१-१-३३

अस कहि प्रेम विवस भए भारी।
पुलक सरीर विलोचन वारी॥—भरत

आज प्रथम बार हाथ से हजामत कराई इस जेल में।

हरिजन फाइल बापू के यहां से आई। पढ़ना शुरू किया, बीच में थोड़ी देर आराम।

गोखले जेलर आये। डा० मोदी को बुलाना चाहते हैं क्या? पूछा। मैंने कह दिया जरूरत होगी तो बापू से सलाह लेकर निश्चय कर लिया जायगा। यहां बुलाने की इच्छा कम है।

आज बंद होने में रोज से थोड़ी देर हुई। हाथ का व्यायाम, विनोद।

मदनमोहन ने लिख भेजा कि चि० कमल की व्यवस्था यहां वकील के यहां हो गई है। खर्च १५० मासिक आवेगा, उसे संतोष है। चर्खा।

२२-१-३३

गुरु पितु मातु न जानऊं काहू।
कहऊं सुभाऊ नाथ पति आहू॥—लक्ष्मण

एकादशी के कारण दूध, पपीता, सेनाटोजन लिया।

आज सामान आया—किताबें, पूनी, साबुन, दंत-मंजन। सामान ज्यादा था, वह बैरक आफिस में रख दिया।

आज मित्रों के, खासकर नगीनदास मास्टर के कहने पर जीवन का थोड़ा परिचय कहा।

वजन हुआ। १६९, गत इतवार से दो रत्तल कम, ता० ८-१ से दो रत्तल ज्यादा याने उस रोज १६६ था।
चर्खा, आज करीव २।। वजे वंद हुए।
हरिजन फाइल पढ़ी। नौ वजे तक श्रीमती नीला एम० मिस नीला नागिनी देवी वेनालोर (Miss Nilla Cram Cook of America) के वापू के ऊपर ता० ६-१ व १४-१ के सुंदर पत्र—सड़क व नालियों की सफ़ाई के वारे में।

२३-१-३३

मोरे सबहिं एक तुम्ह स्वामी।
दीन वन्धु उर अन्तर्यामी।।—लक्ष्मण

इस जेल में आने के वाद आज प्रथम वार कांजी पी। स्नान, भोजन, दवा, कपड़े धोना, सफाई।
वापू से १२ से १ तक ११वीं मुलाकात। वापू ने आश्रम का इतिहास लिखा है। वह मुझे भेजेंगे, कहा। महिलाश्रम वर्धा के वारे में कहा, विचार करके कहेंगे। डा० मोदी को दिखाने के लिए ववंई जाना होसके तो दिखाना चाहिए, ऐसी वापू की राय हुई। वह सु० डें० से वात करेंगे। जेल-सुधार की थोड़ी चर्चा। वंदी के वारे में लाइट, लेखन-साधन, इतवार को तेल, नमक, गुड़ के वदले दाल। मुलाकात—वाहर खिड़की से होती है—तीन महीने में एक पोस्टकार्ड, अखवार आदि पर विचार। वापू ने कहा कोशिश तो करना चाहिए। परंतु अपमान, गाली-गलौज, मारपीट को छोड़कर और वातों के लिए डायरेक्ट विरोध करना ठीक नहीं, आदि। मित्रों से जीवन का परिचय। वंडी, जेल की थोड़ी सिलाई की। वाद में सूई टूट गई। चर्खा। हरिजन फाइल।

२४-१-३३

सपने होई भिखारी नृप, रंक नाक पति होई।
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोई।।—लक्ष्मण

आज ठंडी ज्यादा पड़ी। मेजर मेहता ने कान देखा—दवा वदलने को कहा।

बबंई जाने के बारे में थोड़ी बातें। बा आदि के बारे में बातें।
आज जेल की बंडी सिलने का काम सीखना शुरू किया।
हरिजन फाइल बापू के पास से आई, पढ़ना शुरू किया, जेलर ने बापू की आज की तारीख का स्टेटमेंट लाकर दिया, उसे चार-पांच बार पढ़ा। हृदय में भक्ति, प्रेम, चिंता आदि उत्पन्न हुई। वाइसराय ने डा० सुबारायन के मद्रास के बिल को मंजूरी नहीं दी। विचार करने पर लगा कि यह एक प्रकार से बहुत ठीक किया। अब जो प्रचार-कार्य होकर मंजूरी मिलेगी वह ज्यादा परिणामकारक होगी। ईश्वर ठीक करता है। चर्खा, प्रार्थना आदि।

२५-१-३३

सेवक सुख चह मान भिखारी।
व्यसनी धन सुभगति बिभिचारी॥——लक्ष्मण

बापू का स्टेटमेंट मिला। उसे खूब शांति से ईश्वर-प्रार्थना करके फिर पढ़ देखा, क्योंकि अभी सुबह ही उसे वापिस करना है।
जेल-बंडी सीने का काम करीब एक-सवा घंटा किया। मित्रों से जीवन-परिचय की बातें।
बापू के पास से आज दूसरी फाइल आई।
कोठरी लीपी गई, सामान ज्यादा व्यवस्थित था, वह अलग रखा। चर्खा। हरिजन फाइल, उसका विचार।

२६-१-३३

सुनि सत्रुघन मातु कुटिलाई।
जरहिं गात रिस कछु न बसाई॥

सु० डें० इंसपेक्शन कर गए।
पू० बापू से १२ से १ तक १२वीं मुलाकात हुई। बापू के सिर में दर्द था। मिट्टी की पट्टी बांधकर आये थे। खुराक कम कर दी। ता० २४ से कातना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा—हाथ के दर्द में तो फर्क नहीं पड़ा। ता०

२४ के स्टेटमेंट के संबंध में कहा कि फास्ट का अभी जल्दी, करीब ६ महीने तो संभव नहीं दीखता (निश्चित नहीं)। जयकर, सप्रू, आम्बेडकर को बापू ने पत्र-तार, अस्पृश्यता-निवारण बिल के बारे में दिये। पू० मालवीयजी का सुंदर तार आया। एंड्रयूज के दो तार आये। उन्हें फास्ट मुल्तवी किये जाने के कारण संतोष हुआ। मेरे कान के लिए अभी बबंई नहीं जाने का निश्चय।

सु० डॅं० भंडारी से थोड़ी बातें। उनकी इच्छा, सूचना व बात सुनने की कम मालूम दी।

जेल-काम, एक बंडी सीकर दी। हरिजन फाइल देखी।

२७-१-३३

प्राननाथ करुनायतन, सुन्दर सुखद सुजान।
तुम्ह बिनु रघुकुल-कुमुद-बिधु, सुरपुर नरक समान॥—सीता

जेल-काम—बंडी सीने का व श्री विश्वनाथ से परिचय करने का, दोनों काम साथ में १२ से २॥ बजे तक किया। एक बंडी पूरी की।

जेलर कटेली, बरेली कलेक्टर को नोटिस दिया था उसकी रसीद तलास करने आये। मेरे पास नहीं थी। घुलिया लिखने के लिए कहा। चप्पल आई।

चर्खा, नवीनचन्द्र खांडवाले से समाज-सुधारक के कर्त्तव्य की चर्चा।

हरिजन फाइल। जेलर के मार्फत पढ़ने की आठ पुस्तकें अस्पताल में डा० वसंत के पास भिजवाईं।

२८-१-३३

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई, प्रिय परिवार सुहृद समुदाई।
सास ससुर गुरु सजन सहाई, सुत सुन्दर सुशील सुखदाई॥
जहं लगि नाथ नेह अरु नाते, पिय बिनु तिय तरनिहुं ते ताते।
तन धन धाम धरनि पुर राजू, पति बिहीन सब शोक समाजू॥—सीता

आज जेल में 'ईद' की छुट्टी थी।

भोजन बाद मित्रों को उनकी इच्छा के कारण नागपुर झंडा-सत्याग्रह का इतिहास सुनाया।

आज लड्डू दिन था। शाम को लड्डू, साग खाया।
चर्खा। 'रूल आफ दी गोंड सेवा मंडल' बापू ने भेजे थे, उनपर विचार कर नोट तैयार किया।
भील सेवा मंडल दाहोद (पंच महाल) (स्थापना सं० १९७९) की दशम वार्षिक रिपोर्ट सन् १९३२ पढ़ी। भगवान बुद्ध की भावना आखिर में बहुत सुंदर थी।
'सौंने वांचावो'—बालजीवन जन्युआरी ३३, लेखक रामजी हंसराज, सुंदर मालूम हुआ।

२९-१-३३

मेजर मेहता के कहने मुजब आज से साग के साथ दाल का थोड़ा पानी लेना शुरू किया।
११ से १ तक मित्रों से खादी-घटना व खादी-महत्व की ठीक चर्चा। जल्दी बंद हो गए—इतवार के कारण। चर्खा, हरिजन फाइल देखना शुरू किया।
६ से ६॥ तक अंदर कोठरी में ही घूमना किया।

३०-१-३३

वन दुःख नाथ कहे बहुतेरे, भय विषाद परिताप घनेरे।
प्रभु-वियोग लव लेस समाना, सब मिलि होंहि न कृपानिधाना॥—सीता
फाइल में श्री सतीशबाबू, एंड्रयूज, मालवीयजी आदि के तार व पत्र महत्व के थे।
मेजर मेहता ने कान देखा, कल फिर बुलाया।
पू० बापू से १३वीं मुलाकात १२ से १ के करीब। स्वास्थ्य, अस्पृश्यता-निवारण संबंध में वेरियर एलविन के आश्रम के संबंध में बातें। जेल-सुधार के बारे में उन्होंने, सु० डें० मेजर भंडारी ने उन्हें जो कहा था वह बताया। मैंने उसका खुलासा किया। शीघ्र जो-जो सुधार होना चाहिए वह पू० बापू व श्री कटेलीजी को नोट करा दिये। उन्होंने कहा, तेल तो इतवार को मिला करेगा, अभी नमक, मिर्च का तय नहीं हुआ। अन्य आवश्यकताओं के बारे में विचार करने को कहा।

वंडी सी। चर्खा, हरिजन फाइल।

राजगोपालाचारी, घनश्यामदासजी, देवदास वगैरे वापू से मिलने आये।

३१-१-३३

बिनु रघुपति-पद पदुम परागा ।
मोंहि कोउ सपनेहुं सुखद न लागा ।।—सीता

आज सुवह तीन वजे कंदील लगवाया, उस समय सिपाही का प्रथम वार मुंह देखना पड़ा।

सुवह से ही आज जमादार लालखां जरा गुस्से में था। वाद में शायद सु० डॅ० ने उसे धमकाया हो—यहां के वार्ड में आवाज ज्यादा होने के वारे में। वह आकर वहुत तेजी व गर्मी से अपना गुस्सा निकालने लगा। मैं तो पहले से ही अपनी कोठरी में अस्पताल जाने की तैयारी में था, उसका क्रोध, गुस्सा देखकर हमारे कुछ मित्रों के व्यवहार, मेरे व्यवहार का विचार कर थोड़ा दुःख हुआ।

जमादार ने अस्पताल में जल्दी भेज दिया, भोजन नहीं होने पाया था। वहां वहुत देरतक वैठना पड़ा। मेजर मेहता को भी मेरे वीच में वोलने पर वुरा लगा, वह आज डाक्टरों पर गुस्सा हो रहे थे। उसमें डाक्टरों की व मेरी ही भूल ज्यादा थी। भविष्य में मेरी ओर से, अधिकारियों से कम छूट ली जावे वैसा प्रयत्न करने का विचार। आज कान साफ किया, दर्द भी काफी हुआ, चक्कर भी आये। दिनभर स्वास्थ्य तथा मस्तक भारी रहा। १२।। वजे एक ही वार भोजन। वंडी पूरी की। करीव १।। घंटा, चर्खा। आज मन पर भी परिणाम रहा।

१-२-३३

आज चि० कमल का जन्म-दिन था। विशेप प्रार्थना। तीन वजे ही आंख खुल गई।

आज से मामूली सजा पूरी होकर दंड (जुर्माने) की सजा चालू हुई, याने १४ मार्च १९३२ से १३ मार्च, ३३ को एक वर्प पूरा होता है, उसमें दस महीने के ४० दिन काम के वाद करने से व फरवरी का महीना २८ दिन का

होने के कारण, सरकार अगर दंड (जुर्माना) वसूल कर सकती तो जेल-वालों को आज छोड़ना पड़ता। अब आज से दंड की सजा चालू हुई। मामूली दिन-चर्या का काम खतम करने के बाद एक लंगोट ठीकतौर से सीकर तैयार किया। करीब डेढ़ घंटा लगा। चद्दर आदि कपड़े धोये। चर्खा। हरिजन फाइल।

२-२-३३

हरिजन फाइल मंदिर-प्रवेश संबंधी।
करीब ८।। बजे इंसपेक्शन हुआ। आज सु० डें० जरा ठीक व शांत मालूम देते थे। बापू से १२-१० से १-१५ तक १४ वीं मुलाकात हुई। विविधवृत्त तथा अन्य पत्रों का खुलासा; मुझे किसी प्रकार का विचार, चिंता न रखने को कहा। वे जो कुछ भेजें बिना विचार के मैं पढ़ता रहूं। छपी हुई पुस्तकें, पंफलेट आदि नगीनदासजी या मित्रों को दिखाना चाहूं तो दिखाऊं। अस्पृश्यता-निवारण संबंधी अंग्रेजी पत्र पूना से 'हरिजन' नाम से आगामी सप्ताह में निकलना शुरू होगा। शास्त्री संपादक होंगे। दिल्ली से हरिजन हिंदी में निकलेगा। संपादक—वियोगी हरि। राजाजी के कार्य का खुलासा, घनश्यामदासजी के बारे में चर्चा। बापू के हाथ के बारे में गिल्डर या भरुचा को बुलाया। उन्होंने अभी ज्यादा जरूरत नहीं बतलायी। घन-श्यामदासजी ने सक्कर मिल के बारे में गैरसमझ कर दी। प्रभुदास के विवाह के बारे में चर्चा। पद्मा के बारे में बापू ने खुलासेवार कहा। राधा, कुसुम की बीमारी के समाचार कहे। लाला मोहनलालजी शिमला वाले की मृत्यु के समाचार कहे। चर्खा।

३-२-३३

नित्यकार्य के बाद जेल के दो लंगोट सीकर दिये। चर्खा। नवीन से बातें। हरिजन फाइल देखी।

४-२-३३

जेल की एक बंडी सी। सवा दो घंटे लगे।
चर्खा, भोजन, घूमना।

हरिजन फाइल पढ़ना शुरू किया। सत्याग्रह आश्रम का इतिहास जो बापू ने लिखा था वह आया।
आज सुवह सतारा के राष्ट्रीय विद्यालय के शिक्षक श्री एकवोटे छूटे।

५-२-३३

आज वजन हुआ, १६७ रत्तल।
आज सवने मिलकर भोजन किया, आनंद आया।
अस्पृश्यता-निवारण के संवंध में मेरे विचार व मेरा कार्य मित्रों से कहे। प्रश्नोत्तर। जल्दी वंद हुए। चर्खा।

६-२-३३

आज चक्कर व कमजोरी ज्यादा मालूम देती थी, कान में थोड़ा दर्द भी मामूली रहा, डाक्टर से कहा।
वापू से ११ से १ तक १५वीं मुलाकात। डा० आम्वेडकर के विचार, व्यवहार व हिंदू जाति से लड़ने की तैयारी आदि के विचार प्रकट किये। वापू को इससे दुःख तो पहुंचा ही। मंदिर-प्रवेश का हाल। मेरे स्वास्थ्य के संवंध में मैंने वापू से प्रार्थना की कि आप मेरे वारे में अधिकारियों से चर्चा न करें तो मुझे संतोष रहेगा। में खुद अपनी खुराक जो ज्यादा मालूम होती है, घटाना चाहता हूं। जेल-सुधार के वारे में वापू ने लिखकर भेजा है। श्री कटेली आये। नागपुर-मुकदमे के कागज दिये। जेल के वारे में वातचीत की। मेजर मेहता ने आफिस में वुलाया, कान देखा, गिडीनेस कमजोरी का कारण वताया। कहा कि मुझे अस्पताल के वी-वार्ड में जाना पड़ेगा। मेजर भंडारी ने वहां तो वात नहीं की। मित्रों को जाने का हाल वताया। थोड़ी फिकर। शाम को सव मिलकर खाने वैठे। जेल-वंडी पूरी नहीं हुई। अस्पताल में शाम को आया। हवा सुंदर मालूम हुई। थोड़ी देर वाद ठीक मालूम होने लगा।
चर्खा, प्रार्थना, कान में दवा डालकर ८ वजे सो गया।

७-२-३३

सवेरे वापू की वकरियों के दर्शन हुए, आनंद हुआ।

मेजर मेहता ने कान साफ किया। दवा डाली। आज कमजोरी ठीक मालूम देती थी, परंतु यहां की हवा से मन प्रसन्न था।

वापू ने मिलने वुलाया। करीव आधा घंटा स्वास्थ्य के वारे में व जेल की चिंता न करने के वारे में और अपने उदाहरण देकर समझाकर कहा। मैंने अपनी अड़चनें कहीं।

वापू के कहने से 'हरिजन' (अंग्रेजी-पत्र) शुरुआत में किन्हें भेजे जाव, उसकी फेहरिस्त जल्दी में तैयार करके भेजी। दो फेहरिस्तें भेजीं।

हरिजन फाइल देखी। आज सीकर तार भेजा—Anxious. Wire Haribhajanji's health. Tell my pranam. Request him severe all family ties anxieties and dedicate service God.

८-२-३३

सु० डें० मेजर भंडारी स्वास्थ्य की पूछताछ करने आ गये। गोखलेजी ने कहा कि वापू ने स्वास्थ्य के वारे में खवर मंगाई है।

शाम को नई हरिजन फाइल आई। वह पूरी की। चर्खा ठीक किया व काता।

वापू का पत्र तैयार किया। जेल-सुधार के संवंध में १५ प्रश्न खुलासेवार वापू के लिए लिखकर तैयार किये।

आज वापू से कमल व इंदु मिल गये।

९-२-३३

मेजर मेहता ने दोनों कान साफ किये। दूसरे कान में ज्यादा दर्द हुआ। मेजर मेहता ने माता के टीके के वारे में डाक्टरों से पूछा। नाराज हुए डाक्टर पर।

आज दोपहर के वाद स्वास्थ्य में थोड़ी वेचैनी मालूम देने लगी, हल्के ज्वर का अंदेशा हुआ। शाम को डा० भाटवडेकर की भी राय हुई कि शायद ज्वर हो। कान में दवा ४ वजे डाली।

नागपुर-केस के कागजात व हरिजन फाइल देखी। जेल के वारे में १५ सुधार वापू को सुवह लिख भेजे थे। माता गोदने के वारे में वापू को पुछाया।

१०-२-३३

प्रस्थान का अस्पृश्यता अंक पुस्तक १५, कार्तिक-मार्गशीर्ष, १९८९ ठीक तैयार किया गया है।

बापू से १६ वीं मुलाकात, १२-१५ से १-१० तक। हरिजन-पत्र, हरिजन-दिन, जेल-सुधार, बा को छह महीने की सजा और ५०० जुर्माना नहीं तो डेढ़ महीना, ए-वर्ग, मीराबेन का स्वास्थ्य खराब रहता है, आदि बातें। बबंई में बापू ने सरकार को लिखा है दास्नाने व बी-वर्ग बापू को पसंद नहीं। माता का टीका लगाने के बारे में बापू बात करेंगे अधिकारियों से। जेलर को दावा सही करके दिया। मुलाकात कल आवेगी। मेरी छूटने की तारीख २८ फरवरी व १३ जून, वर्धा कोर्ट को जेलवालों ने लिखा। मेरी समझ में दोनों की भूल है।

चर्खा। आज शाम को श्री गोखलेजी के मार्फत बापूजी ने हरिजन-साप्ताहिक पत्र भेजा। प्रार्थना के बाद प्रेमपूर्वक उसका स्वागत किया।

आज जमाल नाम का कैदी २१ वर्ष १ महीना ८ दिन जेल में एक-सरीखा रहकर छूटा।

११-२-३३

मेजर मेहता ने दोनों कान देखे, सोमवार को साफ करने को कहा। आज से नई चप्पल पहनना शुरू किया। चर्खा जल्दी कात लिया। थोड़ा आराम। कुटुंबी-मुलाकात—जानकी, चि० शांता, कमल, रामकृष्ण, केशवदेवजी, डागाजी, वेंकट।

इस जेल में आज तक सूत २१ गुंडी (१७९१३ बार) हुआ। घर भेजने की परवानगी नहीं मिली।

१२-२-३३

चर्खा। हरिजन फाइल आई। २॥ बजे बंद होने के बाद उसे देखा। बाद में The Servants of the Untouchable Society का नया विधान (Constitution) बापू ने देखने भेजा, उसे पढ़ लिया। शाम को सुस्ती मालूम हुई, थोड़ा आराम।

हरिजन फाइल पूरी की।

१३-२-३३

सुपरिंटेंडेंट मेजर भंडारी इंसपेक्शन को आये। स्वास्थ्य की खबर पूछ गए। मेजर मेहता ने वायां कान धोकर साफ किया।

वापू से १२-२० से १ वजे तक १७ वीं मुलाकात हुई। हरिजन में एक कालम उपवास से लगाकर आजतक के हाल वापू अपने हाथ से लिखा करें, यह सूचना मैंने की। उन्हें पसंद आई। 'हरिजन' सोसाइटी की घटना के वारे में मेरी थोड़ी सूचना थी—लिखकर भेजने को कहा। आम्वेडकर, राजभोज, रा० व० राजा वगैरा के वारे में उनका मत जाना। स्वास्थ्य की रिपोर्ट कही। वापू ने ओम् के वारे में, जानकीदेवी से उन्होंने कहा, सो कहा। मैंने उन्हें वारुताई के पास रखने को कहा, वाद में आश्रम या शारदा मंदिर आदि में। प्रहलाद की व्यवस्था मेरे छूटने पर। सरोजिनी नायडू का आज जन्मदिन है, यह वापू ने कहा; वह मिलने आने वाली थी। प्रभुदास की सगाई। गोमतीवहन व्यवस्था सूरत में करनेवाले हैं। विनोवा तीन वर्ष के अंदर व्रह्म की प्राप्ति कर लेने वाले हैं, यह वापू ने कहा। अप्पा साहव का फैसला हो गया। अव इस वारे में वापू के उपवास का डर नहीं रहा। हरिजन सोसाइटी की घटना ३ वजे दुरुस्त करके वापिस भेजी।

१४-२-३३

हरिजन फाइल व फादर एल्विन के आश्रम की रिपोर्ट देखी।

मेजर मेहता ने हालत पूछी। डा० भाटवडेकर ने अपने जल्दी के स्वभाव के कारण दो महत्व की गलती आज भी मेरे वारे में की। मेरा वर्ग वी वता करके व मेरा वजन एक रत्तल घटा है, उसकी जगह एक रत्तल वढ़ा है, ऐसा मेजर से कह दिया। वर्ग की गलती तो वहां सुधर गई, वजन की यों ही रह गई। भोजन। विश्रांति के वाद चर्खा १२ से १ तक कात लिया। वाद में हरिजन फाइल आ गई, उसे देखा। 'वैष्णवजन' का अर्थ लिखा।

हरिजन फाइल पूरी की। वापू के पास से तीन पुस्तकें मिलीं।

वांये हाथ की अंगुली में दर्द रहा।

१५-२-३३

आश्रम-इतिहास व प्लाइटेड वर्ड देखी।

मेजर मेहता आये, बहुत ठीकतौर से प्रेम व शांति से बात कर गए, बिहार के संबंध में तथा स्वास्थ्य वगैरे के बारे में। बाहर बैठने को आग्रह किया। चर्खा। हरिजन-फाइल, कुछ लिखा।

आज अस्पताल में एक क्रिमिनल वृद्ध कैदी मर गया।

१६-२-३३

ईशुचरित्र पढ़ा।

मेजर मेहता ने बुलाकर कहा—बी-वर्ग के क्रिमिनल कैदी को एडमिट करना पड़ा है। इसलिए आपको ४-५ रोज के लिए 'अंधेरी' में जाना पड़ेगा। गिडीनेस बीच-बीच में आती है, यह मैंने कहा। अंधेरी में हवा बहुत कम है, यह भी कह दिया।

शाम को भोजन के बाद ही अंधेरी (कब्रिस्तान) जूनी कोठरी नं० ३ में आना हुआ। यहां के मित्रों को आनंद हुआ। चर्खा बाहर काता।

१७-२-३३

ईशुचरित्र पढ़ा।

डाक्टर से कह दिया व जेलर से भी कि जहांतक गिडीनेस है वहांतक काम नहीं कर सकूंगा। कमजोरी मालूम देती है।

पूज्य बापू से १८ वीं मुलाकात १२-१० से १२-५० तक। वेरियर एल्विन ने श्रीमती मीर जिलेट से ईस्टर के बृहस्पतिवार को मड चैपल आफ संट फ्रांसिस, करंजिया में विवाह करने का निश्चय किया। ता० १२-२-३३ का पत्र वेरियर ने मुझे दिखाने को लिखा था, वह बापू ने मुझे दिया। बापू ने देवघर की योजना—चिचवड के बारे में की—मुझे विचार करने के लिए दी। बापू को विश्वनाथ के बारे में मैंने अपने विचार कहे। नगीनदासजी के मार्फत उन्हींकी मदद लेने का निश्चय।

बापू का वजन १०३ रत्तल हुआ। डा० आम्बेडकर, पूज्य मालवीयजी, राजाजी वगैरा के बारे में वाइसराय का जवाब आया। उस बारे में व हरिजन

के वारे में वापू ने सारांश में कहा। मीरावहन सावरमती गई, प्यारेलाल नासिक गया।

वेरियर एलविन के विवाह के निश्चय पर विचार किया।

चर्खा। हरिजन १८-२ का आज आया, थोड़ा देखा। हरिजन फाइल पूरी की।

१८-२-३३

थोड़े आराम के वाद 'हरिजन' वाकी रहा था वह पढ़ डाला। चर्खा। शाम को हरिजन फाइल आई, वह देख ली।

श्री छत्रपति साहू वोर्डिंग हाऊस, सतारा सिटी, की रिपोर्ट उत्साहवर्धक मालूम हुई। अगर वरावर हो तो श्री भाऊराव पाटील अवश्य धन्यवाद के पात्र हैं।

वेरियर एलविन के विवाह के संवंध में वापूजी को लिख भेजा। वे जो उचित समझें मेरी ओर से लिख दें।

'आज' का क्रोडपत्र-स्पृश्यास्पृश्य विचार ता० २२ सौर में, श्री लक्ष्मण शास्त्री का निवंध पढ़ा। ठीक मालूम दिया।

१९-२-३३

हरिजन-फाइल व आश्रम-इतिहास पढ़ा। भोजन सवने साथ मिलकर किया। वजन वढ़ने के वदले एक रत्तल कम हुआ। १६६ रत्तल है।

देववरजी की योजना (चिंचवड आश्रम के वारे में) पर मेरे विचार वापू को लिखकर भेजे। चर्खा वरावर चला नहीं। दोपहर के वाद सुस्ती ज्यादा व थोड़ी वेचैनी मालूम दी। हरिजन फाइल देखना शुरू की। आज प्रथम वार शाम को अंदर निवृत्त होना पड़ा।

श्री शिवप्रसादजी गुप्त का स्वास्थ्य ठीक नहीं है यह खवर पढ़कर और उन्हीं के नाती की अचानक दुर्घटना से मृत्यु की खवर सुनकर दुःख व चिंता। विचार पैदा हुए। प्रार्थना की।

स्वामी आनंद का वजन इस वार जेल में ३४ रत्तल कम हुआ। वहुत ज्यादा कम हो गया।

वापू की वकरियां आज भूलकर इस "कब्रिस्तान" वार्ड में आ गईं। आश्चर्य व थोड़ा आनंद हुआ।

२०-२-३३

आज रात रामनिवास रुइया के जीवन के बारे में स्वप्न वहुत देरतक आते रहे।

वापू से १९ वीं मुलाकात १२-२० से १ तक। वेरियर एलविन के विवाह के वारे में वापू ने श्रीमती पोचा की स्थिति कही। वापू को थोड़ा आश्चर्य व विचार पैदा हुआ। देवघर की चिंचवड की योजना के वारे में अपने विचार मैंने कहे।

शिवप्रसाद गुप्त का स्वास्थ्य व उनकी लड़की के लड़के की अचानक मृत्यु के वारे में, लेखन व सामग्री सी-वर्ग को, मैं रोज नोट भेजता हूं, पंचानन एक भूषण वगैरा के वारे में, यह सव मैंने वताया। मेरा वजन व खुराक उन्होंने पूछी। मराठी व वंगला 'हरिजन' जल्दी शुरू होवेगा, यह वापू ने वताया। आज कैंप वंद हुआ, भाई रामदास गांधी, श्री छोटूलाल मारफतिया व चिनाई कैंप से यहां आये, रामदास खूव थका हुआ था। उससे मिलकर व वात करके सुख व संतोष मिला।

२१-२-३३

रामदास से थोड़ी मामूली वातचीत।

भोजन करते समय रामदास वगैरा को मैं (जेल नियम की वजह से) अपने भोजन में से देना उचित नहीं समझता। इसका मन पर विचार रहा।

आज झड़ती (तलाशी) लेनेवाले सिपाही के व्यवहार से वुरा भी लगा और विनोद भी।

शाम को टेंप्रेचर देखा, ९८। था, जीभ के नीचे। हरिजन फाइल देखी। शाम को जल्दी ७॥ वजे सो गया। १० वजे नींद खुल गई। १२ वजे सिर में ब्राह्मी-तेल मालिश की तो भी आराम नहीं। रातभर विचार व प्रार्थना।

२२-२-३३

कल रात १० से आज सुवह तक सोने का काम नहीं। परमात्मा का खूव चिंतन। प्रार्थना। मन में हरिजन काम तथा चालू काम की योजना की

स्फूर्ति पैदा हुई। चिट्ठी निकली। बापू को तीन बजे पत्र लिखा, मुलाकात के बारे में।

चर्खा, आश्रम-इतिहास पढ़ा। पत्र एकबार पूरा पढ़ डाला। ता० ११-७-३२ पृष्ठ १५८ के बाद लिखना बन्द हुआ। अधूरा रह गया!

बापू से २०वीं मुलाकात। १२-१० से १-१० तक व रातभर का हाल, विचार-निश्चय सब बापू से कह दिया। एकबार तो आज ही जाने का मेरा निश्चय कायम रहा। बाद में सूक्ष्म-बारीक चर्चा होने के बाद फिर से बापू ने चिट्ठी श्री कटेली के पास से उठवाई। न जाने के प्रयत्न की चिट्ठी आई। संतोष हुआ।

सिर में दर्द था। रामदास ने ब्राह्मी तेल लगाया। गीला कपड़ा बांधा, उससे एक घण्टा ठीक निद्रा आ गई, शान्ति मिली। ४ बजे भोजन किया।

२३-२-३३

आज इंसपेक्शन में मेजर भण्डारी व प्रथमबार मेजर मेहता आये। सु० डें० भंडारी की इंसपेक्शन की रीत असंतोषकारक मालूम हुई। लेखन-सामग्री के बारे में तीन जनों ने कहा। इंकार कर दिया। बुरा मालूम दिया। आज से शायद रामदास के प्रताप से आध घंटा देर से बंद होने को मिले। मेजर मेहता ने अस्पताल में बुलाया है, ऐसा डाक्टर कह गया। वहां गया तो मेजर चले गए थे। कान साफ कराके व अंगुली को पट्टी बंधाकर वापस आया।

आराम, मित्रों से जेल-अधिकारियों की अड़चनों के बारे में बातें हुई। मैंने उन्हें अधिकारियों की अड़चनें कहीं, भंडारी, कटेली के गुण कहे। बापू ने एलविन को आज सुबह ४॥ बजे उनके विवाह संबंध में सुंदर पत्र लिख भेजा, उसपर विचार किया, नकल दुरुस्त की।

रात को १० बजे सोया। रामदास आज अस्पताल में गया।

२४-२-३३

अनन्तपुर-आश्रम की रिपोर्ट, १-१०-३१ से ३१-१०-३२ तक पढ़ी। श्री सुकाभाऊ असोदावालों से उन्हें संतोष नहीं हुआ।

चर्खा, जयमतसिंह और रामदास वापू से आज मिले। जयमतसिंह को संतोप हुआ। आज पानी का छिड़काव वगैरह हुआ। पांव की अंगुली व तलुवे में फटने के कारण दर्द। आज से ५।। वजे वंद होना हुआ। भोजन के वाद थोड़ा घूमना मिलने लगा।

हरिजन फाइल व हरिजन देखा।

२५-२-३३

नागपुर से श्री धनवन्तीवाई रांका का रजिस्ट्री-पत्र आज मिला। पू० वापूजी को नोट लिखकर भिजवाया। पूनमचन्द को सिवनी व नागपुर तार करने को लिखा। वापू का जवाव मिला कि उन्होंने तार वगैरा भेज दिया है। श्री राघवेन्द्रराव को भी लिखा है।

आज सरदार जयमतसिंह अपना जुर्माना भरकर छूट गए। शाम को सवने साथ मिलकर भोजन किया।

हरिजन पत्र पढ़ा। शास्त्री का पत्र विनोद व प्रेम से भरा हुआ मालूम दिया।

आज शाम को एकाएक अस्पताल में जाने का हुक्म आया। अस्पताल यार्ड में (वी-वर्ग की अस्पताल में जहां पहले थे) रहने गए।

२६-२-३३

वजन १६६ हुआ।

वापू ने रामदास को सुंदर पत्र, जेल की स्थिति पर लिखा। मैंने उसे भली प्रकार समझाया। प्रायः उसके गले उतर गया।

चर्खा, हरिजन फाइल देखी।

इस जेल में (यरवदा जेल में) गुड़ व मटनवालों की संख्या इस माफिक:

	गुड़वाले	मटनवाले	जोड़
दिनांक २२-१-३३ को	१९७४	८५५	२८२९
२६-२-३३ को	१२७५	७७८	२०५३

२७-२-३३

सुपरिंटेंडेंट भंडारी कल छाती तपासेंगे। वापू से २१वीं मुलाकात।

१२-३५ से १-३५ तक। 'हरिजन' ग्राहक संख्या ६ हजार, शिवप्रसादजी का स्वास्थ्य, पूनमचन्द रांका, सिवनी जेल आदि के बारे में बातें। जेल में 'हरिजन' मिलने के बारे में बम्बई सरकार को लिखा है। हरिजन विद्यार्थियों को सरकारी विद्यालय व कालेज में पढ़ने के लिए असहयोगी भी सहायता कर सकते हैं, ऐसा बापू ने मेरे पूछने पर कहा। कांजी व कांदा लेना मेरे लिए उचित है। जेल-सुधार की चर्चा। सु० डें० मेजर भंडारी के बारे में थोड़ी चर्चा। मुझे बम्बई कान की तपास के लिए आई० जी० पी० को लिखा गया है। इस सप्ताह में शायद जाना पड़े। मथुरादास को बापू लिखेंगे। मोदी के बारे में व रामदास के बारे में ठीक चर्चा व विचार।

चर्खा। रामदास के नाम का पत्र उतार लिया, उससे बातचीत।

२८-२-३३

विनोबा का ता० २३-२ का पत्र दुबारा पढ़ा। हिन्दी-प्रचारक देखा।

आज मेजर भंडारी छाती वगैरा देखनेवाले थे, परंतु न आ सके (काम अधिक हुआ होगा)।

रामदास गांधी की मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। उन्हें बहुत-सी बातें समझाकर कहीं। थोड़ा संतोष हुआ।

'प्रस्थान' का अस्पृश्यता-अंक आज ठीक पढ़ा। बापू का लिखा हुआ 'आश्रम का इतिहास' आज वापस भेजा। हरिजन-सेवक भी (हिन्दी का अंक) पढ़कर वापस भेजा।

१-३-३३

सुपरिंटेंडेंट भंडारी आये और तपास गये। बंबई जाने का दो-तीन दिन में मालूम हो जावेगा कहा। ठीक बात की।

रामदास गांधी से दिमाग साफ रखने के बारे में मेरा अनुभव उन्हें कहा। उन्हें थोड़ा समझाया। बहनों में काम करनेवाली बहनों में काशीबहन गांधी, बड़ी गंगा बहन का नाम रामदास ने लिया।

हरिजन फाइल पढ़ी। डा० कैलासनाथ काटजू का पत्र सुंदर।

राजाजी का तार दिल्ली से आया सो देखा।

२-३-३३

सु० डें० भंडारी ने सूजन देखी। पट्टी रात-दिन वांध रखने को कहा। चर्खा। रामदास से वातचीत। उसने वापू को जो पत्र लिखा वह वतलाया। रामदास के लिए वापू ने गीता में से चालीस श्लोक चुनकर दिये। रामगीता। वह उसके पास से नोट कर लिये।

कान में से मैल व पीप निकला।

प्रस्थान नं० (३) में रामनारायण पाठक का 'कुलांगार' नाटक सुन्दर लिखा गया है।

३-३-३३

प्रस्थान पूरा किया, सु० डें० भंडारी देख गए।

वापू से २२ वीं मुलाकात—१२-१० से १२-२५ तक। स्वास्थ्य, चन्द्रशंकर को डा० मोदी के लिए लिखा, मथुरादास मालवीयजी के पास गया, वम्बई सरकार को मेरे वारे में पत्र भेजा, वह मुझे नहीं वतला सकने का कारण कहा, प्रस्थान के दोनों अंक के वारे में मैंने वापू से मेरे विचार कहे, सुंदर हैं। रामदास के स्वास्थ्य के वारे में तथा मुलाकात के वारे में।

रामगीता लिखी।

४-३-३३

सु० डें० भंडारी मिल गये। मेजर मेहता मिलने आए। एकवार सियालकोट जाना पड़ेगा कहा। वाद वहां से विहार सेंट्रल जेल जाना संभव है ऐसा वताया। चर्खा। रामदास से उसकी जीवन की घटना, चर्चा। उसने निखालसता के साथ कही। रामगीता नकल की।

हरिजन फाइल आई। हरिजन नं० ४ आज मिला। महत्व के लेख पढ़े। स्काउटिंग और ग्रामसेवा, लेखक, श्रीराम वाजपेयी, पढ़ना शुरू किया। राजाजी व देवदास आज वापू को मिलने आये होंगे।

५-३-३३

वजन १६५। वाहर खुली जगह में वैठा।

चर्खा। रामदास से दक्षिणी अफ्रीका के संबंध में थोड़ी बातें कीं।
जल्दी बन्द। सुस्ती। सो गया। ४ बजे उठा।
हरिजन फाइल में श्री जनकधारी बाबू का पत्र (ता० १९-२ का) व बापू का जवाब (४-३-३३ को), श्रीमती मेली सेन्ट शेफर्ड, ६ राजपुर रोड दिल्ली का ता० २७-२ का व बापू का ता० ४-३ का जवाब महत्व के थे। हिन्दू पत्रिका में ता० २५-१२-३२ को मौलाना सईद अहमद बागीनी की शुद्धि करके उनका आत्मकथन छपा है; थोड़ा आश्चर्य।

६-३-३३

रत्नागिरी में 'जन्मजात अस्पृश्यते चा मृत्यु दिन' रिपोर्ट श्री ना० तु० खातु ने २२-२-३३ को प्रकट किया, उससे बैरिस्टर सावरकर की शक्ति व निश्चय का पता चलता है।
पूज्य बापू से २३वीं मुलाकात, करीब ४० मिनट। स्वास्थ्य का हाल, बापू ने मेरे बारे में बम्बई सरकार को जो पत्र लिखा था, वह मुझे दिखा सकते हैं या नहीं? उसपर थोड़ी चर्चा। मैंने कहा मेरा पूरा समाधान नहीं हुआ। राजाजी एकबार तिरुचेनगोडू जावेंगें। देवदास आश्रम में लक्ष्मी-मारुतिराव का विवाह कराने जावेगा। शंकरलाल बेंकर वापस जावेंगें। 'हरिजन' कैदियों को नहीं मिल सकेगा, सरकार की ना आ गई। 'गीताई' का यहां प्रचार किया जा सकता है।
सु० डें० भंडारी को मेरी सब सूचनाएं—जेल सुधार की, स्वदेशी शक्कर की कह देने को बापू ने स्वीकार कीं। आगामी शुक्रवार को जवाब देंगें। रामदास के बारे में भी बातें।
चर्खा, रामदास से बातें।
हरिजन फाइल व हिन्दी 'हरिजन' दूसरा अंक देखा। कबीर, सूर वगैरा का संग्रह तथा हरिभाऊजी का लेख पढ़ा।

७-३-३३

रात को नींद कम। खांसी (सूखी)।
सु० डें० भंडारी ने कान व छाती, पीठ आज भी बराबर तपासी।

ब्रांकाइटीस मालूम देता है कहा। डीप ब्रीदिंग, धूप में कपड़े निकालकर बैठना, दोनों वक्त पल्स व ज्वर देखना इत्यादि कहा। कल से एक औंस मक्खन बढ़ाया।

रामगीता। चर्खा। रामदास, 'मुसलमानी मुलखांतील मुसाफरी' पढ़ी। हरिजन फाइल व बंगला 'हरिजन' देखा, पुस्तकाकार रूप में। बाहर पृष्ठ पर सुन्दर चित्र। शीतलाबाबू सम्पादक। सतीशबाबू को बापू ने पत्र भेजा। हेमप्रभा देवी का पत्र: खासा विनोद।

८-३-३३

अभंगों का चुनाव। मु० डॅा० भंडारी के कहे मुताबिक लंबा श्वास लेना व धूप में बैठना आदि किया।

आज परचुरे शास्त्री सतारेवाले छूटे। साबरमती आश्रम में रहने का बापू ने निश्चय किया।

आज दो जनों को फांसी दी गई, कल शाम को एक नया फांसी के लिए आ गया।

पढ़ना, लिखना, कातना। रामगीता पूरी हुई। रामदास ने आज देवदास से मुलाकात ली। लक्ष्मी-मारुति विवाह ता० १४-३ को आश्रम में होगा। सबोंकी प्रसन्नता के समाचार मिले।

'मुसलमानी मुलखातील मुसाफरी' टीकेकर की लिखी बहुत-सी पढ़ी।

९-३-३३

'स्काउटिंग और ग्रामसेवा' श्रीरामजी बाजपेयी लिखित पुस्तक पर बापू ने मेरी राय मंगाई थी, वह लिखकर भेजी।

'जन्मजात अस्पृश्यतेचा मृत्युदिन' रत्नागिरी के बारे में सूचनाएं भेजीं।

आराम, गीता, चर्खा, रामदास से थोड़ी बातें। 'मुसलमानी मुलखातील मुसाफरी' पूरी की।

'सिहाला शह' (अफगानिस्तान व वायव्य सीमाप्रान्त) श्रीपाद रामचन्द्र टीकेकार लिखित पढ़ी।

१०-३-३३

वापू से २४वीं मुलाकात १२-०५ से १२-४५ तक, स्वास्थ्य के वारे में। पूनमचन्द रांका ने भूख हड़ताल, (राजनैतिक कैदियों का एक वर्ग रखना, व उन्हें अलग रखना इस वारे में) ता० ४ या ५ से शुरू की। तिजारे वापू से मिलने आये परन्तु मिल नहीं सके। वापू जाजूजी को आज तार भेजेंगे। शिवप्रसादजी गुप्त का स्वास्थ्य, हरिजन कार्य, मेजर भंडारी ने जेल सुधार (का) क्या उत्तर दिया? मीरा, बा, राधा, कुसुम के स्वास्थ्य समाचार कहे, जेलर से थोड़ी वातें, विश्वनाथ वसंत की शान्ता आदि के वारे में भी वापू से वातें।

नागपुर-केस के कागजात आज मिले, वर्धा से ता० ७-३ को भेजे हुए। वे पढ़े। चर्खा। रामदास से वातें। वसंत को दिलासा। हरिजन फाइल आई। आज महत्व के कोई कागज फाइल में नहीं थे।

११-३-३३

रात को १॥ वजे से निद्रा नहीं आई। ३ वजे से प्रार्थना करके हरिजन फाइल पढ़ना व नोट करना, विचार करना, होली का विनोद करना आदि। मेजर भंडारी तपास कर गए। आराम, चर्खा, रामदास से वातें, वसंत को उत्साहित किया।

नागपुर-केस के कागजात आए थे, वे आज फिर दुवारा पढ़ गया। वादियों की दो अर्जी देखकर थोड़ा आश्चर्य हुआ।

"हरिजन" अंग्रेजी आया देखा। हरिजन फाइल में वेरियर एलविन के दो पत्र वापू के नाम व वापू ने आज जवाव भेजा वह महत्व का था। घ० विड़ला ने मालवीयजी को ता० २१ को पत्र लिखा वह तथा असेम्वली मेम्वरों को टी-पार्टी दिल्ली में दी उसका वर्णन व वनारस से भेजा हुआ वापू के नाम का पत्र देखा।

१२-३-३३

आज एक क्रिमिनल वृद्ध कैदी पेशाव करने गया, वहीं हार्टफेल होकर उसी समय मर गया।

'सिहाला शह' (अफगानिस्तान व वायव्य सीमा प्रान्त) ठीक पड़ा। आज हरिजन फाइल नहीं आई।

१३-३-३३

सुपरिंटेंडेंट भंडारी ने कहा कि वम्बई जाने के वारेमें शनिवार को फिर लिखा गया है।

वापू से २५वीं मुलाकात। जाजूजी को, वापू ने तार भेजा था, पूनमचंद के वारे में, वह तार आई० जी० पी० के पास भेजा गया; जेल-सुधार के वारे में मेजर भंडारी का खुलासा वापू ने कहा, वेरियर एलविन के पत्र से समाधान, कमल व रामकृष्ण का हाल, मेरे वम्वई भेजने के वारे में सरकार की नीति। वापू ने कहा कि गौवा, सर हरकिशनलाल का लड़का व सनातन धर्म कालेज का प्रोफेसर मुसलमान हुआ; मुसलमान नेता जमा हुए थे। वसन्त, पुरुषोत्तम, रघुनाथ अनसारे की चर्चा। वापू ने जानकीदेवी आदि से डेविड-योजना की चर्चा की।

१४-३-३३

आज उद्योग मंदिर, सावरमती में लक्ष्मी-मारुती का विवाह हुआ होगा। देखें क्या आंदोलन होता है।

हरिजन-फाइल में विनोवा, कृष्णदास, मदालसा, रणछोड़जी पटवारी एस० वी० सोनावने वर्धा के पत्र तथा 'काल आफ इस्लाम', वगैरा पढ़े। गुजराती 'हरिजन वन्धु' पढ़ा। 'सिहाला शह' पढ़ा।

आज वापू की वकरियों से खेल खेला। उन्हें रोटी खिलाई, गेहूं उन्होंने नापास किया, वाजरा पास किया। उनके खान-पान व स्नान की व्यवस्था करानी है, वाल भी वढ़ गए हैं।

चर्खा। रामदास से वातें। वसन्त से, उसके वारे में उसके अनुभव व विचार सुने। हरिजन फाइल पढ़ी। नगीनदास मास्टर आये हैं ऐसा सुना।

१५-३-३३

वसंत से नीति भत्ता के वारे में चर्चा, विचार।

'सिहाला शह' पढ़ा। आज वापू को नोट भेजी, उसमें डेविड-योजना में जिनकी ओर से मदद मिल सकती है उनके नाम लिख भेजे। श्री जानकी देवी (मैया) अगर वापू की प्रार्थना आज्ञा स्वीकार न करें तो वापू ने उन का हुक्का-पानी बन्द (असहकार) करने की विनोदी सूचना लिखकर भेजी। वकरियों के नामों के वारे में सरदारजी से विनोद किया।

चर्खा। रामदास के मान-अपमान की कल्पनाओं के वारे में विचार-विनिमय।

आज थोड़ी वरसात हुई, हवा चली। 'सिहाला शह' पढ़ा।

१६-३-३३

मेजर भंडारी ने कहा कि सुवह की किरणें लेना ठीक है।

आराम के वाद 'सिहाला शह'। चर्खा। रामदास से मान की कल्पना व दूसरे के हाथ के नीचे काम करना हो तो अपने मन की तैयारी आदि की सुंदर चर्चा व विचार-विनिमय।

एकादशी संघटनेची-राष्ट्रीय पद्यमाला-कानिटकर-कृत पढ़ी।

'सिहाला शह' में 'अरवी भाषा शास्त्रोक्त है, तुर्की डामडौल, फारसी-मधुर, हिन्दुस्तानी-लज्जतदार और पुश्तू गर्दभ गर्जन के माफक।'

—कावुल में दीवान निरंजनदास था—अमानुल्ला के समय में;—अमानुल्ला—ताझीं (सुरमा के पिता) की सलाह से कार्य करता था, आदि पढ़ा।

१७-३-३३

धूप ली। 'सिहाला शह' पूरा हुआ, मेजर भंडारी देख गए।

वापू से २६वीं मुलाकात। स्वास्थ्य: वापू का वजन १०५, वल्लभभाई दूध-फल ऊपर, डेविड योजना, महाराष्ट्र चर्खा संघ, अनन्तपुर खादी का कार्य, हरिजन, उच्च-वर्ण के लोग कैसे वने, नैतिक व व्यावहारिक अड़चनें, डा० आम्वेडकर का विरोध सम्भव, आदि मेरी शंकाओं का समाधान। मेरी डंकन का परिचय, लक्ष्मी का विवाह, १०० हरिजन आये। सव मिलकर ३००। खूब मिलना-जुलना। रामदास के पत्र में 'जमनालालजी' का विरोध, घनश्यामदास को पत्र डेविड-योजना के वारे में, पूनमचन्द,

शिवप्रसाद, राधा वगैरे व आनन्दी व आप्रेशन की हकीकत वापू ने कही। केशव का प्रकरण सोमवार को वापू कहनेवाले हैं। रामदास की हकीकत, हरिजन फाइल वर्तमान में वंद होवेगी और सरकार से लिखा-पढ़ी आज ही वापू करेंगें।

मेरे वंवई जाने के वारे में राजनैतिक अड़चनों का डर, वकरियां व खुली हवा आदि की चर्चा।

चर्खा। रामदास व सफल जीवन।

हरिजन फाइल रात को पूरी की।

१८-३-३३

आराम के वाद चर्खा। रामदास से उसके मन की अशान्ति की ठीक संतोष-कारक चर्चा हुई, उसे समाधान हुआ मालूम दिया।

गर्मी ज्यादा पड़ने लगी।

आज से हरिजन फाइल आना वन्द हुआ। इसलिए "ब्रह्मपुराण" श्रीपाद रामचन्द्र टिकेकर का पढ़ना शुरू किया।

१९-३-३३

प्रार्थना भजन, ब्रह्मपुराण पढ़ा। वजन १६७ रत्तल हुआ।

ब्रह्मपुराण (ब्रह्मदेश का वर्णन) पूरा किया। 'मेरी फरोस' पढ़ना शुरू किया। चर्खा, रामदास से वातें।

२०-३-३३

ता० २५ का पुराना 'हरिजन' देखा।

आज त्रैमासिक जेल-कमिटी जेल में घूम गई।

वापू से २७वीं मुलाकात हुई। स्वास्थ्य, वजन १६७ रत्तल, दो रत्तल वढ़ा, खांसी, सूजन, आदि की चर्चा, वापू ने वंवई सरकार को 'हरिजन-फाइल' मेरे देखने के वारे में लिखा है। वम्वई तपास कराने के लिए सरकार को रिमाइंडर करने के वारे में वापू लिखें या मैं लिखूं यह आज निश्चय करेंगें। लीमे, टीकेकार को वुलाने को कह दिया, वापू ने केशव की स्थिति कही, केशव ने पत्र लिखा उसका सार कहा, केशव वापू से मिल गया वह

हकीकत कही। श्री वल्लभभाई आदि के विचार कहे। आश्रम समाचार ता० १४-३-३३ का देखने को वापू ने दिया।

२१-३-३३

मेजर भंडारी ने आज कान, गला, छाती, पीठ बराबर तपासी। घूमना कम करने व घुटनों के ऊपर धूप लेने का कहा।
बंबई टेम्परेरी ट्रांसफर के लिए अर्जी पर सही करके दी, जेल कार-कून को।
चर्खा। रामदास से आश्रम की वाला व नवयुवकों के संबंध की वातचीत। ईशु-चरित्र पर विचार।

२२-३-३३

ईशु-चरित्र पढ़ा। वसंत से बातें, चर्खा। रामदास से वातें।
आज डा० भटवेडकर व वार्डरों के व्यवहार से थोड़ा आश्चर्य हुआ। 'गम खाना व कम खाना, तव कटे जेलखाना' सूत्र याद किया व समझाया।

२३-३-३३

विनोवा के सुन्दर वचनों का हिन्दी थोड़ा किया। चर्खा। रामदास से वातचीत।
ईशुचरित्र व वाइवल वगैरा पर फ्रेड डिसोजा से चर्चा हो रही थी कि ८ वजे करीव एक सिपाही ने वरावर की बैरक में गड़वड़ शुरू की, वुरा लगा।

२४-३-३३

मेजर भंडारी से वातें। जेलर कटेली ने कहा कि कल बंवई जाना पड़ेगा। वापू से २९वीं मुलाकात—ईशुचरित्र, डेविड-योजना, केशव-प्रकरण, नारायणदास व प्रेमा बहन को महिला-आश्रम के लिए वापू लिखेंगे, आश्रम के वीमारों की हालत, गुलजारीलाल का स्वास्थ्य, हरिजन-विल, वापू डा० मोदी को पत्र लिखेंगे। बंवई में दूध मुझे लेना चाहिए, ऐसा वापू ने कहा। मैंने कतल वगैरह का कारण समझाया, वापू ने उसका खुलासा किया। हो सका तो वापू शुक्रवार को पत्र भेजा करेंगे। सत्याग्रह शुद्धता से याने

सत्य व अहिंसा से नहीं चल रहा है यह बापू ने बताया। पांच वर्ष इसी माफक निकल जाते बापू को मालूम देते हैं।
जेलर से हिस्ट्री-टिकट दुरुस्त करवाई। वसंत, विश्वनाथ के वारे में कहा। चर्खा। जेल अस्पताल के मित्रों से वातचीत।

२५-३-३३

(यरवदा-मंदिर से बम्बई आर्थर रोड जेल)

जेथे जातों तेथे तू माझा सांगाती, चालविसी हातीं धरुनियां।
चालो वाटे आम्हीं तुझाचे आधार, चालविसी भार सवे माझ्यां॥

बापू, अन्ना दास्ताने, गंगाधरराव देशपाण्डे, नगीनदासजी को नोट अधिकारियों के मार्फत भेजने को लिखे। वाद में नित्यकार्य।
बराबर १० वजे भोजन, दवा आदि कार्यों से निवृत्त हुए। चर्खा भी चलाया। मित्रों से चर्चा। रामदास, वसंत, गोडबोले, फ्रेड डिसोजा, वासुदेव आदि से मिलाप, वजन वगैरा।
बापू से मुलाकात आज नहीं होने पायी। सु० डें० ने परवानगी नहीं दी, बुरा लगा। मेजर भंडारी का व्यवहार रूक्ष रहा। जेलर कटेली को सुबह के लिखे नोट दिये।
खिड़की स्टेशन से १२। वजे रवाना होकर भायखला ४ वजे पहुंचे। वी० थोरट पुलीस अफसर साथ थे।

बम्बई आर्थर रोड जेल, २६-३-३३

सत्य संकल्पाचा दाता नारायण, सर्व करी पूर्ण मनोरथ॥

घूमना। रेसकोर्स, तवेला, मिलें वगैरा के दृश्य देखे। सु० डें० सा० आ गए। डा० मोदी ११॥ वजे आवेंगें, ऐसा कह गए।
वजन १६६॥। भोजन की व्यवस्था आज देर से हुई।
सु० डें० मि० वारनर, डा० एस० एच० मोदी को लेकर अस्पताल ११॥। वजे आये। दोनों डाक्टर भी हाजिर थे। डा० मोदी ने कान भली प्रकार देखा, इतिहास सारांश में सुना। छाती व कान का एक्सरे लेने के बारे में व खान-पान के वारे में अपनी राय सु० डें० को लिखकर दी। डा०

मोदी की राय भी हवा फेर व इलाज के लिए यूरोप जाने के पक्ष में मालूम हुई। मंगलवार को कर्नल थामस के आने पर एक्सरे वगैरे का निश्चय होगा व खान-पान का भी। डा० मोदी को बिल यहां भेजने के लिए कहा। नाना फरारी, सखाराम, रावजी फरारी, त्रिबंक व भाऊ वाखरा कसारा का हाल फिर से मालूम हुआ, जात के कोष्टी। चर्खा।

२७-३-३३

डा० जोशी व सु० डें० वारनर व जेलर मिल गए। ठीक संतोषकारक वात कर गए।

आज वजन, ऊंचाई की विधि हुई। यहां ऊंचाई पांच फुट ११। इंच हुई, आधा इंच ऊंचाई में फर्क पड़ा। थोड़ा आश्चर्य हुआ

आज से टोस्ट आदि शरू हुए। भोजन आदि की बराबर व्यवस्था हो गई। चर्खा। हिस्ट्री-टिकिट देखी।

२८-३-३३

ज्यादा सामान अलग किया। करीव ९ बजे कर्नल थामस इंसपेक्शन को आये, नाड़ी वगैरा देखी। मच्छरदानी की व अन्य व्यवस्था। डा० मोदी की सूचना कायम रखी।

सु० डें० मि० वारनर इसपेंक्शन को ९।। करीव आए, हँसकर ठीक वात कर गए। आज से डा० मोदी का इलाज चालू हुआ। खाने की दवा, लगाने की दवा व सेंक दो घंटे।

जो ज्यादा सामान था वह जेलर के स्वाधीन किया। जेलर व डा० ने कहा कि अस्पताल में रहो वहांतक चर्खा भी न रखो। मैंने उन्हें समझाया कि इसके कातने से मुझे सुख मिलता है। मैं यरवदा व धुलिया में भी कातता रहता था।

ग्वालियर के वालकृष्ण, भीकाराम को ता० २२ मार्च को सजा। परिचय अचानक हुआ। उन्हें थोड़ा समझाया।

२९-३-३३

रात को २ से ३।। तक श्री गोविन्दराम पोद्दार व सीताराम पोद्दार के संबंध

में, खासकर सीताराम पोद्दार के बालकों के प्रति मेरा कर्त्तव्य पूरा नहीं हुआ, यह विचार, इन दोनों का प्रेम संबंध, जन्म से मृत्यु तक का व देश-प्रेम, समाज-सेवा आदि सब बातें व इन दोनों की मृत्यु मेरी गोद में हुई, वह सब चित्र मेरे सामने खड़ा हुआ। चि० घनश्याम, रुक्मणी व उनकी माता के प्रति पूर्ण कर्त्तव्य पालन का प्रयत्न करने का विचार।

सु० इं०, जे०, डा० जोशी व करमरकर आ गए। आज एक बरदासी बारु तुकाराम मेरे लिए अलग मिला।

चि० रामेश्वर को पोस्टकार्ड लिखा, सामान आदि।

३०-३-३३

आज १० बजे जे० जे० अस्पताल में कान व छाती के एक्सरे के लिए पु० इं० खान के साथ गया। एक्सरे दो बार लिया गया। वहां डा० मोदी मिले। उन्होंने कहा तुम्हें ठंडी हवा में जल्दी जाना चाहिए। यूरोप जाना ठीक रहेगा। हवा बदलने से लाभ होगा। यहां से यरवदा की हवा ज्यादा ठीक है। वहां जाना ठीक रहेगा। उन्होंने कहा छाती साफ है। इसलिए चक्कर आदि सब कान का ही कारण है। वे एक्सरे बराबर देखकर सोमवार को रिपोर्ट भेजेंगे। उन्होंने पीप व पेशाब तपासने को भी कहा। आज पीप नहीं निकला—पेशाब नहीं तपासा गया। १२ बजे वापस जेल में। थकावट मालूम दी।

डा० जोशी, करमरकर को पूछने पर हालत कह दी।

जेल में आज प्रथमबार, इस सजा में, मच्छरदानी लगाई गई।

अनजान हरिजन बालक से इशारों से खेल-तमाशा।

३१-३-३३

सुपरिंटेंडेंट व जेलर दोनों आये। सु० इं० ने अपने कान की तकलीफ का हाल कहा। सु० इं० से डा० वैद्य से मिलने के बारे में कहा, डा० मोदी से पूछ लिया जावे, मेरी जरूरत न हो तो मुझे जल्दी यरवदा भिजवाने का कहा। आराम, चर्खा, सफाई, प्रो० नाथ हरीपुरंदरे का अस्पृश्यता व देवालय लेख पढ़ा।

चर्खे की जगह तकली काती। थारू का परिचय।

१-४-३३

रात को कई बार पेशाब जाना पड़ा, रुकावट व दर्द। सु० इं० आये। उन्हें मेरे नाम महात्माजी का आज पत्र आया हो तो देने को कहा। उन्होंने हिस्ट्री-टिकट देखकर जवाब देने को कहा।

डी० साटम, पुलिस इंस्पेक्टर जे० जे० अस्पताल ले गए। डा० मोदी ने दोनों कान देखे। एक्सरे मिलान किये। छाती साफ है, कहा, व कान में भी "टी० बी० आफ दी इअर" नहीं है, तथापि सूजन है। कान में डालने की दवा, खाने की दवा व गरम पानी का सेक चालू रखने को कहा। ठंडी हवा में रहने की ज्यादा जरूरत बतलाई, पेशाब की जलन मिट जावेगी, चिंता का कारण नहीं, खान-पान पूरा लेना ही चाहिए आदि। सेनेटोजन व केमिकल-फूड दोनों ही ठीक है, परन्तु दोनों साथ नहीं लेना, सेनेटोजेन लेते रहें। कभी बीच में नहीं भी लेना। हमेशा लेने की जरूरत नहीं है। बीच-बीच में लेते रहा करो। रिपोर्ट सोम या मंगल तक भेजने को कहा। यूरोप नहीं जाते हो तो यरवदा रहना ठीक रहेगा कहा।

अस्पताल से जेल वापस आते समय रास्ते में चि० रामेश्वर को माटुंगा से कालबादेवी जाते मैंने देखा, उसने नहीं देखा।

२-४-३३

रात को पहरे वालों की गड़बड़ से निद्रा कम।

केशवलाल रतनसी राठोड़, नवसारी आश्रम में रहा हुआ है। कांग्रेस स्वयं-सेवक होकर जेल मंदिर में भी हो आया है। उम्र १८ वर्ष की है। बुरी संगत याने तापजी मूलजी बोरीचा उम्र २० वर्ष की संगत से केशव का व तापजी का सब प्रकार से नाश हुआ। उसने जो-जो आपबीती व हरिजनों की हालत की कही, वह बिचारने योग्य व मनन करने योग्य थी। इसके कहने में सच्चाई व एक प्रकार की सरलता मालूम देती थी। ठक्करबापा जानते हैं ऐसा कहता था, जेल में भी इसे सजा मिली।

पालजी कल्याण मास्टर (हरिजन) की तलाश करना; ठीक आदमी है

सुना। जयसिंग, लक्ष्मण गोहेल व खीमजी राठोड़ कांग्रेस में काम करते हैं। जयसिंग के घर में सब खादी पहनते हैं। दारू, मांस नहीं खाते। प्रो० पुरंदरे की पुस्तक पूरी की। तकली। धारू व केशव से थोड़ी बातें।

३-४-३३

विनोबा के सुन्दर वचनों का हिन्दी अनुवाद शुरू किया।

सु० डें० आगए। ता० २९-३ को लिखा हुआ पोस्टकार्ड, आज जेलर बाद में सूबेदार मेरे पास समझ गए। आशा है आज चला जावेगा।

आज कान में से थोड़ा पीप निकला।

४-४-३३

नवमी तिथि मधुमास पुनीता, सुक्ल पच्छ अभिजित हरि प्रीता॥
मध्य दिवस अति सीत न घामा, पावन काल लोक विश्रामा॥
मम गुन गावत पुलक सरीरा, गद्‌गद् गिरा नयन बह नीरा॥
पायोजी मैंने राम रतन धन पायो॥

दो बजे बाद निद्रा नहीं आई, विचार खासकर मथुवाला-कुटुम्ब निर्मला, मंजू, तारा, अनसूइया, इंदू, नीलकण्ठ इत्यादि का भावी जीवन-व्यवस्था के आते रहे।

तुलसी-रामायण के संग्रह में से दो दोहे, चौपाई पढ़ी।

सु० डें० आये और कहने लगे कि रामेश्वर मुलाकात मांगने आया था। सी-वर्ग को व्यापारिक मुलाकात का हक नहीं है, ऐसा कहा। मैंने कहा 'है'। विनोवा के सुंदर वचनों का हिन्दी अनुवाद १२ बजे तक करीब तीन घंटे किया।

आज राम-नवमी के निमित्त कैदियों को सकरकन्द, आलू व गुड़ जेल की ओर से मिला।

आज शाम की प्रार्थना सुंदर हुई—'पायोजी मैंने राम रतन धन पायो' आज राम-जन्म था इसलिए। इस भजन को गाने में खूब सुख व एकाग्रता मिली।

विड़ला परिवार का मधुर व उच्च स्मरणों का विचार आता रहा। भविष्य में भी इस परिवार से ठीक आशा की जा सकती है।

एक कैदी ने एक वार्डर को पट्टा फेंककर मारा, उसके सिर में से खून निकला।

विनोवा के सुन्दर वचनों का हिन्दी अनुवाद।

सुवह जिस कैदी ने वार्डर को मारा था, वाद में अधिकारियों को गाली दी थी, उसको जेल अधिकारियों ने खूव मारा, खासकर एम० ई० जेलर ने। वाद शाम को उसे ३० कोड़े लगाने की तैयारी।

मुझे पांच वजे वाद आफिस में वुलाकर कहा गया कि आपका २५० रु० का जुर्माना वसूल होने का खंडालावाले का पत्र आया है। सो आज अभी आपको जाना पड़ेगा। थोड़ा वुरा मालूम हुआ। सु० डें० से वातें। शाम को जेल से वाहर। किराये की मोटर करके कालवादेवी रोड गया। वाद में वापूजी को तार-पत्र वगैरा दिये।

बम्बई, ६-४-३३

रातभर प्रायः गरमी, मच्छर, पलंग आवाज करने के कारण निद्रा नहीं आई। रात को दो वजे लिखना शुरू किया।

अखवार ऊपर-ऊपर से देखा। फ्री प्रेस में डा० मोदी का स्टेटमेंट छपा। नारायणलालजी पित्ती, सुरजमलजी रुइया, चि० शान्ता, श्रीकृष्ण मिलने आये। जे० जे० अस्पताल में कुमारी काशी दीघे (वसंत) से मिला। डा० देसाई व मोदी से शंकरलाल बैंकर, श्री मथुरादास त्रिकमजी, पंडित रणजीत, स्वरूप (विजयलक्ष्मी), कृष्णा आदि से, कुमारी काशी से, वाद में लक्ष्मी-निवास, सुशीला, चन्द्रावाई, सुवटावाई से मिला। उनके भविष्य-जीवन व सार्वजनिक सेवाकार्य का निश्चय (प्रतिज्ञा) होने से मन में सुख मिला। अव हिम्मत से वह सेवा-कार्य कर सकेगी। लछमनदासजी डागा, घन्नू दानी मिले। जानकीदेवी व सुवटा वहिन ने वापूजी को डेविड-योजना के लिए २५०० रु० देने का निश्चय किया।

एकादशी का फराल। माटुंगा में जल्दी प्रार्थना करके दूसरे वरामदे में नीचे सो गया।

बम्बई-पूना, ७-४-३३

रात को निद्रा ठीक आई। चि० कमलनयन से वातें। उसके व्यवहार की त्रुटियां उसे वतलाई। उसके थोड़े विचार जाने।

जल्दी भोजन कमला के हाथ का करके, दादर से जानकीदेवी, चि० घन्नू दानी, नानू को साथ ले थर्ड क्लास रिटर्न टिकट लेकर पूना गए। रास्ते में हरिजन देखा।

पूना गोविन्दलालजी के वंगले पर सामान रख, मुंह हाथ धोकर १२॥ वजे वापू से जेल में मिला। जानकी, घन्नू दानी साथ थे। आम का पेड़ देखा, सुख मिला।

वापू से डेविड-योजना, स्वास्थ्य, डा० मोदी की रिपोर्ट, जुर्माना किसी ने दे दिया, भविष्य कार्य, वर्धा जाना जरूरी हो गया। पूनमचंद रांका के वारे में वापू ने कहा कि कल उससे खण्डवा में मिलना जरूरी है। मेरे कहने पर राघवेन्द्रराव से मिलना भी उन्होंने पसंद किया। मुझे स्टेटमेंट देने की जरूरत नहीं। उन्होंने कहा कम-से-कम एक महीना तो मुझे ठंडी जगह-मसूरी, महावलेश्वर, पंचगनी वगैरा रहना जरूरी है।

पंडित रणजीत के वारे में उसका संदेशा, पुष्प, कृष्णा का संवंध, मेरठ, आगरा, महिला-आश्रम व लक्ष्मीवेन, शांता पनवेलकर, नर्मदा के वारे में वातें। मेरे पहनावे आदि की जानकीदेवी ने चर्चा की। प्रश्न-उत्तर के वाद साधारणतौर से धोती, कुर्त्ता, टोपी अभी निश्चित हुआ। वापू ने केशव, राधा, संतोकवहन का हाल कहा, दुख हुआ।

टक्करवापा, शास्त्री मिले। वापू के साथ दूध व फलाहार, विनोद ५॥ वजे तक। वंगले पर भोजन। केशव से उसका पूरा हाल सुना। रात को ९ वजे शयन।

पूना-वम्बई, ८-४-३३

केशव-आनंदी-प्रकरण की पूरी फाइल वापू ने दी। वह पढ़ डाली। पूनम-

चंद रांका के बारे में चार तार, श्री राघवेन्द्रराव, पूनमचंद रांका के यहां एक, एक नागपुर, एक वर्धा व एक खण्डवा किया। घूमते हुए नेचर क्योर क्लिनिक, नं० ६ टोडीवाला रोड, पूना देखने गये व काकासा० से मिले, खूब बातें, पोचा बहन वहां मिली।

कमल, रामकृष्ण के 'प्यूपिल्स ओन स्कूल' में गये। श्री वकील से मिले। चित्रशाला, वासू काका, मोटर ड्राइवर कूपर (पारसी)।

पू० बापू से बातें—केशव के बारे में, पूनमचंद रांका व राघवेन्द्रराव, हरिजन, मेजर भंडारी व डलहोजी जाने के बारे में, बसंत, रामदास के जेल व क्लास, जानकीदेवी की चिंता-फिकर की चर्चा।

गंगाधरराव देशपाण्डे से मिला। बाबा सा० सोमण, वासू काका, हरिभाऊ से भी।

३·३५ की गाड़ी से वापस बंबई रवाना। ठक्कर बापा, शिन्दे, रेहाना व केशव ट्रेन में साथ।

दादर से माटुंगा। तार-पत्र पढ़े, नागोरी आदि से बातें, पत्रों के जवाब।

बम्बई-रेल में, ९-४-३३

रामेश्वर ने शक्कर की पूरी योजना समझाई, संतोष हुआ। बीमारों से मिलना जमनाबहन, हरिभाऊ उपाध्याय, जयसुखलाल मेहता, शांती की मावसी, सुशीला, लक्ष्मीनिवास बिड़ला आदि।

मिलने—सुदर्शन की मां (पुरुषोत्तमजी गनेड़ीवाले की स्त्री व बालक), सूरजमलजी रुइया, रसिक, सुलोचना चिनाई, आनन्दीलालजी पोद्दार, डा० मोदी, डा० मेहता, सौभाग्यवती दानी।

नीलकण्ठ मश्रुवाला के घर गये। काशी दीघे, स्वरूप (विजयलक्ष्मी पंडित), नरगीस, खुरशेद बहन, शांताबाई पित्ती, मुकुन्दलालजी, सुवटाबाई रुइया से मिलने गया।

वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार, घनश्याम, सोमणजी, हरजीवनभाई, भानुमती, जया बहन, केशव, पृथ्वीराज, बनारसीलालजी आदि मिलने आये।

बंबई से कल्याण तक रेल में, आनन्दीलालजी साथ थे।

जानकीदेवी पर वहुत क्रोध आया, आनन्दीलालजी के साथ के व्यवहार के संवंध में।

रात को निद्रा कम, धन्नू दानी, लालू जाट के साथ में।

वच्छराज कंपनी के वारे में फतेचंद से थोड़ी चर्चा।

पूनमचन्दजी रांका के लिए खण्डवा रवाना।

खंडवा-रेल में, १०-४-३३

प्रा० (रेल में थोड़ी)। निपटना, वातें, जानकीदेवी का समाधान, पूनमचंदजी रांका से जेल में मिलने का प्रयत्न।

खण्डवा पहुंचे। स्टेशन पर माखनलालजी आदि मित्र आये। 'कर्मवीर' प्रेस में ठहरे। सुपरिंटेंडेंट डा० नर्मदाप्रसादजी से मिले, तार होम मेंवर राघवेन्द्रजी को पंचमढ़ी भेजा। डिप्टी कमिश्नर व सु० डें० को पूनमचंदजी से मिलने के वारे में अर्जी दी। डिप्टी कमिश्नर मि० कुंजविहारी लाल सेठ के वुलाने से उनसे मिले। सज्जन पुरुष मालूम हुए। उन्होंने भी तार किया है यह कहा।

मिलने की स्वीकृति आई। सु० डें० डा० नर्मदाप्रसादजी से मिलकर श्री पूनमचंदजी से करीव २। घंटे वातचीत हुई। उनका कहना सविस्तार समझा, मुझे जो कहना था, सो समझाकर कहा। उनकी शर्तें समझ लीं। उन्होंने आज तो मेरे हाथ से दूध प्रेमपूर्वक ले लिया। आशा हुई।

७-५२ की ऐक्सप्रेस से भुसावल। वहां मित्र मिले। नागपुर मेल से वर्धा।

वर्धा, ११-४-३३

आज १५ महीने वाद वर्धा के दर्शन कर मन में सुख व प्रेम व आनंद हुआ। नगरवासियों के प्रेम ने ज्यादा वोझ वढ़ा दिया, सेवा करने की जवावदारी वढ़ी। नागपुर के मित्र मिलने व स्वागत को आये। स्वास्थ्य आदि व पूनमचन्दजी संवंध में वातें।

भोजन व आराम के वाद पत्रों के जवाव लिखे। विनोवा, जाजूजी से वातें; पूनमचंद रांका का भाई आशकरण मिलने आया।

आश्रम में सवोंसे मिलना; प्रार्थना में शामिल। ९।। वजे शयन।

१२-४-३३

देर से उठा। विनोवा के साथ नालवाड़ी गया और वापस आया। अखवार पढ़े। चि० राधाकिशन, मां, जानकी वगैरा से वातें; पत्रों के जवाव। चि० नर्मदा से उसके भावी जीवन-कार्यक्रम के विचार सुने—विवाह की इच्छा अभी तो विलकुल नहीं, मध्यमा होने के वाद अंग्रेजी पढ़ने व शरीर दुरुस्त करके सेवा करने की इच्छा आज है ऐसा कहा।

लीलावती भुजंगराव का जानकी व राधाकिशन ने परिचय कराया। हरिजन मित्रों से चर्चा। श्री पु० परांजपे, गोंविंदराव, नागले, वाद में लूले वकील मिलने आये। स्वास्थ्य संवंधी वातें, चर्खा।

आश्रम में प्रार्थना, ९ वजे मौन, शयन।

१३-४-३३

रात को ३ वजे वाद निद्रा नहीं आई।

श्री ठाकोर साहव (सागर वाले), जो पहले यहां सेटलमेण्ट आफिसर व वाद में डिप्टी कमिश्नर थे, मिलने व भोजन को आये। उनसे मिलकर सुख मिला। नागपुर हरिजन कार्य की चर्चा। नागपुर-केस के कागजात ७। से ९।। तक देखे।

श्री नायडू सा० यवतमाल जाते मिल गए। पूनमचन्द की वातें।

चि० प्रहलाद, नर्मदा, आदि से वातें, भोजन के वाद मौन २।। वजे तक। पत्र, चर्खा। मिलने वालों से वातें। शाम को भोजन के वाद जाजूजी, राधाकिशन से मंदिर-व्यवस्था की चर्चा, विचार, गोपालराव मोघेजी से आश्रम व अन्य संस्थाओं के संवंध में विचार-विनिमय।

आश्रम में प्रार्थना—वालकोवा, वारुताई, वाद में श्री दत्तोपन्त, गोपालराव, मोहनी मिलने आये। यमुताई व सूतिकागृह, वर्धा की चर्चा।

१४-४-३३

७ से ९। नागपुर-केस के कागजात देखे। आज भोजन को मित्र मंडली आई थी। केशर ने आज से शक्कर खाना शुरू किया।

डोंगरे नासिक से आया। श्री नायडूसा० व अन्य मित्र मिलने आये।

नागपुर से श्री धन्नीबाई रांका व तानीबाई मिलने आईं।
चर्खा। बगाराम, उनकी बहन कृष्णा बाई भाई, आडकोवा की लड़की मिलने आये। मारवाड़ी विद्यालय के लड़के मिलने आए। अस्पृश्यता, हरिजन व खादी के बारे में बातें। उमंग में थे।

१५-४-३३

गुलाबचंद से बातें। तारा अकोला से आई। रामनाथजी, पनजी खोरिया, बालूजी के घर जा आए। रामनाथजी व पनजी ज्यादा बीमार हैं।
दूकान पर ब्रिजलालजी वगैरा मिले, नागपुर-केस के कागजात, मा० शिक्षा मंडल की सभा में। मारवाड़ी विद्यालय व शिक्षकों के घर-बदल के बारे में मेरे विचार कहे।
आश्रम में आश्रमवासियों से मिलना हुआ, सुख मिला।
श्री धन्नीबाई, तानीबाई, तारा से बातें। रामदेवजी सेलूवाले आये।
श्री गोपीजी व पुसाराम नागपुर से मिलने आये। शाम को यहीं पर भोजन किया। मामूली बातचीत। जेठमल गंगाबिशन के बारे में कुड़की-जब्ती की बात की।
बाबासा० देशमुख, शंकरलालजी काबरा आदि से बातें, पत्र लिखे।
चर्खा। छगनलाल भारुका, खुशालचंदजी चांदावाले आये।

१६-४-३३

जानकी, राधाकिशन, उमा, मदालसा से बातचीत।
माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी-सभा के मित्रों से मिला।
नागपुर-केस के कागज देखे। छगनलाल भारुका वगैरह जीमने आये।
उमा ने सुंदर दो पत्र लिखे।
केशवदेव पोद्दार ने अपने घर की सब हालत कही, उसे क्या करना है वह कहा। वर्धा तालुका के कार्यकर्ताओं का परिचय।
विनोबा का छोटा-सा सुंदर भाषण।
विनोबा घर पर आये। दूध, खजूर, मुनक्का, संतरा लिया। विनोबा की राय पहाड़ पर जाने की रही। मन में विचार रखने का कारण नहीं कहा।

शकरलाल कावरा से वातचीत-परिचय, इनसे परिचय करके सुख मिला।
तारावाई देशमुख आदि से वातें।

१७-४-३३

जानकीदेवी से वातें। दूकान पर ब्रिजलालजी, नागोरजी, वालकिशनजी आदि से वातचीत, विनोद।

नागोरजी व गंगाविशन जीमने आये। पोस्ट लिखवाई।

भैरू की वीनणी मूली आज सेलू से अपनी वड़ी वहन के साथ मिलने आई। मूली का नाम 'मणी' उसकी सम्मति से रखा। लड़की गरीव मालूम होती है।

रावाकिशन, केसर, जाजूजी के मकान वनाने का प्रश्न हल हुआ। कुवें के पास।

तारा का जन्म—कार्तिक वद १४ (संवत आसो वद १४)।

माहेश्वरी सभा की कार्यकारिणी के मित्र सव यहां भोजन व मिलने आये।

श्री ब्रिजलालजी ने नागपुर-केस के वारे में वात की। मैंने कहा मुकदमे की वात छोड़ दो। राधा व उसकी काकी के वारे में वात की।

श्री देशपांडे, सव-इंस्पेक्टर, जेल से छूटकर मिलने आया।

१८-४-३३

उमा, कृष्णदास, थत्ते, ब्रिजमोहन, वालुंजकर, राधाकृष्ण, जाजूजी से वातें।

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर कमेटी की सभा। श्री वालारामजी के स्थान पर चि० राधाकृष्ण को मुकर्रर किया गया। श्री जाजूजी ने त्यागपत्र दिया। श्री गोपालराव वालुंजकर को उनके स्थान पर लिया।

१. भोग, फल, हार पुजारी लगावे, २. आयुर्वेद पाठशाला, ३. हरिजन-मंदिरों की सहायता, ४. आय-व्यय का हिसाव।

श्री रशीदमियां की स्त्री व मां आई, विवाह था, उन्हींके घर।

श्री गोखले व उनकी पत्नी नागपुर से मिलने आये।

डा० गोवर्धन, सिविल सर्जन, ने कान देखा, पीप ज्यादा। ठंडे पहाड़ पर जाने का कहा। उन्होंने अल्मोड़ा की सिफारिश की।

१९-४-३३

श्री गोखले, देशपांडे वगैरा से वातें। श्री जाजूजी से नागपुर-केस व अन्य वातें।

आसकरण, पूनमचंदजी का भाई, आया। उसने पूनमचंद की हकीकत कही, उसपर से तथा अन्य कारण से अणेसा० को तार दिया।

वाई केशर के पास भोजन किया। आश्रम-वासियों से वातचीत। प्रार्थना में शामिल। केशर से वातें।

२०-४-३३

राधाकृष्ण से उसके विवाह के संवंध में विचार जाने। उसकी इच्छा नहीं दिखी।

वाई केशर से वातें, उसको अलग स्वतंत्र घर वना देने का निश्चय किया। जानकी, राधाकृष्ण वगैरा रोहिणी गए। श्री शांता पनवेलकर आज आई, उससे, कमला गोखले व गोखले से वातचीत। रावसाहेव देशमुख व वावासा० से वातें। श्री माधवरावजी अणे मिलने आये—पूनमचंदजी रांका, वनारस कांफ्रेंस, राउंड टेवल कांफ्रेंस (सप्रू, जयकर, केलकर) के संवंध में विचार कहे। रणजीत पंडित के विचार जवाहर के संवंध में सुने। डा० सैयद महमूद, अंसारी, अवुलकलाम के विचार, डा० आलम, जैरामदास के विचार मालूम हुए। खूव पेट भरकर वातें सुनीं। कौंसिल-संवंधी विचार जाने। मैंने विचार कहे।

आसकरण को पूनमचंदजी के नाम, श्री अणेसा० ने व मैंने दो पत्र लिखकर खुलासेवार दिये।

२१-४-३३

विनोवा से वातें। अल्मोड़ा जाने का निश्चय।

ब्रिजमोहन सराफ की मां आई, उसको अप्रैल से एक वर्ष तक दस रुपए देने का निश्चय।

श्री मथुरावाई हरशे, गर्ल्स हाईस्कूल अमरावती कैंप, मिलने आई। वावासा० देशमुख से वातें। उन्हें मैंने अपने विचार कहे।

चि० कमला व सुशील की बीमारी के समाचार आये। थोड़ी चिंता। लाला जाट को बंबई भेजा।

श्री हीरालालजी, डिप्टी कमिश्नर वर्धा, आश्रम के रास्ते में मिले। स्वास्थ्य आदि संबंध में व जूनी बातें।

भाई देवदास गांधी बनारस से मिलने आए।

२२-४-३३

देवदास, केशर, प्रह्लाद से बातें। अस्पताल जाकर वजन किया। १७३ रत्तल। मंदिर व बगीचा गये। गंगाबिशन के हरगोविंद को बुखार। डा० बापट से बातचीत।

देवदास गांधी से बातचीत। अल्मोड़ा का निश्चय, तार-पत्र वगैरा दिये।

तिजारे, डा० सोनक, पटवर्धन वगैरा मिलने आये। चि० हरिकिशन मिलने आया और कई मित्र आये।

विनोबा से मिला।

लड़कियों की सितार सुनी। रात को खूब बारिश व तूफान आया।

२३–४–३३

अल्मोड़ा जाने की तैयारी। लक्ष्मीनारायण मंदिर तक पैदल। दर्शन किये। रास्ते में देवदास गांधी से बातचीत—खासकर फादर एलविन को नागपुर के विषय में पत्र भेजा, उस संबंध में।

ग्रांडट्रंक एक्सप्रेस से एक सेकेंड व चार थर्ड—जानकीदेवी, चि० उमा, धन्नू दानी, लक्ष्मण रसोइया रवाना हुए।

नागपुर में पोद्दार के यहां के व गोपीजी घर-सहित व डा० सोनक, पटवर्धन, रस्तक वगैरा मिले।

रेल में पूरा आराम मिला।

आगरा, २४-४-३३

आगरा कंटोमेंट पहुंचे। श्री चंद्रधर जोहरी के घर ठहरे। श्री पार्वती देवी व उनकी पुत्री विद्याधरी जौहरी से मिले।

दयालबाग में श्री साहेबजी महाराज आनंद स्वरूपजी से मिले, बातचीत,

उनके वड़े पुत्र ने डेरी दिखाई। वहां अमेरिका से २५०० रु० में गाय एक मन दूव की आई, वह देखी।

डा० जी० एस० चौधरी ने कान देखा व सब वातें समझा दीं।

रामेश्वरनाथ टंडन व श्री वावूलालजी मिले। खादी भंडार देखा।

श्री रामस्वरूप भालोटिया के घर भोजन किया, उनकी स्त्री को परदा छुड़ाने को कहा।

शाम को ७ वजे की गाड़ी से काठगोदाम रवाना हुए। रास्ते में थर्ड क्लास में सोमवती का मेला होने के कारण भीड़, डिब्बे में आदमी घुस गये, चेन खींची।

काठगोदाम-अल्मोड़ा, २५-४-३३

वरेली स्टेशन पर नाश्ता किया, अखवार देखे।

भोजीपुरा-स्टेशन पर श्री केशवदेवजी नेवटिया, नर्मदाप्रसादजी लाट, रामकुमारजी नेवटिया, श्रीगोपाल नेवटिया मिलने आए। केशवदेवजी व रामकुमारजी साथ में अल्मोड़ा आये।

काठगोदाम में हिंदू भोजनालय में भोजन। एक लारी पूरी आठ आदमियों के लिए तीस रुपए में अल्मोड़ा के लिए की। रास्ते में ४+३ सात रुपए टैक्स के देने पड़े। सब मिलकर ३७ रु० लगे।

भवाली में हीरालालजी मिले।

रानीखेत में हरगोविंदजी मिले। अल्मोड़ा डाक वंगले में ठहरे।

अल्मोड़ा-शैलाश्रम, २६-४-३३

५। से ७॥ प्रार्थना, भजन, निवृत्त हुए। भोजन के वाद अल्मोड़ा से शैल-आश्रम (खाली) रवाना। रास्ते में मोटर स्टैंड, अस्पताल, वद्रीनारायण-जी पांडे, जेल, मोहन जोशी का घर व रास्ते में कलेक्टर मिला। कपड़खान आदि होते हुए शाम को ५॥ शैलआश्रम, जो अल्मोड़ा से ९ मील है, पहुंचे। वंगला देखकर सुख व संतोष मिला।

श्री केशवदेवजी से वातें।

रास्ते में करीव ४॥ मील पैदल व ४॥ मील घोड़े पर वैठकर आये। श्री रामकुमारजी नेवटिया व चि० घन्नू के कारण आनंद-विनोद रहा।

शैलाश्रम, २७-४-३३

मगनभाई गांधी की वार्षिक पुण्य-तिथि। खास कार्यक्रम ६ वजे प्रार्थना, ८ वजे मगनभाई के जीवन-संबंध में पू० विनोवा, पू० वापूजी, काकासा०, महादेवभाई के लेख व प्रभुदास के साथ का पत्र व्यवहार पढ़ा।

श्री केशवदेवजी से हिंदुस्तान सक्कर मिल व वच्छराज कंपनी के संबंध में विचार-विनिमय व उनकी खानगी परिस्थिति तथा भावी जीवन-कार्य के संबंध में विचार-विनिमय हुआ।

२८-४-३३

केशवदेवजी व राजकुमाजी गोला गये। घूमने गये। ६।। मील के करीव सुवह घूमना हुआ। विनसर तक गये-आये। वहां श्री हरिकिशनलालजी से परिचय। सज्जन पुरुष मालूम हुए। उन्होंने सेव-पकौड़ी खिलाई, चने-गुड़ खाते वापस आने में देर हुई। जानकीदेवी को घवड़ाहट, इधर-उधर आदमी देखने भिजवाए।

भोजन वहुत स्वाद लगा। प्रभुदास से वातें, आराम के वाद पत्र लिखे। शाम को यहीं घूमे। आये हुए पत्र पढ़े।

शाम को चर्खा। पत्र लिखवाये। केशवदेवजी व रामकुमारजी से वात-चीत। वजन किया, १७५ हुआ।

२९-४-३३

उमा ने गीताई दूसरे अध्याय का सुंदर पाठ किया। राव व भाकरी खाकर घूमने गए, ७ से १० तक घूमे।

कल शाम से कान में थोड़ा दर्द मालूम देता था। आज घूमने के वाद आकर कान साफ किया। पीला पस व रंग ज्यादा निकला, व कान में दर्द भी मालूम हुआ। भोजन करते समय भी तकलीफ मालूम दी, सेक व दवा।

पत्र लिखे, वोलना कम किया।

धन्नू दानी व धर्मनारायण के पास होने की खवर मिली। धन्नू को संतोष हुआ।

३०-४-३३

हरिजन-दिन, बापू का लेख पढ़कर सुनाया।

कान में आज भी दर्द । बोलना व घूमना कम किया।

'हरिजन-दिन' निमित्त चि० घन्नू, उमा, चंद्रदत्त, बनर्जी सुबह ही और प्रभुदास, देवदास, जोशी शाम को अल्मोड़ा गये। बाद में पुरुषोत्तम वगैरा भी गये। पत्र लिखे।

आज दिन ठंडा रहा। धूप नहीं निकली। आराम के बाद करीब ४ घंटे कागजात व पत्र साफ किए-छांटे। बहुत से मित्रों के प्रेम भरे हुए पत्र फाड़ डाले।

श्री सूरजमलजी रुइया का स्वर्गवास ता० २८ की रात को होने का रामेश्वर का तार, शाम को मिला। ईश्वर से प्रार्थना की। बाद में तार लिखवाये।

१-५-३३

सुबह ४ बजे से पत्र लिखना शुरू किया। चि० शांता को व उन्हींकी दूकान पर गोविंदलालजी, बापूजी वगैरा को पत्र लिखे।

चि० शांता, गोविंदलालजी, मदनमोहन को तार भेजे।

चि० घन्नू व चंद्रदत्त अल्मोड़ा गए। डा० से कान की सलाह व दवा लेने तथा पोस्ट व तार का इंतजाम करने।

जानकीदेवी व उमा से बातचीत। उन्होंने अपना मन हल्का किया। चर्खा, नागपुर-केस के कागजात व पत्र व अखबार पढ़े।

आज वर्षा व ठंडी हवा चलती रही। रात को जानकीदेवी का जी घबड़ाया। सेक, अमृत-बिंदु दिया। जागना पड़ा।

२-५-३३

आज भी काफी ठंडी रही। जानकी से बातचीत, उसको समझाने का प्रयत्न। घन्नू, चंद्रदत्त अल्मोड़ा से वापस आये।

चि० रामेश्वर का तार—बापू के २१ दिन के अस्पृश्यता-निवारण के कारण, बिना शर्त ता० ८ से उपवास करने के बारे में विचार।

बापू को पत्र भेजा। अन्य पत्र लिखवाये। चर्खा काता।
अल्मोड़ा के डा० खजानचन्द की बताई हुई कान की दवा शुरू की, सेक आदि।

३-५-३३

घूमते समय देवदत्त व चंद्रदत्त से बातें, उनका हाल जाना। करीब २॥ मील घूमना हुआ।
आज भी बारिश व ठंडी थी।
देवदास, गिरधारी, रामनारायण चौधरी के तार व पत्र आए। बापूजी के उपवास का निश्चय लिखा। बापू का स्टेटमेंट हिंदुस्तान टाइम्स में पढ़ा। खूब विचार कर, प्रार्थना के बाद स्टेटमेंट सबों को समझाया। वहां से शुक्रवार ५ को जाने का निश्चय किया। तार वगैरा की व्यवस्था।

४-५-३३

सब जगह तार व पत्र (१०) लिखे।
बापूजी के पास पूना जाने का निश्चय किया। वजन १७८ हुआ।
बिन्सर झंडा टेकड़ी का दृश्य देखने गए। जानकीदेवी भी आखिर तक पहुंच गई। रास्ते का जाने-आने का, बीच में खाने का, जानकी को घोड़े पर बैठाकर लाने का आनंद आया। प्रभुदास से ठीक बातें हुई।
वहां से ४॥ बजे वापस। आज करीब ७॥-८ मील का घूमना हुआ।
पू० बापूजी का तार—अल्मोड़ा में रहने व पूना मिलने आने की मनाई का आया। चंद्रदत्त ने (दस) तार नहीं भेजे व दूसरी व्यवस्था की। बापू का तार घोड़े पर लेकर आया, तार पढ़ा, विचार किया, फिर सबोंने मिलकर जल्दी ५॥ बजे प्रार्थना करके खूब श्रद्धापूर्वक चिट्ठी डाली। न जाने की चिट्ठी आई। जाने की तैयारी रद्द करके दूसरे चार तार लिख कर अल्मोड़ा भेजे।

५-५-३३

नीचे कपड़खान की ओर गये। जानकीदेवी से झगड़ा हुआ, घूमने के बारे में। प्रभुदास काम के लिये अल्मोड़ा-ताड़ीखेत गया।

आज वहां के माली की गाय की बच्छी बाघ ने मार डाली। वह सब लोग देखकर आये, बाघ भाग गया।

पत्र लिखवाये, भोजन व आराम के बाद आये हुए पत्र व अखबार पढ़े। रात को प्रार्थना के बाद लक्ष्मीदत्त, देवीदत्त, बिशनसिंग, जोशी वगैरा का परिचय किया। जानकीदेवी को समझाया।

बरसात खूब जोर की आई, रात में स्वप्न में बाघ को गाय को खाते देखा। आवाज किया। जानकी ने उठाया।

६-५-३३

एकादशीव्रत। एअरपाणी घूमकर आये। करीब २॥ मील का चक्कर लगा।

पत्र लिखे, लिखवाये। श्री हनुमानराव कोजलगी व शांतीलाल मिलने आये। चर्खा। हनुमतराम से बातें।

७-५-३३

शांतीलालजी से बातचीत, नाश्ता, कपड़खान तक घूमने गये-आये। शांतीलाल से बातचीत, परिचय। जानकीदेवी घोड़े पर बैठकर आई।

पत्र लिखे।

श्री कोजलगी से बातचीत--कर्नाटक की हालत, खासकर कारवार जिले की, खादी व रिलीफ कार्य, पुजारी व कारखानीस, व उन्हींके भाई ने जो व्यापार किया, उस संबंध में उन्हें समझाकर कहा, उन्हें धीरज व हिम्मत रखने को कहा व 'गांधी सेवा संघ' का असली उद्देश्य समझाकर कहा। जुर्माना नहीं भरना चाहिए, पैरोल नहीं देनी, जेल में कोई मृत्यु हो जाय तो हर्ज नहीं आदि समझाया। चर्खा।

ता० ७-५ के 'हिंदुस्तान टाइम्स' में मेरा ता० ५ को भेजा हुआ स्टेटमेंट, बापू के उपवास के बारे में छपा।

८-५-३३

बारिश खूब पड़ रही थी; ठंडी भी काफी थी। पानी खुलने पर थोड़ा घूमना हुआ। पत्र लिखना व लिखवाना।

श्री शांतीलाल अल्मोड़ा से जानकीदेवी को वहां की सभा के लिए लेने आये थे। परंतु वरसात के कारण नहीं ले जा सके।

श्री कोजलगी दोपहर को वर्षा खुलने पर अल्मोड़ा गये। श्री जयरामदास, घोत्रे वगैरा को पत्र लिखे।

आज ११॥ से १२ वजे भोजन किया। वाद २४ घंटे का उपवास।

शाम को करीव १॥-२ मील घूम आये।

ता० ६ व ७ 'हिंदुस्तान टाइम्स' व दूसरे पत्र देखे।

शाम को ठंडी वहुत थी। प्रार्थना में वापू के उपवास का कारण समझकर, शैल-आश्रम में रहनेवाले हरिजनों के लिए हम क्या कर सकते हैं, उसका विचार।

९-५-३३

आज धूप निकली। घर में ही घूमना हुआ। पत्र लिखे। १२ वजे २४ घंटे वाद भोजन।

हरिजन संघ के काम के लिए श्री रामनारायण चौधरी अजमेर से व श्री नायर मिलने आये। श्री नायर आज ही वापस चले गए। श्री नायर व श्री रामनारायणजी से वातचीत। चर्खा।

प्रभुदास शाम को अल्मोड़ा से आया। प्रार्थना के वाद हरिजन-कार्य के संवंध में उनसे वहां की हालत समझी।

'हरिजन' में नीला नागिनी के वारे में पढ़कर थोड़ा दुःख हुआ।

वापू के उपवास शुरू होने व श्री जयरामदास के गिरफ्तार होने की खवर मिली।

१०-५-३३

देवीदत्त, चंद्रदत्त से आश्रम तथा अन्य व्यवस्था के संवंध में वातचीत। भोजन वाद श्री रामनारायणजी से वातें। उन्हींके प्रश्नों का खुलासा। शाम को अल्मोड़ा से आदमी तार, पत्र, अख़वार लेकर आया तो उसीसे पू० वापू को छोड़ देने की व पूज्य वापू ने व श्री अणे ने मिलकर १॥ मास के लिए सत्याग्रह स्थगित करने की खवर मिली। वापू का व सरकार का

स्टेटमेंट पढ़ा। एक प्रकार से खुशी हुई, परंतु ज्यादा विचार करने से चिंता रही। रात को निद्रा बराबर नहीं आई। पूना जाने के विचार आदि आते रहे।

११-५-३३

ता० १६ को पूना जाने का विचार करता था। बाद में रामनारायणजी चौधरी, श्री जानकीदेवी आदि की सलाह से यह निश्चय किया कि अगर पू० राजगोपालाचारी या देवदास बुलावे तो जल्दी जाना चाहिए। नहीं तो थोड़ा ठहर कर। इस प्रकार निश्चय करके देवदास को व बंबई तार भेजा। पत्र लिखे हरिजन काम के बारे में।

राजाओं को व अन्य जगह भी पत्र लिखे।

देवदास का तार। पू० बापूजी का पत्र मिला, अन्य तार व पत्र भी मिले। शाम को प्रार्थना के बाद श्री रामनारायणजी ने बाकी पत्रों का हाल हिंदी में कहा।

१२-५-३३

कमिश्नर, अल्मोड़ा को पत्र लिखा। देशी-रियासत के बारे में स्टेटमेंट। राजाओं को पत्र।

देवदास को तार भेजा। बापू से श्री रामस्वामी को १५ मिनट क्यों बातें करने दी? आगे से ऐसी गल्ती न करने का आश्वासन मांगा।

आज गोलागोकर्णनाथ से चि० गिरधारी बजाज व मोहन (नर्मदाप्रसादजी लाट का पुत्र) मिलने आये।

अल्मोड़ा से श्री मणीदत्त, क्रिश्चियन वर्कर जो वेरियर एलविन के साथ करंजिया में काम करते हैं, मिलने आये। चि० गिरधारी से उसके भविष्य-जीवन की बातें।

डाक आई। चि० शांता का पत्र, श्रीकृष्ण रुइया के देहांत के समाचार से दुःख हुआ। प्रार्थना के बाद वर्तमान-पत्रों का सार रामनारायणजी ने सुनाया।

१३-५-३३

रामनारायणजी से बातें, वे आज अजमेर गये।

प्रभुदास से बातें, अल्मोड़ा में मुरलीमनोहर मंदिर खोलने संबंध में वह अल्मोड़ा गया। तार व पत्र भेजे।

आज ठीक धूप निकली। जानकीदेवी ने अपना जेल का अनुभव घूमते समय कहा।

बबंई से ४-५ रोज में चि० रामेश्वर का पत्र न आने कारण चिंता, जानकीदेवी की विशेष। तार बबंई भेजा।

रात को प्रार्थना के बाद यहां के तीनों नवयुवक बालकों ने एक छोटा-सा सुंदर, विनोद व भावपूर्ण अभिनय कर दिखाया।

१४-५-३३

बीकानेर महाराज, अलवर महाराज, कर्नल ओगल्वी, कन्वेंट को, खासकर हरिजन संबंध में, पत्र भेजे। और भी पत्र लिखे। करीब २० से ज्यादा पत्र शाम को लिखे।

२॥ बजे बाद वर्षा हुई, जोर से।

शाम को तार तो नहीं आया, पोस्ट आई; चि० रामेश्वर का पत्र था।

१५-५-३३

जल्दी तैयारी करके व नाश्ता करके पैदल ही अल्मोड़े ९॥ मील करीब चलकर आये। ७॥ को निकले, ११॥ को पहुंचे। जानकीदेवी घोड़े पर व थोड़ी पैदल आई।

रास्ते में शांतीलाल के घर भक्तिबहन से मिलकर श्री बद्रीदत्तजी पांडे के यहां ठहरते हुए डाक बंगले १॥ करीब पहुंचे। ऊपर के डाक बंगले में ठहरे, दस जने साथ में।

शाम को शिल्पकार व असली हरिजन (मेहतर) वर्ग में से प्रोसेशन निकला। शिल्पकारों में व मेहतरों में आपस में अनबन होने से, वहां जोकि आदमी बहुत जमा थे, सभा ऊपर शिल्पकार के यहां न करके हरिजनों में ही करनी पड़ी। जुलूस अच्छा था। रास्ते में गायन व एक जगह चाय-पानी भी हुआ। श्री मुरली मनोहरजी के मंदिर में जुलूस पहुंचा, वहां रोशनी आदि से खूब सजावट कर रखी थी। श्री हरगोविंदजी पंत (रानीखेत वाले) सभापति

बने, ठीक बोले। श्री बद्रीदत्तजी, श्री रा० ब० बद्रीदत्तजी, श्री गोविंद-सहायजी, जानकीदेवी व हरिजनों के भाषण। मेरे हाथ से मंदिर खुलाया। मैंने भी भाषण दिया।

१६-५-३३

श्री हरगोविंदजी पंत (रानीखेतवालों) से ठीक बातें। श्री गोविंदप्रसाद अग्रवाल के यहां भोजन करने गये।

जानकी का बंबई जाना स्थगित रहा, चि० रामेश्वर का तार आ जाने से। श्री मोहन जोशी व बद्रीदत्त पांडे मिलने आये। श्री गिरधारी कृपलानी, आबिदअली जाफर आज लखनऊ से आये।

श्री आनंद (अल्मोड़ा) से, नंदादेवी का मंदिर हरिजनों के लिए खोल दिया जावे, इस बारे में ६ से ८ तक बातचीत, साथ में श्री बद्रीदत्तजी पांडे, रा० ब० बद्रीदत्तजी, श्री गोविंदलालजी साह थे। रा० ब० बद्रीदत्तजी ने ठीक समझाकर कहा। थोड़ी उम्मीद।

१७-५-३३

डाक बंगले में शिल्पकारों (हरिजनों) से बातचीत, नाश्ता, शैल-आश्रम में। श्री मोहनजी जोशी से बातें।

श्री नंदादेवी मंदिर का मौका देखने रा० ब० बद्रीदत्त, बद्रीदत्त पांडे व गोविंद साह वगैरा के साथ।

अल्मोड़ा से जेल वगैरा होते हुए पैदल तथा घोड़े पर शैल-आश्रम ६॥। बजे पहुंचे। आबिदअली जाफर व गिरधारी साथ थे।

१८-५-३३

पत्र-व्यवहार। राजाजी को व रामेश्वर को तार भेजा।

भोजन सबने मिलकर किया। एक पहाड़ी पंडित (हिंदू विश्वविद्यालय वाले) ने भी साथ में भोजन किया।

गिरधारी से बातें, थोड़ी हालत समझी।

१९-५-३३

गिरधारी से बातें। वजन १७४ हुआ। पत्र-व्यवहार।

गिरवारी व आविदअली से वातचीत, भविष्य के वारे में। भूतकाल का उनका अनुभव सुना।

२०-५-३३

गिरधारी लखनऊ गया, घूमते समय जाफर फिसल गया था। वच गया। थोड़ा घूमना हुआ। कागजात ठीक-ठाक किये। एकदशी का उपवास. फराल। आराम।

श्री शीतलासहाय, शांतीलाल व सोनीराम जोशी मिलने आए।

प्रार्थना के वाद शचीन्द्रनाथ वनर्जी (लखनऊ वाले) का विनोद का कार्य-क्रम सुना। शीतलासहाय व सोनीराम से वातें।

२१-५-३३

सोनीराम से कपड़खान के रास्ते वातें करते घूमने गए। वापस लौटते समय शांतीलाल से वातें।

श्री शीतलासहाय से वातचीत, उन्होंने रायवरेली जिले के किसानों की हालत तथा अन्य हालात कहे। हरिजन-कार्य के काम में राजा सर रामपालसिंह, कुर्री सुधौली, जिला रायवरेली, राजा महेश प्रतापनारायणसिंह, राजा शिवगढ़, जिला रायवरेली, ठीक रस लेते हैं यह वताया।

वापू का स्वास्थ्य ठीक होने की खवरें मिलीं।

आन्ध्र के एक शिक्षक घूमते हुए आ गए, मिले।

२२-५-३३

श्री शीतलासहाय वापस गए। श्री प्रभुदास, शांतीलाल व आंध्र के मित्र वापस गए।

शहतूत खूव खाये। आजतक इतने नहीं खाये थे।

शाम को भोजन करके वगीचे में गेहूं, मटर आदि सेंककर खाए। आज, करीव १।।। वर्ष के वाद प्रथम वार, आम खाया। घन्नू के यहां से ववंई से आये थे।

जानकीदेवी से खूव जूनी-जूनी वातें कीं, भविष्य के कार्यक्रम की चर्चा। मन का छोटापन निकालने को कहा।

पत्र-व्यवहार की छुट्टी मनाई।

२३-५-३३

आविदअली वगैरा विन्सर गए। पत्र-व्यवहार। दोनों समय विन्सर के रास्ते घूमने गये-आये।

प्रभुदास अल्मोड़ा से राजाजी का तार पूना का लेकर आया। ता० २९ को पूना पहुंचने का लिखा था। उनका पत्र भी मिला।

प्रार्थना के वाद जाने की तैयारी। तार व पत्र लिखवाए। रात को देर से सोए। निद्रा वरावर नहीं आई।

२४-५-३३

जाने की तैयारी। आविदअली व वनर्जी सुवह ही अल्मोड़ा गए।

१२-३० को शैल-आश्रम से निकलकर पैदल व घोड़े पर चलकर शाम को ५।।। वजे अल्मोड़ा पहुंचे। रास्ते में शांतीलालभाई व भक्ति वहन के यहां साथ लाया हुआ पूड़ी साग खाया।

अल्मोड़ा में नंदादेवी के मंदिर में श्री हृदयनाथ कुंजरू का हरिजन-उद्गार के संवंध में व्याख्यान था, वहां ठहरे। डाक पढ़ी। श्री हरिजी से प्रेम-पूर्वक वातचीत। वाद में व्याख्यान सुना। खूव जोर से हवा-आंधी के साथ वरसात आई। हरिजी ने मंदिर खोले जाने की घोषणा की।

राय होटल में श्री हरिजी से मिलने गये, वातचीत। डाकवंगले में आराम किया।

अल्मोड़ा-हल्द्वानी, २५-५-३३

५।। वजे प्रभुदास आया। स्नान। डाकवंगले में श्री विनायक मेहता (अहमदावाद वाले) से, जो पिंडारी ग्लेशियर जाने आए थे, परिचय किया। श्री शांतीलाल, देवीदत्त, चन्द्रदत्त से वातें। श्री हृदयनाथजी कुंजरू, वद्री-दत्तजी पांडे, मोहन जोशी, रा० व० वद्रीदत्तजी जोशी आदि मिले।

८ वजे स्पेशल मोटर लारी में रवाना होकर रास्ते में खानपान करते हुए, रानीखेत ठहरते हुए ४।। वजे हल्द्वानी स्टेशन पहुंचे। सव मिलकर ९।। टिकिटें थीं। रानीखेत में श्री हरगोविन्द पंतजी से वातें व श्री महादेवजी वलदेव कोचरवाले अग्रवाल से परिचय। शाम का भोजन हल्द्वानी में किया।

गोला-लखनऊ, २६-५-३३

गोलागोकर्णनाथ रात को १२॥ बजे पहुंचे। स्टेशन पर बड़ी भीड़ थी। सुबह मिल के कर्मचारियों की सभा में मेरे विचार कहे। बाद में गोला के आर्यसमाज में अस्पृश्यता-निवारण तथा हरिजनों के मंदिर-प्रवेश पर व्याख्यान—बातचीत।

मिल के मुख्य कामदार—श्री देसाई, त्रिवेदी, नर्मदाप्रसादजी, जोशी, केशवप्रसाद वगैरा से थोड़ी बातचीत। श्री केशवदेवजी नेवटिया व माथुरजी से भी बातें।

लखीमपुर खीरी मोटर से गए। वहां रा० ब० संकटाप्रसाद व चौबेजी की उपस्थिति में मैंने व जानकीदेवी ने भाषण दिया।

हरगांव की बिड़ला मिल श्रीगोपाल की देखरेख में चलती है, वह देखी।

लखनऊ में रामेश्वर मिला।

झांसी-खंडवा, २७-५-३३

६ बजे प्रार्थना चालू रेल में। झांसी में दूध, फल लिया।

भोपाल के बाद थर्ड क्लास में खंडवे तक बातें, पत्ते खेले। जाफर से विनोद। खंडवा में लोग मिलने आए थे। ब्राह्मणपुर के बाद प्रार्थना-शयन।

बंबई-पूना, २८-५-३३

प्रार्थना। दादर उतरकर माटुंगा गये। कमला को देखा।

अंधेरी में चि० शांता व उसकी माता से मिलकर श्री फतेचंदजी रुइया के घर श्रीकृष्ण के बालकों को देखा।

अकोलावाले श्री रामजी गोयनका मिले।

श्री सुव्रतादेवी, चि० शांता, उसकी माता, सुगुनीदेवी व बद्रीदासजी से ह० सू० की दूकान का आंकड़ा व अन्य व्यवस्था सरसरी तौर से देखी। विचार-विनिमय होकर चि० रामनिवास के आने पर ट्रस्ट की मीटिंग की कार्यवाही की। श्री रामेश्वरजी बिड़ला व शारदादेवी के साथ उनके बंगले पर दूध, फल लिया व बातचीत की।

डेक्कन क्वीन से पूना। रामनारायणजी के यहां ठहरे। लेडी ठाकरसी

के बंगले पर डा० अंसारी, विधान राय, सरोजिनीदेवी, राजाजी वगैरा से मिला। पू० बापू के पास नहीं गया---जान-बूझकर।

पूना, २९-५-३३

श्री गोविंदलालजी से मिलना।

१० बजे पर्णकुटी बापूजी के यहां गए। डा० अंसारी, विधानराय, राजाजी आदि से बातें। श्री बापूजी अणे से भी।

ठीक १२ बजे बापूजी को हॉल में लाया गया। खूब शांति थी। 'रघुपति राघव राजा राम' के बाद डा० अंसारी ने कुरान की आयतें पढ़ीं। मित्रों ने बाइबल में से, पारसी मित्र ने जेन्दवस्था में से व काकासाहब ने क्रिश्चियन उपनिषद में से पाठ किया। महादेवभाई ने डा० टैगोर का प्रिय भजन गाया। उसके बाद 'वैष्णव जन' भजन हुआ। पू० बापू का संदेश पढ़ा गया। बाद में बापू को संतरे का रस दिया गया। परचुरे शास्त्री को समझाने में काफी देर हुई, उपवास न करने के बारे में।

२। बजे भोजन।

कलकत्तेवाले जीवनलालभाई व नानाभाई (बर्मावाले) से बातें।

लेडी ठाकरसी के यहां चाय-पार्टी। मित्रों से सलाह-मशविरा। गंभीर बातें।

३०-५-३३

४॥ बजे प्रार्थना। घूमना। गोविंदलालजी से बातें। बंबई से चि० सुलभा, पद्मा व सुशीला पर्णकुटी में। पद्मा व सुलभा से बातें। चि० सुलभा की चिंता व दुःख गहरा मालूम हुआ। उसने बहुत-ही हिम्मत व सरलता से थोड़ा दुःख कहा। मैंने उसे शांत रहने, चिंता न करने व मैं तुझे पुत्री ही समझूंगा व दुःख दूर करने में पूरी मदद करूंगा आदि आश्वासन व हिम्मत दी।

श्री राजगोपालाचारी से ठीक बात व खुलासा हुआ।

माड़े के बंगले गिरधारी के साथ देखे। खूब जोर की वर्षा आई।

श्री गोविंदलालजी से सुलभा, पद्मा के बारे में व उनके भविष्य जीवन

व वेंकट के वारे में वातचीत। मैंने अपने विचार कहे। श्री गंगावहन, गोमतीवहन आदि से वातें।

पूना-वंबई, ३१-५-३३

६॥ वजे प्रार्थना। पत्र लिखे। चि० सुलभा के साथ घूमते हुए पर्णकुटी गया। चि० सुलभा के स्वास्थ्य के संवंध में व उसके मन के विचार व उसकी चिंता तथा विवाह-संवंध में विचार-विनिमय। उसे समझाकर उसका कर्त्तव्य समझाया। लड़की सेवा-भाव की वृत्ति की सरल मालूम हुई। उसे वनारस के इस संवंध से संतोष है।

श्री राजाजी, देवदास व महादेवभाई से वातें। देवदास के भावी जीवन के वारे में मेरी राय कही।

पू० वापू के दर्शन, मेरी इच्छा के विरुद्ध पर श्री महादेवभाई व मथुरादास के आग्रह के कारण, करना पड़ा। खूव सुख मिला।

नेचर क्योर के डा० मेहता के वहां गए। श्री गोमतीवहन को दिखाया। कमला के वारे में वातें। मेहरअली व काकासाहव से मिले।

३॥ की गाड़ी से वंबई। दादर उतरकर माटुंगा। अंधेरी जाकर श्री० सुगनीवाई से खूव खुलासेवार साफ-साफ वातें।

वंबई, १-६-३३

पूज्य जाजूजी-गोदावरी वर्धा से आये। चि० शांता माटुंगा आई। उसे खूव समझाया। उसके काम के वारे में श्री वद्रीदासजी, जाजूजी व वान्ता से वातें—४ वजे तक।

डा० मोदी को कान दिखाया। उसने काफी फायदा वतलाया। सेक व मलहम लगाने को कहा।

श्री नारायणलालजी से सूरजमलजी के वंगले की वातचीत। रामेश्वरजी विड़ला व सुव्रतावहन से सूरजमलजी के काम की वातें।

२-६-३३

४॥ वजे प्रार्थना। चि० सुशील रात को गिर गया।

महादेवलाल सराफ के साथ दादर तक घूमने गए।

पत्र लिखे, चि० तारा की माता से वातचीत प्रथम वार। उनके विचार जाने।

श्री मफतलाल से सूरजमलजी के वंगले के वेचान की खुलासेवार वात-चीत—उनके गहनों की व्यवस्था देखी।

श्री जमीयतराम सालीसिटर, श्री जाजूजी, वद्रीदास के साथ सूरजमलजी के विल के संवंध में वातचीत, खुलासा। श्री जमीयतराम को इस्टेट लेने को कहा।

सूरजमलजी की दूकान पर दागीना सेफ डिपोजिट में भेजा। अंधेरी में चि० शांति व कृष्णा की मां सुगनीदेवी से खुलासेवार वातें। उसने प्रतिज्ञा की पवित्रता, होशियारी आदि की।

३-६-३३

५ वजे प्रार्थना के वाद चिट्ठियां लिखाईं, घूमना। महादेवलाल से वातें। चि० रामेश्वर को भविष्य में कहां रहना हो, उसका सविस्तार खुलासा। गोला रहना निश्चित। वाद में श्रीकृष्ण व वालकृष्ण का वनारस रहने का विचार। घर को सजाया।

कालवादेवी जाकर जाजूजी व दूकानवालों से थोड़ी वात करके विड़ला हाऊस। वहां भोजन। श्री रामेश्वरजी ने चि० गजानन के वारे में वातें कीं। चिंता।

श्री सुव्रतावाई के वंगले, उनके ट्रस्ट के संवंध में विचार विनिमय। सूरजमलजी की व्यवस्था का विचार। वाद में महिला-मंडल की मीटिंग का काम ठीक संतोषकारक हुआ।

देवदासभाई गांधी पूना से लेने आये। वापू ने मुझे वुलाया। वातें। मदन पित्ती व शांता से वातें।

वंवई-पूना, ४-६-३३

५ वजे प्रार्थना के वाद घूमना। सदाशिवराव (कर्नाटकवाले) मिलने आये। एकादशी का फराल माटुंगा में किया।

कालवादेवी आफिस में श्री सूरजमलजी के संवंध में पू० जाजूजी से वातें।

श्री रामेश्वरजी विड़ला से उनके कारभार व श्री केशवदेवजी के संवंध में वातचीत।
२॥ वजे मोटर से धन्नू (धर्मराज) दानी, व माटुंगा के रास्ते से चि० सुशील को व लाट (वालकृष्ण नेवटिया) को लेकर, लोनावला श्री सूरजमलजी का वंगला देखते हुए, श्री सुव्रता वहन से मिलते हुए, सूरजमलजी के ट्रस्ट मीटिंग पर सही करके, श्रीनाथजी को वहां से साथ लेकर, पर्णकुटी प्रार्थना में शामिल होते हुए पूना पहुंचे।

पूना, ५-६-३३

घूमते हुए रास्ते में श्री सर वंशीलालजी का वंगला देखा। वंगला तो वहुत वड़ा है। जगह निचास में (नीची) है।
चि० पुष्पा से घूमते समय उसके पढ़ने, सगाई-विवाह के वारे में विचार जाने। श्री महादेवभाई ने, पूज्य वापू ने मुझे वंवई से क्यों वुलाया, उसका तात्पर्य समझाया। रामदासभाई से उसके भावी जीवन के वारे में उसके विचार सुने तथा उसे सलाह दी। श्री गुलजारीलाल नंदा माथेरान से मिलने आए। मामूली वातें।
पू० वापू की इच्छा होने से अपने स्वास्थ्य, प्रभुदास, अल्मोड़ा-आश्रम, देवदास, रामदास आदि के संवंध में वातें।
श्री सीतारामजी खेमका मिले। दुःख हुआ। श्री कानजी कृष्णदास मिले। श्री नाथजी व रणदिवे, धुलिया के, मिलने आये।

६-६-३३

चि० सुलभा के साथ वापूजी के पास। पू० वापूजी को मैंने अपने विचार कह दिये।
चि० लक्ष्मीनिवास, सुशीला वगैरा आये। ३-३५ तक उन्हीं की गड़वड़ रही। खांसी का जोर हुआ। शाम को दूध, फल।
श्री वकील व उनकी पत्नी से मिला। चि० कमल व रामकृष्ण के वारे में वातचीत।
शाम को वापू की प्रार्थना में शामिल।

७-६-३३

घूमते हुए डा० मेहता के यहां गए। डिवाडकर की चाल देखी।
डा० मेहता ने गले का भाप से सेक किया, करीव १५ मिनट। गले को एंटीफ्लोजिस्टीन लगाया। एनिमा दिया।
तार, पत्र भेजे।

८-६-३३

खांसी ज्यादा। डा० मेहता के यहां इलाज।
पू० वापू के पास सीतारामजी खेमका को डा० मेहता के अस्पताल में रखने का निश्चय। वापू का आशीर्वाद।
आज कमलनयन ने वकील व उनकी पत्नी और वालक, देवदास, महादेवभाई, मथुरादास वगैरा मित्रों को भोजन के लिए वुलाया। करीव २५ आदमी भोजन में थे। वापू के पास प्रार्थना में।

९-६-३३

नं० १७ वोट—क्लव रोड का वंगला देखा।
डा० मेहता से नेचर क्योर क्लिनिक में एनिमा, भाप वगैरह ली।
श्री हरिभाऊ उपाध्याय, नाथजी, वावू कर्नाटक, दामोदर खंडेलवाल, देशपांडे आदि से वातचीत।
पत्र-व्यवहार, श्रीमती नारायणजी का छोटा वंगला पांच सौ रु० में एक वर्ष को भाड़े से नक्की किया।
शाम की प्रार्थना वापू के पास। थोड़ी वातें। श्री कानजी श्रीकृष्णदास से वहुत-सी विनोद-अनुभव की वातें।

१०-६-३३

घूमना, वोट-क्लव रोड की ओर।
पू० वापू के पास। उनके विचार महादेवभाई ने पढ़कर सुनाये। श्रीनिवास शास्त्री की वातचीत।
डा० मेहता के वहां इलाज के लिए गये। श्री गोविंदलालजी व सुलभा को भी वहां ले गए।

दमोदर मूंदड़ा व मीरा मिलने आये। श्री हरिभाऊजी से वातें, फाइल के कागजात छांटे। चि० वेंकटलाल से वातें—उसे फेअर नकल करने को दी। श्री मेंडेकर व डिवाडकर से वातें।

११-६-३३

स्टेशन गए। राजाजी, लक्ष्मी, पापा, नरसिंहम् आये। गाड़ी लेट थी। वजन किया, १७२ हुआ। दो रत्तल कपड़ का कम किया।

पर्णकुटी में वापूजी व श्री नारायणदासभाई से 'उद्योग-मंदिर' के संवंध में ठीक वातें समझी, करीव २॥ वजे तक।

चि० वेंकटलाल को डा० अंसारी का गंभीर आरोप कहा और उसे समझा कर कहा। इसका खुलासा संतोषजनक होना ही चाहिए तथा अन्य वातें। श्री केशवदेवजी, देशपांडे व काकासाहव से वातें। डा० मेहता (नेचर क्योर) से वातें। चि० लक्ष्मी आदि से वातें, राजाजी से भी।

१२-६-३३

वेंकटलाल से वातें। नं० १७ वोट-क्लव रोड, श्रीनारायणजी द्वारकादास के वंगले में रहने गए।

नेचर क्योर में इलाज, एनिमा, स्टीम भाप आदि। बीमारों से मिले। मदनलाल, राधाकिशन, सुशील लोनावाला से आये। राजाजी व सरोजिनी से मिले।

प्रार्थना वापू के पास। सुव्रता वहन से बातें। मदनलाल से उसके पढ़ाई, सगाई, विवाह के विचार जाने।

१३-६-३३

वेंकट, पित्ती, राधाकिशन (वावू) रुइया से वातें। नारायणजी द्वारकादास को २५० रु० तथा कमल को ५०० रु० दिये।

जगन्नाथ महोदय खंडवे वालों से वातचीत। डा० सोहन से परिचय।

श्री सरोजनीदेवी वीमार, उन्हें देखा। वृजकृष्ण और सीतारामजी भी वीमार।

श्री गोविंदलालजी व मदनलाल जालान से वातें।

मदनमोहन का नागपुर से इतवार को छुटने का तार मिला। आश्चर्य व खुशी। वापू की प्रार्थना में।
रात को सवितावहन, रामनिवास, मदनलाल, राधाकिशन मिलकर १२ वजे तक विचार-विनिमय।

१४-६-३३

घूमना, डा० मेहता से वातें। पू० त्रिकमजी से वातें। डा० मेहता से फ्रेड डिसोजा व जगन्नाथ महोदय के वारे में वात की। फ्रेड डिसोजा को वहीं रखने का निश्चय। मेहरअली से वातें।
श्री वनारसीलालजी झुनझुनवाला, श्री चतुर्भुजजी डिडवानियां, श्री पार्वती-देवी वंवई से मिलने आये। फ्रेड डिसोजा भी आये। श्री जगन्नाथजी महोदय से ठीक वातें। वह वापस खंडवा गये।
पूज्य वापू को डा० गिल्डर ने ठीक से तपासा।
रामदास गांधी व देवदास गांधी से वातें। लक्ष्मी-देवदास के विवाह के संवंध में वापू से विनोद। श्री केशवरावजी (साहेव) वड़ौदेवाले व उनके पुत्र से वातें।

१५-६-३३

नेचर क्योर होम जाकर मित्रों को देखा।
मदनमोहन वर्धा से आया। पत्र लिखे।
वापू से थोड़ी वातें। चि० शांतावाई वंवई से आई।
चि० शांता व वहन सुव्रतादेवी से वहुत देरतक वातचीत। श्री सूरजमलजी की व्यवस्था के संवंध में।

१६-६-३३

जल्दी निवृत्त होकर पर्णकुटी पहुंचे। ७। वजे से देवदास के विवाह की तैयारी। विवाह सानंद हुआ। वापू ने थोड़ा कहा। उस समय उनकी हालत रोमांच और गद्‌गद् होने से विचारणीय हुई।
पू० वापू के वहां दर्शन करनेवालों की भीड़। पांव छूने की धड़-पड़। जवर्दस्ती करके उन्हें वहां से हटाया। थोड़ा विचार।

प्रेमवती बहन (लेडी ठाकरसी के यहां) विवाह-निमित्त भोजन।
भाई घनश्यामदासजी बिड़ला से बातें। सस्ता-मंडल, पिलानी-कालेज, देवदास व हिन्दुस्तान टाइम्स आदि के संबंध में।

१७-६-३३

सुबह देव शर्मांजी के साथ पर्णकुटी। वहीं पर नाश्ता।
अक्षयचंदभाई व उनके परिवार से बातचीत। नेचर क्योर, घर पर भोजन, थोड़ा आराम।
पू० बापू के मेडिकल बोर्ड—डा० देशमुख, डा० गिल्डर, डा० पेरुलकर, डा० पटेल, डा० घारपुरे, डा० पाठक आदि ने मिलकर बापू को तपासा। बाद में उन्होंने स्टेटमेंट प्रेस को दिया—कम-से-कम एक मास आराम लेने को कहा।
श्री माधवराव अणे, राजाजी तथा मैंने मिलकर फिरसे सत्याग्रह स्थगित करने के बारे में ठीक चर्चा की। आखिर बापू की स्वीकृति से सत्याग्रह छः सप्ताह के लिए स्थगित किया।
रामदास ने भावी जीवन संबंध में बातें कीं। आज विश्वनाथ छूटकर आये।

पूना-बंबई, १८-६-३३

जल्दी आंख खुल गई। मच्छर बहुत थे।
पर्णकुटी पू० बापूजी के पास गये। चि० शांता साथ में थी। बापू ने रामदास के बारे में अपने विचार खुलासेवार कहे, मुझे अल्मोड़ा जाने को कहा, शरीर संभालने का मैंने उनसे वचन लिया। उन्होंने कहा मुझे अभी जीना है।
गिरधारी की गिरफ्तारी हुई। महादेवभाई का स्टेटमेंट देखा।
रामेश्वरदासजी व घनश्यामदासजी बिड़ला से बातचीत। राजगोपालाचारी व देवदास से बातें।
महादेवभाई देसाई से खुलासेवार नैतिक बातचीत।
४॥ बजे मोटर से बंबई—देव शर्मांजी व पार्वती साथ थी। ८॥ बजे बंबई पहुंचे। माटुंगा ठहरे।

बंबई, १९-६-३३

श्री केशवदेवजी से घर की स्थिति की घूमते समय वातचीत।
रामेश्वर, रामकुमारजी, रामेश्वर की माता से वातें।
पत्र-व्यवहार। केशवदेवजी वगैरह की घर-संवंधी व्यवस्था में भाग लिया।
श्री देव शर्माजी से थोड़ी वातें।
श्री गोविंदलालजी व वेंकटलाल के मामले के वारे में, उनके वंगले पर वातें। श्री गोविंदलालजी, लोहिया, मदन पित्ती, मुकुंदलालजी, मदनलाल जालान उपस्थित थे। करीव तीन घंटे काम हुआ। थकावट मालूम हुई।

२०-६-३३

रामेश्वर, केशवदेवजी, रामकुमारजी से वातचीत।
राधाकांत मालवीय से कह दिया कि मैं तुमसे व्यापार के संवंध में वात भी नहीं करना चाहता।
शांताक्रुज में शंकरजी, मनोहरसिंहजी, विलेपार्ले में भाऊसाहव पटवर्धन के घर कुसुम से मिले। अंधेरी में सूरजमलजी के काम की व्यवस्था के वारे में श्री पालीरामजी, वद्रीदासजी, फतेचंद, चि० शांता, सुगनीवाई से वातचीत। व्यवस्था, वहीं पर भोजन। सुगनीवाई ने सही करने का विरोध किया, समझाया-धमकाया।
विरदीचंदजी पोद्दार आये, मदन पित्ती, मदन जालान आये। गोविंदलालजी, वेंकटलाल के वारे में वातें। आविदअली, विश्वनाथ, जोहरा आदि से वातें। डा० कमला को डा० पुरंदरे को दिखलाया। भाग्यवती के यहां भोजन।
गोविंदलालजी व वेंकटलाल के मामले का विचार। करीव तीन घंटे। थकावट।

२१-६-३३

रामेश्वर की माता से व केशवदेवजी से वातें।
रामनारायणजी चौधरी सावरमती से आये। ज्ञानदेवी, प्रभुदास संवंध में सव वातें समझाईं, पत्र लिखे।

नारायणलालजी पित्ती आये। बातें। कमला, सुशील का नासिक जाने का निश्चय। चि० नीलकंठ मश्रुवाला के घर भोजन, घर की हालत शांति से समझी। नाथजी भी आये।
मिट्ठू बहन पेटीट से मिले। उनकी माता व भाई मिले, मिल की बातें। वच्छराज कंपनी व हिंदुस्तान शुगर कंपनी की महत्व की सभा हुई। भविष्य, व्यापारिक धोरण, नीति, श्री केशवदेवजी, रामेश्वर का फैसला आदि। कई मित्र मिलने आये। गोविंदलालजी, वेंकट का मामला, मदन से बातें।

देवलाली-नासिक, २२-६-३३

निवृत्त, सुबह दादर से देवलाली के लिए रवाना थर्डक्लास में। रास्ते में खूब सोए। ११ बजे देवलाली पहुंचे। चि० केशव स्टेशन आया। भाटिया सेनीटोरियम में गए। रुक्मिणी व उसके बालकों को देखा। चि० राधा, केशव, संतोकबहन से ठीक बातें, भविष्य जीवन के बारे में। केशव को हिम्मत दी।
प्यारेलाल, किशोरलालभाई वगैरा से मिलने का प्रयत्न। सुपरिंटेंडेंट ने मंजूरी नहीं दी। नासिक शहर में भूलाभाई देसाई अस्पताल में बीमार। उनसे गद्रे वकील के साथ मिले। दोनों को सुख मिला। खादी भंडार व गद्रेजी के यहां मित्रों से मिले। सीताराम शास्त्री के घर गए। धनराजजी के यहां दूध, फल लिया। सन्तोक बहन के यहां भाकरी आम। नागपुर मेल से इंटर में, वर्धा के लिए रवाना।

अकोला-वर्धा, २३-६-३३

सुबह ५ बजे सेगांव स्टेशन पर अकोला उतरने का निश्चय किया। अकेले अकोला उतरकर, तांगा भाड़ा कर नानाभाई मश्रुवाला के घर गये। तारा व चि० कांती का निश्चय। चि० कांती एक वर्ष शांति निकेतन जायगा व चि० तारा १० जुलाई से वर्धा (मेरे पास) आवेगी। कार्यकर्ता तरीके काम करेगी।
श्रीरामजी के घर सबों से मिले। श्री बृजलालजी, सुगनचंदजी, किशनलाल,

गोले, दुर्गावाई, पंडितजी, रतिलाल वगैरा मिले, वत्सला—जानकीदेवी की लड़की—मिली। श्रीरामजी से वडनेरा तक वातें। एक्सप्रेस से वर्धा। दूकान पर वल्लभभाई के व अन्य पत्र पढ़े।
घरपर विनोवा से वातें। आश्रम में प्रार्थना।

वर्धा, २४-६-३३

५ वजे उठे, निवृत्त, नालवाड़ी मदालसा के साथ पैदल घूमते हुए गये। रास्ते में डिप्टी कमिश्नर हीरालालजी मिले। तवीयत की वातें। सुवह डोंगरे से वातें कीं।
आराम के वाद चिट्ठियां लिखी, खासकर वल्लभभाई, मथुरादासभाई, नारायणदासभाई को।
वाई केशर से पेट भरकर वातें कीं। मेरे विचार उसे समझाए।
जाजूजी, वालूंजकर, राधाकिशन से वातें। नागपुर-केस के कागजात देखे।

२६-६-३३

घूमने के वाद केशरवाई व राधाकृष्ण से वातें। नागपुर-केस के कागजात दूकान पर ८ से ११ तक।
दोपहर को घरपर नागपुर-केस के कागजात २॥ से ५ तक देखे। पत्र पढ़े, लिखवाये।
श्री महादेवलाल सराफ से वातें की। खानगी पत्र व्यवहार दूसरे नहीं पढ़ें, वैसा किया। चि० पन्ना-मुरली संवंध के वारे में सीतारामजी के विचार, गुलाव, प्रह्लाद, केशर के विचार; चि० शांता, पूर्णचंद आदि की हालत कही। वाई केशर से और वातें।

२७-६-३३

राधाकृष्ण के साथ घूमना। रामनाथजी के यहां वैठने गए। जीवनदास से वातें। वह अनंतपुर गया।
नागपुर-केस के कागजात ८ से १०॥ व ३ से ५॥ तक देखे।
चि० वृजमोहन व शांता (श्रीरामजी की लड़की) अकोला से आये।

शाम को आश्रम में प्रार्थना। थोड़ा कहा, पूना व बापूजी के बारे में। आज पू० बापूजी के हाथ का पत्र आया।
मदनमोहन के नाथजी-संबंधी तथा बापूजी के अनुयायियों-संबंधी विचार सुने। दुःख हुआ। अधिक समय मिलने से इन्हें समझाने का प्रयत्न करने का निश्चय किया।

२८-६-३३

जोशी, धोत्रे, राधाकृष्ण, लक्ष्मण, शांता, श्रीराम से बातें।
महादेवलाल सराफ कलकत्ते गया। जीवनदास अनंतपुर गए।
नागपुर-केस के कागजात ७॥ से १०॥ तथा २॥ से ५ तक।
श्री जुगुलकिशोर अग्रवाल आये। भोजन के बाद उनसे थोड़ी देर बातें कीं। उनके विचार समझ लिये। मेरे उन्हें कहे।
चि० राधाकृष्ण मणी (मूली) को सेलू लाने गया।
शाम को बारिश बहुत जोर की ज्यादा प्रमाण में हुई। चि० कृष्णदास, प्रहलाद, नर्मदा ने सितार सुनाया, प्रार्थना, भजन।
चि० केशर की बातचीत के ढंग, व्यवहार से दुःख हुआ। थोड़ा क्रोध भी आया। व्रजमोहन गोयनका ने अपनी हालत कही, उसे समझाया। डा० गोविंदराव, कृष्णराव काने मिलने आये।

२९-६-३३

५ बजे प्रार्थना। रात को बरसात होते रहने से निद्रा कम। केशर के बोलने का मन में थोड़ा विचार, पू० मां को व उसको समझाया। चि० बृजमोहन गोयनका से थोड़ी बातें। चि० शांता, श्रीरामजी की लड़की को कन्या पाठशाला में भर्ती कराया।
साबरमती से श्री गोकुलजी (भरतपुरवाले) व चि० ज्ञानदेवी आये। थोड़ी देर बातें। श्री जुगलकिशोरजी अग्रवाल ग्रांडट्रंक से गए।
नागपुर-केस के कागजात ८ से १०॥ व २॥ से ५ तक देखे।

३०-६-३३

मदालसा ने वत्सला, नालवाड़ी (विनोबा के पास) से ११ बजे आते

समय रास्ते में, गाय चरानेवाले छोकरों ने, उसे हैरान किया, यह घटना सुनाई। उसे सांत्वना दी।

नागपुर-केस के कागज ८ से १०।। तथा २।। से ५ तक। अत्रे से वातें। प्रार्थना के वाद केशर, प्रह्लाद, नर्मदा, श्रीराम, राधाकृष्ण पू० मां से नई इमारत के वारे में वातचीत। मेरे विचार स्पष्ट समझाकर कहे। नर्मदा की पूरी जिम्मेदारी मेरी, सवों ने मिलकर निश्चय किया और खुलासा हुआ। वाद में केशर के मकान का खुलासा। उसके मरने वाद नर्मदा विवाह नहीं करे तो उसको समझाना।

ज्ञानदेवी, गोकुलजी से खुलासा वातें। वृजमोहन अकोला गया।

१-७-३३

घोत्रे से 'गांधी सेवा संघ' का हिसाव सुना। राधाकृष्ण के साथ जगह देखी। वारुताई से वत्सला के वारे में वातचीत। वत्सला से नालवाड़ी के रास्ते का किस्सा सुना, उसके मन की स्थिति जानी।

दूकान पर लूले वकील व रामभाऊ के साथ कागजात देखे, १०।। तक तथा २ से ४। तक।

अस्पताल, वजन लिया, १७८ हुआ। डा० गोवर्धन से वातें।

प्रार्थना के वाद मां, केशर वगैरा तथा चि० राधाकृष्ण, भाभी वगैरह से वातचीत।

२-७-३३

गोकुलजी व ज्ञानदेवी से थोड़ी वातें। वे आज भरतपुर गए।

गोकुलजी थोड़े विक्षिप्त व अस्थिर मालूम हुए। उसी प्रकार ज्ञानदेवी भी।

प्रभुदास गांधी व चंद्रदत्त अल्मोड़ा से आये। चि० वत्सला से बातें।

नागपुर केस के कागजात ८ से १०।। तथा २ से ५ तक देखे।

शाम को आश्रम में प्रार्थना। वारुताई से बातें। सुरगांववाले नानाजी महाराज मिलने आये।

पू० जाजूजी व केशरवाई से मकान के बारे में वातचीत। थोड़ा दुःख-सा मालूम हुआ

३-७-३३

प्रभुदास व चंद्रदत्त से वातें। सुवह ४ वजे पू० मां से वातचीत।
मदालसा व वत्सला को समझाया, हिम्मत दी।
नागपुर-केस के कागजात देखे, गंगाविशन की गवाही।
जानकीदेवी के दंड के एक हजार के वारे में विचार। आज उसके खाते का नीलाम दो वार दूकान पर व कचेरी में सरकार की ओर से किया गया, परंतु किसी ने भी वोली नहीं वोली। संतोष मालूम हुआ।
वल्लभभाई का सुंदर पत्र। प्रभुदास से खुलासा वातें।

४-७-३३

भाभी (राधाकृष्ण की माता), चि० भेरूं, उसकी स्त्री मणीदेवी आज ग्रांडट्रंक से सीकर रवाना हुए। स्टेशन गया।
डोंगरे को अस्पताल में देखा, आश्रम में विनोवाजी से वातें, स्टेटमेंट पूना भेजने के वारे में कोर्ट में। नागपुर-केस में मेरी गवाही १॥ से ४ तक हुई।

५-७-३३

वाई केशर के साथ घूमना।
नागपुर-केस ८ से १०। तक। कोर्ट में १ से ४। तक।
डा० प्रफुल्लचंद्र घोष और आनंदावावू कलकत्ते से आये। उनके साथ मामूली विनोद। आश्रम गये। प्रार्थना में शामिल। रात को ९॥ तक डा० घोष और आनंदावावू से वातचीत होती रही।

६-७-३३

डा० घोष, आनंदावावू व केशर के साथ घूमना। नागपुर-केस के कागजात पढ़े १०॥ वजे तक। पत्र-व्यवहार। डा० घोष वगैरा नालवाड़ी जाकर आए। शाम को प्रार्थना के वाद डा० घोष ने अपने विचार कहे। मेरा स्टेटमेंट पूना भेजने के वारे में विचार-विनिमय।

७-७-३३

डा० प्रफुल्लचंद्र घोष और आनंदावावू ने अभय-आश्रम की परिस्थिति समझाई।

घूमना, डा० प्रफुल्ल घोष और आनंदाबाबू आज मेल से पूना गए। उनके साथ मेरा वक्तव्य (विचार) लिखकर पू० बापूजी व श्री अणे के पास भेजा। नागपुर-केस के कागजात देखे।

श्री नानासाहब देवचके व प्रेमसुखजी कावरा (अहमदनगरवाले) मिलने आये। देवचके से हरिजन काम की बातचीत।

८-७-३३

मदनमोहन राधाकिशन से बातचीत। मदनमोहन से आज प्रथम बार पूछा कि मेरा जो जुर्माना २५० रु० भरा गया, उसमें उसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हाथ है क्या? उसने बिलकुल इंकार किया और कहा कि उसे बिलकुल मालूम नहीं। राधाकृष्ण ने भी इंकार किया।

नागपुर-केस के कागजात १२॥ से ३॥। कोर्ट में गवाही। तीसरी पेशी। पैर्पासग का क्रास एक्जामिनेशन देखा, विनोद और आश्चर्य।

पत्र लिखे। रामदास चौधरी का अहमदाबाद से पत्र आया, वह पढ़कर चिंता। श्री मालवणकर वकील को तार भेजा, पत्र लिखा।

गांव में—गुजराती, मारवाड़ी, परदेशियों की तकरार पुलिस केस के बारे में, लोग मिलने आये।

९-७-३३

राधाकिशन से बातें। आश्रम में मदालसा से बातचीत। मदालसा ने कहा कि आपकी गैर-हाजिरी में अतिथियों की व्यवस्था बराबर नहीं रहती आदि।

वजन लिया, १७६ हुआ, आश्रम के कांटे पर।

श्री जाजूजी से नागपुर-केस की चर्चा। श्री रा० ब० नायडू मिलने आये। नालवाड़ी, स्कूल की जगह की बातचीत, हरिजन बोर्डिंग की बात, नालवाड़ी ले जाने का विचार। श्री इंगले हरिजन विद्यार्थी नागपुर एम० ए० को ८० रु० कर्ज।

श्री मोरापंत अभ्यंकर, थत्ते, रामभाऊ, घोत्रे, बालासाहेब देशमुख मिलने आये, विचार-विनिमय। अभ्यंकर वगैरा नागपुर मोटर से गये। मुझे

नागपुर आने का आग्रह किया। नागपुर मेल से वेरियर एलविन (फादर एलविन) व श्रीकांत मैसूरीयन आये, बातचीत।
शाम को आश्रम में प्रार्थना। बाद में चिरंजीलाल व पूनमचंद से नागपुर-केस की बातें।

१०-७-३३

प्रहलाद (आश्रमवाला) व श्रीकांत (एलविन के आश्रमवाले) से बातचीत।
वेरियर एलविन से थोड़ी बातें।
रामचंद्रराव (बेंगलोरवाले) आज आये।
नागपुर-केस में दादाभाई की तथा गोपीजी की गवाही पढ़ना शुरू की।
भोजन के समय वेरियर एलविन, श्रीकांत (मैसूरवाले), रामचंद्र (बेंगलोरियन), उनके मित्र, बाबासाहेब देशमुख, वगैरा साथ में थे।
बाबासाहेब ने नागपुर मीटिंग का हाल सुनाया। डा० खरे के विचार जानकर संतोष हुआ। अभ्यंकर वगैरा के विचार कहे। बाबासाहेब पूना गये। चि० तारा अकोला से एक्सप्रेस से आई।
प्रार्थना के बाद आश्रम में वेरियर एलविन ने गोंड सेवा आश्रम का इतिहास मनोरंजकतौर से कहा। चि० तारा से थोड़ी बातें।

११-७-३३

वेरियर एलविन, श्रीकांत से करंजिया आश्रम के बारे में बातचीत।
नागपुर-केस के कागजात ७॥ से १०॥ तक देखे। बाद में कोर्ट में १ से ४। तक गवाही। आज चौथा दिन था। रात को ७॥ से १० तक कागजात देखे।
वेरियर एलविन के "गोंड सेवा मंडल" का थोड़े समय में परिचय, काम-पुरता, किया। जमीन की पक्की व्यवस्था करना, नए मेंबर आदि के बारे में बजट।
चि० तारा व मदालसा के साथ नालवाड़ी-आश्रम। विनोबा के साथ गीता-पाठ। बालुंजकर ने नागपुर हरिजन कार्य की रिपोर्ट दी। चंदा करने का कहा।

१२-७-३३

रामचंद्रराव (वेंगलोरवाले) से उनके भील सेवा व गुरुकुल के संवंध में व हरिजन-कार्य संवंधी वातें।

नागपुर-केस के कागजात पढ़ना शुरू किया। वाद में जाजूजी से गरम वात करने का दुःख हुआ। जाजूजी के साथ दूकान के कागजात देखे। १०॥ वजे घर आया।

एलविन, श्रीकांत, तारा आदि सवके साथ में भोजन।

वालकों के साथ श्रद्धा व भक्ति विषय पर विचार-विनिमय। प्रह्लाद ने निवंध पढ़कर सुनाया।

नागपुर-केस के कागजात देखे।

लाल्या मोची धर्म-संकट में आ गया। उसका निपटारा करने में समय लगाना पड़ा। आखिर में परमात्मा ने उसकी लज्जा रख ली, मकान की नीलामी के वारे में।

आश्रम में फादर एलविन ने वालकों को गोंड जाति की उत्पत्ति व अन्य मनोरंजक वातें वतलाईं।

१३-७-३३

आश्रम में कु० तारा के साथ वातें। विनोवा से मिले। धोत्रे के घर सांपों का विल, उसकी व्यवस्था।

नागपुर-केस के कागजात देखे। वत्सला आई। उसे सांत्वना देकर पूछा तो कहा कि अभी तक डर नहीं गया। उसने अपनी दुःखद घटना व अनुभव का वर्णन किया। दुःख हुआ। विनोवा को गुरू मानने से ही भविष्य में जीवन का उद्धार होगा कहा।

खंडवा के श्री डाक्टर जगन्नाथ आये। उनसे थोड़ी वातें। फादर एलविन की योजना देखी।

नागपुर कागजात रात को ९ वजे तक पढ़ना व समझना।

१४-७-३३

राधाकिशन को नागपुर भेजा, शांता वहन पित्ती के लिए।

वेरियर एल्विन से करीव १॥ घंटे ठीक वातें की। गोंड सेवा मंडल के वारे में।
चि० रामदास चौधरी अहमदावाद से आया। उसको समझाया। तारा से वातें।
नागपुर-केस १२॥ बजे कोर्ट में गये। चौथे दिन की गवाही पढ़कर उसमें थोड़ी दुरुस्ती करवाई। १ वजे करीव गवाही शुरू होने के समय खवर आई की डेक ग्राकमेन विलायत में मर गए। कोर्ट की छुट्टी हो गई, काम वंद। आज प्रथम वार मेरी गवाही सुनने लड़कियां गई थीं। घर पैदल चलकर आया।
मदालसा व वत्सला से वातें।
मेल से फादर वेरियर एल्विन व श्रीकांत पूना गये; श्री जाजूजी बंवई। शांतावहन पित्ती व जानकीप्रसादजी पोद्दार (वंवई), स्टेशन पर मिले। अहमदावादवाले भी मिलने आये। डा० जगन्नाथ के वारे में मेरे विचार स्पष्ट कहे।

१५-७-३३

राधाकिशन से वातचीत; रामदास चौधरी से वातें; वरसात हुई, खूव झड़ी लगी।
नागपुर-केस के कागजात कोर्ट में १ से ४॥ तक। ३॥ घंटे गवाही हुई। पांचवां दिन।
रामदेवजी सेलूवाले से वनारसी के वारे में वातचीत। आश्रम में वारुताई से वातें।
प्रार्थना; आश्रम के वाद घर पर आकर वालकों से थोड़ी देर वातें।
९॥ से १०। अंदाज तुकाराम भिवापुर से आये, उन्होंने अपनी भूल तो कवूल की, परंतु पूरा संतोप नहीं हुआ।

१६-७-३३

तुकाराम आश्रमवाले से व रामदास से वातें, राधाकिशन से भी।
नागपुर मेल से पंडित सुंदरलालजी (प्रयागवाले) व सालपेकरजी

(छिंदवाड़ेवाले) आये। पूना की हकीकत थोड़े में कही।
चि० शांता व लक्ष्मी से थोड़ी वातें।
आराम के वाद पंडित सुंदरलालजी से करीव १॥ घंटा बातें, उन्होंने युक्तप्रांत का हाल कहा। नागपुर-केस के कागजात देखे।
शाम को प्रार्थना वाद आश्रम में श्री सालपेकरजी व सुंदरलालजी ने पूना का हाल कहा। पं० सुंदरलालजी से साफ-साफ व थोड़ी कड़क व खुलासे-वार वातें।

१७-७-३३

४ वजे उठे, राधाकिशन से वातें। श्री सालपेकरजी ५। की गाड़ी से छिंदवाड़ा रवाना हुए। पं० सुंदरलालजी मेल से गोंदिया होकर प्रयाग गये।
चि० तारा से वातें व श्री वारुताई के साथ भी ठीक वातें, विनोवा भी वहीं पर थे। उनको समाधान करने का प्रयत्न, उन्हें संतोप मिला।
विनायकराव देशमुख (विरुलवाले) से वातें। श्री लक्ष्मी वावू (विहार-वाले) व श्री कुंदन जयपुर से आये।
नागपुर-केस के कागजात, श्री जाजूजी, श्री लूले साहव से वातचीत, वाद में २॥ से ५॥ तक दूकान पर कागजात देखे।
श्री शामराव, सिस्टर मेरी व सुंदर करंजिया से यहां पर आये। कुंदन से परिचय, वरसात। रात को सिस्टर मेरी को स्वप्न आया, घवराई।

१८-७-३३

सिस्टर मेरी से थोड़ी वातें।
पत्र लिखे। विरदीचंदजी पोद्दार से थोड़ी वातें, नागपुर-केस तथा उनके घरेलू मामले के वारे में।
श्री लक्ष्मीवावू व श्री कृष्णवल्लभ सहायजी हजारीवागवाले से थोड़ी वातें।
नागपुर केस कोर्ट में १२॥ से ४॥ तक। आज चीफ एक्जामिनेशन पूरा होकर क्रास शुरू हुआ।
कोर्ट से वापस आने पर वनोसा (चांदोर) से केदारमल व उनका इंजीनियर मिलने आये। विहारवाले मित्र मिलकर गये।

जाजूजी से बातें। बापू के पत्र व तार आये। आश्रम में विनोबा से विचार-विनिमय।

१९-७-३३

राधाकिशन से बातें। सिस्टर मेरी गेरेट व श्यामराव से बातें। विरदीचंदजी मिले। नागपुर-केस के कागजात ८ से १०॥ देखे। बाद में कोर्ट में १ से ४। तक। सिस्टर मेरी गेरेट व श्यामराव मेल से बंबई गये। डा० घोष व बोत्रे से ठीक बातें। नागपुर-केस के कागजात रात को १० बजे तक देखे।

२०-७-३३

डा० प्रफुल्ल से बातें। आनंदाबाबू, डा० घोष, पूनमचंदजी, धन्नीबाई रांका आये। पूनमचंदजी जाजूजी के यहां ठहरे।

नागपुर-केस के कागजात घर पर दो घंटे से ज्यादा देखे। कोर्ट में १२ से ४॥ तक क्रास एक्जामिनेशन खरे (नागपुरवाले) ने की। आज फिर सिर दुखता रहा। सुबह मिट्टी बांधी थी, शाम को तेल मालिश करवाया। आश्रम गये। थोड़ा घूमे। डा० घोष व आनंद से बातें, विनोद। पूनमचंदजी को बुखार।

आश्रम में प्रार्थना के बाद डा० घोष ने पूना-यात्रा का अनुभव सुनाया।

२१-७-३३

स्टेशन गये, मेल १॥ घंटे लेट थी।

धर्मशाला में कंजरों ने कब्जा कर लिया, पुलिस व कंजरों का ठीक दृश्य था। आज कई वर्षों के बाद गउशाला की ओर से म्युनिसिपल प्लाट में बसी हुई नई बस्ती देखते हुए बगीचे गया। फिर स्टेशन।

डा० प्रफुल्ल घोष, आनंदाबाबू चौधरी कलकत्ता गये। श्री रामदास गांधी, निर्मला, दोनों बच्चे, चि० उमा व बाद में मिलिंदजी आज आये।

पूनमचंदजी को बुखार। वे और धन्नीबाई नागपुर गए।

नागपुर-केस के कागजात १॥ घंटा घर पर। १२॥ से ४॥ कोर्ट में। क्रास-एक्जामिनेशन।

रात को ८ से १०॥ दूकान पर जमा-खर्च देखे।

११ बजे सोये। उसके पहले रामदास गांधी से बातें।

२२-७-३३

मिलिंदजी, रामदास, राधाकृष्ण से बातचीत, मदनमोहन को बंबई व पूना के काम नोट करवाए। चि० राधाकिशन रायपुर से वापस आया। नागपुर-केस के कागजात देखे। स्वास्थ्य थोड़ा खराब। कोर्ट में सीधा क्रास एक्जामिनेशन। १२॥ से ४॥ तक गवाही हुई। सिर भारी रहा। थकावट मालूम हुई। रात को भी दूकान पर जाकर ७॥। से १०॥ तक नागपुर-केस के कागजात पढ़े। आज मन थोड़ा अशांत रहा।
रात को ११ बजे के करीब सोये।

२३-७-३३

बालकों से बातचीत, पट्टणी वकील व उनके बहनोई मिलने आये। तेल मालिश आदि करके व जल्दी भोजन कर आराम किया। मदालसा का स्वास्थ्य भी थोड़ा खराब मालूम हुआ। चि० राधाकिशन, तारा वगैरा नागपुर सभा में गये।
नागपुर-केस के कागज दूकान पर १ से ५॥ तक पढ़ने आदि का काम। स्वास्थ्य कमजोर है। लालजी मेहरोत्रा आये। उनके साथ बंगले पर थोड़ी बातें, आश्रम, प्रार्थना में शामिल, वापस। लालजी ने तेल की मालिश की। जल्दी सो गया।

२४-७-३३

लालजी मेहरोत्रा के साथ स्टेशन गये। वहां बापूजी अणे, (माधवराव अणे) मिले। उन्होंने कहा कि पूना में प्रायः तुम्हारी सूचनाओं का ही अधिक अमल हुआ। मेरा चौथा नंबर कहा, बाद की व्यवस्था मैं करूं। आज स्वास्थ्य बहुत कमजोर मालूम होता था। चक्कर आने की संभावना। थोड़ी ज्वर की संभावना मालूम होती थी। दूकान पर व्यासजी के पास से दवा लगाई। चि० गंगा व उनके भाइयों को नागपंचमी के रोज अलग-अलग हो जाने को कहा। घर में स्त्रियों में अधिक कलह है तो फिर शामिल रहना ठीक नहीं।

घर आकर सो गया। १ बजे के करीव स्नान व भोजन के वाद आराम। वापूजी के पत्र का जवाव लिखवाया। विनोवा से वातें, भविष्य के प्रोग्राम के वारे में।

श्री सेन गुप्ता (जितेंद्र मोहन सेन गुप्ता) की रांची में ता० २३-७-३३ इतवार को दिन में १ बजे एकाएक मृत्यु होने की खवर सुनी, दुःख हुआ। रात को दुःख प्रदर्शन की सभा हुई, सभापति के नाते कहना पड़ा। तारा, राधाकिशन, नागपुर सभा से आये। तारा सावली गई।

२५-७-३३

कृष्ण नायर दिल्लीवाले मिल गए। रघुनंदन सरन के संवंध के वारे में वात कर गए। चि० नर्मदा से थोड़ी वातें।

नागपुर-केस के कागजात ८ से १० तक घर पर देखे। १२।। से ४।। कोर्ट में। आज स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ। सिर हलका रहा।

गौरीलालजी वजाज के स्वास्थ्य की गड़वड़ सुनी, मिलने गये।

आज जो वापू का महत्व का पत्र आया, धोत्रे से उसपर विचार। 'गांधी सेवा संघ', 'कन्या-पाठशाला', 'महिलाश्रम' का विचार। रामदास गांधी से वातें। रात में वारिश होती रही।

२६-७-३३

रामदासभाई से उनके कार्य के संवंध में वातचीत। घूमना।

नागपुर-केस घर पर ८ से १०, कोर्ट में १२।। से ४।।। ज्ञान-गिनती नहीं याने विचार परवा नहीं, (कन्सीडरेशन) इसीपर आज ज्यादा करके क्रास हुआ। वापूजी व राजाजी के पत्रों का जवाव।

वावूजी पाठक भंडारेवाले मिलने आये। शाम को फराल भी साथ में किया। डा० खरे, टिकेकरजी व पटवर्धन आश्रम जाकर वालकोवा को तपासकर मिलने आये। विनोद व वातचीत। विनोवा से हुई वात का सारांश कहा। विनोवा आये। कार्य-पद्धति, जवावदारी, वालकों की व्यवस्था, मदालसा वगैरा के विचार। धोत्रे वंवई गये। लक्ष्मीवाई (खरे) सावरमती आश्रम ५ रोज के लिए गईं। रामदासभाई गांधी व राधाकिशन से वातें।

२७-७-३३

चि० राधाकिशन नागपुर गया। श्री थरानी बी० एस० सी० (सबकर-वाले विद्यार्थी) से बातें, उसे समझाकर कहा।

नागपुर-केस का काम। वादी के पत्रों की नकल पढ़ी। करीब २॥ घंटे में २० पत्र पढ़े।

आज चि० गंगाविशन, लक्ष्मण, मोती, राजी-खुशी से अलग-अलग हो गए। दूकान की रकम का अंदाज से फैसला किया। १ से २ बजे तक इस काम में लगा।

सत्याग्रह-आश्रम की खानगी सभा में विनोबा का सुंदर प्रवचन हुआ। सभा खुलासा ३। से ५॥ तक। भविष्य कार्य की चर्चा। रामदास गांधी, निर्मला आज जाजूजी के पड़ोस में रहने गए। आंध्र के नारायणमूर्ति मिलने आये।

२८-७-३३

कुंदनलाल जैपुरिया से बातें। पूनमचंद बांठिया मिले।

नागपुर वादियों के पत्र ७ से ९ तक पढ़े। कोर्ट में १२॥ से ४॥ तक। श्री रतनचंद अग्रवाल (कलकत्तेवाले) आये। चि० तारा, कृष्णदास सांवली से आये।

२९-७-३३

तारा मश्रुवाला, राधाकिशन व नागझरीवालों से बातें। चोखा हरिजन से भी। नागपुर-केस के कागज १॥ घंटे घर पर। कोर्ट में १२॥ से ४ तक। चिरंजीलाल, हरीकिशन की घटना, अनुचित व दुखकारक हुई कोर्ट में। गवाही की तारीख २८ अगस्त से रखी गई।

श्री जानकीप्रसादजी पोद्दार व गोविंदरामजी लोया से बातें करते स्टेशन। टिकिट सेकेंड क्लास का लेना पड़ा, तबीयत के कारण। बडनेरा में पन्नालालजी जैन (अमरावतीवाले) मिलने आये। अकोला में मित्र-मंडल मिलने आया।

बंबई, ३०-७-३३

दादर में उतरे, माटुंगा गये। चि० शांता व मदनलाल पित्ती से बातें।

फादर एलविन का हार्निया का आप्रेशन किंग एडवर्ड मेमोरियल में डा० देशमुख ने सुंदर तौर से किया। करीव १।। से २ घंटे वहां लगे। कमलादेवी व सोफिया मिली। आविदअली के घर परिचय।

गोविंदलालजी के यहां शांता वहन से, वालकों से, गोविंदलालजी व वेंकटलाल से वातचीत। रामेश्वरदासजी विड़ला के घर नरगिस वहन व खान मिले। गुजरात मेल से अहमदावाद।

अहमदावाद, ३१-७-३३

६। वजे अहमदावाद पहुंचे। रणछोड़भाई के वंगले पर।

पू० वापूजी का मौन था तो भी वातें ठीक हुई। वापू ने लिखकर जवाव दिये।

आश्रम गया, वहीं स्नान, नाश्ता, वर्धा जानेवालों से परिचय, वातचीत।

श्री द्वारकानाथजी व लक्ष्मी वहन से उनकी व्यवस्था की चर्चा।

पू० वापूजी ११।। वजे आये। उनसे ठीक-ठीक प्रश्न-उत्तर, वातचीत। उनके विचार समझे। रात को ९।। वजे तक आश्रम में ही भोजन।

रणछोड़भाई के वंगले पर सोने को आया। पू० वापूजी के नजदीक ही सोया। थोड़ी वातें। रात को निद्रा नहीं होने पाई। कई वार उठना पड़ा। आखर १-२० को पुलिस की चार मोटरें आईं। पू० वापू, वा, महादेवभाई को वहां गिरफ्तार किया। वाकी को आश्रम में किया।

१-८-३३

४।। वजे उठकर निवृत्त होकर आश्रम गये। वहां संतोकवहन, मोती, दुर्गादत्त, विशनदेवी आदि से मिले, परशुराम से वातें। चंपावहन मेहता के यहां नाश्ता किया। चिमनलालभाई के साथ वैठकर आश्रम का हिसाव समझकर उन्हें व्यवस्था करने को कहा। प्रभुदास से वातें। खण्डूभाई से मजदूर संघ की वातें।

कृष्णदास व मदनमोहन से वातें। पैदल चौक तक, रणछोड़भाई के यहां भोजन।

चर्खा-संघ का कार्य १।। से ५ वजे तक अनसूयावहन के घर पर किया।

रामजीभाई, जयसुखलालभाई, मथुरादासभाई व मूलचंदजी से बातें। प्रभुदास गांधी, देवदास, लक्ष्मी से बातें। शंकरलाल बेंकर, अनसूयाबहन से भी। श्री अंबालालभाई, सरलादेवी, बालक, कस्तूरभाई आदि से मिले। आश्रम के चर्खा संघ को खादी की रकम दी, ५० हजार का जमा-खर्च। गुजरात मेल से रवाना। पू० बापूजी भी गुजरात मेल से ही शांताक्रूज तक आये।

बंबई-पूना, २-८-३३

शांताक्रूज में पू० बापूजी व महादेवभाई को उतार लिया। मोटर से पूना ले गए।

दादर उतरकर माटुंगा, स्नान, दूध लेकर दादर से ८ की गाड़ी से पूना रवाना। वर्षा खूब हुई। रास्ते में लेडी विट्ठलदास के यहां।

श्री नरसिंहम्, चिंतामण केलकर पूना आये। रास्ते में महात्माजी की गिरफ्तारी तथा अन्य सामाजिक राजनैतिक विचार। गाड़ी करीब दो घंटे लेट पहुंची। १॥ बजे पूना नेचर क्योर के पास की चाल में स्टेशन से पैदल। कमला, रामकृष्ण, जानकीदेवी से बातें। गिरधारी ने अखबार पढ़ा।

लेडी ठाकरसी की मोटर से पर्णकुटी, बापूजी १२ बजे जेल (यरवदा) पहुंचे। वल्लभभाई बंबई गये।

पर्णकुटी में लक्ष्मीनिवास, सुव्रता बहन, मुकुंदलालजी, कमलनयन व इन्दू से मिलते हुए घर आये। भक्ति बहन मिली।

पूना, ३-८-३३

आज उपवास के बाद प्रथम बार कमलाबाई घूमने गई। शांताबाई के घर तक पैदल जाना-आना। कृष्णदास गांधी से बातें, उसका विवाह करने का निश्चय।

तेल की मालिश, नारायण नेचर क्योरवाले ने की। दामोदर मूंदड़ा, मीरा, उसकी माता वगैरा आये। लक्ष्मण शास्त्री से बातें, प्रभावती अहमदाबाद से आई।

श्री गोविंदलालजी, मुकुंदलालजी, शांताबाई के साथ १ से ५ बजे तक उनके घर-संबंधी, खासकर वेंकटलाल के निकाल के संबंध में बातचीत।
श्री सुव्रता बहन व सुशीला बिड़ला से मिले, दोनों के उपवास चालू थे।
डा० दीनशा मेहता से बहुत देर तक बातचीत, उन्होंने अपनी हालत, विवाह के संबंध में व नेचर क्योर संबंध में तथा अन्य बातें साफतौर से कहीं।

४-८-३३

न्यू बोट-क्लब रोड के बंगले पैदल, रास्ता बहुत ही खराब। चप्पल हाथ में लेकर चलना पड़ा।
श्री गोविंदलालजी व शांता बहन से बातें। लक्ष्मण शास्त्री से बहुत देर तक बातें। पू० गंगाधरराव देशपांडे, पटवर्धन बंधु वगैरा से बातें।
पू० बापूजी व महादेवभाई को एक वर्ष की सादी सजा आज हुई।
मथुरादास त्रिकमजी आ गए। पटवर्धन बंधु के घर। चि० प्रभावती गई।

५-८-३३

श्री कृष्णदास सतारा गया। छत पर घूमे। काकासाहब, गंगाबहन, नानीबहन झवेरी से बातें।
गंगाधरराव देशपांडे, हनुमानराव कोजलगी, उनके भाई, चि० इंदू नेहरू, कमल, मोहन (बालकृष्ण देशपांडे) मिलने आये व भोजन साथ में किया।
चि० लक्ष्मीनिवास बिड़ला मिलने आये। उसने कमला से राखी बंधाकर ११ रु० दिए।
चि० इंदू ने कमल और रामकृष्ण को राखी बांधी, ११-११ दिये।
गंगाधरराव से बातचीत। इंदू से व मोहन से बातें।
बिड़ला हाउस, सुशीला को हंसाया व हिम्मत दी, सुव्रताबाई के घर उसने राखी बांधी। दूध-फल लिया। बातचीत।
बोत्रे बंबई से आये। गोमतीबहन ने राखी बांधी।

६-८-३३

काकासाहब से बातचीत।
मदनलाल जालान की लड़की गुजर गई, उससे मिले।

गंगाधरराव, हनुमतराव कोजलगी, धोत्रे मिलकर गांधी सेवा संघ की कर्नाटक शाखा के बारे में चर्चा-विचार। सदस्यों को सर्क्यूलर निकाला, वह पसंद किया।

डा० दीनशा मेहता ने अपनी स्थिति फिर से समझाकर कही। उसे उचित सलाह दी। गंगाधरराव को तपासा।

श्री केलकर, वासू काका, पटवर्धन बंधु, मैनाबाई सहाने व उनके पिता से मिला।

बिड़लों के यहां रामेश्वरजी के हाथ की बूंदी वगैरा खाई, सुव्रताबाई के यहां फल लिये।

रात को जानकीदेवी व कमला ने गंगाधररावजी को स्टेशन पहुंचाया। गिरधारी व उसकी बहिन से बातें।

७-८-३३

घूमना, जानकीदेवी, कमला के साथ में। बिड़लों के घर तक घूमना हुआ, काकासाहेब से बातें। रामेश्वरजी बिड़ला व केशवजी से बातें।

श्री स० के० भावे, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणेवाले मिलने आये। केशवदेवजी, गिरधारी उसकी बहिन व बहनोई, आला बहन पोचा वगैरा मिले। साथ भोजन किया।

गिरधारी नोटीस तोड़कर स्टेशन रवाना हुआ। चिंचवड में गिरफ्तार कर वापस पूना लाया गया। एक वर्ष की सख्त कैद की सजा।

आला बहन पोचा, डा० दीनशाह मेहता से ठीक बातें। कु० मैनाबाई के पिता-माता मिलने आये। उनका परिचय। बिड़ला हाउस जाकर सुशीला को देखा, समझाया।

श्री सुव्रता बहन से मिलना। उससे मदन की सगाई आदि की बात, चि० शांता के बारे में गार्डियनशिप, मेरी जमानत। थोड़ा आश्चर्य हुआ। जानकीदेवी, कमला आदि से बातें। रात को बंबई रवाना हुए।

बंबई, ८-८-३३

सुबह कल्याण। छः बजे गोविन्दलालजी के यहां उतरे। बहुत-से टेलीफोन

तथा मिलनेवाले आये। घवराहट हुई। गोविंदलालजी, शांता बहन, चि० वेंकटलाल, मदनलाल आदि से वातें।

फादर एलविन को के० एम० अस्पताल में देखा, वातें।

डा० दादाचनजी व डीन से उनकी नर्स-संवंधी योजना पर विचार-विनिमय।

नथमलजी चोरडिया, केशर कुंवर, शांती, भीमराज वद्रीदास, केशवदेवजी विरद चंदजी पोद्दार, चंपावहन, गोमतीवहन, निर्मला, नीलकंठ, तारापुरवाला, वनारसी वजाज तथा अन्य कई मित्र मिलने आये।

रात को श्री गोविंदलालजी, वेंकटलाल के मामले में पंचायत की वाकायदा वैठक हुई। ठीक समय गया। थोड़ी निराशा हुई। काम ठीक हुआ। नरगिस वहन व पुरुषोत्तम वैरिस्टर मिले।

९-८-३३

सुवह ही घनश्यामदास (मिसोडवाला) हैदरावाद से आया। वंसीलालजी की हालत उसने कही।

भाग्यवती दानी, श्री कमलादेवी चट्टोपाध्याय, सफिया सोमजी, उसके माता-पिता, चि० शांता, उसकी माता व माटुंगा में केशवदेवजी, रामेश्वर की माता, परेल अस्पताल में फादर एलविन व श्यामराव से मिलते हुए गोविंदलालजी के यहां भोजन, आराम।

डायाभाई पटेल व डा० रजवअली के घर सवों से मिले। सालीसिटर दिवाकर की आफिस में श्री शांतीकुमार व सुमति से शांतीकुमार के दस्तावेजों पर सही की, विना पूरे पढ़े ही। थोड़ा आश्चर्य।

जमीयतराय सालीसिटर से हरनंदराय सूरजमल के काम के वारे में चि० शांता, चि० रामनिवास आदि के साथ चर्चा। वहीं पर आखर मुझे ही व्यवस्था करनी पड़ी।

श्री रामेश्वरजी विड़ला से पोद्दारों के वारे में वातचीत।

गोविंदलालजी के कुटुंवियों से वातचीत। रात को ऐक्सप्रेस से वर्धा रवाना।

वर्धा, १०-८-३३

चालीसगांव से पचोरा तक श्री रामेश्वरजी धुलियावाले वातें करते आये।

चालीसगांव स्टेशन पर श्री गोगटे भी आये थे। श्री दामोदर मूंदड़ा व मीरा भी साथ में थीं।

जलगांव से कोदकर तक श्री देवकीनंदन व कुलकर्णी से बातें कीं। भुसावल स्टेशन पर देवकीनंदन, हुकमीचंदजी, दीपचंदजी वगैरा आये।

अकोला से चि० तारा वर्धा तक साथ में आई, वहीं स्टेशन पर श्री ब्रजलालजी, पंडित (सुगनचंदजी), मदन भट्टड़ साथ में बडनेरा तक थे। दिन में ३ बजे वर्धा उतरे। कुमारी मैनाबाई शहाने, कुमारी सफिया सोमजी, कुमारी तारा, भाग्वयती बहन वगैरा साथ में थे।

चि० मोतीलाल बजाज का छोटा पुत्र चला गया, वहां बैठने गए। डेडाराजजी व गुलाबबाई मिले। मि० डंकन व मेरी बार मिले। आश्रम में प्रार्थना।

११-८-३३

प्रार्थना के बाद चि० तारा, रमा आदि से बातें।

मि० डंकन व सिस्टर मेरी बार की योजना पढ़ी। कुमारी मैनाबाई शहाने की योजना देखी, जाजूजी से चर्चा।

आश्रम, लक्ष्मीबाई खरे, द्वारकानाथजी, धोत्रे, बारुताई से कन्याशाला व महिलाश्रम के बारे में विचार-विनिमय।

घर पर मि० डंकन, व सिस्टर मेरी बार की योजना की उनके साथ व श्री द्वारकानाथ व बालुंजकर के साथ चर्चा, विचार-विनिमय। कुमारी नर्मदा भुस्कुटे के साथ परिचय। उसका निश्चय व स्वतंत्रता देखकर खुशी हुई।

भोजन, प्रार्थना, मेरी बार ने अंग्रेजी का 'लीड काइंड्ली लाइट' भजन गया। कुमारी मैनाबाई ने भी गाया, बाद में कुमारी मैनाबाई व सफिया सोमजी के साथ उनकी शिक्षण-योजना का विचार।

१२-८-३३

प्रार्थना। आश्रम में बारुताई, विनोबा, लक्ष्मीबाई, द्वारकानाथजी, गोपालराव राधाकृष्ण आदि से विचार-विनिमय। राष्ट्रीय कन्याशाला का नाम

'कन्या-आश्रम, वर्धा' रखना निश्चय हुआ और उसकी व्यवस्था लक्ष्मीबेन खरे व द्वारकानाथ के सुपुर्द की गई।

स्वास्थ्य के कारण १२ नवंबर तक तो मुझे भी सत्याग्रह में भाग न लेने का निश्चय, पू० बापूजी, काकासाहब, गंगाधरराव, राजाजी आदि की आग्रहपूर्वक राय के कारण, विनोबा की राय से करना पड़ा। भविष्य में स्वास्थ्य की हालत देखकर विचार करना होगा।

अकोला-वर्धा, १३-८-३३

प्रार्थना कर सुबह पैसेंजर से अकोला रवाना हुआ। साथ में चि० तारा, सफिया सोमजी व मदनमोहन थे। धामणगांव से श्री माधवरावजी अणे साथ हुए। उनसे ठीक-ठीक बात हुई खुलासेवार। बडनेरा से डा० पटवर्धन व पार्वतीबाई (उनकी पत्नी) साथ हो गए। बातें। रचनात्मक कार्य की योजना। अकोला स्टेशन पर अणेजी का ठीक स्वागत, नानाभाई के घर उतरा। भोजन। मित्रों से बातें।

जाहिर सभा। अणेजी व अन्य १२ स्वयंसेवकों को विदाई का स्वागत किया। ठीक समारंभ हुआ। करीब ४। बजे वहां से लोणी सत्याग्रह को ये लोग रवाना हुए। कोतवाली के पास 'अनलाफुल असेंबली' जुर्म में गिरफ्तार किए गए। लोणी तक जाकर आए। पुलीस का व्यवहार ठीक मालूम पड़ा।

राष्ट्रीय शाला की जगह देखी, पंडित के घर पेड़े खाए, ब्रजलालजी के यहां दूध व फल। रात को १२ बजे की पार्सल से वर्धा रवाना, थर्ड में। स्टेशन पर सोए।

वर्धा, १४-८-३३

सुबह पांच बजे पार्सल गाड़ी से अकोला से वापस वर्धा पहुंचे। पोस्ट देखी, बाबासाहब देशमुख वहीं थे।

लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट कमेटी की सभा हुई, बहुत-सा काम हुआ। दामोदर मूंदड़ा को नियुक्त किया। ३०+२० (५०) पर।

आश्रम में शाम की प्रार्थना। शांता धोत्रे बीमार थी। उसके पास गए।

अमरचंदजी पुंगलिया बुरहानपुर से आए। थोड़ी बातें, बिजली के संबंध में। राधाकृष्ण से बातें, उसे मेरा मतलब समझाया।

१५-८-३३

बाबासाहब देशमुख से नेपाल-देवास आदि की बातें।

कुमारी सफिया सोमजी के साथ आश्रम-कन्याश्रम देखा। महिलाश्रम में कुमारी अमला से मिले। आज से निर्मला गांधी, विद्यादेवी, सज्जन की अंग्रेजी-शिक्षण की व्यवस्था। दामोदर मूंदड़ा के जरिए कुमारी अमला व नर्मदा की हिंदी-शिक्षण की व्यवस्था।

बच्छराज कोष का आंकड़ा देखा। चि० राधाकृष्ण से बातें, नागपुर-केस के पत्र पढ़ने शुरू किए।

मि० डंकन की योजना का द्वारकानाथजी, वालुंजकर के साथ विचार किया। सौभाग्यवती दानी बंबई गईं। मैना (प्रेमिला) बहन शहाने नागपुर जाकर आई।

दूकान, गंगाविशन वगैरों का जमा-खर्च करवाया। खरांगणावाले राठी निकाल करने आए।

मुसाफरी खर्च का हिसाब देखा, दुरुस्ती की।

रात को ८॥ बजे गांधी चौक में श्री कु० मैना (प्रेमिला) शहाने, कुमारी मेरी बार व सोफिया सोमजी का सुंदर भाषण हुआ। खूब भीड़ थी।

१६-८-३३

५ बजे प्रार्थना, गंगाबहन, सोफिया सोमजी, लक्ष्मण बजाज से बातें। मदनमोहन आज लाहौर गया। पूनम के साथ ब० ज० दूकान का आंकड़ा देखा। विचार-विनिमय हुआ।

आज नागपुर मेल से सफिया सोमजी बंबई गई। यह एक होनहार व पवित्र लड़की मालूम हुई। ठीक परिचय हुआ।

मैनाबहन शहाने व उसके नागपुर के मित्र श्री शास्त्री से उनकी नागपुर-योजना के संबंध में ठीक खुलासेवार चर्चा। मैं नागपुर में मदद नहीं कर सकता, यह समझाकर कहा।

आश्रम, प्रार्थना में शामिल।

१७-८-३३

श्री मैनाबहन (प्रेमिला) शहाने से बातचीत। उनको स्पष्टतौर से सब बातें समझा दीं। मैं क्यों नहीं कर सकता व नहीं करना चाहता वह भी साफ कह दिया। वह आज मेल से पूना गई।

नागपुर-केस के कागजात दो घंटे करीब पढ़ा। सिस्टर मेरी व मि० डंकन से परिचय, बातचीत।

तेजारामजी वगैरह सात जने पकड़े गए।

पुलिस आफिसर, चारों युरोपियन लोगों के पासपोर्ट तपासने के लिए आये।

शाम को आश्रम। प्रार्थना में शामिल।

हरिजन-कार्य करने की छूट न मिले तो बापू जेल में मरण-पर्यंत उपवास करेंगे, यह खबर आज पढ़ने में आई। आश्रम की ओर जल्दी चला गया।

१८-८-३३

आज सुबह ५ बजे सिस्टर मेरी बार, द्वारकानाथजी, मि० डंकन ग्रांडट्रंक से बैतूल की ओर गये।

नागपुर-केस के कागजात ७॥ से १० बजे तक पढ़े। बाई गुलाब व केशर आदि से थोड़ी बातें। कलकत्ता मेल से श्री सीतारामजी सेक्सरिया, भगवानदेवी, चि० पन्ना, विजया आये। सीतारामजी, भगवानदेवी व पन्ना से बातें।

आश्रम, प्रार्थना, अमलादेवी को समझाया।

१९-८-३३

प्रार्थना, पन्ना को ठीकतौर से समझाकर कहा। आशाजनक परिवर्तन। श्री हीरालालजी शास्त्री (जीवन कुटीर, बनस्थली वाले) निवाई से आये। श्री केशवदेवजी व फतेहचन्द बंबई से आये। सब साथ में भोजन बातचीत। डा० पटवर्धन अमरावती से व बैरिस्टर अभ्यंकर व सोनकर नागपुर से आये।

आश्रम में प्रार्थना। अमला वगैरा से मिले। उसके इलाज की व्यवस्था। डा० पटवर्धन से वातचीत। चि० घनश्याम की मां मिलने आई।

२०-८-३३

चि० उमा, पन्ना आदि से बातें।

श्री केशवदेवजी, लालजी, फत्तेचंद, रामेश्वरप्रसाद, चि० गंगाविशन, पूनमचंद आदि से वातें व निर्णय, करांची की दूकान के काम की व्यवस्था। श्री दाऊ व प्रहलाद को वहां काम सीखने भेजने का निश्चय। कलकत्ते की व्यवस्था। मदन भट्ट व गुलावचंद को वहां रवाना करने का निश्चय। गोला आदमी व उम्मेदवार भेजने का निश्चय, चि० सदाशिव, लक्ष्मण अत्रे व थारानी को।

वर्धा की वच्छराज फैक्ट्री व वच्छराज कंपनी के काम के वारे में विचार-विनिमय।

पू० विनोवाजी से पू० वापूजी के उपवास-संवंध में विचार-विनिमय। चि० रामेश्वर को उसके व्यवहार, स्वभाव, संयम, घर-संवंधी विचार व व चर्चा, समझाया।

रात को वालकों ने जलसा किया। सितार व गायन।

२१-८-३३

४॥। वजे प्रार्थना। पवनार ४। मील पैदल। वर्षा हुई। मोटर ली, पवनार नदी पर मंदिर में भजन-गायन। खूव वर्षा, वहां से सेलू जाकर आए। रामदेवजी, नाना का आश्रम देखकर आए। पवनार का 'वाटर फाल' देखकर वापस १२ के करीव। रास्ते में हीरालालजी शास्त्री व सीतारामजी सेवसरिया मिले।

काकासाहव, शार्दूलसिंह आदि के तथा अन्य पत्र पढ़े। भोजन दो वजे। श्री केशवदेवजी, लालजी, फत्तेचन्द, रामेश्वर आदि के साथ वच्छराज कंपनी, वच्छराज फैक्ट्री, शक्कर मिल आदि का खुलासा।

चि० रमा व लालजी आज आ गए। श्री मन्नालालजी व सुलतानसिंह के साथ चान्दोर हरनंदराय सूरजमल जीन की वातचीत।

२२-८-३३

५ वजे प्रार्थना। राधाकृष्ण, भगवानदेवी, सीतारामजी, पन्ना से वात, पन्ना के संबंध के वारे में।

नागपुर-केस के कागजात थोड़ी देर देखे। श्री केशवदेवजी, रामेश्वर, फत्तेहचन्द से वच्छराज फैक्ट्री, वच्छराज कंपनी का खुलासा मिला। वे मेल से बंबई गए। राजाराव व वियाणीजी आए।

रात को, पूज्य महात्माजी के उपवास के कारण जो परिस्थिति हुई उसके लिए, हरिजन मंडल की ओर से सभा हुई। सभापति वनना पड़ा। ठहराव, प्रार्थना।

२३-८-३३

सीतारामजी व हीरालालजी से वातें। चि० पन्ना से वातें। आश्रम में विमला वहन से वातें।

श्री पिस्तोदेवी व चि०रामेश्वरी देवी एम० ए० से वातें।

नागपुर-केस के कागजों की तीन फाइलें पूरी पढ़ीं।

वाइसराय को तार, वर्तमान पत्रों को तार, रात को सार्वजनिक मीटिंग वापू के उपवास के संबंध में।

आज शाम को ५॥ वजे दो तार पू० वापूजी को विना शर्त छोड़ देने व पर्णकुटी पर पहुंच जाने व उपवास छोड़ने की संतोष कारक खवर के मिले।

आश्रम में प्रार्थना, 'निर्वल के वलराम' व 'वैष्णव जन' गाया गया।

२४-८-३३

५ वजे प्रार्थना। पिस्तोदेवी व रामकिशोरी, पन्ना, सीतारामजी, भगवानदेवी से वातें। सीतारामजी, हीरालालजी आदि से बातें।

ऐक्सप्रेस से नागपुर। साथ में रामकिशोरी व पन्ना थी। नागपुर में स्टेशन के हरिजन मेहतरों के मुहल्ले में गणपति व विद्यालय देखा।

वैं० मोरोपंत अभ्यंकर के घर भोजन, प्रेम के साथ। डा० खरे, गोविन्दराव वगैरा थे।

राजाराम लायब्रेरी से गणपति के सामने स्वदेशी वाजार खोलते हुए व्याख्यान किया। हरिजन, खादी पर ठीकतौर से भाषण। वर्षा, रात को वर्धा वापस।

२५-८-३३

सीतारामजी सेक्सरिया, हीरालाल शास्त्री व वनारसीलाल वजाज (देवेंद्र) पिस्तोदेवी, रामकिशोरी गोयल ग्रांड-ट्रंक से गए।

नागपुर-केस के संबंध में जाजूजी से वातें।

नागपुर के वनजारी इंजीनियर (जलगांववाले) से वातचीत। ता० ५ से आवेंगे। मौसम में मासिक पगार व जीन में क्वार्टर, और कुछ नहीं।

वाई गुलाव, भगवानदेवी, केशर, डेडराजजी से वातें। पन्ना को समझाया।

२६-८-३३

भगवानदेवी, पन्ना से वातें। श्री नायडू व लक्ष्मीनारायणजी से वातें। नागपुर केस-स्टेटमेंट पढ़े।

वैरिस्टर अभ्यंकर, टीकेकर, पटवर्धन ने यहींपर भोजन किया।

नागपुर में इतवार को खद्दर भंडार खोलने का निश्चय किया।

पूज्य वापू के पत्र आए। उन्हें, अगर आ सकते हो तो, वर्धा आने का निमंत्रण भेजा। आश्रम में प्रार्थना, मिलना-जुलना।

२७-८-३३

मदनमोहन से लाहौर, आगरे का हाल जाना।

नागपुर-केस के काजगात देखे।

तुकाराम वगैरह (भिवापुरवालों) ने भोजन किया। इन्हें नालवाड़ी के पास गिरफ्तार कर लिया।

पत्र-व्यवहार। नागपुर-केस की जाजूजी, लूले आदि से चर्चा।

राम-मंदिर में हिंदू-धर्म और अस्पृश्यता पर व्याख्यान गणपती उत्सव के निमित्त दिया। दूसरे मंदिर व सार्वजनिक संस्था की चर्चा-विचार-विनिमय।

चि० शांता वनोसा से आई।

२८-८-३३

चि० शांता व कृष्णदास गांधी से वातें।
नागपुर केस के कागजात देखे करीव ४॥ घंटे तक। तुकाराम पटेल रोहणी मिलने आए। कन्या-आश्रम में गरवा वगैरा, वाद में आश्रम।

२९-८-३३

श्री भगवानदेवी व चि० शांता से वातें।
नागपुर-केस कागजात कोर्ट में १ से ४। वजे तक देखे। श्री गोले वकील ने क्रास एक्जामिनेशन ली।
आज चि० मदालसा का जन्मदिन था। उसका विनोद। मदालसा ने भी यहां भोजन किया।
श्री अभ्यंकरजी व उनके साथ तीन लड़कियां आईं। श्री धर्माधिकारी नागपुर से 'महात्मा गांधी' इस विषय पर राम-मंदिर में व्याख्यान देने आए। धर्माधिकारी से ठीक वातें। आश्रम।

३०-८-३३

चि० शांता से वातें। धर्माधिकारी से नागपुर विद्यालय वगैरा के वारे में वातें। स्टेशन गया, श्री जानकीप्रसादजी पोद्दार आये।
नागपुर-केस के कागजात देखे। चि० गंगाविशन की क्रास पढ़ी ४ घंटे। श्री जानकीप्रसादजी पोद्दार वंवई से कलकत्ते गए। उनसे पोद्दारों के काम के वारे में वात की। उन्हें क्यों मदद करना चाहिए यह समझाया। उन्होंने अपनी कठिनाई कही।
श्री गवई (हरिजन नेता) मिलने आए और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि ता० १२ नवम्वर के वाद, जव मैं दारू व विदेशी कपड़े की पिकेटिंग या लोगों को खली तौर से समझाने का काम करूंगा, तव वे भी मेरे साथ काम करके जेल जाने को तैयार हैं। माफी नहीं मांगेंगे।
आश्रम में प्रार्थना। चि० शांता से वातें।

३१-८-३३

पन्ना को खूव समझाया। श्री डेडराजजी को सांस की तकलीफ।

नागपुर-केस के कागजात पढ़े। वाद में कोर्ट में १२।। से ४ वजे तक। क्रास श्री गोले ने किया।

पू० जाजूजी से वातें, चि० केशव गांधी से वातें। चि० लक्ष्मी गांधी दिल्ली से ग्रांड-ट्रंक से आई।

वर्धा, १-९-३३

चि० पन्ना वगैरा से वातें।

नागपुर-केस। आज कोर्ट में १२।। से ६। वजे तक क्रास। गवाही श्री गोले ने ली। आखिर आज भी पूरी नहीं हुई। आज खूब थकावट मालूम देती थी, सिर में दर्द था।

आश्रम में प्रार्थना। वाद में श्री इन्दिराताई कुलकर्णी से, श्री नाना व चि० राधाकिसन के मतभेद के कारण गंभीर स्थिति खड़ी हुई, उसकी उनके साथ देरतक चर्चा, विचार-विनिमय।

२-९-३३

राधाकिसन, इंदिराताई कुलकर्णी से वातें। नाना व राधाकिशन की आपस की गैरसमझ के वारे में। इंदिराताई के प्रति श्रद्धा वढ़ी।

नागपुर-केस, थोड़ी देर घर, पर वाद में कोर्ट में १२ से ४ वजे तक। चि० हरिकिशन ने कुछ प्रश्न पूछे; वाद में श्री पांडे वकील ने आज प्राय: वादियों की ओर से। क्रास का काम खतम हुआ। ता० ५ को रिक्रास हो जावेगी। आज श्री महावीरप्रसादजी पोद्दार व श्री सीतारामजी सेक्सरिया आए। शाम को गवाई से वातें।

आज नाना व राधाकिशन वगैरा का खुलासा होकर सेलू से सौभाग्यवती इंदिराताई का समाधानकारक पत्र आ गया।

आज प्रथम वार वाई केशर ने अलग रसोई करने व रहने का निश्चय किया।

३-९-३३

राधाकिशन, प्रहलाद, केशर, गुलाववाई से, चि० प्रहलाद की सगाई चि० पन्ना के साथ करना उचित है क्या, इस पर चर्चा।

श्री हरिभाऊ व रामनंदन (मगन आश्रम वाले) आए।

नागपुर-केस का क्रास पढ़ा, करीव ४ घंटे। श्री जाजूजी से चर्चा।

श्री रामचंद्र नारायण मेहकरवाले, वंडू नाना व श्री दत्तात्रेय वलवंत दंडे, सव-जज, आर्वी, खंडेरा व सीताराम पावडे, डाक्टर, वर्धा से ठीक संतोपकारक वातचीत। आशा हुई कि संतोपकारक व्यवस्था हो जावेगी।

श्री गवई से वातें।

आश्रम में प्रार्थना, वाद में कन्याआश्रम की लड़कियों का गरवा ठीक हुआ।

श्री डेडराजजी को सांस का कष्ट था।

४-९-३३

सीतारामजी, महावीरजी, कन्हैयालालजी इंदौर वाले आदि से वातें।

चि० पन्ना का यहीं मेरी देखरेख में रहना निश्चय हुआ।

चि० डेडराजजी को रात को सांस की तकलीफ ज्यादा रही।

श्री तेजूवाई खेला, नागपुर से मिलने आई।

श्री रामचन्द्र नारायण मेहकरवाले का हुकुमनामा फैसला। हरिभाऊजी से वातें।

नागपुर-केस के कागजात पढ़े, नोट किए खुलासा के लिए। सिर भारी। शाम को मोटर लारी में पवनार। १४ मित्र साथ में, वहां नदी पर भोजन किया। वाद में नालवाड़ी विनोवा के साथ प्रार्थना सवने मिलकर की। आज श्री डेडराजजी को दम का खूव कष्ट था। डा० चौवे ने इंजेक्शन दिया। रात को निद्रा कम।

५-९-३३

श्री सीतारामजी, महावीरप्रसादजी, हरिभाऊजी, चि० पन्ना आदि से वातें।

नागपुर-केस। आज प्रथम वार श्री जाजूजी के साथ श्री लूले वकील के घर, केस के संवंध में, गए। श्री लूले वकील से रीक्रास संवंध में खुलासे की चर्चा। मेरी दृष्टि उन्हें कही, सत्य का खुलासा।

कोर्ट में १२। से ५।।। वजे तक आज मेरी गवाही पूरी हुई। मन को शांति मिली।

मित्र तथा मेहमानों से वातें, रात को श्री वावा राघवदासजी संवल से आए। सुवह मेल से चि० कमलनयन वंवई से आया था।

६-९-३३

सुवह हरिभाऊजी से वातें। आश्रम में अमलादेवी, नीलादेवी, विद्यादेवी, निर्मला आदि से वातें, खासकर नीला से।

विनोवा से वातें, चि० केशव गांधी का पींजण का प्रयोग देखा।

श्री हरिभाऊ, वावासाहव देशमुख, विसल, सीतारामजी, शांता रुइया लक्ष्मी आदि से वातें।

श्री भिड़े, शिवनारायणजी, लव्घड़ आदि आए।

कन्हैयालाल व उनकी पुत्री इंदौर गई। मेल लेट थी।

आज वहुत-से, करीव ३० पत्र लिखे।

श्री सीतारामजी, पन्ना, भगवानदेई से वातें। वाई केशर, गुलाव से वातें, सगाई के वारे में।

आज प्रहलाद, गुलाव, नर्मदा, उमा को समझाकर कहा—पन्ना की चर्चा न करने को।

७-९-३३

सीतारामजी, पन्ना, भगवानदेवी, महावीरप्रसादजी पोद्दार आदि से वातें। महावीरप्रसादजी संवल गए; सीतारामजी, भगवानदेवी, विजया कलकत्ते गए। डेडराजजी, गुलाववाई, राधाकिशन, चि० शांतावाई, वालकोवा, वंवई गए। मदनमोहन अमरावती चिकल्दा की व्यवस्था करने गया। मुरलीधरजी दूकान पर गया, चि० लक्ष्मी, पन्ना रामदासभाई के यहां, चि० शांता गोयनका कन्या-आश्रम में गई, श्री खेलाजी नागपुर गए। प्रेस में व दूकान पर मकान का काम देखा। जीन प्रेस का मैनेजर केशव गांधी को वनाया।

श्री गद्रेजी, वालूंजकर, मनोहरजी, द्वारकानाथजी से वातें। आश्रम में प्रार्थना। सवों ने मिलकर व्यवस्था की।

पन्ना की सगाई के लिए सव राजी; उत्साह दिखाया।

वापूजी का लंवा तार प्रोग्राम का आया।

वर्धा-चिकल्दा, ८-९-३३

वावा राघवदासजी से वातें।

जल्दी निपटकर ७ वजे की पैसेंजर से चिकल्दा (जिला—अमरावती) के लिए रवाना हुए। देर हो गई, साथ में हरिभाऊ उपाध्याय, कमलनयन, मदनमोहन, नानू। वडनेरा से मोटर। मदनमोहन आया। अमरावती में डा० पटवर्धन के यहां भोजन किया। वर्षा हुई। वहां से करीव १२॥ रवाना हुए। ३॥। वजे करीव चिकल्दा पहुंचे। चिकल्दा अमरावती से ६२ मील, परतवडे से ३० मील है। मोटर किराया १६ रु० दिया, जिसमें वडनेरा आना-जाना शामिल था। सामान भी ज्यादा था।

चिकल्दा में मोरोपंत जोशी के फ्रंट-व्यू में उतरे, तार आफिस, पोस्ट आफिस, वाजार देख आए। जगह आराम की व शांति की मालूम हुई।

वर्धा से पुलगांव तक श्री गद्रेजी व मनोहरजी से वातें, वाद में केदारमल वनोसा वाले से चांदोर तक।

चिकल्दा-अमरावती, ९-९-३३

प्रार्थना के वाद हरिभाऊजी के साथ घूमने गए करीव तीन मील, दृश्य सुंदर तथा घूमने की ठीक जगह।

११ वजे स्नान, भोजन, आराम, आज प्रायः हरिभाऊजी के सव प्रश्नों का खुलासा हुआ।

पत्र-व्यवहार। तार खंडवा भेजा। जीतमलजी के वास्ते। वर्षा आई, वरांडे में घूमे।

श्री नरसिंहदासजी की लिखी हुई पुस्तक 'पुकार' पढ़ना शुरू किया। थोड़ा आश्चर्य मालूम हुआ। पथिकजी की भूमिका में ज्यादा जहर मालूम दिया। रात को सोने के वाद मुझे उठाया और कहा कि कोई भयंकर सांस लेनेवाला प्राणी वगैरा है, अंदर सो जाओ। प्रायः सवों ने ही वहुत जोर का आग्रह किया—मदनमोहन, हरिभाऊजी, कमल, नानू। मैंने समझाया, परन्तु वे समझे नहीं। रात को निद्रा कम।

चिकल्दा, १०-९-३३

प्रार्थना के वाद 'लांग पाइंट' घूमने गए। करीव ४ मील से ज्यादा। हरिभाऊजी से वातें।

आज प्रथम वार जलेवी, दूध, मावा घूमकर आने के वाद सवोंने खाया। वाद में फिर वाजार की ओर घूमने गए—करीव ५ मील घूमे।

श्री जीतमलजी लूणिया अजमेर से आ पहुंचे, खण्डवा तार देने का फायदा हुआ। सस्ता साहित्य मंडल के वारे में श्री जीतमलजी से स्थिति समझ ली। उसके वारे में श्री घनश्यामदासजी को पत्र लिखने का निश्चय। अजमेर की हालत पर विचार-चर्चा।

रात को ८॥ से ५ तक खूव निद्रा आई, वाहर वरांडे में।

११-९-३३

प्रार्थना। श्री हरिभाऊजी व जीतमलजी लूणिया के साथ यहांका जूना किला देखने गए। सव मिलकर करीव ६ मील घूमना हुआ।

दूध-जलेवी। राजस्थान की पुकार पूरी की। हरिभाऊजी से मेरे विचार नोट करवा दिए। राजेन्द्रवावू को तार।

भोजन के वाद सस्ता साहित्य मंडल के प्रेस वगैरा के वारे में श्री जीतमलजी से वातचीत। हरिभाऊजी घूमने गए, करीव २॥ से ३ मील।

चिकल्दा का वर्णन सुना, चिकल्दा गाईड में से।

१२-९-३३

रातभर वर्षा। पू० वापूजी को तथा अन्य खानगी पत्र लिखे। पूज्य विनोवा का जन्मदिन-स्मरण।

आज सुवह वर्षा ज्यादा होने के कारण घूमना नहीं हुआ। पत्र वहुत-से लिखे व आज वहुत पत्र आए भी।

श्री हरिभाऊजी, जीतमल आज वंवई गए। नानू जाट का तार आया, उसकी स्त्री के वीमार होने का लिखा, जिससे आज ही उसे सीकर भेजा। चि० कमला ने रोटी वनाई। ठीक रोटी वनी। थोड़ा घूमकर वंगले देखकर आए।

१३-९-३३

६ बजे घूमने गए, करीब १।। घंटा घूमे, बाजार गए। गाय के दूध की व्यवस्था हुई। बकरी के दूध की अभी नहीं हुई। मिशन संस्था में गए।
पत्र-व्यवहार, आज करीब २५ चिट्ठियों से ज्यादा गईं।
पोस्ट आई। फ्री-प्रेस में खादी की अपील मेरे नाम से छपी, फोटो भी दिया। अपील सुंदर नहीं थी।
शाम को कमलनयन ने आलू की तवे की पूड़ी व श्रीखंड बनाया, वह खाया। करीब ३ मील देव के साथ घूमकर आया।

१४-९-३३

५ बजे प्रार्थना। रातभर वर्षा खूब जोर से होती रही, बरांडे की तीनों ओर पानी आता था, बिस्तर भी भीग गए, फिरभी रातभर बाहर ही सोते रहे। रातभर व दिनभर वर्षा की जोर की झड़ लगी रही। पत्र पढ़े-लिखे।
मदनमोहन व कमलनयन से बातें। रात को ८ बजे वर्षा के कारण अंदर सोना पड़ा।

१५-९-३३

५ बजे प्रार्थना, वर्षा की खूब झड़ी लगी रही। तीनों तरफ के बरांडे भीग गए। १।। इंच पानी हुआ।
माली मोतीराम (मत्ती माली) से बातें, यहां की हालत, बंगले वगैरा संबंध में।
एक बाघिन, जो ९ फीट से भी ज्यादा लंबी और खूब मोटी थी, उसका कल शाम को जबलपुर के फौजी अफसर ने शिकार किया था, उसे देखने कमल व मदनमोहन गए। आज फिर दूसरा बाघ कमिश्नर के बंगले के पास दिखाई दिया।
शाम को तार की लाइन भी बिगड़ी हुई थी। पोस्ट-लारी भी नहीं आई। सब व्यवस्था बंद। घूमने फादर के बंगले गए। उनसे बातचीत, वहां का दृश्य सुंदर मालूम हुआ।

१६-९-३३

५ वजे प्रार्थना। आज भी रातभर वर्षा की झड़ी लगी रही। सुवह का घूमना नहीं हुआ। तार, पोस्ट वंद। १० वजे करीव वर्षा खुली तव तार भी चालू हुआ।

आज १० से ११।। तक मिशनरियों के तीन वंगले देखे।

आज पूज्य वापू का तार मिला, चिकल्दा न आकर वर्धा आने के वारे में लिखा। पू० वापू को, वंवई दूकान को व चि० चन्द्रकांता को राजगढ़ तार भेजे।

चि० कमल व मदनमोहन किले में वाघ का हाका देखने गए, शाम को थोड़ी चिंता हुई।

सर मोरोपंत फोर्ट, ९९ फीट की प्रदक्षिणा की।

१७-९-३३

५ वजे प्रार्थना। आज पू० वापूजी का जन्म-दिन मनाया गया, हरिजनों के यहां ७ घर हैं वहां गए। आज शाम को सभा की व्यवस्था।

वर्षा शुरू हुई। आज कोहरा वहुत ज्यादा था।

चर्खा, पत्र लिखे।

आज एलिचपुर (परतवाड़े) से कई मित्र—करीव १५ जने, हरवंसजी, रामनाथ, मोतीलाल वगैरा मिलने आए। सामाजिक-सुधार आदि विषय पर वातचीत।

पू० वापूजी की जयंती व हरिजन-दिन मनाया गया। हरिजन व अन्य वालकों को व आए हुए मेहमानों को जलेवी व मूंगफली वांटी।

वर्षा के कारण सभा नहीं हो सकी।

१८-९-३३

५ वजे प्रार्थना, चिकल्दा की पैदा हुई व तैयार की हुई काफी चिकल्दा में पी। जलेवी, भुजिए, पकौड़ी, मकई के भुट्टे, पूड़ी, साग का कलेवा।

वापू के वारे में प्रेस के जरिए अपील तैयार करवाई व भिजवाई।

दो वजे रवाना। वड़ी मोटर आई। डाक्टर, पोस्ट मास्टर, नायव

तहसीलदार आदि से मुलाकात। एलिचपुर ४ वजे पहुंचे। श्री चन्दूलालजी के यहां पान-सुपारी। अमरावती ६ वजे पहुंचे। डा० पटवर्धन के यहां उतरे। भोजन के बाद वीर वामनराव जोशी से मिले। बाद में सर मोरोपंत जोशी व उनके पुत्र एकनाथ जोशी से मिले। पन्नालालजी, लढ़ाजी वगैरा मित्र मिलने आए। १०।। वजे बडनेरा आकर सोया।

वर्धा, १९-९-३३

सुबह पांच बजे वर्धा पहुंचे। घर पैदल, वहां चि० राधाकिशन, जानकीदेवी आदि से मिलकर फिर पैदल स्टेशन। चि० लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला व गजानंद बिड़ला, कलकत्ते गए, उनसे बातचीत।

आश्रम जाकर श्री नीलादेवी को समझाया। सुबह तो उन्होंने रहने का निश्चय कर लिया था, परंतु शाम को फिर पागलपन सवार हुआ, फिर समझानेका प्रयत्न किया। आखर वह बंबई चली गई।

आश्रम में द्वारकानाथजी, लक्ष्मीबाई, ज्ञान, पन्ना, लक्ष्मी आदि से बातचीत।

२०-९-३३

चि० राधाकृष्ण से बातचीत। पत्र-व्यवहार। पू० जाजूजी से बातें। चि० शांता, आनंदी, बनजारी मास्तर की लड़कियां आई।

आश्रम जाकर पूज्य बापू के लिए तैयारी, व्यवस्था।

२१-९-३३

५ बजे प्रार्थना। श्री सी० एफ० एण्ड्रयूज आज बंबई से यहां आए। स्टेशन से उन्हें घर ले गए। पेट भरकर बातचीत हुई। बहुत समय बाद मिले, उन्हें आश्रम दिखाया।

श्री एंड्रयूज का आज टाउनहाल में मेरे सभापतित्व में भाषण हुआ। खूब भीड़ थी। पू० महात्मा गांधी व उनका परिचय, आदि के बाद में सुंदर भाषण हुआ। रात भी उनसे बातचीत हुई।

शाम को प्रार्थना में उन्होंने भजन गाया।

२२-९-३३

५।। बजे प्रार्थना। श्री एंड्रयूज आज नागपुर मेल से यहां से उड़ीसा बाढ़ के

लिए कटक गए। खूब वर्षा होती रही, मेल लेट थी। श्री धर्माधिकारी व दातार भी गए।

आश्रम में द्वारकानाथजी आदि से बातें, कन्या-आश्रम तथा महिला-आश्रम संबंध में।

श्री मथुराभाई का तार आया। पू० बापूजी आज रवाना होकर ११ जनों के साथ कल यहां आवेंगे। अमरावती तार भेजा। व्यवस्था।

२३-९-३३

५ बजे प्रार्थना। ५ बजे मेल से पू० बापू (महात्माजी), मीरा बहन, नागिनी-देवी, प्रभावती, चंद्रशंकर, आनंदी, नैयर, दो लड़की और चि० गोपी, चम्पा बहन, कमला, सुशीला वगैरा आए। आश्रम में पू० बापू को ठहराया। प्रोग्राम निश्चित किया, व्यवस्था।

चि० गोपी बिड़ला से बात कर संतोष हुआ।

दर्शकों की भीड़, व्यवस्था। श्री डंकन व मेरी बहन से बातें, उन्हें खादी भंडार से असंतोष।

शाम की प्रार्थना सभा में भीड़ बहुत हुई।

२४-९-३३

५ बजे पू० बापू के पास प्रार्थना। ठीक बातें हुईं। खासकर साबरमती-आश्रम की जमीन के बारे में। हरिजन बोर्ड या स्थानिक कमेटी को देना? मैंने आखिर हरिजन बोर्ड को देना पसंद किया। घनश्यामदासजी बिड़ला को पत्र लिखा। कृष्णा नेहरू व हाथीभाई के पुत्र (कस्तूरभाई का भानजा) के सगाई संबंध की चर्चा। सुंदरलालजी, गुलाबदेवी के पत्र पर विचार-विनिमय।

आज हरिजन-दिन था। प्रार्थना के समय बहुत आदमी हो गए। प्रार्थना नीचे हुई, खुले में लोग बैठे।

आज रात को गांधी-चौक में सभा हुई। श्री करन्दीकर, डंकन, बालुंजकर, मालतीबाई, बाजीराव मास्टर, बाबा राघवदासजी के सुंदर भाषण हुए। सभा बहुत भारी थी। सभापति बनना पड़ा।

२५-९-३३

५ वजे प्रार्थना। लोगों की हालत देखी। उनकी बोर्डिंग के लिए स्थान देखा।

पू० वापू से थोड़ी वातें। श्री दिनकर से वातें। वीमारों से मिला।

पत्र-व्यवहार, डा० खरे, सोनक नागपुर से आए। वापू का ब्लड प्रेशर लिया, छाती, नाड़ी तपासी, तथा उन्होंने ४-६ सप्ताह आराम लेने को कहा। श्री मेथ्यु से वातचीत, उनकी हालत का सार पू० वापू से कहा। डंकन-मेरी की योजना कही। सिस्टर मेरी वार व आनंदी से मिलकर घर।

२६-९-३३

चि० पन्ना, नर्मदा से वातें करते हुए आश्रम। पू० वापू स्त्रियों की प्रार्थना में वैठे थे। समझा रहे थे। वाद में पू० वापू से चि० गोपी विड़ला के वारे में वात हुई। उनकी और मेरी एक ही राय हुई।

चि० कुमारी सोफिया सोमजी वंवई से आई। श्री आडनेकर, उनकी पत्नी, उनके दो मित्र, वावासाहव की पत्नी वगैरा आए। श्री किदवई व सादिकअली आए।

आज शाम की प्रार्थना वुनाईशाला के पास शुरू की।

श्री किदवई से वातें। पत्र पढ़े। सिस्टर मेरी को ज्वर, डंकन से वातें।

२७-९-३३

श्री मोरसीवालों से व उनके मित्रों से वातें। चि० सज्जनदेवी से वातें, श्री किदवई से वातचीत। श्री ठक्करवापा आए।

सिस्टर मेरी की डाक्टरों से तपास करवाई। श्री दिनकर पंड्या को चि० रामनिवास के ऊपर पत्र लिख दिया। सिस्टर मेरी को अस्पताल में ट्रांसफर किया। पू० वापू से वातें।

श्री पिस्तोदेवी वगैरा आए, १२ जने करीव।

२८-९-३३

सुवह पू० वापू—स्त्रियों की प्रार्थना। आश्रम में झंडा-वंदन हुआ। श्री

ठक्करबापा आए। मंदिर के पीछे के मकान में हिंदी पुस्तकालय खुला। श्री किदवई, बाबा राघवदासजी वगैरा मौजूद थे।
सिस्टर मेरी को अस्पताल में देखा। श्री किदवई व पू० बापूजी से बातें। आज दशहरा होने के कारण वर्धा-वासियों ने शाम की प्रार्थना के बाद सोना (शमी के पत्र) दिया, प्रणाम किया। अतिथियों से बातें।

२९-९-३३

आश्रम गया। स्त्रियों की प्रार्थना में।
आज श्री पिस्तोदेवी, रामेश्वरी वगैरा से बातें। पू० बापू से व ठक्कर बापा से बातें।
पू० बापू का वजन १०१ हुआ। ब्लडप्रेशर आज ठीक सुधरा। डा० खरे ने तपासा।

३०-९-३३

श्रीमती पिस्तोदेवी, रामेश्वरी, लड़कियां व उनके पिता आज झांसी गए। पू० बापू से थोड़ी बातें। ठक्करबापा से आश्रम व हरिजन संबंध में ठीक बातें। सोहागपुर से सय्यद वकील आए।

१-१०-३३

रविशंकरजी शुक्ल (रायपुरवालों) से बातचीत। ठक्करबापा आज दिल्ली गए। सय्यद वकील सोहागपुर गए।
पू० बापू का आज से मौन शुरू हुआ।
घनश्यामदासजी को पत्र, आश्रम हरिजन-कार्य के लिए हरिजन बोर्ड को देने के बारे में लिखा।
पू० बा०, मीरा बहन, सोफिया सोमजी, जानकीदेवी नागपुर गए। खादी भंडार खोलने को।

२-१०-३३

चंद्रकांता, पन्ना आदि से बातें। बाई केशर, राधाकिशन, प्रह्लाद आदि से सगाई का विचार-विनिमय।
अक्षयचन्दजी की पुत्रियों से बातचीत। लक्ष्मी-देवदास से बातें।

पत्र-व्यवहार। पू० वापू से जेठालालभाई (अनंतपुर) व रवीशंकरभाई की मुलाकात हुई।
दिल्ली से घनश्यामदास विड़ला की स्वीकृति का तार सत्याग्रह आश्रम, हरिजन कालोनी के संबंध का आया।
आज सभा हुई। रविशंकर शुक्ल, लेले, डंकन वगैरा बोले।

३-१०-३३

वावा राघवदासजी व ज्ञान से वातें। पू० वापू से कन्या-आश्रम के वारे में अपने विचार कहे। पू० वापू ने १२ नवम्बर के वदले १२ जनवरी तक वाहर रहने का कहा। वाद में परिस्थिति देखकर विचार किया जा सकेगा।
श्री रामनारायणजी चौवरी, सुमनजी आदि आये।

४-१०-३३

पूज्य वापू। काकासाहव, जापानी वृद्ध साधु, गुलजारीलाल नंदा वगैरा आये। विड़लों के यहां से सुशीला, चन्द्रा कलकत्ते गए, श्री रविशंकर शुक्ल रायपुर गए।
पूज्य वापू से मुलाकात—लक्ष्मीनारायण साहू, गुलजारीलाल नंदा, लेले सादिकअली, जापानी माधु आदि।

५-१०-३३

श्री रामनारायणजी, पन्ना, सीतारामजी के साथ आश्रम में प्रार्थना।
सिस्टर मेरी को अस्पताल से वंगले पर लाए। कोठरी में रखा।
आज प्रहलाद की सगाई चि० पन्ना के साथ पू० वापू की उपस्थिति व आशीर्वाद के साथ हुई। सवों के संतोष के साथ।
वापू से मुलाकात, श्री जाजूजी, श्रीकृष्णदास, गुलजारीलाल नंदा, प्रताप सेठ आदि की हुई।
देवास के बड़े राजा से स्टेशन पर मिला। श्री देव शर्माजी व सत्यदेव आए।

६-१०-३३

सादिकअली व श्री सीतारामजी से वातें। कन्या आश्रम में प्रार्थना।
पू० वापू से कन्या-आश्रम, महिला-आश्रम आदि के वारे में वातें।

चि० मदनलाल पित्ती बंबई से आया।
प्रताप सेठ (अमलनेरवालों) से खानगी बातें ठीक हुई।
पू० बापू से आज श्री देव शर्माजी की मुलाकात हुई।

७-१०-३३

काकासाहब आदि को खादी भंडार व मंदिर दिखलाया।
अमला को खूब समझाया व वापस पू० बापू के सुपुर्द किया।

८-१०-३३

पूज्य बापू के पास गये।

९-१०-३३

पू० बापू का मौन। मिलकर आया।
बंबई से केशवदेवजी का तार आया। जमनादास नरसी मुझे बंबई बुलाते हैं। सो जाने का निश्चय, सब व्यवस्था करके पू० बापू की परवानगी लेकर श्री जाजूजी। रास्ते में मदनलाल पित्ती से व जाजूजी से बातचीत की। गंगाविशन, नर्मदा के साथ खाना। थर्ड क्लास का रिटर्न टिकट लिया। रात में निद्रा कम।

बंबई, १०-१०-३३

सुबह दादर पर उतरकर बिड़ला, हाउस गए। रास्ते में श्री केशवदेवजी ने जमनादास नरसी, जीवनदास वल्लभदास का हाल कहा।
दिन में जमनादास नरसी व जीवनदास वल्लभदास व रामदास खेमजी के मामले में सब मिलकर ८ घंटे काम किया। काफी बोझ पड़ा। जमनादास नरसी को देनदारों की सभा बुलानी पड़ी। बोलना भी पड़ा, ठीक असर हुआ। मथुरादास विशनजी से ठीक बातें।
डा० मोदी को कान दिखाया, उसने संतोष प्रकट किया। मथुरादास के घर शाम का भोजन। रात को १२ बजे सोए।

११-१०-३३

घूमना, चि० पद्मा से बातें। केशवदेवजी, भगवानदास, हीरालाल कारीवाले से बातें। मणीबहन पटेल व नर्मदा को डाक्टर को उनके बंगले पर दिखाया।

सोफिया सोमजी से बहुत-सी बातें कीं।
जमनादास नरसी का मामला। मथुरादास वगैरा से बातचीत। रामदास खेमजी, त्रिकमदास सालीसिटर आदि से बातें। जमनादास नरसी की मीटिंग में गए। श्री गोविंदलाल से मिले।

वर्धा, १२-१०-३३

सुबह नागपुर मेल से वर्धा पहुंचे। श्री जाजूजी, शांती, सुशीला, श्रीनिवास, राधाकृष्ण रुइया (बाबू), नर्मदा थर्ड क्लास में।
कुमारी सोफिया से बातें। तबियत थोड़ी नरम। बीमारों को देखा। पूज्य बापू से बातें। डा० हार्डिकर की मुलाकात १ घंटा।
डा० हार्डिकर व सोफिया सोमजी आज बंबई गए।

१३-१०-३३

पू० बापू से बातें। श्री देव शर्माजी की व्यवस्था आश्रम में की। पू० बापूजी की ट्रीटमेंट शुरू हुई। पत्र-व्यवहार।
भ्रमण करनेवाला युरोपियन भोजन को आया।
पू० महात्माजी से मुलाकात—कमलादेवी चट्टोपाध्याय, कालेश्वरराव, वी० पी० नायडू (इलोर वालों) से।
जाहिर सभा—जानकीदेवी बजाज सभापति, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, कालेश्वरराव, वी० पी० नायडू का भाषण।
पू० बापूजी से जेल-संबंध में चर्चा।

१४-१०-३३

सुबह प्रार्थना में कमलादेवी ने भजन गया। सिस्टर मेरी से बातें। आनंदी, गुलाबचंद, प्रभुदास की व्यवस्था। देव शर्मा को बुखार। बापू के पास आश्रम में भेजना पड़ा।
बापू से मन की स्थिति व अगर जेल नहीं ही जाना हो तो वर्किंग कमेटी का इस्तीफा देना ही उचित, मनोरंजक चर्चा। मित्रों से बातें।

१५-१०-३३

श्री सीतारामजी, भगवानदेवी, कुंती, विजया कलकत्ते गए।

वगीचे के मकान की व्यवस्था गोविंदलालजी के लिए की।
दूकान पर जाजूजी से मनस्थिति की चर्चा व विरदीचंदजी पोद्दार का मामला। पूज्य वापूजी का मौन।

१६-१०-३३

वैरिस्टर वारलिंगे से वातचीत। पन्ना से वातें।
पूज्य वापू ने मेरे 'इस्तीफे' का जो मसविदा तैयार किया उसपर मैंने काका साहव, जाजूजी किशोरीलालभाई आदि से चर्चा की व अपनी मनस्थिति पूज्य वापूजी, को लिखकर दी।
सुमनजी से थोड़ी साफ व कड़ी वातें। पूज्य मां, मणी, भैंरू सीकर से आज आए।

१७-१०-३३

आज ग्रांड ट्रंक से प्रभुदास, अंवादेवी, डालचन्दजी हीरालालजी, टीकारामजी वगैरा आए। अंवादेवी व प्रभुदास की व्यवस्था। प्रभुदास वीमार, चिंता।

१८-१०-३३

जल्दी तैयार होकर आश्रम। आज चि० प्रभुदास गांधी व अंवादेवी का विवाह पूज्य वापू की उपस्थिति में मारवाड़ी वोर्डिंग में हुआ। पू० वापू का उपदेश वहुत सुंदर था।
आज घर पर विवाह-पार्टी, भोजन।
गांधी सेवा संघ के वारे में विचार-विनिमय वहुत देर तक होता रहा। मसविदा वना।

१९-१०-३३

श्री अब्दुल्ला ब्रेलवी वंवई से यहां आए।
गांधी सेवा संघ की सदस्यता से मेरे इस्तीफे का फैसला पूज्य वापू के सामने हुआ। सभापति हाल तो मुझे ही रहना पड़ेगा ऐसा निश्चय हुआ।
गंगाधरराव देशपांडे व ब्रेलवी की पूज्य वापू से वातचीत।
श्री किशोरीलालभाई, गोमतीवहन, आनंदी, शारदा, निर्मला आज गए। वर्षा खूव थी।

नागपुर से एक पादरी पूज्य बापू से मिलने आए।

२०-१०-३३

ब्रेलवी कलकत्ता गए व गंगाधरराबजी देशपांडे बेलगांव गए। चि० प्रह्लाद करांची गया।

गंगाधररावजी से कर्नाटक की हालत व डा० हार्डिकर के बारे में ठीक बातें हुईं। पूज्य बापू से कई बातें हुईं।

आज बारिश व हवा होने के कारण दिन ठंडा था।

जानकीदेवी का भाषण सुना। हिंदू महिला मंडल की कार्य-कारिणी सभा का काम हुआ।

२१-१०-३३

दीपचन्दजी व हुकमीचंदजी स्त्रियों सहित भुसावल से आए। श्री ब्रजलालजी, दुर्गाताई, विजया भाभी अकोला से आए। श्री रविशंकरजी शुक्ल रायपुर से आए।

पूज्य बापू का प्रोग्राम बनाना शुरू किया।

पू० बापू का बरार व हिंदी सी० पी० का भ्रमण निश्चित किया।

चि० रामेश्वर नेवटिया व श्रीकृष्ण गोला गए। राधाकृष्ण रुइया बंबई गया।

२२-१०-३३

रविशंकर शुक्ल रायपुरवाले गए। श्री ब्योहार राजेंद्रसिंह व नरसिंहदास अग्रवाल गए। पू० बापू का भ्रमण का कार्य निश्चित हुआ। श्री दुर्गाताई जोशी, पार्वती पटवर्धन, विजया भाभी मश्रूवाला गईं।

आन्ध्र के मित्र, तीन विद्यार्थी, दो बहन, सरस्वती व हेमलतादेवी, डा० पट्टाभिसीतारामैया, हरिभाऊजी उपाध्याय, जीतमलजी लूणिया आये। कन्या आश्रम, महिला आश्रम के बारे में विचार-विनिमय बहुत देर तक होता रहा। सस्ता साहित्य मंडल का कार्य।

२३-१०-३३

चतुर्भुजभाई (गोंदियावाले) व जोगलेकर आए। बंबई से गुलजारीलाल

नंदा, खण्डूभाई, गोवर्धनभाई (अहमदावाद वाले), व नरसिंहदासजी अग्रवाल आए। चतुर्भुजभाई से वातें।

डा० शर्मा (दिल्लीवाले) को वात करने के लिए ठीक समय दिया।

पूज्य वापू से मुलाकात, डा० शर्मा, चतुर्भुजभाई, जोगलेकर, पट्टाभिसीतारामैया, गोवर्धनभाई व गुलजारीलाल नंदा, खंडूभाई अहमदावाद गये।

श्री विट्ठलभाई पटेल का स्वर्गवास जिनेवा में होने की खवर पढ़कर दुःख हुआ।

२४-१०-३३

नरसिंहदासजी, हरिभाऊजी से वातें।

पू० वापूजी से कन्या-आश्रम की दिल खोलकर विचार व चर्चा।

नागपुर से श्री मुरलीवर पुराणीक पूनमचंदजी के वारे में सलाह करने आए।

विचार व चिंता।

श्री जानकीदेवी को उमा के वारे में समझाया।

डा० खरे ने पू० वापू को तपासा, वजन १०७ हुआ, व्लडप्रेशर ९५-१५५, (६०) का फर्क।

विट्ठलभाई के शोक में सभा हुई, काकासाहव व माखनलालजी वोले।

२५-१०-३३

प्रार्थना के वाद हरिभाऊजी व गुलजारीलाल आदि से वातें। पू० वापू से कन्या-आश्रम, महिलाआश्रम की चर्चा।

मृदुला अंवालाल, मणीवहन पटेल वगैरा आए। नरसिंहदासजी से वातें। उनको ठीकतौर से समझाया।

पू० वापूजी से मुलाकात मृदुला, मणीवहन, हरिभाऊ, गुलजारीलाल गोवर्धनदास, खण्डूभाई वगैरा ने की।

२६-१०-३३.

प्रार्थना। जानकीदेवी, केशर, शांता, पन्ना वगैरा कलकत्ते महिला कान्फ्रेंस में गए। सिस्टर मेरी की वहन व शंकर आए। पत्र-व्यवहार।

हरिभाऊजी व नरसिंगदासजी से ठीक वातें।

पू० वापूजी से मुलाकात—मृदुला, मणी, शंकर, माखनलालजी आदि की।

२७-१०-३३

आश्रम में घूमना। पू० वापू से शंकर के वारे में वातचीत।

नारायणदास राठी का लड़का वावू व मूलचन्द से थोड़ी वातें।

आनंद स्वामी और शंकर कालेलकर के साथ वातचीत।

अमेरिकन मिशनरी, जो हाल में वाशीम में रहते हैं, वापू के दर्शन को आए। पत्रों का खुलासा। गोपीवल्लभजी से वातें।

मृदुला, मणी, काका वंवई गए। उनसे वातचीत। चाय-पानी।

पवनार नदी पर थोड़ा आराम। आनंद स्वामी वगैरा विनोवा की प्रार्थना में शामिल हुए।

२८-१०-३३

सादिकअली के साथ वातचीत। आश्रम में वापू के साथ प्रार्थना।

पत्र-व्यवहार। आराम, आज भीड़ कम थी।

पू० वापू से वातें। काका, शंकर कालेलकर, स्वामी श्रीलाल नाथ से वातचीत। सादिकअली आये। लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया आये।

२९-१०-३३

पू० वापूजी से सावरमती आश्रम के आंकड़े का फैसला किया।

द्वारकानाथजी व धोत्रे से कन्या आश्रम के वजट की चर्चा। श्री देव शर्माजी से वातचीत।

श्री लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया से वातें, खासकर डेरी व आश्रम के वारे में।

दूकान का कार्य २ घंटे किया। हिंगनघाट प्रोग्राम। आराम, पत्र-व्यवहार।

३०-१०-३३

स्वामी, धोत्रे, चंद्रशंकर से वातें।

सिस्टर मेरी की वहन कलकत्ता गई।

श्री गोशी वहन कैप्टन, जमनावहन, रमावहन, वेंकटलाल पित्ती आए।

३१-१०-३३

नरीमान व पू० वापू की मुलाकात——११॥ से १२॥, ३ वजे से ३॥ तक।

१-११-३३

वापू के पास।

खरांगणा गोडे ने पांच कुवें खोले। मीरावहन साथ थी। मोटर, रेंगी, पैदल से सुंदर प्रवास। अनसूया (गोडे की लड़की) से वातचीत, परिचय।

२-११-३३

एंड्रूयूज व पू० वापू आज नालवाड़ी पैदल गए-आए।

वापू-से वातें, विनोवा की ४-५, एंड्रूयूज व भा० परमानंद ३ से ३॥ वजे तक।

काकासाहव ने सात दिन का उपवास पू० वापूजी की हाजिरी में आज पूरा किया।

३-११-३३

शर्मा सेवादल से वातें।

पू० वापूजी से विनोवा की वातें, सावरमती आश्रम हिसाव।

पू० वापू की मुलाकात——७-२० से ८ वजे विनोवा, सिस्टर मेरी ११॥ से १२ तक, गोशीवहन व जमनावहन १२-१, जीवनदासभाई कलकत्ते वाले ३-३॥, जमनालाल ४-५, शर्मा सेवादल ५-६। वाद में नवजीवन वाले स्वामी आनन्द, जीवनदासभाई, मोहनलाल, रावजी, गोकुलभाई, श्री किशोरीलालभाई, काकासाहव आदि मिले।

आवक——मोहनलाल, श्रीलाल, रावजीभाई, गोकुलभाई, चन्दनवहन, रेवरण्ड लेस वगैरह आये।

भाग्यवती, माणक, गोशीवहन वगैरा गये।

५-११-३३

महिला आश्रम की सभा हुई।

देवली मीमन वुवा के मंदिर के लिए गए-आए। रात को ११॥ वजे वापस।

६-११-३३

वर्धा में सार्वजनिक सभा हुई। गांधी चौक में साम्वमूर्ति, गंगाधरराव

देशपांडे, दुर्गाताई वगैरा बोले।

७-११-३३

जल्दी तैयारी की।

पू० बापूजी को स्त्रियों की प्रार्थना के बाद ७-१५ पहले राम मंदिर, बाद में लक्ष्मीनारायण मंदिर के दर्शन करवाकर सेलू ८ बजे पहुंचे। नाना के आश्रम में। बाद में पू० बापूजी ने रामदेवजी का लक्ष्मीनारायण मंदिर खोला। वहां का वातावरण बहुत ही सुंदर था। बाद में सभा हुई। ठीक व्यवस्था थी। वर्धा १० बजे पहुंचे। केशव जीन में ले गया। सेलू-यात्रा सफल हुई। शाम को वर्धा में आम-सभा, ६-६॥—भीड़ ज्यादा थी। आवाज और मोटर की गड़बड़ रही।

८-११-३३

सुबह जल्दी तैयार होकर पू० बापू को नागपुर भेजने की तैयारी। नागपुर से डा० खरे, टीकेकर चार मोटर लेकर आए। जबलपुर से ब्योहार राजेंद्रसिंह एक मोटर लेकर आए। पू० बापूजी को सुबह ६-१५ को रवाना किया।

अमेरिकन प्रोफेसर व विनोबा के ठीक प्रश्नोत्तर हुए।

महिला मंडल की साधारण व कार्य-कारिणी सभा का काम हुआ।

काकासाहब, किशोरीलालभाई, गोमतीबहन, चिमनलाल, पन्नालाल वगैरा गए। गंगादेवी ने अपना कुण्डोरा का हाल कहा।

९-११-३३

सरस्वतीबाई (दिल्लीवाली) से बातें।

कन्या-आश्रम की सभा हुई। विनोबा प्रमुख, मैं उपप्रमुख, द्वारकानाथ मंत्री, थत्ते, सत्यदेवजी, लक्ष्मीबाई, चन्द्रकांता मेंबर। इमारतों के लिए जमीन देखी।

पत्र-व्यवहार, नालवाड़ी गंगाधररावजी के साथ गए। वर्णाश्रम धर्म की सभा हुई। देवकाचार्य ठीक बोले, ऐसा सुना। गंगाधररावजी देशपांडे से ठीक बातें।

सुगनीदेवी सुरजमल रुइया से पेट भरकर वातें।

१०-११-३३

राधाकिशन व सरस्वतीवाई से वातें।

कन्या-आश्रम का काम हुआ।

३ वजे से ४ वजे तक पू० विनोवाजी के साथ श्री गंगाधररावजी व स्वामी आनंद की गीता पर सुंदर चर्चा हुई।

११-११-३३

नागपुर पैसेंजर से पू० वापूजी गोंदिया से आए। उनकी वर्धा के रिफ्रेशमेंट-रूम में हजामत, पायखाने जाने की व भोजन की व्यवस्था। वाद में देव वकील की गाड़ी से देवली गए। रास्ता खराव था।

वहां सभा ठीक थी। लोगों का उत्साह भी था, परंतु कुछ सनातनी स्वय-सेवकों ने धूम मचाना, धरना देना आदि की गड़वड़ की। पंडित भी थे। आखिर सभा ठीक तौर से हुई। दो ट्रस्टियों की प्रार्थना से वापूजी ने मंदिर नहीं खोला। ११ वजे वापस वर्धा पहुंचे।

१२-११-३३

डा० अंसारी हैदरावाद से आए। स्टेशन गये। आविदअली वंबई से आया। डा० अंसारी ने पू० वापू की तवियत सव प्रकार से तपासी और अपना पूरा संतोष जाहिर किया। याने इन दस वर्षों में उन्होंने पू० वापू का ऐसा स्वास्थ्य नहीं देखा। उनके साथ भोजन। डा० अंसारी रात की गाड़ी से भोपाल गए। वर्धा के मंदिर खुलने के वारे में मेरी अध्यक्षता में महत्व की जाहिर सभा हुई। ८-२० से १२-२० तक चार घंटे। वनारस के स्वयं-सेवक तथा कुछ लोगों ने काफी गड़वड़ मचाने का प्रयत्न किया। पत्थर भी फेंके। आखिर सभा का परिणाम संतोषजनक आया।

वर्धा-हिंगनघाट, १३-११-३३

गंगाधररावजी देशपांडे सुवह गए। स्टेशन पहुंचाया। कुली न मिला। सामान स्वामी आनंद ने व मैंने मिलकर उठाया; शुरू में थोड़ा संकोच व आखिर में आनंद हुआ।

शांति, सुगनीदेवी, बद्रीदासजी से बातचीत की। उनकी हालत समझी व उन्हें समझाने के लिए दूसरा समय मुकर्रर किया।

पू० बापू का मौन खुला। हिंगनघाट की तैयारी।

हिंगनघाट के लिए बराबर दो बजे मोटर से रवाना हुए। हिंगनघाट वालों ने खूब उत्साह के साथ व तैयारी के साथ स्वागत किया। जनता में खूब प्रेम था। पू० बापू को चान्दा रवाना कर वापस वर्धा।

पू० बापू व स्वामी आनंद आज मेल से गए।

वर्धा, १४-११-३३

आबिदअली से व बीडकर से बातचीत।

चि० शान्ता, श्री सुगनीबाई, बद्रीदासजी, देवकरणदास को भली प्रकार समझाया व नोट करवा दिया। ये लोग आज मेल से बम्बई गए।

१५-११-३३

राधाकृष्ण से वरोरा व वन का पू० बापूजी के भ्रमण का हाल सुना। श्री तिवारी व धोत्रे से बातें, मैंने खुलासा समझा।

आज नालवाड़ी में महत्व का विचार, निर्णय विनोबा की उपस्थिति में व कार्यकर्त्ताओं के सामने हुआ। श्री जाजूजी, जानकीदेवी भी हाजिर थीं। नई जिम्मेवारी मालूम हुई।

चि० पन्ना का स्वास्थ्य खराब होने के कारण उसे घर लाए। मदन-मोहन चिकल्दा का इन्तजाम करने मेल से अमरावती गया।

१६-११-३३

आबिदअली बम्बई गया। उसके साथ चि० रामकृष्ण को भेजा। महिला आश्रम की रुक्मणीबाई व तिवारी भी गए। आज प्रायः बहुत से मेहमान चले गए। दो-तीन रहे। चिकल्दा जाने की तैयारी।

कन्या-आश्रम, आश्रम, नालवाड़ी आदि का कार्य व बजट की चर्चा।

वर्धा-चिकल्दा, १७-११-३३

४॥ बजे निवृत्त होकर तैयारी की। धोत्रे, बीडकर, सुरेन्द्रजी से बातें। वर्धा से चिकल्दा रूपराम की मोटर-बस से ७ बजे के बाद रवाना हुए।

जानकीदेवी, कमला, सुशीला, नर्मदा व नौकर लोग। वर्धा से आर्वी ३५ मील, आर्वी से अमरावती ४०, अमरावती से एलिचपुर ३२, एलिचपुर से चिकल्दा ३०, सब मिलाकर १३७ मील। रास्ते में एक जगह बेर खाए और एक जगह नाश्ता किया। दो जगह मोटर से नीचे उतरे। चिकल्दा ४ बजे पहुंचे। सर मोरोपंत के बंगले में मदनमोहन ने बंदोबस्त कर रखा था। सब मिलकर ९ घण्टे लगे। जिसमें दो घंटे रास्ते में आराम के बीते।

रात को निद्रा खूब आई। दिमाग को शांति मिली।

चिकल्दा, १९-११-३३

जल्दी उठकर पू० बापूजी के आने की तैयारी करना शुरू की।

अब्बा साहब जोशी (एकनाथ पंत जोशी) अपनी दो बहिन, एक सांगली की रानी साहब तथा दूसरी आसाम के कलेक्टर की पत्नी, के साथ मिलने व दर्शन करने आए। उनसे बहुत देर तक बातचीत होती रही।

मीराबहन पहले आईं। पू० बापू देर से आए। करीब २५ लोग हो गए। तीन बार रसोई बनी, देर से भोजन। पू० बापूजी ने ३-२० को मौन लिया।

२०-११-३३

सुबह जल्दी तैयार होकर पू० बापू के पास गए। उनके साथ करीब एक घंटा घूमकर आए।

ताराबहन मोडक, उनकी लड़की–प्रभा, ब्रिजलालजी आदि से ठीक बातें। पू० बापूजी ने ३-२० को मौन छोड़ा। शाम को घूमने को ले गए।

२१-११-३३

४ बजे पू० बापू की प्रार्थना में शामिल हुए। ताराबहन मोडक, दुर्गाताई जोशी आदि साथ में। ठक्करबापा से बातें।

पू० बापू को घुमाने ले गए। किले की ओर एक घंटे तक। गोखले से बातें। बापू को रवाना करने की तैयारी। सब अतिथियों को भोजन कराया। २० से ज्यादा थे। पू० बापू १२॥ बजे रवाना हुए। पू० बापू को यह पहाड़ पसंद आया। २ बजे भोजन। शाम को थोड़ा घूमना।

२२-११-३३

६ बजे तैयार हुए। पत्र लिखे। नाश्ता किया। वाद में घूमने निकले, करीब २।। मील गये।

दो तार भेजे। जीतमलजी लूणिया को अजमेर व बंबई केशवदेवजी को। पत्र लिखे—आबिदअली व कमल के पत्र से जानकीदेवी नाराज हुई। रामकृष्ण का टांसिल का आप्रेशन उसे पसंद नहीं था। रात को बिना दूध पिये सो गए।

२३-११-३३

६।। बजे घूमने निकले। मदालसा, नर्मदा, वत्सला साथ थी, रास्ते में दूध पिया।

श्री जानकीदेवी का क्रोध कम नहीं हुआ।

पत्र खूब लिखे, बहुत-सा जूना काम पूरा हुआ। आबिदअली को तार। ३ बजे भोजन श्री जानकीदेवी के साथ में। उनका थोड़ा क्रोध उससे कम हुआ। शाम को घूमने गए।

२४-११-३३

प्रार्थना, सूर्य उदय होते देखा।

अमाझरी बगीचा, जो चार मील है, पैदल गए, वहां फल वगैरा खाए। वापिस दो मील पैदल आए। सुब्ह ७ मील करीब घूमे। पत्र-व्यवहार।

२५-११-३३

पंचगोल घूमने गए। रास्ते में घास व घास के कांटे बहुत थे। वहां प्रतिध्वनि सुनाई देती थी।

आज पोस्ट (टपाल) बहुत ज्यादा आई। ३ तार भेजे—रामकृष्ण, माधोलालजी व रामनारायणजी को गिरधारी के सगाई के बारे में।

जवाहरलालजी के दो पत्र मिले।

शाम को 'लांग पाइंट' की ओर घूमने गए। वापस आकर अखबार देखे।

२६-११-३३

२ बजे बाद आंख नहीं लगी। लिखना-पढ़ना शुरू किया।

किले गए और सवों ने किला देखा।
पोस्ट लिखी। नर्मदा से बातें की तथा समझाया। आशा है वह अच्छी लड़की साबित होवेगी।
चिकल्दा का बाजार किया। साग, कच्ची जवारी वगैरा खरीदी। कमला को बाजार करने का ठीक शौक है।
श्री घोत्रे व शर्मा मिलने आए।
अंगुली कट जाने से चलने में तकलीफ होती थी।
घोत्रे, शर्मा, मदनमोहन, देव को कंपनीबाग के नजदीक बाघ दिखाई दिया। आवाज भी सुनी।

२७-११-३३

आज घूमने नहीं गया। अंगुलियों में दर्द होने के कारण।
हरिजन ता० १७ का पूरा पढ़ डाला, काफी पी।
डाक पढ़ी व लिखी।
श्री घोत्रे व शर्मा से बातें। वह दोपहर को भोजन करके बंबई गया।
शाम को थोड़ा घूमे।

२८-११-३३

नाश्ता करके घूमकर आए। अस्पताल में डाक्टर से मिले। वजन किया। १९६ रत्तल हुआ। पांव की अंगुली के लिए मलहम लिया।
लाला को खुजली हुई, उसे दवा व आराम दिया।
आज मेल से श्री वैजनाथजी व माणिकलालजी कायस्थ अजमेर से मिलने आए। उनसे बातचीत। शाम को थोड़ा घूमे।
प्रार्थना। भजन। माणिकलालजी ने मारवाड़ी में भजन गाए व विजोलिया का इतिहास सुनाया। मदालसा ने ठीक रस लिया।
पू० बापूजी का पत्र आया। श्री जवाहरलाल को तार किया, जबलपुर के बारे में।

२९-११-३३

नाश्ता करके हाथीखाने की ओर से किला देखने गए। जाते समय चि०

वत्सला से थोड़ी वातें मदालसा के वारे में व विनोवा, अन्नासाहव, वारूताई के समाधान के वारे में। वाद में किला, मसजिद, तोप, तालाव वगैरा देखे। मसजिद अवश्य देखने-योग्य मालूम हुई। वापस आते समय भावी जीवन, आदर्श, सादगी व त्याग की दृष्टि से जोड़ी लगाने का कहा। तारा, मदालसा, नर्मदा, उमा, कमला, शांति। नर्मदा को कहा तो उसने तारा-मदालसा का आदर्श रखा। आज करीव ८ मील घूमे।

३०-११-३३

पू० वापू को पत्र भेजा। और पत्र भी लिखे। पैदल "मरियम" के रास्ते से अमाझरी वगीचे आए। रास्ते में वाघ के पावों के निशान वगैरा माणकलालजी ने दिखाये। वगीचे में आने के वाद शहतूत, सांठा, पपीता खाया। वाद में दाल-वाटी खाई। शाम को पैदल ही वापस आए। सव मिलकर ८ मील घूमे।

१-१२-३३

आज थोड़ा घूमे।

वहुत-सी डाक आज पूरी की।

शाम को घूमकर आने के वाद डा० नायव तहसीलदार कुरेशी के साथ सतरंज की दो वाजियां खेली। जेल से आने के वाद प्रथम वार। कल चलने की तैयारी।

चिकल्दा-वर्धा, २-१२-३३

सुवह जल्दी प्रार्थना, निवटना, नाश्ता।

७ वजे मोटर से रवाना। रास्ते में जवारी का हुड्डा खाया। अमरावती ६२ मील। वहां पर डा० पटवर्धन के घर भावी कार्य की वातचीत। वडनेरा ११ वजे। वहां श्री तारावहन मोडक, सरस्वतीदेवी राठी व चि० वावू मिलने आए।

एक्सप्रेस से वर्धा पहुंचे। विनोवाजी से वातचीत। उनके साथ पैदल आश्रम।

वर्धा-रेल में, ३-१२-३३

जल्दी तैयार होकर पू० जाजूजी व पूनमचन्द आदि से वातें।

कन्या-आश्रम के बारे में बातचीत। वहीं भोजन। महिला-आश्रम संबंध में चर्चा। विद्यादेवी, कांता, पन्ना आदि से बातें।

विनोबा आए।

शाम को ८। बजे पैसेंजर से इटारसी होते हुए जबलपुर के लिए रवाना हुए। नागपुर में टीकेकरजी के भाई मिले।

इटारसी-जबलपुर, ४-१२-३३

इटारसी में स्नान, मारवाड़ी हिन्दू होटल में दाल-रोटी का सुंदर गरम भोजन। जबलपुर रास्ते में नरसिंगदासजी बाबा, नरीमान, मथुरादासभाई आदि मिले, बातचीत।

जबलपुर में जबरदस्त स्वागत। जवाहरलाल वगैरा सब प्रोसेशन में गए। भारी तैयारी, सुपारी की जगह तंबाकू दी गई। एक स्वयं-सेवक को मोटर के बीच आ जाने के कारण पांव में चोट लगी। चिंता, दुःख हुआ। बड़ी जाहिर सभा हुई तथा मुझे भी बोलना पड़ा।

रात को पूज्य बापूजी से बातें। डा० अंसारी के 'रोल' के बारे में १२॥ बजे तक विचार-विनिमय।

५-१२-३३

पू० बापूजी के पास गए। बातचीत, स्टेटमेंट ज० परमानंद का सुना। पू० बापू को डा० अंसारी ने तपासा।

इंफार्मल बातचीत ८ से ११ व १ बजे से ५ बजे तक होती रही। जवाहरलाल, अंसारी, मौलाना आजाद, महमूद, नरीमान, पू० बापू और मैं थे।

शाम को गोविंददासजी की स्त्री गोदावरीबाई, मदनमोहन आदि से मिले। बापू से गरमागरम चर्चा, लड़ाई के प्रोग्राम संबंध में, हुई। जवाहरलाल तथा कृष्णा से बातचीत।

६-१२-३३

पू० बापू के यहां जाकर आए।

लक्ष्मणसिंह के साथ सुभद्राकुमारी व उसके बच्चों को देखा। गोदावरी-देवी (गोंविददासजी) के यहां भोजन।

मौलाना आजाद ने कहा कि वह वच्छराज कंपनी की रकम मार्च तक दे देवेंगे। दिल्ली में ३ हजार। बाकी के लिए बाद में देने का विश्वास दिलाया। डा० महमूद से बातें। रात को पू० बापू से व मित्रों से बातें। रात को रवाना हुए।

खंडवा-इंदौर, ७-१२-३३

सुबह खंडवा पहुंचे। वहां स्नान करके हिन्दू होटल में गरम-गरम भोजन। उन्होंने दाम नहीं लिए।

अजमेर के लिए रवाना हुए। रास्ते में इंदौर में खूब भीड़। मित्र लोग आए, श्री काशीनाथजी आदि। चिरंजीलालजी जाजोदिया एक स्टेशन साथ रहे।

जावरा में गोवर्धन की माता वगैरा मिले।

नीमच की छावनी में नथमलजी चोरडिया, धनीराम आए।

अजमेर, ८-१२-३३

देशपांडे से बातचीत।

हटुण्डी-आश्रम रेल से देखा। अजमेर १० बजे पहुंचे। श्री रामनारायणजी के यहां ठहरे। श्री हरविलासजी के यहां भोजन। शंकरलाल, उमिया, श्री अर्जुनलालजी, गुलाबदेवी, भागीरथीबाई, सरदारबाई, जीतमलजी, चन्द्रभानजी, मार्तण्ड आदि से बातचीत।

सीकर-कासी का बास, ९-१२-३३

श्री चांदकरणजी शारदा तथा श्री जीतमलजी से बातें, पैदल स्टेशन पर गए। कपूरचन्दजी पाटणी फुलेरा तक बात करते आए। फुलेरा से श्री शोभालालजी से बातें। रींगस होते हुए सीकर २ बजे करीब पहुंचे। सीकर से बैली में बैठकर 'कासी का बास' गए।

कासी के बास में पू० हरभगतजी से मिलना व औरों से बातचीत हुई।

कासी का बास-सीकर, १०-१२-३३

बाजरे की रोटी-दही, गुन्द के लाडू का कलेवा किया।

श्री डेडराजजी-गुलाब लोसल से आए। श्री हरभगतजी से बातचीत।

गिरधारी के विवाह के चावल का सीरा-पूड़ी-साग का भोजन किया। दूजोद ठहरते हुए ऊंट पर सीकर पहुंचे।
सीकर में मित्र-मण्डल मिला। जवाहरलाल जैन मिले।

रींगस-नीम का थाना, ११-१२-३३

स्टेशन पैदल। ४ की गाड़ी से रींगस से जनेत (बरात) नीम के थाने गई।
रींगस में खादी कार्यकर्त्ता व हीरालालजी, बद्रीनारायण आदि मिले। भैंरूजी पैदल गए-आए। विनोद, बातचीत, कार्यकर्त्ताओं से बातें। दवाखाना। कन्या विद्यालय देखा। धर्मशाला में दाल-बाटी का भोजन। नीम का थाना १ बजे। धर्मशाला में डेरा। मित्रों से बातचीत। विवाह कार्य। पुस्तकालय खोला। फेरे नई व जूनी ढंग से गायन-वादन के साथ हुए। रात को ११ ।। बजे भोजन।

नीम का थाना-दिल्ली, १२-११-३३

श्री ओमदत्तजी व भरतपुरवाले वैद्यजी से बातचीत।
गीता के घर सबों से परिचय व बातचीत। गीता की माता खूब हठी मालूम हुई। कमला—युगलकिशोर की स्त्री—ठीक लड़की दिखी।
भोजन, पक्की रसोई। सिद्धगोपाल से स्टेशन तक बातचीत।
दिल्ली रवाना, रास्ते में रामनारायणजी व शंकरलालजी से बातचीत। दिल्ली रात को ८ बजे पहुंचे। पार्वतीदेवी से मिले। गाड़ोदियाजी के यहां ठहरे।

दिल्ली, १३-१२-३३

बृजकृष्णजी आदि से मिले। पू० बापूजी के पास भोजन। वहां विद्या बहन व चन्द्रकांता अकस्मात मिली। घनश्यामदासजी आदि मित्रों से बातें। आज हरिजन बोर्ड की सभा थी।

१४-१२-३३

बृजकृष्ण से मिलकर डा० अंसारी के यहां पंडित जवाहरलाल से मिला। उनको लेकर पू० बापूजी के पास गया।

पडित जवाहरलाल, डा अंसारी, मौलाना आजाद, डा० महमूद, कृपलानी टंडनजी व बापूजी के साथ बातचीत। साफ-साफ बातें हुई ८ से ११ तक। डेयरी की सभा। कुतब-आश्रम की सभा। पू० बापूजी से डेयरी की चर्चा वगैरा हुई।

पू० बापूजी शाम को ग्रांड-ट्रंक से वर्धा होते हुए आंध्र गए। स्टेशन पर सनातनियों का तमाशा।

१५-१२-३३

प्रभुदास वगैरा आये।

रघुनंदन सरन के साथ बृजकृष्ण से मिला, पार्वती से मिला, बाद में लेडी हार्डिंग अस्पताल होते हुए डेयरी गया। रघुनंदन से रास्ते में बातें। डेयरी देखी, विद्या आश्रम देखा। गिरिराजजी वहां काम करते हैं। कृष्णसहायजी भी। डेयरी में भोजन।

जामिया व कुतब का आश्रम देखा।

इलाहाबाद, १६-१२-३३

सुबह टंडनजी से रेल में बातचीत।

प्रयाग पहुंचे। आनंद भवन—जवाहरलालजी के घर ठहरे। घरेलू बातचीत, जेवर देखा।

श्री टंडनजी आए। उनके साथ साहित्य-भवन, महिला-विद्यापीठ, प्रयाग-हिन्दी-विद्यापीठ देखा। हिन्दी-विद्यापीठ देखकर संतोष हुआ। वहीं मूंगफली, मूली आदि का नाश्ता। बाद में टंडनजी के घर भोजन।

१७-१२-३३

सुबह मालवीयजी के घर बच्चों से मिले। लाड़लीप्रसादजी के घर, मनमोहनी एम० ए० से मिले।

कार्यकर्त्ताओं से विचार-विनिमय, काम देखकर सूचना की।

उमाजी नेहरू, अमरनाथ अट्टल, श्यामा आदि से मिलना।

जवाहरलाल, कमला, लाड़लीप्रसाद के साथ रात को १२ बजे तक बातें।

जवाहरलालजी की माताजी से भी खूब बातें हुई।

बनारस, १८-१२-३३

सुबह जल्दी रवाना होकर प्रयाग स्टेशन से बनारस रवाना हुए। रास्ते में सुमंगलप्रकाश, कांता, सिद्धगोपाल से बातचीत।

बनारस पहुंचकर पहले कांता के पिता श्यामलालजी इंजीनियर के घर पहुंचकर स्नान-भोजन। बाद सेवा-उपवन शिवप्रसादजी के यहां पहुंचे। श्री शिवप्रसादजी का स्वास्थ्य देखकर संतोष हुआ। राजा मोतीचंद की हालत दयाजनक मालूम हुई। चि० सुलभा से मिले। वह रोई। हृदय भर आया।

पूज्य मालवीयजी महाराज से मिला।

१९-१२-३३

सुबह जल्दी तैयार होकर हिंदू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों से बातें। श्री शिवप्रसादजी से अलग-अलग ठीक बातें।

राजस्थान के छात्रों से बातचीत, साफ-साफ बातें।

श्री मालवीयजी के साथ विश्वविद्यालय घूमकर देखा। लड़कियों का विभाग देखा। वहां बोला। अन्य विभाग भी देखे।

सुंदरम् का मकान, श्री अच्युत स्वामीजी, रामेश्वर पंचकोशी सुंदरम् से मिले। खुशी हुई।

हिंदू-विश्वविद्यालय में पूज्य मालवीयजी के सभापतित्व में 'पढ़े-लिखे व बेकारी' पर ठीक बोला।

रुक्मिणी आदि से बातें। चि० रमा जैन आई। कुमारी कृष्णा खण्डेलवाल से परिचय।

२०-१२-३३

श्री श्रीप्रकाशजी से सुबह ही ठीक बातें। उनका उत्साह पैदा कराने का प्रयत्न।

हिंदू विश्वविद्यालय में राजपूत विद्यार्थियों की ओर से मान-पत्र। हरिजन विद्यार्थी मिले।

पूज्य मालवीयजी व गोविन्द मालवीय से बातें।

चि० वनारसी व रुक्मिणी के घर भोजन। वल्देवदासजी विड़ला, श्यामलाल इंजीनियर से मिला।

खद्दर भंडार होते हुए सेवा-उपवन को। श्री गुप्तजी से वातें। श्यामलालजी, हरिजन व अन्य विद्यार्थियों से ठीक वातचीत।

डेरी-वनारस, २१-१२-३३

श्री गुप्तजी से मिलकर सुवह ही मोटर से चि० रमा के साथ चंद्रकांता के घर नाश्ता करते हुए डेअरी ७५ मील मीटर से रवाना। रास्ते में चि० रमा से ठीक-ठीक वातें।

डेअरी में श्री रामकिशनजी डालमिया, चि० शांतीलाल जैन आदि से वातें। इनकी मील में आज गन्ना डालकर मेरे हाथ से मुहूर्त किया।

भोजन के वाद श्री रामकिशनजी व शांतीलाल से वातचीत। श्री शांतीलाल-जी की माता से वातें।

शाम को कलकत्ता रवाना हुए।

कलकत्ता, २२-१२-३३

हावड़ा स्टेशन पर मित्र लोग आए। पुल खुला हुआ था। वोट में उस पार। विड़ला-पार्क में ठहरे। मिलना शुरू किया।

महादेवलाल सराफ के सासरे उनकी पत्नी, ससुर आदि से मिलना।

श्री सुरेश वनर्जी से खूव वातें। सतीशवावू से वस्ती में जाकर मिला। ठीक वातें।

विड़ला-परिवार से वातें। वाद में जेवर मित्रों को दिखाया।

२३-१२-३३

श्री सीतारामजी के साथ आचार्य पी० सी० राय से मिला, खद्दर पर जोर देने की चर्चा की।

सर जे० सी० वोस व लेडी वोस से मिला। उनके साथ चाय, फल। उन्होंने घर की मिठाई वड़े प्रेम से खिलाई।

सिस्टर ग्रेटमार से मिला। श्री सीतारामजी के घर भोजन। शन्नोदेवी से वातें। मिसेस सेनगुप्ता से मिला।

श्री जुगलकिशोरजी ने अपनी कमाई में से ५ से १० प्रतिशत मेरे मार्फत लगाने का अपना निश्चय कहा।

२४-१२-३३

श्रीमती शन्नोदेवी से खूब बातें, उनकी मनस्थिति जानी।

श्री मदनलाल बजाज ने कुटुम्ब का वंश-वृक्ष दिखाया, दुरुस्ती।

लक्ष्मीनारायण मिला। उसकी बीमा कंपनी देखी।

सिक्खों की सभा में व्याख्यान। मारवाड़ी छात्रों को खूब सुनाया।

चि० गजानन्द से बातचीत। श्री जुगलकिशोरजी से बातें।

२५-१२-३३

बिड़ला-परिवार के साथ रहा। मारवाड़ी व्यायामशाला देखी।

खेतान हाउस, झकरिया स्ट्रीट गये। कलकत्ते की बस्ती का परिचय, दुखकारक हालत।

नागपुर मेल से वर्धा रवाना।

रायपुर-नागपुर-वर्धा, २६-१२-३३

रायपुर में पंडित शुक्लजी व कई मित्र आए। ठीक बातें।

गोंदिया में पुरुषोत्तमभाई (मूलजी शिवका) की मृत्यु के समाचार मिले।

नागपुर—दातार के भाई की रेलवे में मृत्यु के समाचार, वार्लिंगे आदि।

वर्धा—नौरोजी शकालतवाला (एटावाले) मिले।

आश्रम। अन्नासाहब दास्ताने से बातें।

वर्धा, २७-१२-३३

गीता का ठीक परिचय। संतोष हुआ। पत्र लिखवाए।

कन्या-आश्रम घूमकर आए। शांता बनजारी बीमार।

पत्र-व्यवहार। तिवारी को बंबई लिखकर पत्र दिए। व्यवस्था।

श्री जाजूसा० व राजन्ना के बालकों से बातें।

आश्रम में प्रार्थना। दास्ताने से बातें।

२८-१२-३३

माणिकलालजी से बिजोलिया की चर्चा।

गिरधारी, गीता, बद्री से बातें। कन्या-आश्रम में द्वारकानाथजी से बातें।

श्री मूलचन्दजी, सुमनजी आदि मिले।

खुशालचन्दजी, वालुंजकर, द्वारकादास भैया, सिद्धप्पा से भी।

२९-१२-३३

विनोबा से नालवाड़ी जाकर मिलकर आए।

गीता-गिरधारी से बातें। गीता का निर्णय महिला-आश्रम का। गिरधारी का दूकान का।

भोजन के समय राजपूताना के विद्यार्थी वीरेंद्र, ओंकार, जयसिंग, माणिकलालजी आदि से चर्चा, विचार-विनिमय।

पत्र-व्यवहार, रामकृष्ण राठी (वासीमवालों) से काम लिया।

श्री पुस्तकेजी (उज्जैनवाले) आए। उनसे बातें।

काकासाहब बरवे व रामेश्वरजी (धुलियावाले) के साथ में भोजन।

आश्रम में प्रार्थना, मित्रों से बातें।

वर्धा, ३०-१२-३३

श्री पुस्तकेजी को बैल ने लात मार दी, जिससे उनके पैर में चोट आई।

उनकी व्यवस्था, दुःख हुआ। उनके पास बहुत देरतक बैठा।

चि० तारा सुबह आई। उससे पत्र-व्यवहार का काम लिया।

नागपुर, ३१-१२-३३

चि० तारा के साथ स्टेशन पैदल, चि० केशव गांधी को समझाया।

श्री पूनमचंदजी के घर उन्हें खूब समझाया। जोर देकर, उदाहरण देकर, जेल-व्यवहार तथा अन्य मामलों में।

डा० सोनक के घर भोजन। श्री गोविंददासजी मिले। अभ्यंकर, खरे वगैरा मित्र मिले।

बैरिस्टर वारलिंगे का मामला। धर्माधिकारी, चि० चिरंजीलाल व हरकरे से वातचीत।

तिलक विद्यालय के संबंध में खुलासा।

श्री पूनमचंदजी व ११ स्वयंसेवक पिकेटिंग के वारे में गिरफ्तार।

दातार, वारलिंगे, अभ्यंकर आदि से मिलकर वर्धा लौटे।

परिशिष्ट

कुछ विशेष व याद रखने योग्य बातें जमनालालजी डायरी के अंत में नोट कर लिया करते थे। सन १९३० से १९३३ के दौरान जो बातें उन्होंने नोट की थीं, वे इस खण्ड के अंतर्गत दी जा रही हैं।

परिशिष्ट—१

१९३२ व ३३ में जेलों में मिले हुए नम्बर व तारीखें इस प्रकार हैं:

जेल	नंम्बर	तारीख
भायखला	३२२	१६-१-३२ से १२-३-३२
वीसापुर	१०९४	१५-३-३२ से २४-३-३२
धुलिया	१२५१४	२५-३-३२ से २५-११-३२
यरवदा	२०५४०	२६-११-३२ से २५-३-३३
आर्थर रोड	२६५२१	२५-३-३३ से ५-४-३३

परिशिष्ट–२

इस वर्ष (१९३२) में मित्र या कार्यकर्त्ताओं की चिंताकारक मृत्यु:

घीरजलाल बैंकर; काणे (नाना)–सासवाने वाले; विट्ठलदास भाटिया–बंबई वाले; सर दोरावजी टाटा–जर्मनी में; वरदाचारी (राजाजी के जमाई) की मृत्यु ता० २८-६ को त्रिकुनायन; मुरलीधर हलवासिया (चांदबाई का पति); बालारामजी चूड़ीवाले—हरिद्वार में तारीख २८-९-३२; रत्तीबाई; पुरुषोत्तमदास गनेडीवाले।

परिशिष्ट–३

दूसरों द्वारा अपने पर किये गये उपकार:

खासकर वम्वई सरकार ने जेल में सी (क) वर्ग देकर किया।

भायखला, वीसापुर, धुलिया, यरवदा में ठीक लाभ पहुंचा, "खासकर विनोवा" द्वारा धुलिया जेल में।

श्री सहाने, खरे, रामचरण, मोडक, आदि (खानदेश के)।

श्री पोतनिस, देशपांडे।

प्यारेलाल, गुलजारीलाल।

गणपतराव कंपाउंडर (शारीरिक सेवा)।

वालकों में—चौदश, भाऊ, यादव, चतुर्भुज, रामदास, प्रह्लाद, सुभान।

भायखला जेल में—वाटलीवाला, चौइथराम, देशपांडे।

वीसापुर जेल में—फूलचन्द भाई, तलाटी, सुरेंद्र, महेंद्र आदि।

यरवदा जेल में—नगीनदास मास्टर, फ्रेड डिसोजा, विश्वनाथ स्वामी, वसंत आदि।

रामचन्द्र, ववन (शारीरिक सेवा)।

वापू की वकरियों से खूब लाभ मिला।

परिशिष्ट–४

ता० ८-८-३२ को कमलनयन ने नीचे मुजब अपने पकड़े जाने व सजा आदि का जेल का वर्णन दिया :

१४-१-३२	...	अल्मोड़ा के पास पकड़ा गया।
१७-१-३२	...	सजा ६ महीने व १०० रु० जुर्माना, नहीं दो तो एक महीना और सजा।
१८-१-३२ से	१-२-३२	अल्मोड़ा जेल में (सी–वर्ग)
१-२-३२ से	३-४-३२	हरदोई जेल (सी–वर्ग)
३-४-३२ से	९-६-३२	हरदोई जेल (वी–वर्ग)
९-६-३२ से	१७-६-३२	हरदोई जेल (ए–वर्ग)
१८-६-३२ से	२५-७-३२	वरेली जेल (ए–वर्ग)

परिशिष्ट—५

मेरा परिवार[1]

पिता समान : गांधीजी   माता : वृद्धि देवी   गुरु समान : विनोबाजी

माता समान : कस्तूरबा   पत्नी : जानकीदेवी

भाई :
१. जाजूजी
२. किशोरीलाल मश्रूवाला
३. केशवदेवजी नेवटिया
४. हरिभाऊ उपाध्याय
५. वेरियर एलिवन
६. गुलजारीलाल नंदा
७. लालजी मेहरोत्रा
८. गंगाविशन बजाज
९. रामेश्वर प्रसाद, धुलिया
१०. नारायणदास गांधी

लड़के समान :
१. कृष्णदास गांधी
२. नीलकंठ मश्रूवाला
३. रिषभदास जैन (फतेपुर)
४. गिरधारी बजाज
५. मदनमोहन चतुर्वेदी
६. रामचरण सोनी
७. कान्ती जैन, अमलनेर

लड़के :
१. राधाकृष्ण
२. रामेश्वर नेवटिया
३. गुलाबचन्द
४. प्रह्लाद
५. कमल
६. श्रीराम
७. रामकृष्ण

लड़कियां :
१. कमला
२. मदालसा
३. उमा
४. नर्मदा
५. शांता रानीवाला
६. तारा मश्रूवाला

बहिनें :
१. केशर
२. गुलाब
३. गोमती मश्रूवाला
४. सुव्रता रुइया
५. मीरा (स्लेड)
६. सौभाग्यवती दानी

---

१. यह नोंध जमनालालजी ने यरवदा जेल में ३-१२-३१ को सुबह २॥ बजे लिखी थी।

निर्देशिका

[इस निर्देशिका में वे नाम नहीं लिये गए हैं जिनका जिक्र डायरी में किसी प्रयोजन के संदर्भ में नहीं आया, बल्कि केवल उल्लेखमात्र है। साथ ही जेलकाल में जमनालालजी का संबंध विभिन्न जेलरों, सुपरिंटेंडेंटों, व कलक्टरों से लगभग रोज आता था; अतः इन लोगों के नाम भी शामिल नहीं किये गए हैं। —सं०]

जमनालाल बजाज-सम्बन्धी साहित्य

जीवन तथा संस्मरण

जमनालाल बजाज : रामनरेश त्रिपाठी (अप्राप्य)
जमनालालजी : घनश्यामदास बिड़ला
श्रेयार्थी जमनालालजी : हरिभाऊ उपाध्याय
मेरी जीवन-यात्रा : जानकीदेवी बजाज
जीवन जौहरी : रिषभदास रांका
स्मरणांजलि : संपादक—काका कालेलकर
Jamnalal Bajaj : T. V. Parvate
रचनात्मक राजनीति : जमनालाल बजाज
बापू-स्मरण : संपादक—रामकृष्ण बजाज
श्रेयसाधक : संपादक—केदारनाथ

गांधीजी के साथ का पत्र-व्यवहार

(संपादक—काका कालेलकर)

पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद : गांधीजी के साथ हुआ जमनालालजी का संपूर्ण पत्र-व्यवहार

बापू के पत्र
पांचमां पुत्रने बापुना आशीर्वाद
To a Gandhian Capitalist
} उपरोक्त किताब में से चुने हुए पत्रों का संकलन—हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी में

अन्य पत्र-साहित्य

विनोबा के पत्र : आचार्य विनोबा भावे के साथ हुआ पत्र-व्यवहार
पत्र-व्यवहार—१ : राजनीतिक नेताओं के साथ
पत्र-व्यवहार—२ : रियासती कार्यकर्ताओं के साथ
पत्र-व्यवहार—३ : रचनात्मक कार्यकर्ताओं के साथ
पत्र-व्यवहार—४ : जानकीदेवी बजाज के साथ
पत्र-व्यवहार—५ : परिवार के अन्य सदस्यों के साथ
पत्र-व्यवहार—६ : राज्याधिकारियों के साथ
पत्र-व्यवहार—७ : व्यापारी-वर्ग व समाज-सेवियों के साथ
पत्र-व्यवहार—८ : राजनीतिक व्यक्तियों व समाज-सेवियों के साथ

जमनालाल बजाज की डायरी

खंड—१ : सन् १९१२ से १९१५ तक
खंड—२ : सन् १९२३ से १९२९ तक